





جُلْدِنْ الْجُمْلِ

🕦 درودل

🕝 روايات ضعيفه الرخصيل فضائل

👚 ربيع الاول ميں جوشِ محبت

🕜 رمضان ماهِ محبت

﴿ وَكُوة كِماكُلُ

🕥 زحمت کورحمت سے بدلنے کا نسخ اکسی

🖒 زندگی کا گوشواره

عرض ناشر

فقیہ العصر مفتی اعظم حضرت موانا مفتی رشید احد معاجب رحمہ اللہ تعافی کے مواعظ نے جزاروں بلکہ الکھوں انسانوں کی زندگیوں میں انتقاب برپا کر دیا جس مختص نے معنوت والا کے مواعظ مختص نے معنوت والا کے مواعظ اب تک نافر مانی اور کتا ہوں کے دلدل میں جیشے ہوئے تنے ، معنوت والا کے مواعظ اب تک نافر مانی اور کتا ہوں کے دلدل میں جیشے ہوئے تنے ، معنوت والا کے مواعظ گھروں ہے گنا ہوں سے تا تب ہوگ اور ان کی زندگیاں پر سکون ہوگئیں۔ ان کے گھروں سے گنا ہوں کے آلات نفل می اور وہ کھر چین وسکون کا گہوارہ بن مجے محروں سے گنا ہوں کے الاست نفل می اور وہ کھر چین وسکون کی شکل میں شائع ہو اب تنگ حضرت والا کے بید مواعظ علی ہو علی دیا تی انظم میں منظم کر دیا جائے تاکہ دان سے فاکدہ اٹھا تا آسان ہو جائے ۔ چنا نی انظم اللہ تقیل بقیہ جلائی ۔ بیات کی تام جائے تاکہ دان شاہ اللہ تعالی بقیہ جلائی ۔ بیات کی تام جی رفتہ رفتہ جلد وجود میں آجائیں گی۔ اللہ تعالی حضرت والدا رحمہ اللہ تعالی کے فیش کو جی رفتہ رفتہ جلد وجود میں آجائیں گی۔ اللہ تعالی حضرت والدا رحمہ اللہ تعالی کے فیش کو قیامت تک جاری دیکھ اور ہم می کو این سے فائدہ اٹھانے کی توفیق عطاء فیامت تک جاری دیکھ اور ہم می کو این سے فائدہ اٹھانے کی توفیق عطاء فرائے آبین

خادم كماب كمرناظم آبادكراجي

فهرست مضامين عنوان درددل ملان دردول 🀙 هیجت کاشیح طراقه ۲۴ 🦑 نفیحت مؤسنین کو فائدہ دیتا ہے 🧩 مؤمنین کی قشمیں 24 🦑 پېلې تىم 🗱 دومری قتم 14 🤻 تيسري قتم ۲Λ 🐅 جبادگی اہمیت ۱۸ 🗱 تنبیهات کی وجوه 79 🦑 🕕 جھے کئی ہے کھی یا خوف نہیں 4 *** 6** نيرت ديني 🎇 غیرت وانوں کے قعے ۳. 🐙 🛈 حفرت الى بن كعب رضى الله تعالى عنه 🤻 🕝 ایک طوائف کی پانگ " 🧚 🕝 گھوئ کے عاش کا علاج

| | | |
|------------|---|-------------|
| صفحه | عنوان | |
| ra | 🗗 درودل | * |
| 7 9 | 🖝 مصلح والد کی حیثیت رکھتا ہے | * |
| 79 | د فی تربیت کے لئے اولاء پر لائفی برساتے رہو | * |
| ~ • | الله پرايمان ٢ و احكام البيه يے فقلت كيول؟ | -}¢- |
| ľΊ | ابا کاشمیں | -;;- |
| سهم | قارى صاحب كا قصه | * |
| 144 | معذور طالب علم كا آپریش | * |
| ro | نىخداكسىر | ->(- |
| ſΥ¥ | تنبيه الغافلين | -><- |
| ۳۷ | 🙆 این فکر دوسرول سے مقدم | ->(- |
| ľA | علماء بني اسرائيل پرلعنت كي وجه | * |
| ~ 9 | حفرت لقمان عليه السلام كي تعييت | * |
| ۵۱ | بری تکلیف سے بچانے والی جھوٹی تکلیف رحت | * |
| ۵۲ | نجات گنا ہول سے میخ بچانے میں | * |
| ٥٣ | الله كي محبت كي علامت | ->¢- |
| ۵۴ | گناہوں کی جان چیٹرانا بہت مشکل | * |
| ۳۵ | سندھ کی بلی اور کے کا بلا | * |
| ۵۵ | طالبان كے سبق آموز قصے | * |
| ۵۷ | ماهمن کی پیچان | * |
| ۵۷ | مداهن كمعنى | -X- |
| ۵۸ | 🕥 وقت کی قدر | * |

| | | 1000 |
|------------|---|----------|
| صفحہ | عنوان | |
| ۹۵ | مىلمان كى شادى | * |
| ٧٠ | عثق کی نسونی | * |
| ٧٠ | الله کی محبت خون مانگتی ہے | * |
| 41 | ميدان جهاديس تمام سائل كاحل | * |
| 41 | میری شادی کیا ہے؟ | -><- |
| 45 | اشرفیوں کوضائع ندکریں | * |
| 71 | علاء کوعر فی بولنے میں زیاد دروانی نہونے کی وجہ | * |
| Als. | پانچ چیزوں سے پہلے پانچ کوغنیت مجمعو | * |
| 40 | 🗍 شبابك قبل هرمك | **- |
| 40 | سب سے بری عبادت | |
| AF | ⊕وصحتك قبل سقمك | * |
| 4V | ا وغناك قبل فقرك | * |
| 49 | مال کی مقدار نہیں نسبت دیکھی جاتی ہے | * |
| ۷1 | بری بربی تجارتیں تباہ ہوجاتی ہیں | -3/2- |
| ۷۳ | 🕜 وفراغك قبل شغلك | -3¢- |
| 40 | ⑥وحیاتك قبل موتك | * |
| ۷۵ | ولمن کی فکر | * |
| 4 | د في کامول کې نشمین هند پښتار | * |
| 4 9 | ①زیادہ ٹواب کے لئے ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ | ** ** |
| ∠9 | (۲) عذاب سے بچنے کے لئے | |
| ۸۰ | دین کے معاملہ میں ایٹار جائز نہیں | * |

| صفحه | عنوان | |
|------|--|-------|
| Δι | 🗗 تبلغ زک منکرات میں اپنا فائدہ | * |
| ۸۲ | فائده کی وجوه | * |
| ۸r | 🕕 گناہوں ہے رو کنا فرض ہے | * |
| ۸r | 🏲 دين پراستقامت مِن آ ساني | * |
| Ar | 🕝 حکومت اسلامیہ کے قیام میں آسانی | * |
| ۸r | ظا هری و چه | * |
| ۸۳ | باطنی وجه | * |
| 'Ar" | دو ہاتیں | * |
| ۸۳ | 🛈 وعدو اقتدار پوری دینداری پر ہے | -X- |
| 4+ | کلوارا نامائے بغیر پورے مسلمان نہیں بن کیتے | * |
| 91 | ترك منكرات كے بغير حكومت البيد كا قيام ممكن نہيں | * |
| ar | ا قامت حکومت المهيد کے لئے مسلح جہاد ضروری ہے | * |
| 95 | تارک جہاد نیک نہیں ہوسکتا | ** |
| ٩٣ | ايك بعمُّورًا تورنو مين | -3,5- |
| 94 | سورهٔ محمد کا دوسرا نام سورهٔ قبال | -36- |
| ٩٨ | تهم جباد پر منافقین کی حالت. | * |
| 99 | وجال کوقتل کرنے کی نیت | * |
| 100 | عبرت کی بات | * |
| 1+1 | کا فروں کی گرونیں اڑاؤ | * |
| 1+7 | حكومت صرف الله كي موگل | * |
| 1•2 | الله مسلمانوں کو کیوں مروا تا ہے؟ | * |

| صفحه | عنوان | |
|--------------|---------------------------------------|------|
| 1 - A | تارکین قال اللہ کے عذاب کا انظار کریں | * |
| ji• | الله پرتوكل كى بركت | * |
| 117 | تاركين جهاد كےزد كيك الله مجرم | * |
| 111" | ♦ اسباب عبرت | * |
| 110 | ''نذر'' کی پانچ تغییرین | * |
| 1117 | يلى تنير | * |
| ПM | دومری تغییر | * |
| Иſ | تيىرى تغيير | -¾- |
| 110 | بالول کی سفیدی باعث رحت ہے ند کد زحت | -X- |
| 117 | چۇخى تغيير | * |
| 11Y | اولاد کی اولادموت کی حبشدی | -*:- |
| lf∠ | پانچوین تغییر | * |
| 114 | حقیق بالغ کون؟ | * |
| IIA | اسباب عبرت كي تفصيل | * |
| ΠA | آ اموات | * |
| 119 | موت تمام لذتوں کو کتم کرویق ہے | ** |
| 114 | موت سب سے برا واعظ | -*- |
| 114 | دوست کا انتظار | * |
| irr | قانی چزول کی محبت مصیبت | * |
| 170 | دوسرول کی موت سے عبرت حاصل کریں | * |

| الرشنير | ١٠ مُطباتُ | |
|---------|--|-----|
| صفحه | عنوان | |
| 12.4 | دنیاے مردار کے عاشقوں کا حال | * |
| 11/2 | عمرة متقبلة | * |
| 187 | ہوں نے برباد کردیا | * |
| 150 | موت كا وقت معلوم نهيس | ** |
| 1172 | (س) اولاد | * |
| 1179 | ولادت كا انجام | * |
| ۱۴۰ | (٢) ازواج | * |
| 1171 | ب دین لوگول کے مسائل | -X- |
| الدلد | € تارپ | * |
| ira | @احباب | * |
| IMA | هجوری کوسلام | * |
| IMZ. | رسول امتد صلى القدعلييه وسلم كى عجيب تعليم | * |
| 101 | ۳ کارات | * |
| Ipr | كزراغات | * |
| IDM | ﴿ الرات | * |
| امدا | | * |
| 107 | 🕞 تغير زمان | 恭 |
| 101 | ⁷⁵ ک ب ت | × |
| 14. | ونن مرتب | * |
| iye i | كما پچىتنيهات | * |

| صفحہ | عنوان | |
|------|---|-------|
| I۸۳ | روايات ضعيفه اور مخصيل فضائل | |
| IAP | دین کے وسالط | * |
| IAP | وسائط کی اقسام | * |
| IAP | قامل اعتاد راويوں نے ايسى احاديث كيون نبيس ليس؟ | * |
| 1AP | روايات موضوعه كى علامات | * |
| I۸۳ | ارشادات معجد کچم تم تین | -3/2- |
| I۸۳ | ضعیف روایات کی طرف التفات کا مطلب | * |
| IAM | آ خرت میں سؤال ہوگا | * |
| 180 | حضرت يحيم الامة رحمه القد تعالى كالملفوظ | * |
| PAI | عبادات نافلہ سے بی چرانے والے تو ی کیے ہو سکتے ہیں؟ | * |
| 114 | منگھوت نضائل پرعمل کرنے والوں کا مقصد | -3/- |
| IAA | يزعم خويش اولياء الله | **- |
| PAI | محض اوراد ووظا كف عذاب مے نبین بچا سكتے | * |
| 197" | ربيع الاول ميں جوش محبت | |
| 191" | تارخُ ولادت مِن غلط مُني | * |
| 197 | تارخ وفات میں غلط فنبی | * |
| 192 | ميلاد کي حقيقت | * |
| 19.5 | ايك سؤال | * |
| 199 | محابية كرام رضى الله تعالى عنهم كاعشق رسول صلى الله عليه وسلم | -36- |

| صفحه | عنوان | |
|-------|-------------------------------------|----|
| 779 | آج کل کے مسلمان کی حالت. | * |
| ppr | رمضان ماه محبت | |
| rrr | روزہ کو آسان کرنے کے پندرہ نیخے | * |
| rea | روزه کی حکمت | * |
| PPA | روزه حصول تقويٰ كا قديم ترين نبخه | * |
| 429 | صديون كالمجرب نسخه | * |
| rm | عشر ؤ اخیره کی ابمیت | * |
| ויייו | اعتكاف بمثق كااظهار | * |
| 444 | ایک فلطفنی کا از اله | * |
| rrz. | م کناه کا حمله | |
| rrz. | احادیث متعلقه ترک ممناه | *- |
| rar | قرآن وحدیث بجھنے کے لئے بنیادی اصول | * |
| ror | رمضان میں گناہ چھڑانے کے وس شنخے | * |
| rar | پېلانىخە" مراقبە" | * |
| roo | دوسرانسخه مسرک مثق " | * |
| 777 | تيمرانىخ"نماز" | * |
| 777 | اذان کی عظمت | * |
| rya | نماز کی حقیقت | * |
| 121 | ایک اہم مئلہ | * |
| r∠ŗ | چوتفانسخهٔ طادت قر آن'' | * |

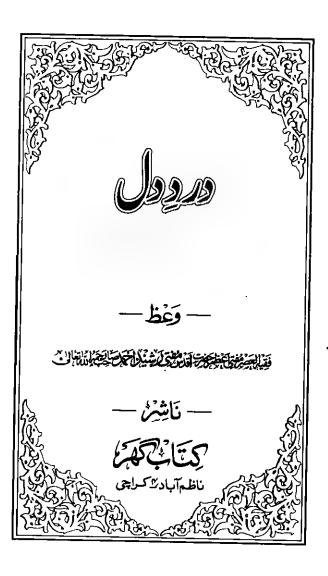
| 7 | الرثثية | ١٨٠ مُطباتُ | |
|---|-------------|--|---|
| | صفحه | عنوان | |
| ľ | 47 h | قرآن میں گناہ چھڑانے کے دیں شنج | * |
| ١ | r20 | پېلانسخه د کلام کا اثر " | * |
| l | 144 | دوسرانسخ'' قرآن کے انوار'' | * |
| | 12A | صاحب بصيرت بزرگ كا داقعه | * |
| İ | †AI | | * |
| | PA1 | چوتقانسخه ' دیدارمجوب'' | |
| l | የላተ | زيب التساء كا قصد أسبب | * |
| ١ | 140 | | * |
| I | ra a | چمنانخهٔ 'لذت خطاب'' | * |
| | 74.4 | لذت خطاب کی ایک مثال | * |
| l | MZ | عاجيون كاعشق | * |
| | MA | ساتوال نمخ «کمتوب محبوب" | * |
| | 149 | آ شوال نسخه " کثرت ذکر" | * |
| ł | 1/19 | دنیا کے کاموں بیں مشغول لوگوں کو وصیت | * |
| | r9 • | نوان نوز "کثرت قکر" | * |
| | r4• | مبت کے امباب | * |
| | 191 | | * |
| 1 | rgr | خرافات میں گلنے کی وجہ | * |
| | 797 | المسل كمال | * |
| | ram | دسوال نسخه ' کشرت دعاء'' . به مناقب به مناقب به المناقب به المناقب به به المناقب به به المناقب به به المناقب به به به المناقب به به به المناقب به | * |
| | rar | رمضان ميں پانچوال نسخه (مفقل محبت' | * |

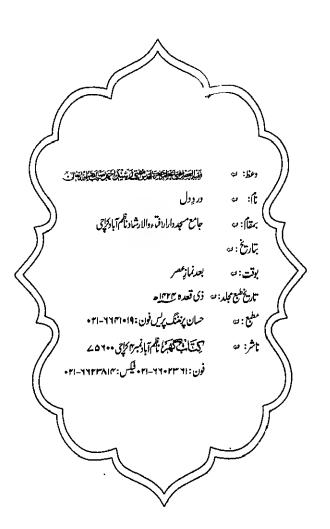
| | ۳۰ - ۱ - ۱ - ۱ - ۱ - ۱ - ۱ - ۱ - ۱ - ۱ - | _ |
|-------------|--|----------|
| صفحه | عنوان | |
| 294 | 🧩 حفزت گنگوی رممه الله تعالی کا قصه | ę. |
| ۳۰۰ | 🧚 چھٹا نسخہ'' کوشش اور دعاء'' | ę. |
| ۳•• | 🕏 ایکاشکال | ÷ |
| r.r | 🤻 ساتوال نسخه''جسمانی ضعف'' | ę. |
| 77-4 | 🎏 🧻 تھوال نسخهٔ 'شیاطین کا مقید ہوجاتا'' | Ç. |
| ** * | 🦫 نوال نسخه ''موت کی یاد'' | ۴ |
| ۳•۸ | 🦫 دسوال نسخه (معقلی تربیت " | ę. |
| mim | الله رمضان میں دو بہت بڑے گناہ | ç. |
| ייונייי | 🖈 🕕 قاری اور سامع کواجرت دیغا | ķ. |
| 710 | الله 🗗 ختم قرآن كيموقع پرمشاني تشيم كرنا | ę. |
| rri | ز کو ۃ کے مسائل | |
| ۲۲ | 🦫 ارکان اسلام کی ترتیب | ř. |
| ۳۲۳ | الله ● ترتیب در جات عشق | * |
| سدند | ﴾ 🐠 ترتب فرضيت | ķ. |
| P | 🕻 🕝 ترتیب زمانی | ¢- |
| m.ku. | 🕻 😭 زتىپەذكرى | Ŕ. |
| rra | ا اركان اسلام اور نوگول كي غفلت | ķ. |
| 277 | بهسريسة القوم | 汁 |
| rrq | ﴾ نساب زکرة | * |
| "" | الموال زكوة | * |
| |) | _ |

| صفحه | عنوان | |
|-----------|--|------|
| ~~~ | معرف زکوة | * |
| - | ضرورت کے معنی | * |
| rro | ٹی وی کے ما مک کوز کو 🗗 ویتا | * |
| ٢٣٦ | ما تکلنے والے کو زکو ق وینا | * |
| mm2 | سؤال کی ممانعت | * |
| ٢٣٩ | جہالت کے کرشے | * |
| rrr | ز کوة و پنے کا طریقہ نشنہ | * |
| ساماس | صدقة الفطرادر قرباني كانصاب من في المناب الم | * |
| مايداسة | زكوة كاحباب لكانے كا طريقة | * |
| ሥቦላ | ر دوه ۵ ساب لات ۵ مربعید مین در کو قادینا | * |
| rar | زحمت کورحمت سے بدلنے کانسخ اکسیر | |
| ror | مىلمان كى برمالت رحت | * |
| roo | شرنتست کا طریقہ | * |
| roy | مصيبت كي تين قسميس | * |
| ran | نبی عن المئكر حچيوژنا عذاب البی كودعوت | * |
| ۳4۰ | تختی اور مضبوطی میں فرق | * |
| ۳۲۲ | على مسائل مل كرنے كانسخ | -3¢- |
| ۳۲۳ | غصه بهت خطرناک ممناه | * |
| سالم | زمت کورحت بنانے کی عقلی مثال | * |
| 770 | شكركي حقيقت | * |

| صفحه | عنوان | |
|-------------|---|------|
| ۵۲٦ | * عذاب بصورت اسباب | * |
| FYY | زحت اوررصت کی بیجان | |
| ۳۲۷ | حضرت اقدس رحمه امندته ی کا ایک سبق آ موز قصه | -36- |
| 7 27 | زندگی کا گوشواره | |
| 7 21 | مقعد زندگی | * |
| 12 4 | متجارت آخرت كاكوشواره | |
| 722 | ودمبارك وعائين | * |
| r ∠∠ | میبلی وعاء | * |
| 1 22 | ودسري وعاء | * |
| 74 0 | ترياق منظرات | * |
| řΖA | طلب رحمت كا طريقة | * |
| P'2 9 | ایک اور عجیب دعاء | * |
| P'_4 | سالگره یا سال محرا | * |
| ۳۸۰ | عاقبت اندلی می الله الله الله الله الله الله الله الل | * |
| PAI | بروز قيامت سوال هوكا | * |
| PAI | ''نذیز' کی پانچ تغییرین | * |
| PAI | يهلي تغيير | * |
| MAT | دومری تغییر | * |
| ۳۸۲ | تيسري تغيير | * |
| ፖለተ | بالون کی سفیدی باعث رحمت بے ند کرزحمت | * |

| -117 | | |
|---------------|------------------------------|-----|
| صفحه | عنوان | |
| ۳۸۳ | چۇتىي تغير | |
| የአተ | اولادکی اولادموت کی جینڈی ہے | * |
| የአጥ | يانچ ير تغيير | -×- |
| የ ለቦ | حقیقی بالغ کون ہے؟ | ** |
| 710 | فعاصة كلام | * |
| 17 0.0 | ایک بہت بوی غلطی کا ازالہ | * |
| | _ | |
| | 4608 | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |





دكان درددل

دارالافتاء والارشاد

رات ون ہے اک ججوم طالبان درو ول یہ رشیدی آستانہ ہے دکان درد دل تھانہ و گنگوہ سے آیا یہاں یہ درد دل مفتى أعظم كا مسكن لامكان درد دل ہو طلب جس کو وہ یاتا ہے بہال سے درد ول ذرہ ذرہ سے یہاں کا اک جہان ورو ول ہے جہادی آستال بھی یہ سرائے درو ول مفتی بھی یاں کے ہیں دیکھو عاشقان ورد ول ہر طرف سے آرہے ہیں طالبان ورو ول یه رشیدی آه و زاری یا اذان درد دل به بوا ثابت بوقت امتحان درد دل درو دل سمجھے تھے جس کو تھا گمان درد دل لوگ سمجھے ذکر خالی کو حصول درو دل جکہ ہے ترک معاصی ہی نشان درو دل خوف ہے ترک تصیحت ہے کہاں یہ درد دل شخ کی عبیہ ہی ہے گلتان ورد ول دور بیٹے ہو تنہیں کیے وکھائیں درو ول درو ول لو بن گها آخر زبان درو دل دور ہی سے جاہتے ہو گر نشاط درد دل وعظ "ورو ول" ہے لی لو ارمغان درد ول (جامع)



وعظ

درږدل

(۱۲رزی القعدة <u>۱۳۱۹ھ</u>)

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعود بالله من شرور انفسنا ومن سيأت اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله صلى الله تعالى عليه وعلى اله وصحبه اجمعين.

اما بعد فاعود بالله من الشيطن الرجيم، بسم الله الرحمن الرحيم.

﴿ وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴾ (٥١-٥٥)

مجھےلوگوں کو اللہ تعالی کی نافر ہانیوں کے بچانے اور انہیں دنیا و آخرت کی جہنم سے نکالنے کی بہت فکر رہتی ہے اور بیفکر روز برهنی ہی چی جارہی ہے۔ اس بارے میں بہت کہتا رہتا ہوں آج اس کی بچھےوضا حت کرنا چاہتا ہوں۔اللہ تعالی اپنی رحت سے ضروری با تمی کہلوا دیں اور ان پڑمل کرنے کی توفیق عطاء فرمادیں۔ میں نے بیان کے شروع میں جوآیت پڑھی ہے وہ ای مناسبت سے ہے، اللہ تعالی اسپے رسول صلی القدعلیہ وسلم سے ارشاد فرمارہے ہیں:

وذکو۔''آپ نصیحت کریں۔'' نصیحت کے لغوی معنی ہیں کسی کے ساتھ خلوص اور ہمدردی کا تعلق قائم کرنا۔حاصل اس کا یہ ہے:

- نصیحت کرنے والا دوسروں کو حقیر اور ذیل نہ سمجھے کسی کی تذلیل و تحقیر مقصود نہ ہو، اس کے قلب میں عجب و کبرکا مرض نہ ہواللہ کے ہندوں کو خلوص کے ساتھ ہدردی کے ساتھ میدردی کے ساتھ ساتھ ہدردی کے ساتھ ساتھ ہدردی کے ساتھ ساتھ کے ساتھ سے بھاتھ کے ساتھ سے بھاتھ کے ساتھ سے بھاتھ کے ساتھ سے بھاتھ کے ساتھ کے
- السیحت کرنے والا اپنفس کو بھی مخاطبین میں شال سمجھے۔ بھرائد تعالی میرا بید معمول ہے کہ جب میں کی کو فیصحت کرتا ہوں تو بی تصور کرتا ہوں کہ میں نے اپنفس کو نکال کر سامنے بھیا ہوا ہے جس طرح دوسرے سامنے ہیں میرا نفس بھی میرے سامنے ہے۔ دوسروں کو جو خطاب کرتا ہوں خور کو بھی کرتا ہوں۔ مخاطبین میں میں بھی واضل ہوں اور پھر بیان سے پہلے بھی اور بیان کے بعد بھی بیری اسہ کرتا رہتا ہوں کہ تو دوسروں کو بتارہا ہے خود اس پر کتنا عمل ہے؟ اللہ تعالی تو فیق عطاء فر مادیتے ہوں کہ تو دوسروں کو بتارہا ہے خود اس پر کتنا عمل ہے؟ اللہ تعالی تو فیق عطاء فر مادیتے ہیں۔
- 🗗 یہ خیال نہ آئے کہ میں تو بہت بڑا داعظ ہوگیا، میرے دعظ ونصیحت کا لوگوں پر بہت اثر ہوتا ہے، ایسے موقع پر بیسو چنا چاہئے کہ میر اللہ مجھ سے کام لے رہا ہے۔
- 🕜 نفیحت کا صحح طریقہ یہ ہے کہ بہتر ہے بہتر انداز اختیار کیا جائے۔ اگر غلط طریقہ اختیار کیا گیا تو دہ قبیحت نہیں۔

نفيحت كالتيح طريقه:

نصیحت کا صیح طریقہ وہی ہے جو اللہ ادر اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ پہلے زبان سے نرمی ہے کہیں اس کا اثر نہ ہوتو ڈانٹ کر تختی ہے کہیں اس کا بھی اثر نہ ہوتو ایک تھیٹر لگائیں دونہ لگائیں اس کا بھی اثر نہ ہوتو دولگائیں اور اگر تھیٹر
لگانے کا اثر نہ ہوتو پھر کلاشکوف وہ بھی کارگر نہ ہوتو پھر چہل میلا وہ بھی کام نہ کرے تو

بمبار طیارہ ۔ اللہ تعالیٰ نے ترتیب بتائی ہے اس ترتیب ہے کام کریں، ہمیشہ نری کام
نہیں کرتی ۔ اصل مقصد تو دنیا ہے تی و بحور اور فتنہ و نساو کو تم کرنا ہے اور بیکام تحق کے
سوا نامکن ہے۔ قرآن مجید میں صدود و قصاص کے احکام ہیں کہ فلاں جرم کی بیسرا
فلال کی بیسرا اگر ہمیشہ نری ہی ہے لوگوں کو راہ راست پر لانامکن ہوتا تو مدکس پر
جاری ہوگی؟

اگر صرف زبانی تبلغ بی کے ذریعہ دنیا سے فسق و فجور ختم ہوجانے کا کوئی امکان ہوتا تو اللہ تعالی نے قرآن مجید میں چور کی سرا اللہ تعالی نے قاتل کے لئے تصاص کی سرا قرآن مجید میں کیوں بتائی؟ اللہ تعالی نے ڈاکوئ کی سرا قرآن مجید میں کیوں بتائی؟ اللہ تعالی نے ڈاکوئ کی سرا قرآن مجید میں کیوں بتائی؟ قرآن میں بھی، احادیث میں بھی مدود وقصاص کے جننے بائی، قرآن میں سارے کے سارے باب ختم ہوجائیں گے۔ پوری قوت خرج کے بغیر دنیا بعد برائیوں کا خاتمہ نیس کیا جاسکتا۔ ای لئے لوگوں کو اللہ تعالی کی نافر مانیوں سے ردینے کے لئے پوری قوت خرج کرنا فرض ہے اور اس فرض کو اواء کرنے میں غفلت کرنے ہیں۔ کرنے بر بہت خت عذاب کی وعید ہے، اللہ تعالی فرماتے ہیں:

﴿ وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيْبَنَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً ؟ وَاغْلَمُوْا أَنَّ اللَّهَ شَدِيْدُ الْعَقَابِ ۞ (٨-٥٠)

کتنی زبردست تعبیہ ہے فرمایا کہ جو لوگ اللہ کی نافرمانیاں نبیس چھوڑتے دوسروں نے اگر زبردی ہاتھ پکڑ کر ان کی ٹھکائی لگا لگا کر اللہ کی نافرمانیاں نہیں چیئروائیں تو:

﴿ وَاتَّقُواْ فِتْنَةً لَّا تُصِيبُنَّ الَّذِينَ ظَلَمُواْ مِنْكُمْ خَاصَّةً ﴾

۔۔ مرف نافرمانوں پر ہی عذاب نہیں آئے گا جو روکتے نہیں وہ بھی ساتھ ہی رگڑے جائیں گے یہ برابر کے شریک ہیں،اورآ گے پھر تنبیے فرمادی.

﴿ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهُ شَدِّيدُ الْعِقَابِ ٥

تَنْزَحِمَكَ: ''لَیقین کرلو! لِقین کرلو! کَ الله کا عذاب بہت بخت عذاب ہے بہت بخت عذاب ہے۔''

نصیحت مومنین کوفائدہ دیتی ہے:

مل نے شروع میں جو آیت پڑھی ہاں کے آخر میں ہے:

(فَإِنَّ الدِّكُرى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ١٥٠ (١٥ - ٥٥)

یہ بات بیتنی ہے، کی ہے، بلاشک وشہد ہے کہ نفیحت مؤسنین کو فائدہ دیتی ہے۔ پہلا بھی یہ بات سوچنے کی ہے کہ اگر سب مؤسنین کو صرف نرمی ہے بیننے فائدہ دیتی تو ساری دیلا پر اسلامی حکومت ہوجاتی معصیت تو کہیں بھی نہ رہتی۔

مومنین کی قشمیں:

نھیحت سے مؤمنین کو فائدہ کیے ہوتا ہے اس بارے میں پیمجھ لیس کے مؤمنین کی تین قسمیں ہیں:

بهاقشم: پهلی

ان لوگوں کا حال یہ ہوتا ہے کہ اگر کوئی بات ان کے علم میں نہیں تھی یا غلاقہی سے
کوئی خطا ہوگئی اور کسی ووسرے نے اس پر انہیں نفیحت کی تو بہت خوثی سے قبول
کرتے ہیں اور نفیحت کرنے والے کو جزاک اللہ کہتے ہیں کہ اللہ کہتے جزائے خیر
دے تو نے مجھے اللہ کی ناراضی سے بچالیا، بہت خوش ہوتے ہیں اور نفیحت کرنے
والے کے احمال مند ہوتے ہیں، یہلوگ کا ال مؤمن ہوتے ہیں۔

وسری قشم:

یدائے کے مؤمنین نہیں ہیں گردل میں یہ فکر ہے کہ ہم مؤمن بن جائیں۔ یہ دوسرے درجہ کے مؤمنین ہیں، ان کا حال یہ ہوتا ہے کہ اگر انہیں کوئی تھیجت کرتا ہے تو طبعی طور پرنا گواری ہوتی ہے گر جیسے جیسے وقت گزرتا جاتا ہے کچھ کچھ ایمان کی طرف توجہ ہوتی جاتی ہے، وو چار بار تھیجت کی با تیں سنتے ہیں تو آئکھیں کھتی ہیں کہ واقعۃ بات تو کچی کہدرہا ہے اگرچہ نا گوار ہے گر ہے کچی بات، آ ہستہ آ ہستہ ان کو ہدایت ہوجاتی ہے۔ یہاں مؤمنین سے مراد وہ ہیں جو مؤمنین بنتا چاہتے ہیں ان کو پچھ نا گواری تو ہو بیتے ہیں ان کو پچھ نا گواری تو ہو بیتے قرآن مجید کے شروع ہیں فرمانا:

﴿ هُدًى لِّلْمُتَّفِيْنَ ۞ ﴾ (٢-٢)

یر آن مجیدان اُوگوں کے لئے مدایت ہے جو متعین بنا چاہتے ہیں لینی جو متی بنا چاہتے ہیں لینی جو متی بنا چاہے گا است ہوائے گی اللہ کی نافر مانیاں جھوٹ جائیں گی۔مثال کے طور پر واکٹر کی کو رواء دیتا ہے، کی کو انجیشن لگا تا ہے، کی کا آپریشن کرتا ہے تو طبعی نا گواری تو ہوتی ہے گراس کے باوجود مریض بھی اور اس کے رشتہ دار بھی عقلی طور پر خوش ہوتے ہیں کہ جو چاہیں آپریشن کریں کاٹ چھانٹ کریں، ڈاکٹر کو فیس بھی دیتے ہیں، شکر یہ بھی اواء کرتے ہیں، آگے بیچھے مرے جارہے ہیں، ڈاکٹر کو مدایا بھی دیتے ہیں، شکر یہ بھی اواء کرتے ہیں اس لئے کہ مریض تندرست ہوجائے گا۔ یہاں ایک ہیں بہت تعریف کرتے ہیں اس لئے کہ مریض تندرست ہوجائے گا۔ یہاں ایک بات یہ سوچیں کہ جس طرح ڈاکٹر کے لئے علاج کی مختلف صورتیں ہیں بھی دواء، بھی انگشن اور بھی آپریشن وہ جب جس کی ضرورت جھتا ہے اس کے مطابق علاج کرتا ہے، لوگ ڈاکٹر پرکوئی اعتراض نہیں کرتے کہا ہے کہا تن رکا دیے، آئی چیر پھاڑ کردی ہے باوگ ڈاکٹر پرکوئی اعتراض نہیں کرتے کہا ہے کہا من دیا وآخرت کی بربادی سے بلکہ بہت خوشی ہے سب پکھ کرواتے ہیں۔ گیں کو غالم دنیا وآخرت کی بربادی سے بلکہ بہت خوشی ہے سب بہتی کرواتے ہیں۔ گی کی عالم دنیا وآخرت کی بربادی سے بلکہ بہت خوشی سے سب بہت تا ہے۔ اس کے مطابق علی کروئی عالم دنیا وآخرت کی بربادی سے بلکہ بہت خوشی سے سب بہت تا ہے۔ اس کے مطابق علی کروئی عالم دنیا وآخرت کی بربادی سے بلکہ بہت خوشی سے سب بہت خوشی ہے۔ اس کے مطابق علی کروئی عالم دنیا وآخرت کی بربادی سے بیات

بچانے کے لئے کسی مصلحت سے دینی انجکشن لگادے یا آپریشن کردے کہ اس کا د ماغ فیک ہوجائے تو لوگ کہتے ہیں کہ بڑا سخت ہے جبکہ اللہ تعالی فرمارہ ہیں کہ اللہ کی نافر مانیاں چھڑانے کے لئے کوڑے لگاؤ اللہ کے وشنوں کوآل کرد۔

تيسرى قتم:

تیسری قتم کے مؤمنین وہ ہیں کہ جنہوں نے یہ طے کر رکھا ہے کہ انہیں اللہ کے بندے بنا ہی نہیں، انہیں زبانی نفیحت فائدہ نہیں ویتی اس لئے انہیں درست کرنے کا طریقتہ بدارشاد فر مایا:

﴿ فَاتِلُوا ، اقتلوا ، قاتلوا ، اقتلوا ، قاتلوا ، اقتلوا ﴾

قتل کرکر کے کرکر کے اللہ کی زمین پراللہ کی حکومت قائم کرو بہیں کرو گے تو تم برابر کے مجرم تلم و گے ،عذاب میں ان کے ساتھ تم بھی پسو گے۔

جهاد کی اہمیت:

ایک بارکوئی ناجنس مولوی صاحب بیلس بیس آگئے اور بے مقصد کچھ آیات کی تغییر پوچھنے گئے، بیس نے کہا کہ الاهم فالاهم کی رعایت رکھنا ضروری ہے یہ قانون شری بھی ہے اور عقل بھی کہ جوکام جتنا اہم ہووہ پہلے کیا جائے اگر اس کی وجہ سے غیر اہم کام رہ بھی جائے تو کوئی بات نہیں اہم کام پہلے کرنا چاہئے۔ بیس نے کہا کہ قرآن مجید کے چار پانچ الفاظ ایسے ہیں کہ ہم ان کی تغییر سے ابھی فارغ نہیں ہوئے، وہ الفاظ ایہ بین

﴿ اقتلوا، قاتلوا، يقتلون، يقتلون، يقاتلون ﴾

ابھی ان کی تغییر سے فارغ نہیں ہوئے جب امریکا، ایران، روس، ہندوستان بلکسراری دنیا پر اسلام کی حکومت قائم ہوجائے گی قو ہم ان الفاظ کی تغییر سے ذرا فارخ ہوج کیں گے چھرآپ آئیں میں آپ کوان آیات کی تغییر پڑھاؤں گا جوآپ ہو چھر ہے ہیں، اگر جلدی حل کرنا چاہتے ہیں قو جاکر ایک چلہ محاذ پر لگاؤ وہاں سارے مسئلے حل ہوجائیں گی کوئی باتی نہیں رہے گی۔

من این علم و فراست با پرکا ہی نمی گیرم

کہ از تینے وہ بر بگانہ سازو مرد غازی را

بغیر نرخ این کالا بگیری سودمند افتد

بغیر نرخ این کالا بگیری سودمند افتد

بغیر نرخ این کالا بگیری سودمند اوقد

مؤمن دیوانہ وہ اوراک را

مؤمن دیوانہ تی کے موض بھی لینے کو تیار نہیں۔ پوری دنیا کی دولت

الے گھاس کی خشک پی کے موض بھی لینے کو تیار نہیں۔ پوری دنیا کی دولت

لائ کر ضرب وحرب کے اس نزائے کو حاصل کر لے تو بھی سوداستا ہے۔

مؤمن دیوانہ کی ضرب سے ان مولو یوں کو بھی سبق پڑھادو جو برغم خودامام

تنبيهات كي وجوه:

رازی ہے ہیٹھے ہیں۔''

میں جواللہ تعالیٰ کی نافر مانیاں اور بعناوتیں چھوڑ نے چھڑانے پر اتنا زور دیتا ہوں اور اس پرمسلسل تنبیبہات کرتا رہتا ہوں، جن میں بھی کچھ بخت الفاظ بھی کہہ جاتا ہوں اس کی وجوہ یہ ہیں:

چھے کی سے طبع یا خوف نہیں:

بحداللہ تعالی جھے کی سے نہ تو کسی تم کی کوئی طبع ہے اور نہ کی قتم کا کوئی خوف،
کسی سے کوئی غرض نہیں اس لئے کسی کی تا گواری کی پروا کئے بغیر دین کی صحیح حیے بات
کہد دیتا ہوں، میں سو چتا ہوں کہ اللہ تعالی نے محض اپنے فضل دکرم سے جو بیاتن بڑی وولت عطاء فر مائی ہے آگر میں اس سے اللہ کی راہ میں کام نہ لوں، امت کو دنیا و آخرت کی جہنم سے بچانے کی کوشش نہ کروں تو بروز قیامت اللہ تعالیٰ کے سامنے کیا جواب

دول گا، اس ہے جمعے بہت ذر لگتا ہے اس کئے نری گری ہر ممکن طریقہ ہے اللہ کے نفذاب ہے بچانے کی کوشش کرتا ہول، نسیحت کرنے ہیں جس کی اپنی کوئی غرض ند ہو جسم کی طع اور خوف ہے آزاد ہو وہ مصلحت اندلیثی کی بجائے امت کی فلاح و بہبود کو مذافر رکھتا ہے، اگر ڈاکٹر بوقت ضرورت بھی اُنجشن ندلگائے تو وہ خائن ہے، ڈاکٹر نہیں، ڈاکو ہے، مریض کا خیر خواہ نہیں بلکہ دوست کی صورت میں دیشن ہے اور خقلند مریض اپنے فائد ہے کے لئے کر دی گوئی بھی بہت خوشی ہے نگل جاتا ہے۔
مریض اپنے فائد ہے کے لئے کر دی گوئی بھی بہت خوشی ہے نگل جاتا ہے۔
مریض اپنے فائد ہے کہ خالی بود از غرض عرض

جے صحت کی قدر ہووہ کڑوی دواء سے نہیں گھبرا تا۔ ۔ چہ خوش گفت یک روز دارو فروش شفا بایدت داروۓ تلخ نوش عقلند مریض انجکشن بلکہ آپریشن پر بھی خوش بھی ہوتا ہے ڈاکٹر کاشکریہ بھی اداء کرتا ہے ادرا سے بہت بھاری فیس بھی دیتا ہے۔

🛈 غيرت رينيه:

میرے اللہ نے اپنی رحمت سے مجھے ایسی غیرت عطاء فرمائی ہے کہ میں اپنے اللہ کی نافر مانیاں اور بعناوتیں و یکھنے سننے کا تحل نہیں کرسکتا منانے کے لئے بہتاب ہوجاتا ہوں، اللہ کرے کہ سب مسلمانوں کو ایسی غیرت مل جائے جن کے ول میں غیرت ہوتی ہے ان کے پچھے قصے من لیجے!

. غيرت والول كے قصے:

🛈 حضرت الى بن كعب رضى الله تعالى عنه:

حضرت الى بن كعب رضى القد تعالى عنه بهت بزے صحابى بيں، قرآن مجيد ك

علوم میں آپ کا درجہ بہت بلند ہے، حدیث میں ہے کہ رسول الشعلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ جریل نے جو سے کہا ہے کہ الی قرآن پڑھیں اور آپ سنیں، ایک روایت میں یوں ہے کہ آپ پڑھیں اور الیہ سنیں، جب رسول الشعلی الله علیہ وسلم نے حضرت ابی رضی الله تعالی عنہ کواب بارے میں بتایا تو انہوں نے عرض کیا کہ میر سے اللہ نے میرانام لیا ہے؟ رسول الشعلی الله علیہ وسلم نے فرمایا: بال! الله نے تیرانام لیا ہے، یہ میں کرخوش ہے آ نسو بہ پڑے کہ میر سے اللہ نے میرانام لیا ہے، یہ ہیں مصرت ابی بن من کرخوش ہے آ نسو بہ پڑے کہ میر سے اللہ نے میرانام لیا ہے، یہ ہیں مصرت ابی بن کعب رضی اللہ تعالی عنہ ان سے کس نے کہا کہ نوفل بکالی کہتا ہے کہ قرآن مجید میں حضرت مولی علیہ السلام خصرت مولی علیہ السلام خصرت مولی علیہ السلام خصرت اللہ کے رسول نہیں سے بلکہ وہ کوئی اور مولی تھا، علیہ السلام کے باس گئے سے تھے تو یہ مولی اللہ کے رسول نہیں سے بلکہ وہ کوئی اور مولی تھا، حضرت الی بن کعب رضی اللہ تعالی عنہ کا جواب سے افرایا:

(كذب عدوالله) (بحارى)

تَنْ يَحْمَدُ "الله ك رسمن في جموث بولاء"

و کھے کتنا سخت لفظ کہا، پہلی بات تو یہ کرنی ہے کہتے کہ اس سے فلطی ہوئی ہے، کیکن اس کی بجائے فرمایا: جموف بولا ہے۔ جموف اور فلطی بیل بہت فرق ہے، فلطی تو انسان ہے بے شعوری بیل بھی ہوجاتی ہے فلطی کو جموف نہیں کہا جاتا لیکن فیرت کام کروا رہی ہے فیرت، حضرت الی بن کعب رضی اللہ تعالی عنہ کی فیرت برواشت نہیں کرکی کہ بغیر علم کے کوئی فض ایسی بات کہدد، جابل نے کول کمی، فلطی کے بارے بیل فرمارہ بیل کہ جموث بولا ہے، آگے کا لفظ اور سنے! فرمایا: عدو اللّه "اللہ کا وشن" اللہ کا وشن" اللہ کا وشن" اللہ کا وشن ہوتا ہے؟ جس سے فلطی ہوگئی وہ معلمان تھا اس کو کہدر ہے ہیں اللہ کا وشن، اللہ کے دشن نے جموث بولا ہے۔

مزيد چند قصے حفرب ميم الامة رحمد الله تا الى سے س كرتا مول -

ا أيك طوائف كى پٹائى:

فرمایا: که مولوی رخم البی صاحب منظوری نهایت نیک اور ساده بزرگ تنے مگر نهایت عی جوشیلے اور جذبہ حق قلب میں تھا۔ ایسے بزرگوں کے اکثر ونیا دار لوگ نمالف ہوا بی کرتے ہیں۔

ائل محلّد نے محض بنیت شرارت بیر حرکت کی کہ جس مجد میں آپ نماز پڑھتے تھے
اس کے اور ان کے مکان کے درمیانی حصہ میں کہ بمزلہ ساحت (میدان) مشتر کہ
کے قا، ناج کی تجویز کی، ایک طوائف کو بلایا گیا، شامیانہ لگایا گیا، غرض خوب شاٹھ
کے ساتھ انظام ہو کر مجلس رقص شروع ہوگئی، مولوی صاحب مکان سے عشاء کی نماز
کے لئے مجد کو چلے، داستہ میں بیطوفان بے تمیزی، خیر چلے تو گئے خاموش گرنماز پڑھ
کر جو واپسی ہوئی پھر وہی خرافات موجود، برداشت نہ کرسکے۔ ماشاء اللہ! ہمت اور
جرائت دیکھئے کہ نکال جوتا اور لے ہاتھ میں، بھری مجلس کے اندر نیج میں پہنی کراس
عورت کے سر پر بجانا شروع کردیا، اہل محلّہ میں شرارت سی مگر علم اور بزرگ کا ادب
ایسا عالب ہوا کہ بولا کوئی کچھ نیس، رقص وسرورسب بند ہوگیا، اب لوگوں نے جن کی
ایسا عالب ہوا کہ بولا کوئی کچھ نیس، رقص وسرورسب بند ہوگیا، اب لوگوں نے جن کی

''تو مولوی صاحب پر دعویٰ کر اور روپیہ ہم خرج کریں گے شہادتیں ہم دیں گے۔''

اس عورت نے کہا:

"میں دعویٰ کرسکتی ہوں، روپید میرے پاس بھی ہے، شہاد تیس تم دے سکتے ہوگر ایک مانع موجود ہے دویہ کہ بھیان کے اس فعل سے یہ یقین ہوگیا کہ کہ میداللہ والا ہے اور اس کے قلب میں ذرہ برابر دنیا کا شائر نہیں، اگر اس میں ذرہ بھا کہ دنیا کا لگا کہ ہوتا تو بھے پر اس کا ہاتھ اٹھ نیس سکتا تھا، تو اس

كامقابله الله تعالى كامقابله ع جس كى مجھ ميں ہمت نہيں . ''

کیسی عجیب بات کمی، یہ اتن سمجھ ایمان ہی کی برکت ہے، لوگ ایسے آ وارہ لوگول کو حقیر سمجھتے ہیں مگر ایمان والے میں کوئی نہ کوئی بات ضرور ہوتی ہے جو ایک وم اس کی کا مالیك وتی ہے۔

یہ کہدکر وہ عورت مولوی صاحب کے پاس پیٹی اورعرض کیا:

"میں گناہ گار ہوں، نابکار ہوں، میں اپنے اس پیٹر سے توبد کرتی ہوں، آپ میرا نکاح کی شریف آ دمی سے کرادیں تاکه آیندہ میری گزر کی صورت ہوجائے۔"

مولوی صاحب نے توبہ کرا کر کسی بھلے آ دمی کو تلاش کر کے نکاح پڑھادیا، بزرگوں کے جوتوں کی برکت نے برسوں کی معصیت اور کبائز سے ایک دم اللہ تعالیٰ کی طرف متوجہ کردیا۔

(P) وجمى كاعلاج:

فرمایا کہ ایک ذاکر شاغل شخص یہاں پر مقیم تھے جو اکثر وساوس کی شکایت کیا کرتے تھے میں ان کی سلی کرویتا پھراس کا زور ہوتا اور میں سمجھا دیتا، یہی سلسلہ چل رہا تھا، ایک روز میرے پاس آئے اور کہنے گئے:

"اب توجی میں آتاہے کہ عیسائی ہوجاؤں۔"

میں نے ایک دھول رسید کی اور کہا:

''نالاُق! جا ابھی عیسائی ہوجا، اسلام کو ایسے بیہودہ اور ننگ اسلام کی ضرورت نہیں''

بس اٹھ کر چلے گئے، بس دھول نے اکسیر کا کام دیا، ایک دم وہ خیال دل ہے کافور ہوگیا، اس کے بعد پھر بھی وسوسہ تک نہیں آیا۔ مزاحاً فرمایا: اثر نەتھا شرعى تعزير كالثر تھا۔''

(کھون کے عاشق کا علاج:

فرمایا کدایک مخص کہیں باہر سے میرے پاس آیدود ایک گھون پر عاشق ہوگیا تھ، اس نے ایناواقعہ بیان کیا، میں نے تدبیر بتائی:

''نہ اس محلّہ میں جاؤنہ اسے دیکھو اور ضروری کام کی طرف مشغول رہا

كمنے لگا:

''میں تو اس کے یہاں ہے دورھ خریدا کرتا ہوں حالانکہ دودھ کی مجھے ضرورت نہیں اے ویکھنے کی وجہ سے خریدتا ہوں۔''

میں نے اس سے بھی منع کیا، کہا:

"پيتو ہوہي نہيں سکتا۔"

میں نے اسے ایک وحول رسید کی اور کہا:

'' نکل یہاں سے دور ہو، جب علاج نہیں کرتا تو مرض لے کر کیوں آیا؟''

وہ چلا گیا، اس کے بعد مجھے خیال ہوا کہ میں نے ایب کیوں کیا؟ غیر مخص تھ تعارف تک بھی ندھا مگراس وقت حق تعالی نے دل میں یمی ڈالا۔ تقریباً کوئی سال بھر کے بعد فلال مولوی صاحب ہے وہ تحض ملاء اس نے انہیں پہیان کر مصافحہ کیا اور یہاں کی خیریت معلوم کی، انہوں نے یو حیا:

"تم كون هو؟"

يه مجھ كئے، لوچھا:

"اب إس مرض كاكيا حال هي؟"

مجھے دعاکمی دے کرکہا:

''ان کی دھول نے سب کام بنادیا، دھول کے لگنے کے ساتھ ہی بج ئے عشق دمجت اور رغبت کے ایک دم اس کی طرف سے نفرت پیدا ہوگئ ۔'' اللہ تعالیٰ نے اپنی رحمت ہے مجھے ہے بھی کچھ اس قشم کی خدمات کی ہیں، مثلاً

انوارالرشید میں ڈاکو کی پنائی اوراس کے تائب ہونے کا قصہ پڑھا ہوگا۔

ورودل:

میرے اللہ نے مجھے درد ویا ہے درد، لوگول کی نافر مانیاں دیکھ کرئ کر مجھ سے صبرتہیں ہوتا۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے بارے میں اللہ تعالی فرماتے ہیں کہ کہیں آپ امت کے غم میں اپنی جان ہی نہ دے دیں:

﴿ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفُسَكَ الَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِيْنَ ﴾ (٢٠-٣)

دوسری جگه فرمایا

﴿ فَلَعَلَّكَ بَا حِعٌ نَّفُسَكَ عَلَى اثَارِ هِمُ إِنْ لَّمُ يُؤْمِنُوا بِهِلْذَا الْحَدِيْثِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالِي اللَّهُ ال

اوگوں کی نافرہ نیاں دیکھ دیکھ کرآپ کو اتنا دکھ ہوتا ہے کہ ایسے لگتا ہے آپ جان بی دے دیں گے۔ بیتو رسول انشسلی انقد علیہ وسلم کا مقام ہے۔ القد کے جس بندے کو اللہ سے محبت ہوگی تو لاز مااس کی مخلوق سے بھی محبت ہوگی۔ مخلوق کی تابئی پر اس کے دل میں دردا نصتے ہیں۔

> ۔ یہ درد اے بدگمال کچھ دیکھنے کی چیز گر ہوتی میں رکھ ویتا ترے آگے کیلجا چیر کر اپنا

اس شعر میں پہلامصراع اصول کے مطابق یوں ہونا جائے۔ گے یہ دردا ہے بدگماں کچھ دیکھنے کی چیز گر ہوتا لیکن شاعر سے یوں ہی منقول ہے''ہوتی''اس لئے میں بھی''ہوتی'' ہی پڑھتا

ہول_

یہ درو اے بدگماں کچھ ویکھنے کی چیز گر ہوتی میں رکھ دیتا ترے آگے کلیجا چیر کر اپنا میں اپنے کلیجے کے درد آپ لوگوں کو کیسے دکھاؤں۔

۔ زباں بے دل ہے اور دل بے زباں ہے ہائے مجبوری بیاں میں کس طرح وہ آئے جو دل پر گزرتی ہے گزرتی ہے ہماری جان پر جو کچھ گزرتی ہے کسی کو کیا خبر دل پر ہمارے کیا گزرتی ہے اللہ تعالیٰ نے میزے دل میں اصلاح امت کا وردر کھ دیا وہ ورد مجھے کسی کروٹ

المدسون سے بیرے وں میں معنوں مسال موتا کہ مسلمان جہنم میں کودت سے لیے چین نہیں لینے دیتا۔ مجھ سے میہ برداشت نہیں ہوتا کہ مسلمان جہنم میں کودتے سےلے حائیں اور میں آرام کی نیندسوتار ہوں۔

> ۔ مرا دردیست اندر دل اگر گویم زبان سوزد وگردم درکشم ترسم که مغز استخوان سوزد

۔ نماند امروز کس غم خوار این بیار سودائی فغان از بے کسی فریاد از بیداد تنہائی بڑے تو کوئی تسلی دینے دالے رہے نہیں اور چھوٹوں کا حال میہ ہے کہ وہ میرے چیخے چلانے کی پروا بی نہیں کر ''، ان کے کان میں، دل میں میری بات اتر تی بی نہیں۔ سوچتے بی نہیں کہ یہ کیول چلارہا ہے، یہ پاگل تھوڑا ہی ہے کیہ ہوگیہ کیول

-4

چلار ہاہے اتنی زحت نہیں فرماتے۔

سیں رونا اپنا روتا ہوں تو وہ ہنس ہنس کے سنتے ہیں انہیں دل کی گئی اک دل گئی معلوم ہوتی ہے کہوں تو کیا کہوں او، کس سے کہوں؟

م حکیم ورد من ردن و من وارفته جیرانم که نتوان پیش کس بردن چنین حال پریشنم مریضم بتلائے ول کجا جویم ووائے ول کجا یابم شفائے ول زعامتہائے پنہانم پریشان است قال من که من حال پریشانم

آ خری مصراع سے پہلام صراع بھول رہا ہوں، بھولنے کی وجہ بھی ای حالت کا اثر ہے جوآ خری مصراع میں بتائی ہے۔

وع بريثان است قال من كدمن حال بريثانم

۔ کشتی هکستگانیم اے بادشرطہ برخیز باشد کہ بازبنیم آن یار آشنا را کتاب میں تو لکھا ہوا ہے کشتی نیفستگان گربعض کا خیال ہے کہ یہ نیفستگان تقحیف ہوگئی ہے، میچ یوں ہے کشتی هکستگان۔ حقیقت کچھ بھی ہو میرا حال تو بھی

> ب تحقی هکستگانیم اے بادشرطہ برخیز باشد کہ بازینیم آن یار آشنا را دل میرود زدشتم صاحبدلان خدارا دردا کہ راز پنبان خواہد شد آشکارا

عافظ بخود نہ پوشید این خرقہ سے آاود اے چیر باکدائمن معذور دارمارا

کیا کہوں فاری میں تو درد ظاہر کررہا ہوں گر نوگ تو بیجھتے ہی نہیں ہول گے کے کیا بول رہا ہوں، سبجھیں تو کچھے اثر بھی ہو۔ ترجمہ وتشریح میں وہ اثر نہیں ہوتا جو اصل کلام

میں ہوتا ہے۔

م گر مطرب حریفان این پاری بخواند در وجد و حالت آرد بیران پارمارا آن تلخش که صوفی ام النبائش خواند

اگر آ گے کا مصراع کہد دیا تو جھے کچڑ کریا تو پاگل خانے میں ڈال دیں گے یا کہیں جنگلوں میں چھوڑ آئیں گے بلکہ جنگل میں باندھ کر آ جائیں گے کہ واپس نہ آ جائے اس لئے وہ مصراع نہیں پڑھتا کیا کہوں، کینے تمجھا دُں؟اس موقع پر جھے قوال کا قصہ بادآ رہا ہے۔

ايك باركوني قوال ميشعر برُحد باتھا۔

ب درقلب نصیر الدین جز عشق نمی گنحد این طرفه تماشا بین که دریا بحباب اندر

نصیرالدین ایک بزرگ گزرے ہیں بہ شعران کا ہے،مطلب تو اس کا بہ ہے کہ نصیرالدین کے دل میں اللہ کے عشق کے سوا کوئی چیز نہیں ، انگی۔

ظ ۔ این طرفہ تماشا میں کے دریا بحباب اندر

یہ تماشا دیکھوکہ دریہ بلیلے کے اندرآگیہ بھیر الدین کا دل تو اتنا سا بلید ہے اللہ تعالی کے عشق کا دریا بلیلے میں آگیا۔ قوال نے بنب یہ شعر پڑھا تو ایک عامی شخص المجھلے کو دنے لگا، اے وجدآگی، کس نے بکڑ کر چرپی آرق قاری جات ہی نہیں اور اگر فاری پڑھا ہوتا تو بھی اس میں تو معرفت کی بہت او ٹی بات ہے جے بڑے برے بوے فاری پڑھا ہوتا تو بھی اس میں تو معرفت کی بہت او ٹی بات ہے جے بڑے برے بر

عارف بی مجھ سکتے ہیں تو کیا سمجھا؟ تو وہ جواب میں کہتا ہے ارے! سن نہیں رہے وہ کہدر ہا ہے کہ دریا میں بندر بہتا چلا کہدرہا ہے کہ دریا میں بہابندر، دریا میں بہابندر، کیا تماش ہے کہ دریا میں بندر بہتا چلا جارہا ہے۔ میں نے درد دل تو کہدویا فاری اشعار میں آپ تو سیجھ رہے ہوں گے کہ دریا میں بہا بندر، چلئے کچھ تو سمجھ ہی لیس گے دعاء کرتا ہوں اللہ کرے کہ مجھ جائیں۔

مصلح والدكى حيثيت ركھتا ہے:

﴿ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ اَهُلِكَ ۗ إِنَّهُ عَمْلٌ غَيْرُ صَالِح لَ ﴾ (١٠-٢٠)

کینے کو تو یہ تیرا بیٹا ہے مگر حقیقت میں تیرا بیٹانہیں اس کئے کہ یہ تو مسمان بنتا بی نہیں جاتا ہوتی ہے اہل ول بی نہیں جاتا ہوتی ہے اہل ول بی نہیں جاتا ہوتی ہے اہل ول ان سے ایک محبت کرتے ہیں جیسی اولاد ہے، ای لئے ان کو بنانے کی کوشش میں لگے رہتے ہیں اس کے لئے بھی تنبیبات بھی کرتے ہیں، ڈانٹے ہیں تا کہ ان بچوں کی اصلاح ہو جائے۔

دین تربیت کے لئے اولاد پرلاٹھی برساتے رہو:

رسول الته صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

﴿ لا توقع عنهم عصاك ادما و اخفهم في الله ﴾ (احمد) اولادكودين سكهاني اوردين دار بناني كي لئے ان پر لائمي برساتے رہواور انہیں اللہ کے معاملہ میں ڈراتے رہو۔ لاتر فغ ، لاٹھی پڑتی رہے اٹھ وَ مت۔

"اد با" کے معنی ہیں" وینی تربیت کے لئے۔" ادب میہ ہے کہ دیندار ہے، اپنی اولا دکواللہ کے بندے بنائیں۔

دوسری حدیث میں رسول التدصلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ کوڑا ایس حبگہ لڑکا ؤ کہ گھر والے دیکھتے رہیں (عبدالرزاق جبرانی کبیر سیولی)

اور فرمایا: القد تعالی اس بندے پر دحم فرماً میں جس نے اہل وعمیال کی ویتی تربیت کے لئے اپنے گھر میں کوڑ الٹکا یا (ابن عدی، منادی، سیوطی)

جب بچ گھر میں داخل ہوں تو سب سے پہلے کوڑے پر نظر پڑے، گھر میں آتے جاتے، کھیلتے کووتے کوڑا نظر آتا رہے۔ بدرسول الله صلی الله علیه وسلم کے احکام بتار ہا ہوں۔

الله برايمان بي تواحكام البييس عفلت كيول؟

میں یہ تنبیہ کرتار ہتا ہوں کہ دن میں دوبار، ایک بارش ایک بارشام بیر و چ کریں کہ اللہ اور اس کے رسول صلی اللہ عبیہ و کلم پر ایمان ہے یا نبیس و لیے تو سب جلدی ہے کہد دیں گے کہ بال ہال ہمارا تو ایمان بہت یکا ہے، ہم تو کچے مؤمن ہیں، تکراس کی کوئی کسوٹی، معیار، متھیاس الحرارة (تقره میٹر) بھی تو ہو۔ اگر التد اور اس کے رسول صلی التد علیہ وکلم پر یکا ایمان ہے تو چرانہوں نے جواحکام صادر فرمائے ہیں ان کی طرف توجہ ج تی طرف توجہ کیوں نہیں جاتی ؟ ایھی جو دو حدیثیں بتائی ہیں کیوان کی طرف توجہ ج تی ہے؟ آج کے مسلمان کا خیال ہے کہ حدیثیں گویا صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم کے لئے تھیں دوسروں کوان یکم کی ضرورت نہیں۔

میں نے یہاں ایک چھوٹا سا بچہ دیکھا جس کی شلوار نُخوٰں سے نینچ تھی چونکہ اس کے والدین خاص لوگوں میں سے ہیں اس لئے میں نے یہاں سے فون کروایا کہ آپ کے نیچے کی شلوار مخنوں سے نیچ تھی ایسے کیوں ہوا؟ جواب ملاکہ بچہ چھوٹا ہے الاسٹک کا ازار بندہے، کھیک جاتا ہے، شلوار نیچے کو ڈھلک جاتا ہے، شلوار نیچ کو ڈھلک جاتا ہے، شلوار کو آ دھی پنڈلی سے کاٹ علاج تو بہت آسان ہے بیچے کو بہاں جیجبیں میں اس کی شلوار کو آ دھی پنڈلی سے کاٹ دول گا چھر بھی بھی نہیں ڈھلک گی۔ جھیجا بی نہیں، پچھ کرنا ہی نہیں تو ہزاروں آیات پڑھ لیس بوتا۔

حضرت نقمان عليه السلام كاارشاد ہے:

''والدکی ماراولاد کے لئے الی ہے جیسا کر بھیتی کے لئے یائی۔''(درمنشر)

پانی سے بھیتی میں کیسا نشوء ونماء پیدا ہوتا ہے۔ بید نفظ بھی مسیح کرلیں اکثر لوگ ''نشو ونما'' کہتے ہیں دونوں لفظوں کوالٹا کردیا مسیح لفظ یوں ہے:''نشوء ونماء'' نشوء میں نون کے پیش کوزبر سے اور نماء کے زبر کو پیش سے بدل ویا۔ بیسارے ہی الٹے ہیں یمی تو رونا رور ماہوں۔

ب بنے کیوں کر جو ہو سب کار الٹا ہم النے بات الٹی یار الٹا نشوء میں شین کے پیش کواور دونوں کے آخر ہے ہمزہ کوویے ہی اڑا دیا۔ فرمایا کہ اولاد پروالد کی مارکھتی کے لئے پانی جیسی ہے۔ آج کل تو یکی کہتے ہیں کنیس نہیں مارومت، مارومت، اس طرح تو بچسے نہیں رہے گا بیٹا بیٹا کہتے رہو۔

ابا کی شمیں:

ایک سفریں اپنے ایک استاذ محترم کے ساتھ تھا، استاذ صاحب کے صاحب اللہ استاذ صاحب کے صاحب اللہ علیہ میں ساتھ تھے وہ میرے شاگر دیتھے۔ رات ایک جگھ تھیرے تو سونے سے پہلے استاذ رحمہ اللہ تعالی نے مجھ سے فرمایا کہ بیشج کو اٹھتا نہیں، اسے نیج کو اٹھا کہ ہے دم ہے، ہم اسے بستر سے اٹھا کر پکڑ کرسیدھا کھڑا کردیتے ہیں پھر گر جاتا ہے،

کان کھینچتے ہیں جھبجھوڑتے ہیں یہ پھر بھی نہیں اٹھتا، صبح اس کا اٹھانا آپ کے ذمہ ہے۔ میں نے کہا بہت اچھا۔ دل بی دل میں خوش ہور ہاتھا کہ سجان الند! اور کیا جاہئے استاذ كى يەخدمت تو ميرے لئے بہت برى سعادت ب،التدتى لى نے ايى خدمات كے لئے تو مجھے پیدا فرمایا ہے۔ رات کوسونے ہے پہلے استاذ زادہ سے میں نے کہد دیا کہ صبح آب کواٹھانا حضرت نے میرے ذمدلگایا ہے، بس اتنی کی بات کہدری اور پچھنہیں کہا۔ فجر کی اڈان جیسے ہی ختم ہوئی تو میں نے استاذ زادے کو آ واز دی کچھز یاوہ زور ہے نہیں، بس ایسے جیسے جا گئے کوآ واز دی جاتی ہے، وہ ایک دم اٹھ کر بیٹھ گئے ، لیٹے لیٹے جواب نہیں دیا کہ اٹھ گیا ہوں بلکہ اٹھ کرسیدھے بیٹھ گئے ،حضرت استاذ نے مجھ ہے فرمایا آپ نے اس پر کیا پڑھ دیا؟ ہم کھنچتے ہیں،جھنجھوڑتے ہیں یہ پھر بھی نہیں اٹھتا، اٹھا کر کھڑا کرویتے ہیں چرگر جاتا ہے۔ میں نے عرض کیا انہی ہے دریافت فرمالیں کد کیا بڑھا ہے۔ دوسرے تو سمجھتے ہوں گے کہ شاید سورہ مزمل بڑھ دی یہ سورہ مریم پڑھ دی یا اور کوئی سورت پڑھ دی جیسے مدیند منورہ میں قاری جی صاحب تبجید میں بیدار ہونے کے لئے کوئی آیت بتارے تھے، پہنے بہقصہ من لیس پھر قاری صاحب کا قصد سناؤل گا۔ سونے سے بہلے جب میں نے استاذ زادے و بتادیا کہ میم آپ کواٹھانا میرے ذمہے تو وہ مات ان کے دل میں اتر گئی، وہ یہ بات دل میں لے کرسوئے کہ ایک ابا تو وہ ہے جومبح اللہ تا ہے توالیے کہ بیٹااٹھ جاؤ پھر بھی تھیکی دے گا، بھی بیٹا بیٹا کہہ کر تھنچے گا، کبھی آ ہتہ ہے بکڑ کر کھڑا کردی تو جلدی نہیں چھوڑے گا کہ اگر گر گیا تو چوٹ کلگی، ایک ابا تو وہ ہے۔ دوسرا ابا یہ ہے کداسے مجت بہت زیادہ ہے، نسبہ محبت کی وجہ سے برداشت نہیں کرسکتا کہ میرا بیارا بچہ جنبم میں عِلا جائے اس سے اگر میں نے اٹھنے میں در کی تو انجکشن بھی لگادے گا، سونے سے پہلے ہی دل میں انجکشن کا خوف لے کرسوئے معدوم نہیں رات کوئنٹی مار آ کارکھلی ہوگی۔

قارى صاحب كاقصه:

قاری صاحب کا قصہ بھی بتادوں،قصوں میں بڑی عبرت ہوتی ہے، مدیند منورہ میں ایک قاری صاحب بھی ہے جری مجلس میں بہت خوش ہوکر کہنے گے اس خیال میں ایک قاری صاحب جمھ سے بھری مجلس میں بہت خوش ہوکر کہنے گے اس خیال سے کہ میں آئیس شاہ ش دوں گا۔ ایک مولانا صاحب کا نام لے کر کہنے گے انہوں نے بتایا ہے کہ رات کو صونے سے پہلے اگر فلاں آیت پڑھ لی جائے تو تبجد کے وقت میں آنکھ کل جاتی ہوں نے کہا واہ قاری جی صاحب واہ! ذرا محبت سے لگاتا ہوں نا، واہ قاری جی سان اللہ! قاری صاحب بید بتائیں جب آپ کی شادی ہوئی تھی تو کی برگ سے وظیفہ ہو چھا تھا کہ ساری رات سوتے میں نہ گرر جائے وقت پر آنکھ کھل جائے اس وقت تو جائے کے لئے کی وظیفہ کی ضرورت نہ پڑی اور اللہ کے سامنے کھڑے ہوئے کے لئے وظیفے کے مامنے کھڑے ہوئے کے لئے وظیفے کی خرجہ جونے جی سامنے کھڑے ہوئے کے لئے وظیفے کی خرجہ جونے جی ہے۔

۔ اے کہ صبرت نیست از فرزندوزن مبر چون داری ز رب ذوالمنن اے مبرت نیست از فرزندوزن مبر چون داری ز رب ذوالمنن اے مبرت نیست از دنیائے دون مبر چون داری ز نعم الماہدون الله کی مجت کا درد بیرا سیجے کمی صاحب درد ہاں کا نسخہ لیجے۔ ۔ دردرون خود بیغوا درد را تاہین سبز و سرخ و زرد را اللہ کی مجت کا درد بیرا ہوجائے تو کام چلتا ہیر اللہ کی مجت کا درد بیدا ہوجائے تو کام چلتا ہے بغیر درد کے تو کوئی کام بھی نہیں چر نے سرے سے مید تصدحاضرین کو ساتا، پھر چلتا، جب بھی مجلس شروع ہوتی میں پھر شئے سرے سے مید تصدحاضرین کو ساتا، پھر سے سرے سے دوسے حاضرین کو ساتا، پھر

لگاتا ہی رہا، میں تفہرا ہوا بھی انہی کے مکان میں تھا جب بھی کچھ لوگ اکھنے ہوجاتے روزانہ پھر دہی واہ قاری تی صاحب واہ! پھر وہ مکہ مکرمہ بھی میرے ساتھ گئے تو وہاں بھی جب مجلس ہوتی میں بیقصہ چھیڑ دیتا خوب خوب پہپ لگائے تا کہ بات دل میں اثر جائے ، اس وقت جولوگ من رہے ہیں ان کے دل میں بھی اثر جائے ، اللہ تعالیٰ وردمجیت عطار فرماویں۔

معذورطالب علم كاآيريش:

جب میں دارالعلوم کورنگی میں پڑھاتا تھا تومیں نے وہاں دارالا قامۃ کے مختلف حصول کے لئے ایک ایک محرال مقرر کیا ہوا تھا کہ جو طالب علم بھی نماز میں ستی كرے اسے تعبيد كريں اگر چربھى نہ مانے تو مجھے بتائيں ۔ ايك طالب ملم كلكت كے یٹھان تھے، بہت موٹے بہت اونجے، گلگت کے لوگ تو د کھیے ہی ہوں کے کتنے موٹے تازے ہوتے ہیں وہ فجر کی نماز میں نہیں آتے تھے،اس جگہ کے گراں ہے۔ میں نے بوجھا وہ کیوں نہیں آتے؟ کہنے گئے کہ وہ معذور میں نیند بہت زیادہ آتی ب، انبیں متنیٰ کیا جائے بعد میں اٹھ کر راھ لیتے ہیں۔ میں نے کہا ایسے معذوروں كَ الْحِيرِ الله في مجھے بيدا فرمايا ہے، فجر كى تماز كے فوراً بعد ميں چيرى لے كر بينج كيا دوتین لگائیں، میں نے اینے خیال میں بقدر سرورت ہی آ پریش کیا تھا جو بحد اللہ تعالیٰ بہت کامیاب رہا، دوسری صبح کو وہاں کے طلبہ نے بتایا کدساری رات نہ تو بے خودسوئے نددوسرول كوسون ديا، رات كو باره بج كة ريب اله كرشور مياديا الفواهومج موكى، انہیں ہم نے پکڑ پکڑ کر بھایا کہ ابھی تو بارہ ہی بج ہیں سوجاؤ، انہیں لنا دیا تو بردی مشکل ہے آ دھا گھنشگز را پھر اٹھ کرشور میانا شروع کردیا کہ چلو چلوصبح ہوگئی، انہوں نے بتایا کدرات مجرانہوں نے نہ صرف کمرے والوں کو بلکہ دارالا قامة کے اس یورے حصہ میں کسی کو بھی سونے نہیں ویا پوری رات خود بھی جاگے دوسروں کو بھی جگایا۔ ایسے

محتا بعلاج،آپ لوگ تو يكي سوچ رج مول كے كديرا ظالم ب، برا ظالم ب

نسخداکسیر:

جب میرے بچے جامعداسلامید بینمنورہ میں پڑھتے تھاس دوران ایک بار نیچے پہال آئے ہوئے تھان کے ایک دوست بھی ان سے ملنے یہاں آ گئے۔ بچوں نے بتایا کہ بیر بہت ہی نیک اور شریف ہیں، وہ و کیھنے میں بھی ایسے ہی نظر آ رہے تھے گر جماعت سے نمازنہیں پڑھتے تھے میں نے بچوں سے پوچھار پر جماعت سے نماز کیوں نہیں پڑھتے؟ بچوں نے بتایا بیرمغلوب النوم ہیں،معذور ہیں بعد میں اٹھ کر رام لیتے ہیں، جماعت چھوڑتے ہیں نمازنہیں چھوڑتے اورمعذورے تو جماعت و بیے ہی معاف ہے۔ میں نے ان ہے بھی بھی کہا کہ ایسے معذوروں کے لئے تو اللہ تعالی نے جھے پیدا فرمایا ہے، میں نے صاحبزادے ہے کہا کہ انہیں بلا کرلاؤ، یہ میں آپ لوگوں کی زبان بول رما ہوں، صاحبزادہ تو آپ لوگ کہتے ہیں، آج کے مسلمان کا حال ہے ب كداي بيغ كوكتا ب صاحراده لعني خود "صاحب" اور بينا "فرادة" كيي نالائق ہیں، پہلے زمانے میں تو کہا کرتے تھے اسکین زادہ، غریب زادہ 'اب خود ہی صاحب ين مُكَّة خودالواور بيناالوكا پنما، الوكا پنماالو به بعي زياده فيتي موتاب، ايك قصه مشهور ب كوكى الوخريد في مياء شايدا يهى الوبين كاشوق موكا، دكاندار س قيمت معلوم کی، اس نے کہا یانچ رویے، پھرالو کے بیچے کی قیت معلوم کی تو دکا ندار نے کہا دس رویے، اس مخص نے تعجب سے یو جھا بچے کی قیت زیادہ کیوں؟ دکا ندار نے جواب دیا کہ بڑے میں تو ایک ہی خوٹی ہے کہ الو ہے اور بیج میں دوخوبیاں ہیں کہ الوجعی ہے اور الو کا پھا بھی اس کے اس کی قیت بھی دئی ہے۔ایے بیٹے کو صاحزادہ کہنے والول میں اتن بھی عقل نہیں بیاللہ تعالیٰ کی نافر مانیوں کا وبال ہے، میں نے انہیں بلا کر کہا بدآپ کے دوست کہتے ہیں کدآپ پر نیند بہت غالب رہتی ہے جماعت سے نماز

تہیں پڑھ پاتے، کہنے گے جی ہاں نیند بہت غالب رہتی ہے کچہ بھی ہوج نے اٹھانے کی گئی بن کوشش کرلیں میں اٹھ نہیں پاتا معذور ہوں، پہلے تو میں انہیں محبت سے سمجھا تا رہا کہ میرے پاس ایک ایک گوئی ہے کہ بس ایک بی بار کھانے سے بڑے کرے معذوروں کو فائدہ ہوگیا، بہت ہی اکسیر ہے بحرب، بحرب المجر ب، نیزدا کسیر کیمیا تا ہی بہت بی اجپمان خے ہے جس نے بھی تج ہا کیا تندرست ہوگیا، وہ بہت بی اشتیاق سے کہنے گئے کہ ہاں ہاں بجھے تو ضرور عن بیت فرمائیں، جب دیکھا کہ شوق خوب امجر رہا ہے تو دار العلوم کے گلتی طالب علم اور استاذ زادے کے قب ندر ہے، اگر میں نے کہا بس میہ ہو وائی سے انٹی اس اس کے ان کے لئے تو در اسان خی آپ کو بھی دے دوں گا،ان کے لئے تو بہت بی بتا ہی کافی ہوگیا اس کے بعد وہ بیشہ جاعت میں شریک ہونے کے لئے نماز قائم بتانا ہی کافی ہوگیا اس کے بعد وہ بیشہ جاعت میں شریک ہونے کے لئے نماز قائم بتانا ہی کافی ہوگیا اس کے بعد وہ بیشہ جاعت میں شریک ہونے کے لئے نماز قائم بتانا ہی کافی ہوگیا اس کے بعد وہ بیشہ جاعت میں شریک ہونے کے لئے نماز قائم بونے سے پہلے مبجد میں موجود ہوتے ہے۔

تنبيه الغافلين:

یہاں ایک مولوی صاحب پڑھاتے سے انہوں نے اپنی اہلیہ کو بھی لانے ک
اجازت چاہی ہیں نے اجازت دے دی، وہ اوپر کی منزل ہیں اپنی اہلیہ کو لے آئے،
چندروز بعد بی کہنے گئے کہ یہاں کے وعظ اور ماحول کا میری اہلیہ پر ایبا اثر ہوا کہ
یوں لگتا ہے کہ ہماری شادی اب ہوئی ہے، اچھی فضاء میں اچھی یا تیں س کروہ چندروز
میں ولیۃ اللہ بن گئیں، ان مولوی صاحب کے ایک دوست بھی یہاں پڑھتے سے
انہوں نے جب یہ بات کی تو وہ مجھ ہے کہنے گئے ان کی اہلیہ اتن جلدی سدھر گئیں
انہوں نے جب یہ بات کی تو وہ مجھ ہے کہنے گئے ان کی اہلیہ اتن جلدی سدھر گئیں
بھے بھی اجازت ویں میں بھی اپنی اہلیہ کو لے آئی اسے بھی ذرا مصالح لگ جائے،
میں نے انہیں بھی اجازت دے دی، دونوں اوپر رہنے گئے، جھے پا چلا کہ یدونوں
جب سے بیویوں کولائے ہیں تجد کی نماز نہیں پڑھتے، ڈاکٹر کا کام گرانی کرنا بھی ہ

اس لئے میں مگرانی بھی کرتا ہوں، میں نے ان سے پوچھا کہ آپ تہجد کول نہیں بردھتے؟ کہنے گئے نیند آ جاتی ہے، میں نے کہا پھواں کا علاج ہونا چاہئے، میں نے ان کے مکان کے درواز بے پررات کوسونے سے پہلے ایک چھڑی ان کو بتا کر لاکا دی، الی چھڑی کو میں ''سفیہ الغافلین'' کہتا ہوں، ''غافلوں کو سفیہ کرنے والی چھڑی' درواز ہے کے پاس''سنیہ الغافلین'' کہتا کا دی ساتھ ساتھ بتا بھی دیا کہ اگر تہدکی نماز نہیں پڑھی تو یہ' سنیہ الغافلین'' کھے کام کر ہے گی، تہجد کے وقت میں نے اوپر جاکر ''سنیم الغافلین'' کے پاس کھڑ ہے ہوکر آ واز دی کوئی بولانہیں تو میں ذرااحتیاط سے کہھا آ کے بڑھا تو دیکھا دونوں نماز پڑھ دے ہیں۔

میں نے ملکتی طالب علم کو مجورا مارا تھا کہ آپریشن کے سوااس کا کوئی علاج نہ تھا ورنہ میں کسی کو مارتانہیں صرف ڈرانے کیلئے پھے تنبیہات ہی کرتا ہول وہ بھی مزاحیہ انداز میں،اللہ تعالی کے فضل وکرم سے بیٹیٹی تنبیہ ہی کافی ہوجاتی ہے۔

ا بنی فکر دوسرول سے مقدم:

ایک جذب اور دردتو بیا اختا ہے جس پر جھے سے صبر نہیں ہوپاتا کہ میں اپنے کی بھائی کو جہنم میں جانتے ہوئے دیکھوں، اس سے بھی زیادہ بیک بیجھے اپنے اوپر رحم آتا ہے اپنی فکر ہوتی ہے کہ اگر میں دوسروں کو جہنم میں جانے سے نہیں روکوں گاتو خود بھی ان کے ساتھ ہی جہنم میں جاؤں گا کیونکہ دوسروں کو جہنم سے بچانے کی کوشش کرنا فرض ہے جو اس فرض کو اداء نہیں کرے گا گناہ چھڑوانے کی کوشش نہیں کرے گا برابر کا مجرم ہے، جہنم میں صرف گناہ گار ہی نہیں جائیں گے بلکہ جو لوگ گناہ چھڑوانے کی کوشش نہیں کرتے وہ بھی ساتھ ہی جائیں گے، اللہ تعالی فرماتے ہیں:

﴿ وَاتَّقُواْ فِتْنَةً لَا تُصِيبُنَّ الَّذِينَ ظَلَمُواْ مِنْكُمُ خَاصَّةً ۗ وَاعْلَمُواْ اَنَّ اللَّهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۞ ﴾ (٨-٢٥) ڈروا پیے عذاب ہے جو صرف گناہ گاروں پڑئیں آئے گا بلکہ جورو کے نہیں ان پر بھی آئے گا بلکہ جورو کے نہیں ان پر بھی آئے گا بلکہ جورو کے نہیں ان پر بھی آئے گا، یہ آن پر ایمان کو آن ہے بچھ گاؤ پیدا ہوجائے قرآن ہے جہت ہوجائے قرآن پر ایمان کا مل حاصل ہوجائے ، اللہ تعالیٰ کی کے فضل و کرم ہے ہم نے صرف نماز کی آئیتی اور حدیثیں نہیں پڑھیں اللہ تعالیٰ کی رحت ہے پورا قرآن پڑھا ہے پوری حدیثیں پڑھی ہیں حدیثوں کے ذخائر ہماری نظروں کے گزرے ہیں اس لئے کہیں ہی پہلے لیس کہ نماز پڑھ لی یا پڑھنے کا کہدویا ہی ہوگئے کے ہے جسلمان ، ارے ہیں کیا کہوں دردا نھتا ہے کہ آج کے مسلمان کو قرآن سے کوئی تعلق نہیں رہا، یا اللہ! قرآن سے تعلق پیدا فرمادے، اس قرآن کو تیرے قانون پڑھل قانون کی کوشش کریں اور ایک ایک قانون پڑھل کرنے کی کوشش کریں اور ایک ایک قانون پڑھل کرنے کی کوشش کریں۔

فرمایا ڈروالقد کے عذاب ہے جوصرف گناہگاروں پر بی نہیں ہوگا بلکہ جو دکیمہ رہے ہیں، کیکن روکتے نہیں کو نگے شیطان ہے ہوئے ہیں ان پر بھی ہوگا اس عذاب ہے وہ بھی نہیں نے سکیں گے، پھرآ کے فرمایا:

﴿ وَاعْلَمُوا آنَّ اللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ٥

اوریقین کرلو! بلاشک و شبہہ یہ بات کچی بھتی اور بھٹی ہے کہ القد تعالی بہت ہی سخت عذاب دینے والے ہیں معمولی ساعذاب نہیں ہوگا بہت بخت عذاب ہوگا۔ سخت عذاب دینے والے ہیں معمولی ساعذاب نہیں ہوگا بہت بخت عذاب ہوگا۔

علماء بنی اسرائیل پرلعنت کی وجه:

دوسری جگه فرمایا:

﴿ لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْ اِسْرَآءِ يُلَ عَلَى لِسَانِ دَاوْدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ * ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُواْ يَعْتَدُونَ ۞ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مَّنْكَرٍ فَعَلُوهُ * لَبِنْسَ مَا كَانُواْ يَفْعَلُونَ

تَنْ يَحْمَدُ ! ' بني اسرائيل مِن جولوگ كافريتھان برلعنت كي گئ تھي واؤداور عیسی ابن مریم علیماالسلام کی زبان ہے، بیلعنت اس سبب ہے ہوئی کہ انہوں نے تھم کی مخالفت کی اور حد ہے نکل گئے، جو برا کام انہوں نے کر رکھا تھا اس سے باز نہیں آتے تھے، واقعی ان کافعل بے شک برا تھا۔'' رسول النَّه سلی الله علیه وسلم نے ان علماء براعنت کی وجه بدیایان فرمائی که شروع میں تو انہوں نے لوگوں کوانڈ تعالٰی کی نافر مانیوں ہے بچانے کی کوشش کی مگر لوگوں نے گناہ نہیں چھوڑے پھر جائے تو بیتھا کہ یہ اپنی کوشش جاری رکھتے ایسے نافر مانوں کے ساتھ تعلقات ندر کھتے ، مبت کے رشتے ندر کھتے ، ان کی مجلسوں میں ایسے شامل ند ہوتے جیے کہ یہ بھائی بھائی ہیں، دوست دوست ہیں، ان سے براء ت کا اظہار کرتے۔ان علاء نے ان کے ساتھ اٹھنا بیٹھنا، کھانا پینا آنا جانا محبت کے رشتے قائم ر کھے اس پر اللہ تعالیٰ نے ان علاء پرلعنت کردی۔ایسی ایسی وعبیریں ہیں جنہیں س کر دوسروں کی فکر ہے بھی زیادہ جھے اپنی فکر ہوتی ہے کہ میرا کیا ہے گا؟ مجھ ہے یو جھا جائے گا كدتونے كيا كوشش كى توكيا جواب دول گا، يۇكر جھے چين نبيس لينے ديت، جے جہم سے بیخے کی فکر ہوتی ہے وہ دنیا کی بری سے بری تکلیف خندہ پیشانی سے برداشت كرليتا بـ

حضرت لقمان عليه السلام كي تفيحت:

الله تعالى فقرآن مجدي معزت لقمان عليه السلام كا تول نقل فرمايا ب: ﴿ يُبُنَى اَقِيرِ الصَّلُوةَ وَأَمُو بِالْمَعْرُوفِ وَأَنْهُ عَنِ الْمُنْكَوِ وَاصْبِرُ عَلَى مَا أَصَابَكَ * إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُودِ ﴿ ﴾

(17-71)

میرے بیٹے! نماز کو قائم کر، اچھی باتوں کا تھم دے، پھریہیں تک نہیں چھوڑا

آ گے فرماتے ہیں لوگوں کو اللہ کی نافر مانیوں سے روک پھر ساتھ ہی فرمایا ﴿ وَاصْبِهِ مُ عَلَى مُا أَصَالِكَ مَا

جب لوگوں سے اللہ کی نافر مانیاں چھڑاؤ کے تو لوگ تمہارے وٹمن ہوجائیں گے، نماز پڑھنے کا کہو گے تو کوئی دشن نہیں ہوگا اور اچھی اچھی باتیں کہتے رہو گے کوئی دشن نہیں ہوگا، سب بھائی بھائی، صوفی جی صوفی جی کہتے رہیں گے اور جہاں یہ کہا کہ بدمعاثی چھوڑ دو چھرد کھئے کتنے دشمن ہوتے ہیں، چھرتو اچھے بارسا بھی آپ کے دشمن ہوجائیں گے، اس لئے فرمایا:

﴿ وَاصْبِرْ عَلَى مَّا أَصَابَكَ * ﴾

گناہ چھڑانے میں لوگ تیرے دہمن ہوجائیں گے، تیری خالفت کریں گے، تجھے تکلیفیں پہنچائیں گئے جہران کے کہانڈ تکلیف پہنچائیں اس پرصبر کرنا اس لئے کہاللہ کے سامنے پیش ہونا ہے۔ جے اپنی آخرت کی گھر ہوتی ہے حساب و کتاب کی فکر ہوتی ہے۔ سیکے سامنے دنیا کی بری سے بری مصبتیں کچھنیں ہوتیں وہ برما کہتا ہے۔

۔ ادھر آو طالم ہنر آزمائیں تو تیر آزما ہم حبگر آزمائیں اےکی کی مخالفت کی کوئی پروانہیں ہوتی۔

۔ سارا جہاں ناراض ہو پروا نہ طاہتے منظر تو مرضی جانانہ جاہے بس اس نظر ہے دکھ کر تو کر یہ فیصلہ کیا کیا تو کرنا جاہئے کیا کیا نہ جاہیے

۔ اگر اک تو نہیں میرا تو کوئی شے نہیں میری جو تو میرا تو سب میرا فلک میرا زمیں میری

وہ دنیا کی عقل کو بول تحدی (چیلنج) کرتا ہے

۔ سمجھ کر اے خرد اس دل کو پابند علائق کر یہ دیوانہ اڑا دیتا ہے ہر زنجر کے تکارے

اللہ کے بندے کا حال تو یہ ہوتا ہے کہ ساری دنیا مخالف ہوجائے تو کوئی پروا
خییں بس میر داللہ میر ہے ساتھ رہے ، اس لئے اس کا درداور فکر پڑھتی جاتی ہے کہ بس
میرا اللہ ناراض ند ہوجائے ، اگر میں نے لوگوں کو ندروکا تو میں بھی دنیا و آخرت کے
عذاب میں برابر کا شریک ہوں گا اس لئے گنا ہوں ہے روکنے کی وجہ ہے لوگ اس کی
مخالفت کریں گے اور اللہ کی نافر مانیوں سے باز نہیں آئیں گے تو یہ انہیں زبردتی روکے
گا، اس کے دل کا دردا ہے چین ہے جھیے نہیں دے گا۔

برئ تكليف سے بچانے والی جھوٹی تكليف رحمت:

اگر کوئی مخض کھڈے میں گر رہا ہو یا تنور میں چھلانگ نگار ہا ہو یا سمندر میں کو در ہا ہواور وہ نرمی سے سمجھانے سے نہیں مانیا تو اسے زبر دتی پکڑ کر روکیں گے، پکڑنے سے بھی نہیں رکیا تو تھیٹر نگا کر روکیں ہے۔

حضرت مفتی محمد شفیخ صاحب رحمد التد تعالی نے فرمایا کدایک بار انہوں نے دیکھا کدان کا مجمونا سابچہ مکان کی مجست پر چڑھ کرمنڈ بر پر پاؤں لٹکائے بیٹھا ہوا ہے، ہم بہب گھبرائے کدا ہجی اوپر سے گرا اور مرا، میں جلدی جلدی اوپر اس طرح چڑھا کہ اسے آ ہٹ بھی محسول نہ ہو ورنہ وہ اچا تک چیچے و کھتا تو گر جاتا، دب پاؤں پہنچا اور چیچے سے پکڑ کر زور سے کھینچا، وہ چیچے کو گرا مجست کے فرش پر اس کا سر بہت زور سے لگا، چینی فکل گئش، کوئی احمق د کھتا تو وہ یکی کہتا کہ بیابا بوا ظالم ہے بیٹے کو است زور سے کھینچا کداس کے سر میں چوٹ لگ گئی چھونا سامعسوم بچرونے نگا کی منظمت جھتا سے کھا گیا کہ اس کے سر میں چوٹ لگ گئی چھونا سامعسوم بچرونے نگا کی منظمت جھتا ہے کہا گر یہ چوٹ نہ لگا گئے تو جان ہی جاتی ۔

ذربعہ بن گئی اس لئے یہ تکلیف بھی رحمت ہے۔

القد تعالى مدود عطاء فرمادي، اپنے بھ كول كوجہنم سے نكالنے كے لئے اليا درد ہواي دردك اگر مية سانى سے جہنم نے نيس نكلتے تو زبردى نكالواس دوران كہيں چوث بھى لگ جائے تو پروانہيں جہنم سے تو نئ جائيں گے، اس لئے ميہ چوٹ بہت بزى رحمت ہے۔

نجات گناہوں سے بیخے بیانے میں:

رسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا:

"الندكى حدود پر قائم اوران ميں مداہنت كرنے والے كى مثال اس قوم كى طرح ہے جنہوں نے سمندر ميں ايك شتى پر قرعد اندازى كى قوان ميں ہے بھش كو اوپر كا حصد ملا اور بعض كو نيچ كا حصد ملا ، نچلے حصے والے پائى پينے كے لئے اوپر پڑھتے تو وہ اوپر والوں پر پائى گراو ہے ، اوپر والوں نے كہا كہ ہم تہميں نہيں آنے ديں گے تم اوپر پڑھ كر جميں تكليف ديت ہو، فيچ والول نے كہا كہ تم تي ہيں تكليف ديت ہو، فيچ والول نے كہا كہ تم يہ ہم شتى كے نيچ سوراخ كركے وہيں ہو، في والول نے كہا كہ وہ ين الول سے ال كے ہاتھ كركر انہيں سوراخ كرنے وہ ين و سب لوگ في جائم گركر انہيں سوراخ كرنے ہوئر ويا تو سب لوگ في جائم گراوپر والول سے الدر گر چھوڑ ويا تو سراح فريل گرے وہيں گے۔ "(بنادى وترنى)

اگراد پر کے طبقے کے لوگ احمق ہوں تو وہ کہیں گے کہ اگر بیسوراخ کرتے ہیں تو اپنے طبقے میں کرتے ہیں تو اپنے طبقے میں تموزا ہی کررہے ہیں وہ ان کو پکڑیں گے نہیں کچھ نہیں کہیں گے اور اگر او پر کے طبقے کے لوگوں میں پچھ عقل ہوگی تو وہ ان سے کہیں گے کہ ہاں آپ او پر آ جا کریں، پنی لیس آئیں جا میں ہمارے جسموں کے او پر کے گزریں گرینڈسوراخ نہ کریں۔ عجت سے نرمی سے مجھ جائیں تو تھیک ہے اور اگر وہ

کہیں کہ تبین ہم تو سوراخ کریں گے تو چھ یہ ڈانٹ کر کہیں گے نالائقو! سب ڈوب جائیں گے ایسا مت کرو، ڈانٹ سے بھی بازنہیں آتے تو باتھوں سے پکڑیں گے کہ سوراخ مت کرو، باتھوں سے پکڑنے سے بھی بازنہیں آتے چھڑا کر پھر سوراخ کرنا شروع کردیا تو پھر اوپر کے طبقے وا نے ٹھکائی لگائیں گے ٹھکائی لگا لگا کر روکیس گے سوراخ نہیں کرنے دیں گے ہم مرجاؤ سوراخ نہیں کرنے دیں گے اس طرح تو سارے کے سارے فرق ہوجائیں گے ہم بھی اورتم بھی اس کی بجائے اگر دو چار تمارے خرق ہوجائیں تو کوئی بات نہیں۔ بات عقل میں تارہی ہوجائیں تو کوئی بات نہیں۔ بات عقل میں آرہی ہے؟ رسول اللہ علی اللہ علیہ وسم کے ارشادات آج کل کے سلمان کی عقل میں نہیں آرہے، ایمان تازہ کریں تو عقل میں آئیں گے ویسے کہاں عقل میں آئیں گی یہ باتھیں۔

الله كى محبت كى علامت:

رسول الله صلى الله عليه وسلم في قرمايا:

"الله تعالی عزوجل نے جریل علیہ السلام کو تھم دیا کہ فلاں فلال شہر کو ان کے دستے والوں پر الب دو۔ انہوں نے کہا اے میرے دب! ان لوگوں میں تیرا ایک فلاں بندہ ایسا ہے جس نے پیک جھپکنے بحر بھی تنری نافر مائی نہیں کی ، اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہوا کہ اس پر بھی اور دوسرے لوگوں پر بھی اس شہر کو الٹ دواس لئے کہ لوگوں کے گناہ دیکھے کر میری خاطر کھی بھی اس کے چرے نے بل نہیں بڑا۔" (بیتی شعب الایون)

الله تعالی نے فرمایا کہ جے تم ولی اللہ بچھ رہے ہویہ بھی برابر کا مجرم ہے اسے بھی ساتھ ہی جاری کا مجرم ہے اسے بھی ساتھ ہی جاہد کریں، نافر مانی کریں اور اس عاشق صاحب کے چہرے پرتغیر بھی نہ آئے بیر عبت کی کون کی تسم ہے؟

گناهول کی حاث چیشرانا بهت مشکل:

گناہوں سے روکنا کوئی معمول بات نہیں، گناہ کی چاشی اور مزاجب لگ جاتا ہو پھروہ بہت مشکل ہے چھوٹنا ہے جیسے سندھ کی بلی اور تکے کے بلے کا قصہ ہے۔ سندھ کی بلی اور کلے کا بلا:

میری ابتداء جوانی کا قصہ ہے تقریباً ۲۵،۲۴ سال عمر ہوگی، کام کی باتیں بحمداللہ تعالیٰ مجھے یادرہ جاتی ہیں۔ایک چھوٹی س لٹیا میں ہم بیچے کے لئے دودھ رکھا کرتے ہے، چونکہاس میں دود ھے کی خوشبو آ حایا کرتی تھی اس لئے اس کوخوب اچھی طرح دھوکر رکھا کرتے لیکن اوپر ہے ڈھانیتے نہیں تھے تا کہ برقتم کی بونکل جائے پھرضج دوبارہ دھوکر استعمال کرتے تھے۔ایک باررات کو بلی آئی وہ دیکیے بھی رہی ہے کہاس میں پچھے بھی نہیں، لی کی نظر بھی خاصی تیز ہوتی ہے، اندھیرے میں بھی اسے اچھی طرح نظر آ تا ہے، ویکھ رہی ہے کہ لٹیا کے اندر کچھ نہیں لیکن ذرا می بومحسوں ہوئی بس اس کی ہوں میں مست ہوگئ جیسے آج کامسلمان مال کی محبت میں مست ہے۔ بلی نے اس میں مند ذالنا حیایا تو وہ گھس نہیں رہا تھا اس لئے کہ لٹیا کا منہ ننگ تھا آخرز ورے منہ کھسیر ہی دیا گر پھرنکل نہیں رہا، انچھل کو درہی ہے، کھٹ کھٹ کی آ واز س کر ہم بھی پریشان ہوئے، دیکھا تو بلی رقص کررہی ہےاسے پکڑااور تھینچ کر بڑی مشکل سے نکالا۔ ہم نے سوچا کہ اسے اچھی خاصی سزامل چکی ہے دوبارہ یہاں نہ آئے گی کیکن دوسری رات پھر پینچ گئی اور ای طرح سر کھسیو کر پھر پھٹ مالی، اب ہم نے سوچا اسے بقدر ضرورت سزاملنی جائے یوں باز نہ آئے گی، جوشخص بوٹ جانتا ہو وہ مارنے کا بھی تج به رکھتا ہے، پوری طرح ناب تول کر مارتا ہے نہ کم نہ زیادہ، میں نے بھی تول کر بورے اندازے سے اسے چندتھ پڑرسید کئے کہ اس کی اصلاح ہوجائے آبندہ کسی کونہ ستائے کیکن تیسری رات وہ پھرآ گئی اور وہی تماشا شروع کیا، ہم لوگ جیران کہ قدرت ک طرف سے بار بار سرال رہی ہے ہم بھی گوشالی کردیتے ہیں گر باز جمیں آتی آخر ہم نے ہی ہار مان لی اور لٹیا کی جگہ تیدیل کردی، وہاں سے مثا کر دوسری جگہ چھپا کر دھنا شروع کردیا تو کہیں بیر صیبت تلی۔

اب کے کے بلے کا قصہ بھی من لیجے ! یہ تو ابھی آٹھ وی سال کی بات ہے۔
میں مجد حرام سے اسپ میز بان کے ساتھ گاڑی پر ان کے گر آ رہا تھا، راستے میں
ویکھا کہ لوگوں کا جوم ہے تریب آئے تو ویکھا کہ ایک بلالوٹے میں سرپھنسا کے ای
طرح اچھل کو درہا ہے لوگ اسے وم سے پکڑ کر تھنتی رہے ہیں وہ نکل ہی نہیں رہا عجب
تماشا بنا ہوا ہے، میز بان صاحب نے گاڑی روک لی کہنے لگے کہ اس قتم کے موقع پر
عرب لوگ بھیب اور نئے الفاظ پولتے ہیں ان کی لفت کیھنے کے لئے یہ کلمات میں
ورب لوگ بھیب اور نئے الفاظ پولتے ہیں ان کی لفت کیھنے کے لئے یہ کلمات میں
والفاظ کے لیس میں بھی اس واقعہ سے ایک نیاسبق کے رہا ہوں۔ سندھ کی بلی اور کمے
الفاظ کے لیس میں بھی اس واقعہ سے ایک نیاسبق کے رہا ہوں۔ سندھ کی بلی اور کمے
الفاظ کے لیس میں بھی اس واقعہ سے ایک نیاسبق کے دو ہوں اس بلے اور بلی سے
کے بلے سے اندازہ کر لیج مسلمان کو گناہوں کی چاٹ اور ہوں اس بلے اور بلی سے
کہیں بڑھ کر ہے، کچھ بھی ہوجائے یہ گناہ جھوڑ نے کے لئے تیار نہیں، اس لئے
گناہوں کا چھوڑ نا چھڑ وانا بہت مشکل ہے بہت مشکل، جب تک زبردتی نہیں
تھرائیں کے یہ چھوڑ سے نہیں سے نہیں۔

طالبان كسبق آموز قصے:

طالبان سے میکھیں گناہ کیے چھڑائے جاتے ہیں،اس بارے میں چند تھے بھی سن لیچئے:

ایک قصد قد قدهار کے گورز طاحمح حسن کا ہے۔ امارت اسلامیہ قائم ہوئی تو انہوں
 نیا نون نافذ کیا کدر کشے میں پردہ ندلگائیں تاکہ پتا چلے کہ اندر کوئی عورت اکیلی تو
 نہیں، رکشے میں اکیلی عورت کا بیٹھنا ممنوع ہے، پردہ ندلگائیں تاکہ گرال کو پتا چلے۔

جب بہ قانون نافذ کیا تو رکشوں والوں نے بڑتال کردی۔ آج کل تو دومری صومتوں میں یہی ہوتا ہے کہ بڑتال کرو، بڑتال کر وی حکومت کے گھنے نگا دیے ہیں، ان کو یہی خیال تھا کہ بہامارت اسلامیہ بھی گھنے نگ دیے گئے نہیں تھا کہ حکومت اسلامیہ کیسی ہوتی ہے، گورزصا حب نے رکشوں والوں کو بوا کر کوڑے لگوائے اور بڑانسخہ بہاستعال کیا کہ سرمونڈ کر چھوڑ دیا، میں نے یہاں سے پیغام بھیجا کہ ان کے سرمونڈ نے کے بعداییا تیل لگائیں کہ بھی بھی بال پیدا نہ ہوں اور اس میں بم آپ کی مدد کریں گے یہاں سے ایسا تیل بغا کر بھواوی ہے کہ میشہ ہمیشہ کے لئے یادگار رہے کہ میہ کہ بیٹ کی مدد کریں گے یہاں سے ایسا تیل بغا کر بھواوی کی جمیشہ کے لئے یادگار رہے کہ بیہ ہے جس نے حکومت اسلامیہ کے خلاف بڑتال کی تھی، ٹو پی بھی پہننے کی اجازت نہ ہو شمنے پھرتے رہیں اور اعلان ہوتا رہے۔ واہ! امارت اسمامیہ ارہے واہ! ملا

یہاں ہے کوئی ڈاڑھی منڈا چلا گیا، اس نے سمجھا وہاں بھی ایس عورتیں ہول گی جیسی ہے۔ بہان ہے کو چیا کہ ڈاڑھی کیوں منڈ اتے ہو؟ وہ کہتا ہے ہی تو میرا نمی کام ہے، آج کل کے سلمان سے گناہ کے بارے میں کہا جائے کہ گناہ کیوں کرتے ہوتو وہ بہی جواب دیتا ہے کہ بیتو میرا نمی کام ہے، اس برکسی کو پچھ کہنے کا کوئی حق نہیں، ڈاڑھی منڈ ہارے بہی کہتے ہیں بلکہ جینے بھی گناہ ہیں سب کے بارے میں لوگ بہی کہتے ہیں بلکہ جینے بھی گناہ ہیں سب کے بارے میں لوگ یہ ہوگیا، طالب نے لگایا کھنے کر کھی اور ڈانٹ کر کہا ''تیرا نمی کام ہے یا اللہ کی حکومت ہے؟ "وہان تحر کہا ''تیرا نمی کام ہے یا اللہ کا حکم ہے؟ تیری حکومت ہے یا اللہ کی حکومت ہے؟ "وہاغ روش ہوگیا، ایس روش دن فی کے سے میٹر کا کہ ایک بی ہوا، اس نے چاد کو گئی گئر برائے نام، طالب نے ویور تو اوڑ ہر کھی تھی گر برائے نام، طالب نے ویور تو اوڑ ہر کھی تھی گر برائے نام، طالب نے ویور تو اوڑ ہر کھی تھی پھر بلے علاقے کی، اس کو آگیا جوڑ چا دور اتار کر پھینک دی اور طالب کو وہیں کھی پھر بلے علاقے کی، اس کو آگیا جوش چادرا تار کر پھینک دی اور طالب کو وہیں کی تھی پھر بلے علاقے کی، اس کو آگیا جوش چادرا تار کر پھینک دی اور طالب کو وہیں کی تھی پھر بلے علاقے کی، اس کو آگیا جوش چادرا تار کر پھینک دی اور طالب کو وہیں کی تھی پھر بلے علاقے کی، اس کو آگیا جوش چادرا تار کر پھینک دی اور طالب کو وہیں کی تھی پھر بلے علاقے کی، اس کو آگیا جوش چادرا تار کر پھینک دی اور طالب کو وہیں کی تھی پھر بلے علاقے کی، اس کو آگیا جوش چادرا تار کر کھینک دی اور طالب کو

تحدی کردی چینی کردیا که اب بجھے چادر پہنا کردکھا، لگا لے زورا پنائیس پہنوں گی، وہ تعدی کردی چینی کردی چینی کی اب بجھے چادر پہنا کردکھا، لگا لے زورا پنائیس پہنوں گی، لیٹ کیا تعدید اسلامیہ کا اس نے جو کوڑے برسانے شروع کئے تو لیٹ گئی، لیٹ کیا گئی لٹا دیا کوڑوں نے پھر جب اور بھی کچھ گئے تو ہاتھ باندھ کر کہتی ہے "'رور، رور'' کا لفظ یاد کرنیا ہے آ گے اس کا ترجمہ کررہا ہوں۔ رور معاف کردے اور ور معاف کردے اور ور معاف کردے وہ میری چادر پیاڑا دے اب میں اور طول گی۔ وہ کہتا ہوا کردے، معاف کردے وہ میری چادر پیاڑا دے اب میں اور طول گی۔ وہ کہتا ہے بیس کیوں پیڑا توں؟ اتاری تو تو نے خود ہے، خود بھیکی ہے خود اٹھا خود اوڑھ۔ آٹھی، اتنے کوڑے لگ چکے تھے لیکن پھر بھی مرتی مرتی اٹھی چادر کی اور چل۔ گناہ ایسے جیٹر دائے جاتے ہیں بھائی بھائی کہنے ہے گناہ تھوڑا ہی چھوٹیتے ہیں۔

مراهن کی پہچان:

حضرت سفیان توری رحمداللدته الی فرمات بین کد جو محض بھائیوں میں محمود ہو بھائی اس کی تعریف بھائیوں میں محمود ہو بھائی اس کی تعریف کریں کدید بھائی ہمارا بہت اچھا ہے، پڑوسیوں میں محبوب ہو پڑوسی اس سے محبت کریں کہ رہ بہت ہی اچھا ہے، فرمایا اغلب رید ہے کہ وہ مداھن ہے مداھن سمجھ لوکہ التدکی حدود پر قائم نہیں، اپنی دوئتی کی خاطر لوگوں کو راضی کرنے کی خاطر خود بھی جہنم میں چھینک رہا ہے۔

مداهن کے معنی:

مداهن کے معنی ہیں تیل لگانے والا، الله تعالیٰ کے باغیوں کو نافر مانوں کو دکھ کر اگر انہیں رو کنے کی کوشش نہیں کرتا تو اس کوشر بعت میں مداهن کہا جاتا ہے، بیاللہ کے باغیوں کو، نافر مانوں کو اللہ کے دشنوں کو تیل لگا تا ہے، ان سے نرم نرم با تیں کرتا ہے کیونکہ اس کا خیال یہ ہوتا ہے کہ اگر ان سے کوئی سخت بات کردی تو یہ لوگ اس کے دشن ہوجائیں گے، یہ لوگوں کی طاقت کو اللہ کی طاقت سے زیادہ

سمجھتا ہے۔

🗨 وقت کی قدر:

تنبیہات زیادہ کرنے کی چھٹی وجہ یہ ہے کہ میری عمر زیادہ ہوگئی ہےاس لئے فکر بڑھ رہی ہے کہ اینے زیادہ سے زیادہ بھائیوں کوجہم سے نکالنے کی کوشش کروں مہ فکر بڑھ رہی ہے، جیسے جیسے عمر بڑھ رہی ہے وطن قریب آ رہا ہے، ویسے تو کچھ معلوم نہیں کس کی زندگی کب تک ہے، کی سیکے مال کے پیٹ میں مرجاتے ہیں، مرتے ہیں پہلے، پیدا ہوتے ہیں بعد میں، کی پیدا ہوتے ہی مرجاتے ہیں، کوئی ایک دو دن میں ونیا ہے رخصت ہوجاتا ہے، سارے مراحل آئے دن نظروں کے سامنے آتے رہتے ہیں،اس کے بعد دوسرا مرحلہ ہوتا ہے جھے طبعی عمر کہتے ہیں تقریباً ساتھ سال، یہ عمر طبعی شار ہوتی ہے، جس کی عمر ہو جائے ساٹھ سال تو کہتے ہیں عمر طبعی کو پہنچے گیا ہے۔جن کو آ خرت کی فکرنہیں، دنیا کے عاشق ہیں وہ تو مختلف طریقوں سے آسلی دیتے رہتے ہیں۔ کسی کی عمر ہوجائے ساتھ سال اگر وہ کیے کہ ساتھ سال کا ہوگیا ہوں بس و نیا ہے جانے کے دن قریب بیں تو کہتے ہیں نہیں نہیں۔" ساٹھا پاٹھا" ابھی تو آپ پٹھے ہیں یٹھے،اور زیادہ گناہ کرلوکوئی بات نہیں۔ جب میری عمر پاسٹھ سال ہوگئی تو رہ رہ کر خیال آتا تھا کہ رسول التدصلی القدعلیہ وسلم کی عمر تو ہوئی تریسٹھ سال اس کے قریب قریب تو میری عمر ہوگئ اس سے زیادہ ونیامیں رہتے ہوئے مجھے شرم آتی ہے کس منہ سے زیادہ ر ہیں، پھریہ سوچتا تھا کہ چیئے جینے لمحات مل رہے ہیں بدرو نگے کے ہیں، رونگا تو جھتے مول عيد اب تو شايدر بايانيس، يبلي زماني من دكاندار سيكوكي چيز خريدت مثلاً یے لیس، بنے کچھ کھایا بھی کریں پنے کھانے سے جہاد کی قوت برحتی ہے۔ سی ے بنے لئے بچیس گرام اس نے دے دئے پھر کہتے ہیں ذراسا رونگا بھی دے دیں لعن تھوڑے سے اٹھا کر اور بھی ڈال دیں، بیرونگا ہے۔ چائے نہ پیا کریں جائے چنے ے سب کچو بگڑ جاتا ہے جنے کھایا کریں اور پھر جہاد کریں۔

طبی عربوتی ہے تقریباً ساتھ بینٹ مصال وہ بھی گرزگی، زندگی اور لمی ہوئی پھر جب اللہ تعالی عرب کے اللہ ہوتا ہے کہ جب اللہ تعالی ہوتا ہے کہ جب اللہ تعالی ہوتا ہے کہ زندگی اور لمی ہوجائے، آئی زندگی اور لمی ہوجائے، آئی زندگی ہوجائے، آئی زندگی ہوجائے، آئی زندگی ہوجائے، آئی ورب ہوجائے کہ میں اپنے آتھوں سے ہوجائے کہ میں اپنے آتھوں سے دکھ لوں، اللہ کرے جلدی سے جلدی کام نمن جائے تو پھر ہم بھی جلدی سے جلدی وطن بھی جائے تو پھر ہم بھی جلدی سے جلدی وطن بھی جائے ہو تھر ہم بھی جلدی سے جلدی وطن بھی جائے ہو تھر ہم بھی جلدی سے جلدی کام نمن جائے تو پھر ہم بھی جلدی سے جلدی وطن بھی جائے ہو تھی جائ

ظ زندگی هو تو بر در محبوب

ندگی ہوتو اللہ تعالی اسے کاموں میں لگائے رکھیں جب اس کے کاموں کی مرورت ندر ہے ۔ ضرورت ندر ہےتو پھر سفرتم پھر چلیں وطن پھر یہاں رہ کرکیا کریں گے۔

مسلمان کی شادی:

پچپتر سال کی عمر کا قصہ ہے کہ مدینہ منورہ میں ''مستھی الاحد'' حکومت کا بہت بڑا ہیتال ہے، وہاں کےایک ڈاکٹر نے مجھ سے بڑے پرتپاک لہجہ میں انچھل کر کہا: ﴿ انت شاب فنزوج ﴾

تَنْوَجَمَعَدُ: "أب جوان بين شادي يجيئر."

جھے یہ خیال ہوا کہ مسلمان کی شادی تو یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی محبت فل جائے اس لئے جیسے ہی انہوں نے جوش سے کہا تو جھے بھی جوش اٹھا بیس کری پر بیٹھا ہوا تھا بکدم اچھل کر کھڑا ہوگیا جیسے بنوٹ کے میدان میں لکتا ہوں، آپ لوگوں نے تو مجھی و یکھا ہی نہیں، مجھی و کیھتے تو طوسطے اڑ جاتے پھر واپس بھی نہ آتے، میں نے کھڑے ہو کر بڑے جوش سے جواب دیا:

﴿اتزوج دحين في مدينة الرسول صلى الله عليه

وسلم﴾

تَوَيِّهَمَنَدُ " ابھی مدیة الرسول صلی الله علیه وسلم میں شادی کرتا ہوں ، ابھی کرتا ہوں ، ابھی کرتا ہوں ، ابھی کرتا ہوں ، وقی طور پر تو ایک جوش فلاہر ہوگیا کہ شادی ہے جست البیہ کی ، پھر اس کے بعد خیال آیا کہ مجبت کا صرف دعویٰ تو کافی نہیں محبت کے لیے پھی تو کرنا ہے۔''
کے پھی چیش بھی تو کرنا ہے۔''

عشق کی کسوٹی:

لیل مجنوں کے لئے پیالے میں مالیدہ بھیجا کرتی تھی کوئی مصنوعی مجنوں پیالہ خل کر کھا جاتا، مجنوں تو بیٹھار ہتا تھا کہیں ایک طرف کونے میں سر جھکائے، تصور بی میں لیل کود کھتار ہتا تھا، دوسرا حلوا فور عاش بالیدہ کا پیالہ پکڑ لیتا اور کھا جاتا، لیل جھتی کہ مجنوں کھاتا ہے۔ ایک دن لیل کو بتا چل گیا کہ بیتو کوئی دوسرا ہے، اس نے خالی پیالے کے ساتھ خنجر رکھ کر بھیج دیا اور بیکہلوادیا کہ لیل نے کہا ہے کہ آئ تھوڑ اسا خون پیالے اسمنوی مجنوں نے جب بیات سی تو کہنے لگا کہ خون دینے والا مجنوں وہ کونے میں سر جھکائے بیٹھا ہے۔

الله کی محبت خون مانگتی ہے:

ى مال آخ كے مسلمان كا ہے۔اللہ تعالیٰ توفرمار ہے ہيں: ﴿ آمُرُ حَسِبْتُمُ اَنْ تَذَخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِيْنَ جُهَدُوْا مِنْكُمُ وَيَعْلَمَ الصَّبِوِيْنَ ۞ ﴾ (٣-١١١)

کیا تنہارا خیال میہ بے کہ تمہیں اللّه کی محبت ل گئی اور بی محبت تنہیں جنت میں کے جائے گی اور بی محبت تنہیں جنت میں کے جائے گی حال تکد الله تعالی ہوتا ہے؟ جہاد کیا ہے؟ الله کیا ہے؟ الله کیا ہے؟ الله کی راہ میں "بزن ویکش" کی لذت کیا ہے؟ الله کی ارب ایدو جملے یاد کرلیں۔

شاید که اتر جائے کسی دل پیس مری بات

'' بزن وبکش'' ماراوراڑا، گردن پر مار تکوار اوراڑا، پید منظر تو تم لوگوں نے ابھی دکھایا ہی نہیں دکھانا تو دور دیکھا بھی نہیں اور بچھتے ہو کہ اللہ کی محبت مل گئی۔

ميدان جهاديس تهام مسائل كاحل:

ای رمضان میں کراچی سے اور باہر ملتان وغیرہ سے بھی لوگ بار بار کہتے رہے کہ ہمارا ایک استختاء ہے اس کا جواب ہمیں جلدی چاہئے، میں کہتا رہا کہ دوسر سے دارالافتاء بھی قو ہیں وہاں سے پوچی لیں تو کہتے ہیں نہیں! آپ بی سے چاہئے، ملتان دارالافقاء ہے وہاں سے فتو کی لے لیں، کہتے ہیں: انہوں نے بی تو کہا ہماں کے آپ سے فیصلہ کھوائیں! میں نے کہا ہماں کے اساتذہ بھی مضاف میں سب جہاد پر جاتے ہیں۔ وہ مئی دن تک فون کرتے رہے کہ بھی مفتی بھی رمضان میں سب جہاد پر جاتے ہیں۔ وہ مئی دن تک فون کرتے رہے کہ آپ بی سے کھوانا ہے بالآخر کی دن ایسے گزر کئے پھر میں نے کہا کہ ہماں کے مفتی معنوات محافظ ہو ہی ہوئے ہیں آپ بھی محاذ پر چلے جائیں میں ذمہ لیتا ہوں کہ آپ کے حضرات محاذ پر مجلے ہوئے ہیں آپ بھی محاذ پر چلے جائیں میں ذمہ لیتا ہوں کہ آپ کے حضرات محاذ پر میے ہوئے ہیں آپ بھی محاذ پر جلے جائیں میں ذمہ لیتا ہوں کہ آپ کے حضرات محاذ پر میے ہوئے ہیں ہو جائیں میں نے بیکہا تو اس کے بعد ایک فون بھی نہیں آپ بھی ایک خاص کے حسب میں نے بیکہا تو اس کے بعد ایک فون بھی نہیں آپ بھی ایک خاص کے حسب میں نے بیکہا تو اس کے بعد ایک فون بھی نے در بھی خاص کی خیر میں نے بیکہا تو اس کے بعد ایک فون بھی نہیں آپ بھی ایک خاص کی خاص کی خاص کی خوب میں نے بیکہا تو اس کے بعد ایک فون بھی نہیں آپ بی نہاں کے میں نے بیکہا تو اس کے بعد ایک فون بھی نہیں آپ بھی نے بیکہا تو اس کے بعد ایک فون بھی نہیں آپ بات نہوں کے بیکہا تو اس کے بیکہا تو اس کے بعد ایک فون بھی نہیں آپ بات کی اس کے بیکہا تو اس کے بعد ایک فون بھی نہیں آپ بات کی بیکہا تو اس کے بیکہا تو اس کے بیکہا تو اس کی نہیں تھی نے بیکہا تو اس کے بیکہا تو اس کے بیکہا تو اس کی بیکہا تو اس کی بیکہا تو اس کے بیکہا تو اس کی کہا تھی کہا تو اس کی بیکہا تو اس کی بیکہا تو اس کی بیکہا تو اس کے بیکہا تو اس کی بیکہ تو اس کی بیکہا تو اس کی بیکہ تو اس کی بیکہ تو اس کی بیکہ تو اس کی بیکہا تو اس کی بیکہ ت

میری شادی کیاہے؟

جب تک جان لینے دینے کے حوصلے پدائیس ہوتے بیر مبت کی کام کی ٹیس اس لئے جب ڈاکٹر نے کہا کہ شادی کریں تو جھے خیال آیا کہ میری شادی تو یہ ہے کہ میری حیات میں ہمریا ہے ہو ہوائے، شادی کے بعد اس سے بھی زیادہ خوثی کا مرحلہ ہوتا ہے زمعتی، وہ یہ ہے کہ پوری دنیا پر میرے اللہ کی حکومت ہوجائے یہ میری رخمتی ہے۔ میرے لئے دعاء کیا کریں، تج پر جانے والوں سے بھی کہتا ہوں کہ وہاں جاکر میرے لئے یہ دعاء کریں کہ میری دیات میں بیکام ہوجائے۔

بات بد بوردی تھی کہ جب عمر ہوجاتی ہے زیادہ گھر بید خیال ہوتا ہے کہ اتنی لمی عمر تو ہوگئی اب دنیا سے جانے کا اور وطن چینچنے کا وقت بہت قریب ہے اس لئے کھات زندگی کوغیر سے بحصیں، اللہ کے بندوں کوجہنم سے نکالنے کی کوشش تیز تر کرویں کوئی مختص بیرون ملک کھانے گیا ہو، ویزا کی مدت ختم ہونے کے قریب ہے، تازہ تازہ جاتا ہے تو شاید کچھ زیادہ توجہ نہ ہو چلئے بہت وقت پڑا ہے کھاتے رہیں گے ابھی تو ذرا تھوڑ سے مزے کرلویم و تقرق کرلو گھر جب ویزا ختم ہونے بیل تھوڑے دن رہ گئے تو کتی قکر ہوتی ہے، گھر کو چھوڑا، وطن کو چھوڑا، عزیز و اقارب کو چھوڑا، اتن دور دوسرے ملک بیل پڑے ہوئے ہیں ویزا کے دن رہ مجھے ہیں بہت تھوڑ ہے ہے، کیا دوسرے ملک بیل پڑے ہوئے ہیں ویزا کے دن رہ مجھے ہیں بہت تھوڑ ہے ہے، کیا کہ بہت بڑا تکل بنائیں گے، بہت بڑی تجارت کریں گے، ویزا کے دن تھوڑ ہے ہوں جاکر بہت کی قرار کی نیالو مدت تو رہ گئی بہت تھوڑ کے بہت بڑا تھی دائو، بنالو مدت تو رہ گئی بہت تھوڑ کے بہت بڑا تھی کھوڑ ہوگی ایک ایک لیک ایک لیک ویہت بھی ، ارب پچھ بنالو، بنالو مدت تو رہ گئی بہت تھوڑی کی مرہ کالو دوکوشش کرو۔ اس شی اس کی میں کراکو کو جس کماؤ، بچھ وقت غفلت بیل گزرگیا تو جو وقت باتی ہے اس شی اس کی میں کراکول لوادورکوشش کرو۔ اور کوشش کرو۔ اور کوشش کرو۔ اور کوشش کرو۔ کی کمونکال لوادورکوشش کرو، اورکوشش کرو۔ کی کمونکال لوادورکوشش کرو، اورکوشش کرو۔ کو کھوٹ کو کھی کمرنکال لوادورکوشش کرو۔ اورکوشش کرو۔

اشرفيون كوضائع نهكرين

حفرت مفتی محمد شفیع صاحب رحمد الله تعالی فرمات بین کدایک باریش حفرت مولانا اصغر سین صاحب رحمد الله تعالی کی خدمت میں حاضر ہوا، انہوں نے فرمایا کد آج عربی میں بات کریں گے، میں نے عرض کیا بہت اچھا، پھر فرمایا کد آپ نے اس کی وجہ تو پوچھی ہی نہیں؟ میں نے عرض کیا کہ بتادیں تو فرمایا کہ عربی بولیس کے تو بات مختصر ہوگی وقت کم خرج ہوگا۔ یعنی عربی بولنے میں زیادہ روانی نہ ہونے کی وجہ سے بات کم ہوگی۔

پھر فرمایا: ماری مثال ایسے مخص جیسی ہے جس کی تھیلی میں بہت ی اشرفیاں

ہوں، وہ ایسے بی ضرورت بلا ضرورت ذرا ذراسی بات پر مثی مجر بحر کر نکال رہا، کچھ اوھر نکال دیں، کچھ اوھر نکال دیں، بلاسو ہے سجھے اڑا ڈالیس بعد میں دیکھ اے کہ تھیلی بہت بھی می رہ گئی اب اے عقل آئی کہ آگر میں ایسے بی اڑا تا رہا تو کل کے لئے میرے پاس کیا ہے گئ گھر میرا کیا میرے پاس کیا ہے گئ گھر میرا کیا ہے۔ خاراب یہ بہت سوج کو اشر فی نکالے گا بہت اصلاط ہے گئ گئ کر سوج سبح گا۔ اب یہ بہت سوج کر اشر فی نکالے گا بہت اصلاط ہے گئ گئی کر سوج میں کہ کہاں خرج کرے دن تو ایسے چلے گئے بھوڑے سے دن رہ کئے آئیس خرج کرنے کیلئے بہت سوچنا پڑتا ہے کہ کہاں خرج کریں۔

علاء كوعربي بولنے ميں زيادہ روانی نه ہونے كى وجه:

انگریزی پڑھنے والوں کوانگریزی بولنے میں مہارت حاصل کرتا ان کے مقاصد میں سے ہے، جس کی وود جہیں ہیں:

- 🛭 دوسرول پررعب بٹھانا کہ دیکھوہم انگریز ہیں، پکھینہ پکھانگریزی بولتے ہیں اور پکھ نہ تکی تو ''سورکی'' بن کہہ دیں گے۔
- دوسرامقصدیہ ہوتا ہے کہ کہیں دفتروں میں جائیں گے یا بیرون ملک جائیں گے
 تو لما زمت آسانی نے ل جائے گی۔

اس لئے یہ و غلط سلط اگریزی بہت بولتے ہیں، جیسی تیسی غلط سلط ٹوٹی پھوٹی اگریزی بولنا اگریزی بہت بولنا مقصد عربی بولنا انکم مقصد عربی بولنا مقصد عربی بولنا نہیں ہوتا ان کا مقصد موتا ہے قرآن اور صدیث کو بھنا جو بولنے کی مثل پر موقوف نہیں اس کے لئے اتنا کافی ہے کہ عربی بھینے ہیں مہارت ہوجائے، اللہ اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی باتیں، حضرات فقہاء کرام رحم اللہ تعالیٰ کی باتیں خوب اچھی مرسول صلی اللہ علیہ وسلم کی باتیں، حضرات فقہاء کرام رحم اللہ تعالیٰ کی باتیں خوب اچھی طرح سجھے جاکیں، اس کے لئے پندرہ علوم میں مہارت حاصل کرنا ضروری ہے، علاء کے پیش نظر بس یہی مقصد ہوتا ہے، قرآن وحدیث اور فقد کے بچھنے میں مہارت اور

بات ہے اور عربی ہونے میں روائی اور بات ہے دونوں میں فرق ہے۔ مدارس دینیہ میں عربی اپنارعب تو کسی پر بھانا میں عربی ہوئی کی مثل کی طرف زیادہ توجہ بیں کی جاتی انہیں اپنارعب بھانا چاہتے ہیں ہو انگریز کی دان لوگ جب کسی پر اپنارعب بھانا چاہتے ہیں تو انگریز کی ہو لئے شروع ہیں انگریز کی ہو لئے ہیں ، مثلاً کسی سے جھڑا ہوتا ہے تو رعب بھانے کے لئے شروع میں انگریز کی ہول جاتے ہیں ایسے ہی رعب بھانے کے لئے تا کدوہ سمجھے کہ مدا مگریز کا پھی میں انگریز کا بھی ہو جب لؤائی کہتے تیز ہوجاتی ہے تو انگریز کی مجول جاتے ہیں اپنی زبان میں شروع ہوجاتے ہیں۔

علاء کوعر بی زبان ہو لئے کی مشق کرنے کی ضرورت نہیں اس لئے کہ کسی پررعب تو بھانانہیں ہوا ورع بی بول کر کوئی ملازمت حاصل کرنا بھی مقصود نہیں، پندرہ علوم میں مہارت حاصل کرنا بھی مقصود نہیں، پندرہ علوم میں مہارت حاصل کرنے ہے ان میں اللہ اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی باتیں، حضرات فقہاء عظام رحم مہم اللہ تعالیٰ کی باتیں، حضرات فقہاء عظام رحم مہم اللہ تعالیٰ کی باتیں بھھنے کی وہ صلاحیت پیدا ہوگئ کہ عربی ہولئے کے بڑے بڑے برے ماہران کی خاک تک بھی نہیں پہنچ سے علوم میں الی مہارت حاصل کر لیتے ہیں مگر عربی ہولئے میں مہارت حاصل کر لیتے ہیں مگر عربی ہولئے میں مہارت حاصل نہیں کروں پولیس، ابوجہل مقصد نہیں کوئی فائدہ بی نہیں کیوں پولیس، ابوجہل تو عربی ہولئے کے بڑے بڑے بڑے ماہرین سے بھی زیادہ بہتر عربی بولی تھا ایسکہ باوجود ابوجہل بی ریاصرف عربی ہولئے سے کام تھوڑا ہی جیلے گا۔

پانچ چیزوں سے پہلے پانچ کوغنیمت مجھو:

رسول القد على القد عليه وسلم في فرمايا:

﴿اغتــر حمسا قبل خمس، شنابك قبل هرمك وصحتك قبل سقمك وغناك قبل فقرك وفراغك قبل شغلك وحياتك قبل موتك ﴾ «ترمدى)

مُطابُ الرَّشِيْرِ 10 یاخ مالتین آنے سے پہلے پانچ نعتوں کوننیمت مجھود

شبابك قبل هرمك:

بر حابے سے پہلے جوانی کوئنیمت مجھے، جوانی میں انسان جیسے دنیا کے کام زیادہ كرسكتا بايين آخرت كے كام بھى جوانى مين زياده كرسكتا ب، جوانى مين آخرت ک نعتیں کمائیں، تلاوت جتنی جوانی میں ہوسکے گی برھایے میں نہیں ہوسکے گی، نماز جتنی جوانی میں بڑھ سکتے ہیں برهاپے میں نہیں پڑھ سکیں گے، جہاد جتنا جوانی میں ہوسکتاہے بڑھایے میں نہیں ہوسکے گا۔

سب سے بردی عبادت:

سب سے بوی عبادت ہے اینے نفس کو گناموں سے روکنا، رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا:

﴿ اتق المحارم تكن اعبد الناس ﴾ (ترمدي)

ناجائز کامول سے بچو، اگر ناجائز کاموں سے بچتے ہیں تو پوری دنیا سے بوے عابدیں، جوالی میں ناجائز کاموں سے بچنا مشکل ہے ای لئے جوالی میں اللہ تعالی کی نافرمانی سے بیچنے والے کے لئے اتن بری بشارت ہے کہ بروز قیامت اللہ تعالی اسے انی خاص رحمت کے سائے میں جگہ دیں مے جب اور کوئی سارنہیں ہوگا اور لوگ پیینول بین و وب رہے ہول سے (الک، بخاری، سلم، نبائی، ترذی)

جوانی میں گناہوں سے بیخے والوں کے بارے میں رسول الله صلی الله عليه وسلم كا الك اورارشاد سنية:

﴿ لُولًا شباب خشع و بهائم رتع و شيوخ ركع و اطفال رضع لصب عليكم العذاب صبا ﴾ (كشف الخفاء) فرمایا اگر جارفتم کی مخلوق نہ ہوتی تو گناہوں کی وجہ سے اللہ تعالی ونہا میں ایسا عذاب بيجة كد يورى ونيا كوتباه كردية الله كوائي جارتم ك مخلوق بررحم آتا باس لئے دنیا میں اتنا بوا عذاب نہیں جمیع تے کہیں نفیحت کے لئے کچھے عذاب جمیع ویے میں ورند آخرت کے لئے جمع کر رکھا ہے، جاروں قعموں میں سب سے پہلے سب سے زیادہ اہم جن پر اللہ کی نظر سب ہے زیادہ ہوتی ہے وہ ہیں جوانی میں گناہوں ے نیخ والے، چاروں میں سب سے پہنے ان کا ذکر فرمایا: لولا شباب خشع۔ اگر دنیا میں ایسےنو جوان نہ ہوتے جن کےقلوب میں خشوع ہے،خشوع کےمعنی دب جانا،اللہ کی عظمت ادر محبت کے استحضار ہے ان کے دل دیے رہتے ہیں، کہیں نفس و شیطان ہم سے کوئی الی شرارت ند کرادی کہ ہمارا ما لک ہم سے ناراض ہوجائے،ان کے دل دیے رہے ہیں، ان پر اللہ تعالیٰ کی رحت سب سے زیادہ ہوتی ہے، اس حدیث میں ادراس سے پہلے میں نے جو دو صدیثیں بڑھی میں ان میں رسول التد صلی الله عليه وسلم نے جوانی میں القد تعالی کی نافر مانیوں سے بیچنے والوں کے جس بلند مقام کی بشارتی دی ہیں اے حاصل کرنے کے لئے برهایے سے پہلے جوانی کوغنیمت سجھے، جوانی ڈھل جانے کے بعد بیا تنا بڑا مقام حاصل کرنے کا موقع ہاتھ سے نکل حائے گا۔

رسول التدصلى الله عليه وسلم في ونيا من الله ك عذاب سي بياف والى حيارتم ك تخلوق ميس سي جوانى من التد تعالى سي ورف والول كاسب سي بيلي و كر قرمايا: لولا شباب خشع

اس کے بعد فرمایا: وبھانمہ رفع۔ لین چوپائے، ان کا تو کوئی گناہ نیں ان پر بھی اللہ تعالی کورم آتا ہے کہ عذاب آئے گا تو چوپائے بھی اس میں پس جائیں گے اس لئے اللہ تعالی وزیا پر عذاب نہیں بھیج رہے۔ تیسری تتم ہے: شیوح د کع۔ وہ بوزھے کہ بڑھائے کی وجہ ہاں کی کمریں بھی نیڑھی ہوجائے۔ آج کل تو جوانوں کی کمریں بھی نیڑھی ہورہی ہیں، جب میں مغربی ممالک میں گیا تو دیکھا کہ وہاں لوگ جب

بیان سننے بیٹھتے تو سارے کے سارے دیواروں ہے دیک لگا کر بیٹھتے تھے، میں انہیں کہتا تھا کہ آ گے آئیں آپ ہوگی ہیں، چلیں جہاد پرایک چلدلگا کر آئیں آپ کی کمریں سیدھی ہوجائیں گی میں انہیں یہ جبیہ مستراتے ہوئے السے لطیف انداز ہے کرتا تھا کہ انہیں تا گوار نہ ہوتی تھی بلکہ خوش ہوتے تھے جیسے یہاں سب دیکھتے سنتے رہجے ہیں کہ کیسے ہنتے ہنتے میٹھی تنہیہات کرتا ہوں، میں دیکھ رہا ہوں کہ حاضرین کے چہرے خوثی ہے کھل رہے ہیں، میرے لئے یہ دعاء کیا کریں کہ یا اللہ! جہاد کے ولولے جواٹھ رہے ہیں ان کی برکت سے میری کمر شرھی نہ ہو جب تک زندہ رہوں کمر سیدھی رہے، جھے جھی ہوئی کمر والوں کی فہرست میں داخل نہ فرما بلکہ زندہ رہوں کمر سیدھی رہے، جھے جھی ہوئی کمر والوں کی فہرست میں داخل نہ فرما بلکہ ترقی ہوجائے اور خصتی بھی ہوجائے اور خصتی بھی ہوجائے تو کہ اللہ تاریخ کے اور خصتی ہوجائے اور خصتی ہوجائے والی والمنشطت نشطاکی فہرست میں داخل فرما کر بلالیس (حضرت اقدی فرح الدی تھائی ہوئے کو رخصتی۔ امریکا کوا پی شادی بتاتے ہیں اور پوری دنیا پر اسلام کی حکومت قائم ہوئے کو رخصتی۔ امریکا کوا پی شادی بتاتے ہیں اور پوری دنیا پر اسلام کی حکومت قائم ہوئے کو رخصتی۔ جامع)

چوتی قسم: اطفال رضع۔ دورھ پیتے ہے، وہ تو معصوم ہیں ان پر بھی اللہ تعالی کوم آتا ہے۔ ان چارتم کی کلوت کی دجہ سے دنیا اللہ کے عذاب سے بی ہوئی ہے۔ بات یہ ہورہ تی تھی کہ بڑھا ہے جہاد کی کوشش کریں، زیادہ سے زیادہ جہاد کی کوشش کریں، زیادہ سے زیادہ جہاد کی کوشش کریں، زیادہ سے زیادہ جہاد میں حصد لیس، جن لوگول نے جوانیاں اللہ کی راہ میں خرج نہیں کیس ان پر اگر اللہ تعالی کوئی ایسا عذاب مسلط فرمادیں کہ کہیں بیٹھے بیٹھے جوانی نکل جائے، کہیں کوئی حادثہ ہوجائے کی کو حادث دنیا میں ہورہے ہیں، اللہ تعالی کا شکر اواء کیا کریں، کوشش بھی کیا کریں اور حوادث دنیا میں ہورہے ہیں، اللہ تعالی کا شکر اواء کیا کریں، کوشش بھی کیا کریں اور دعاء بھی کیا کریں اور دعاء بھی کیا کریں اور

کرنے کے لئے قبول فرمالے۔

أوصحتك قبل سقمك:

یاری سے پہلے صحت کو نمنیت سمجھو، کسی کیبی بیاریاں آپ لوگ و کھتے سنتے ہیں، کی کوکوئی بیاری لگ ٹی زندہ ہے مرائیس کین بیاری نے بالکل مفلوج کر کے رکھ دیا بیکا رکر کے رکھ دیا ہی کام کانہیں رہا، ایس کوئی بیاری لگ جائے اس سے پہلے پہلے اپنی صحت کو نفیمت سمجھو۔ اس سلط پیلے اپنی صحت کو نفیمت سمجھو۔ اس سلط پیلے بیاری ند گئے جودین کی کرتے رہیں کہ یا اللہ! جب تک حیات مقدر ہے کوئی ایسی بیاری ند گئے جودین کی ضوبات سے معدود کردے۔

ب جینا چاہوں تو کس بجروسے پر زندگی ہو تو بر در محبوب اللّٰد تعالٰیٰ کے دین کی خدمات بند ہوجائیں تو اس زندگی کا کیا فائدہ۔ سہینا چاہوں تو کس بجروسے پر زندگی ہو تو بر در محبوب

وغناك قبل فقرك:

تنگدی سے پہلے غنا کوغنیمت مجھو۔ اگرچہ دنیا میں طالات تو ایسے ہیں کہ مال و دولت کی فراوانی بڑھتی چلی جاری ہے جس کا ابا لیکے کئے کا مختاج تھا وہ اب کروڑوں میں کھیل رہا ہے مگر اس کے بڑنکس بھی قصے ہیں کہیں ایسا بھی ہوتا ہے کہ کروڑوں پتی کنگال ہوگئے اللہ تعالی عبرت کے لئے ایسے واقعات دنیا میں جاری فرماتے رہتے ہیں، اللہ تعالیٰ نے آپ کوجتنی مالی وسعت دے رکھی ہے اسے اپنی نالائعی اور ناشکری کی بناء پرتھوڑی شہجھیں، آج کل انسان تو قارون کے تبند میں آ جائے تو بھی یہی سمجھے گا کہ بہت تھوڑا ہے، ساری دنیا اس کے قبند میں آ جائے تو بھی یہی سمجھے

گا کہ اہمی تو کچھ بھی نہیں۔ فرہ یا ارے نالائقو! یہ 'نالائقو'' تو میں کہدر ہا ہوں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وہلم نے افظ نالائل نہیں فرمایا، یہ تشریح میری طرف ہے ہے وہ انسان اللہ تالائل ہی تو تھرا جو عرب حاصل نہیں کرتا، اس سے بڑھ کر اور کوئ تالائل ہوسکتا ہے۔ فرمایا: غناك قبل فقوك۔ اللہ نے جتنا بھی رزق دیا ہو بظاہر و کیھنے میں تہمیں تھوڑا مانظر آئے پھر بھی دنیا کے حوادث اور تغیرات سے مبتی حاصل کرو، جتنا ہے آگر وہ بھی شربا تو كیا ہوگا، جتنا رزق رہائل كے سب ہونے سے پہلے اس سے زیادہ تک دست ہونے سے پہلے اس سے زیادہ تک دست ہونے سے پہلے اس سے زیادہ تک

مال کی مقدار نہیں نسبت دیکھی جاتی ہے:

ایک نسخہ بتا تا ہوں بوا عجیب نسخہ ہا گرق تھم یہ ہوتا کہ ہر محض میسنے ہیں استے سو
یا استے ہزاریا استے لاکھ یا استے کروڑ ولگایا کرے، اس ہیں تو کسی کو اشکال ہوسکا تھا کہ
اتی تو کمائی بی ہمیں، کہاں ہے لاکس، اللہ کے قانون ویکھتے اللہ کے قانون، اللہ تعالی
کی اپنے بندول پر سی رحمت ہے کیسی رحمت، ای ایسی رحمت و کیے کر بھی جو اللہ کی
نافر مانی نہیں چھوڑتے ان سے زیادہ نالائق کون ہوسکتا ہے؟ کیسی رحمت ہے اللہ تعالیٰ
مرضی اللہ تعالیٰ عشہ کہ کتنے لگائے بلہ یہ دیکھتے ہیں کہ کل آمد فی کا کتنا حصہ لگایا۔ ایک بار
عررضی اللہ تعالیٰ عشہ وسلم نے جہاد کے لئے مال خرج کرنے کی ترغیب دی۔حصرت
عررضی اللہ تعالیٰ عشہ وسلم نے جہاد کے لئے اور دل میں خوش ہور ہے تھے کہ ابو بحر ہمیشہ مجھ
عررضی اللہ تعالیٰ عشہ وسلم اللہ علیہ واللہ کی میں ابو بحر پر سبقت لے جاؤں گا
بر ضیاست لے جاتے ہیں آئ مجھے شاباش ملے گی میں ابو بحر پر سبقت لے جاؤں گا
بر ضیاست کے جاتے ہیں آئ مجھے شاباش ملے گی میں ابو بحر پر سبقت لے جاؤں گا
بر عرض کیا آ دھا۔ ابو بحر رضی اللہ تعالیہ و دسولہ ۔گھر میں اللہ اور مسولہ ۔گھر میں اللہ اور مسولہ ۔گھر میں اللہ اور کہ میں کیا جھوڑ ،؟ عرض کیا: تو کت اللّه و دسولہ ۔گھر میں اللہ اور کیا رسول چھوڑ دیا ،سب بچھے لے آئے۔عرضی اللہ تو دسولہ ۔گھر میں اللہ اور کیا کہ بھشہ

ہمیشہ کے لئے یہ بات میری عقل میں آئی کہ ابوبکر کا مقابلہ کبھی بھی نہیں ہوسکتا۔ و كيسيء يبال رسول الله على الله عليه وسلم في بينيس يوجها كد كتف سولات ؟ بتاني والول نے بھی بنہیں بتایا کداشنے سویا استے ہزار لائے ،عمر ایک سولائے یا ابو بکر ایک جزار لائے، وجد فضیلت بنہیں، عمر لے كرآئےكل مال كا آ دھا، ابو كر الے كرآئےكل مال، ہوسکتا ہے کدان کاکل مال ان کے آ وہے ہے بھی کم ہو، یہ بیں ویکھا کہ مقدار کیا ہے بدد مکھا کونبت کیا ہے۔اب سوچنے کو اگر کسی کی آمدن وی روید بومیہ ہے اگراللہ کی راہ میں دن رویے میں ہے ایک پیسا نکل جائے تو کیا فرق پڑے گا اور مثال سمجھ لیں: ایک روٹی کا سوواں حصہ لیجئے ایک بٹا سوتو کتنا سا آئے گا؟ اگر کسی کا پیٹ ایک روٹی سے بھرتا ہے اگر اس میں سے اتنا کم ہوجائے جتنا ایک چیونی کاٹ لیتی ہے تو اس کو پتا بھی نہیں چلے گا کہ کچھ کی ہوگئی ہے، ای طرح اگر آپ نے بازار ہے کوئی چرخریدی سورویے کی اور کسی دوسری جگہ وہ ننا نوے رویے میں اس جاتی ہے بلكه بعض مرتبه تواس ہے بھی زیادہ فرق ہوتا ہے، اتن کی جس کا احساس تک نہ ہواس طرح کے مشاہدات تورات دن ہورہے ہیں تو اللہ کے بندے! اگرسو میں ہے ایک روپیا تو نے جہاد کے لئے نکال دیا تو کیوں جان نکتی ہے؟ لوگوں کا حال تو یہ ہے کہ چمڑی جائے تو جائے دمڑی نہ جائے ، کہتے ہیں ہم تو خود ہی بھوکے مررہے ہیں جہاد میں کیالگائیں ،اللہ تعالی تو فرماتے ہیں:

وَانْفِقُوا فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوا بِاللّٰهِ يُكُمْ الِّي التَّهْلُكَةِ عَ ﴾

آج کا مسلمان سے کہتا ہے کہ اگر میں اللہ کی راہ میں پیسا نکالیّا ہوں تو بھوکا مرج دَن گا، اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ اگر جہاد میں پیسانہیں نگایا تو جاہ ہوجادگے، بیہ وہی قرآن ہے جسے آپ لوگ پڑھ پڑھ کرخوانیال کرکر کے مضائیاں کھاتے ہیں۔ فرمایا اللہ کے دائے میں بعنی جہاد میں خرچ کرواگر خرچ نہیں کروگے تو ہلاک ہوجاؤ فرمایا اللہ کے دائے ہوجاؤ

ھطیات اگرنتبیر ا**ک** در دول گے تباہ و بریاد ہوجاؤ گے کافر غالب آ جائیں گے تبہاری گرونیں اڑادیں گے، زکالو جہاد

برسی برسی شجار تیں نیاہ ہوجاتی ہیں:

فقرآ توسكا ہے برى برى توارتيل بين جاتى جي كام كى بات تو بتابى ويتا موں، ساتھ ساتھ عقل بھی کیھتے جائیں، یار کرقلم کے عاشق بہت ہول گے، آپ لوگوں میں بھی کچھ ہوں گے، ویسے آج کل کے اکثر مسلمانوں کو قلم سے کوئی مطلب ہے ہی نہیں، ایی بیکاری پنسلیں وسلیں لے رکھتے ہیں، پار رقلم بہت مشہور ہے، کسی نے بتایا کہ بارکر قلم والوں نے قلم کی تشہیر کے لئے کتاب پر برطانیہ کی ملکہ اور امریکا کے صدر کی تصویر دی ہے کہ وہ کسی ملاقات میں ایک دوسرے کو پار کر قلم کا تخد دے رہے میں، میں نے ہمیشد یار کراستعال کیا ہے سب سے او نیچ ورجہ کا، اب کچھ وقت سے وہ سیح مل بی نہیں رہے ایسے بیکار بیکار سے ہوگئے تو خیال ہوا کہ آخر کیا بات ہے سیح تلم کیون نہیں ٹل رہا تو پتا چلا کہ مینی بیٹے گئ ہے، دس سال کے اندر اندر تین بار تو ب چک ہے اور معیار فراب سے خراب تر ہوتا جارہا ہے۔ بدایک مثال دے دی ورنداس قتم کے قصے تو آپ لوگوں کو مجھ سے زیادہ معلوم ہوں کے بشرطیک اللہ تعالی عبرت کی آئکھیں بھی عطاء فرمادی، کون ی الی تجارت ہے جس کے بارے میں مید خیال ہوکہ تمھی بھی اس کوفقر و فاقہ نہیں آ سکتا؟ کیوں اللہ کے عذاب سے ایسے نڈراور بےخوف مورے ہیں؟ اگر تھوڑى ى آمان ہے تو موسكا ہے كوكل تك وه بھى ندر ہے۔ تو شاہوں کو گدا کردے گدا کو بادشاہ کردے اشارہ تیرا کافی ہے گھٹانے اور بردھانے میں ارسانی آمدن کوتھوڑی سجھنے والے! کچھ ہوش سے کام لے، دنیا کے تغیرات کو د کیجیں الی ایک دونہیں بیبیوں مثالیں مل جائیں گی کہ جوتھوڑی ہی بوجی تھی وہ بھی تناہ ہوگی۔ فرمایا: عناك قبل فقوك۔ فقر و فاقے ہے پہلے عن كوننيمت سمجھو، اس كی تشرح زيادہ اس لئے كردى كه كہين آپ لوگ دنیا كے حالات ہے بھور ہے ہول كدفقر و فاقد كہاں؟ عنا تو روز بروز بر ھربی ہے ہم پر فقر كہاں آئے گا ہم تو پہلے كوژى پق تھ پھر ہو گئے ديں روبيا پق پھر ہو گئے ديں روبيا پق پھر ہوگئے دي دئ ورب كئے سوپتى، دئ ورب كے دئ فاف، پھر ہوگئے دي ورب دئ اللہ بھر ہوگئے دي واللہ كانے دئ كا زمانہ، پھر دي دئ كرا دي دئ كا زمانہ، پھر دي دئ كرا دي دي كا زمانہ، كھر دي دي ورب كي دورب كا زمانہ، كہيں ھديث ميں شہر ہوكہ ہم پر بدونت نہيں آسكنا اس لئے كہ ہم تو روز بروزت تى پر بيں يوں چڑھ دہ بيں جھے لفٹ چڑھتى ہے بلكداس ہے بھى زيادہ، بيسا تو اتنا برس رہا ہے۔ رسول اللہ صلى اللہ عليہ وسلم نے فرمايا:

﴿وَاللّٰهِ مَاالفَقَرِ أَحْشَى عَلَيْكُمْ وَلَكُنَى أَحْشَى عَلَيْكُمْ أَانُ تَبْسَطُ الْدَنِيا عَلَيْكُمْ كَما بسطت على من كان قبلكم فتنا فسوها كماتنا فسوها وتهلككم كما أهلكتهم ﴾ (مسلم)

آپ سلی الله علیه و کلم نے فرمایا: والله! آپ سلی الله علیه و کم کوامت کی نالانقی پر انتازم آربا ہے کو تسمیں اٹھارہ ہیں۔ فرمایا: الله کا تمایا: الله کا تمایا کے پیچیے جھٹو گے اور وہ مہمیں جاہ کردے گی، اس لئے یہاں کسی کو بیا شکال ہوسکتا ہے کہ فحر فقر کہاں سے آئے گا غنا تو پڑھ رہی ہے تم تو بہت بڑے الدار ہوگئے۔ جیسے قارون کا قصہ ہے:

﴿ إِنَّ قَادُونَ کَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسِلی فَبَعٰی عَلَیْهِمْ صَ وَالنّبُنالُهُ مِنَ الْمُنْفِي مِنْ الْمُنْفِقَ فَ إِذْ مِنَ اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴿ وَالْبَعْفِ وَالْمَنْفِي اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴿ وَالْبَعْفِ فِلْمُ اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴾ وَالْبَعْفِ فَلْمُ اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴾ وَالْبَعْفِ فَلْمُ اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴾ وَالْبَعْفِ فِلْمَا اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴾ وَالْبُعْفِ فَلْمُ اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴾ وَالْبُعْفِ فَلْمُ اللّهُ لَا اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴾ وَالْبُعْفِ فَلْمُ اللّهُ لَا اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴾ وَالْبُعْفِ فَلْمُ اللّهُ لَا أَنْ مَلَاكُونَ وَلَا لَاللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴿ وَاللّهُ لَا اللّهُ لَا اللّهُ لَا أَنْهُونَ وَلَا لَا اللّهُ لَا يُحْسَبُكُ مِنَ اللّهُ لَا اللّهُ لَا اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ ﴾ وَاللّهُ لَا اللّهُ لَا يُحِب الْفَوْمِيْنَ كُلُولُولَ مِنْ اللّهُ لَا اللّهُ لَا يُحِب الْفُومِيْنَ ﴿ وَاللّهُ لَا اللّهُ لَا اللّهُ لَا يُحْسَبُونَ وَلَاللّهُ لَا يُحْسَلُونُ وَلَا لَا اللّهُ لَا اللّهُ لَا يُحْسَلُونَ اللّهُ لَا لَا لَا اللّهُ لَا لَا لَا اللّهُ لَا لَا اللّهُ اللّهُ لَا اللّهُ لَا لَا لَا اللّهُ لَا اللّهُ لَا لَا اللّهُ لَا لَا لَا لَا اللّهُ لَا اللّهُ لَا لَا لَا لَا اللّهُ لَا لَا لَ

وَٱحۡسِنُ كَمَاۤ ٱحۡسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبۡعُ الْفَسَادَ فِي الْاَرْضِ ا إِنَّ اللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۞ قَالَ إِنَّمَاۤ ٱوْتِيْتُهُ عَلَى اللَّهُ لَا يُحِبُّ عِلْمِ عِنْدِيْ ﴿ أُوَلَمْ يَعُلَمُ أَنَّ اللَّهَ قَدُ ٱهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُون مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاكْثُرُ جَمْعًا ﴿ وَلَا يُسْنَلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۞ فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ فِي زِيْنَتِهِ * قَالَ الَّذِيْنَ يُويْدُوْنَ الْحَيْوةَ الدُّنْيَا بِلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَاۤ أُوْتِيَ قَارُوْنُ لا انَّهُ لَذُوْحَظِّ عَظِيْم ۞ وَقَالَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ وَيُلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ امَنَ وَعَملَ صَالحًا ۖ وَلَا يُلُقَّهَا الَّا الصّبرُونَ ۞ فَحَسَفْنَا بِهِ وَبدّارِهِ الْأَرْضَ قَفَ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُونَهُ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ قَوْمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴾ وَاصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنُّوا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيُكَانَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ ۖ لَوْ لَا أَنْ مَّنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا * وَيُكَانَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكُفرُونَ (אד ווי עז – דא ט אר)

قارون کوالقد تعالی نے بہت بزیخزانے دیے تھے، استے بڑے خزانے کہان کی چاہیاں بہت بڑالشکر بھی مشکل سے اٹھا پاتا تھا، پکھلوگوں نے کہا کہ ارب پکھاللہ کو یادکرواس دنیا کی نغتوں کواللہ تعالی کو راضی رکھنے کی فکر کا ذریعہ بناؤ، اللہ سے مجت پیدا کرنے کا ذریعہ بناؤ، آخرت بنانے کا ذریعہ بناؤ، وہ نالؤش کہتا ہے کہ ارب کون ہے مجھے دینے والا بیتو میرااپنا کمال اور ہنر ہے، اللہ تعالی نے اسے اوراس کے محلات کو ذمین میں دھنسا دیا۔

کسی کو یدخیال ہوکہ فقر و فاقہ کا ہم پرکیا خوف ہے جس سے رسول التصلی اللہ علیہ وسلم نے ڈرایا ہے کہ فقر سے پہلے پہلے غما کوغنیمت سمجھو، ہم تو اڑتے چلے جارہے

میں ایک ایک لیے میں ترقی پرترقی ہوتی چلی جارہی ہے، ابا کے پاس گدھی بھی نہیں تھی ہمارہ ہے۔ ابا کے پاس گدھی بھی نہیں تھی ہمارہ ہے۔ ان تو ترقی ہورہی ہے، فقر وفاقہ سے کیا ڈرا رہے ہیں، کچھ بعید نہیں کہ اللہ تعالی دنیا میں عذاب کا کچھ مزا چکھانے کے لئے ایسا کٹکال کردیں کہ بھیک مانگما کچرے اور آخرت کا عذاب تو بہت خت ہے، جو کچھاللہ نے دیا ہاں میں سے پچھ نہ کچھ فیصد مقرر کریں کچھ تو نسبت قائم کریں خواہ وہ جتنی بھی ہو کہ اتنا حصد اللہ کی راہ میں خرج کروں گا، اسے فئیرت سجھیں۔

6 وفراغك قبل شغلك:

مشغولیت سے پہلے فراغت کوغنیمت سمجھو۔

رسول التصلى الله عليه وسلم في ايك دوسرى حديث ميس فرمايا:

﴿ نعمتان مغبون فيهما كثير من الناس الصحة والفراغ ﴾ (بحاري)

القدتع لی نے انسان کو دو بہت بڑی تعتیں دی چیں مگر بیناشکراانسان ان تعمقوں کی قدر نہیں کرتا بہت خسارے میں ہے، بہت بڑی تعمق ہو بہت بڑی کمائی کے اسباب موجود ہوں پھرجی نہیں کما تا تو کیسا نالائق ہے، رسول القد صلی اللہ علیہ وہلم نے فرمایا دونعتیں بہت بڑی جیں اللہ کوراضی کرنے کے لئے آخرت کمانے کے لئے گر دنیا کے اکثر لوگ خسارے میں ہیں بعنی ان تعتوں کی قدر نہیں کرتے آخرت کو بنانے کی فکر نہیں کرتے ، وہ دونعتیں ہیں صحت اور فراغت، اکثر لوگ ان دونوں نعمقوں کو ضائع کردیتے ہیں پھر جب بیاریاں لگ جتی ہیں کی کام کا نہیں رہتا اور جب مشاغل برجھ جاتے ہیں پھر اے آخرت یاد آتی ہے کہ چلئے اب کچھ کرلیا جائے جب پچھ کرنے کے قابل بی نہیں رہا تو اب کیا کرے گا؟ بچوا کچھ عبرت حاصل سیجئے رسول کرنے کے قابل بی نہیں رہا تو اب کیا کرے گا؟ بچوا کچھ عبرت حاصل سیجئے رسول التعملی اللہ علیہ وہلے کے ارشادات کیے کیے جیب ہیں۔

ارحیاتك قبل موتك:

موت سے پہلے اس حیات کوغنیمت مجھو، کہتم کمالواس زندگی میں آخری ایک دن آنے والا ہے، مجھے ای لئے فکر بڑھتی جارہی ہے جولحات زندگی رہ گئے ان کی قدر بڑھتی جارہی ہے کہ زیادہ سے زیادہ کام ہوجائے، اللہ تعالی اور زیادہ کام کرنے کی تو فتی عطاء فرمائیں اورانی رحمت سے قبول فرمائیں۔

وطن کی فکر:

شری لحاظ کے علاوہ عقلی لحاظ ہے بھی ہرانسان جس میں اللہ تعالی نے عقل کا کوئی خاندرکھا ہے، اگر عقل کا خاندرکھا ہی ہیں ہوا اللہ نے برکاریوں سے عقل کے خانے کو بڑا کہ کردیا ہے تو ان سے تو خطاب ہے ہی ہیں، اللہ نے جس کے دماغ میں عقل کا خانہ رکھا ہواور خانے میں عقل کھی رکھی ہو خالی نہ ہو خانہ مید بات اس پر بہت ہی واضح ہے کہ جیسے جیسے عمر زیادہ ہوتی ہے انسان کو اپنی موت کی طرف توجہ زیادہ ہوتی ہے، قبر کہ جیسے جیسے عمر زیادہ ہوتی ہے انسان کو اپنی موت کی طرف توجہ زیادہ ہوتی ہے، قبر سے قریب جارہا ہے، عام لوگوں میں مشہور ہے جب کوئی زیادہ پوڑھا ہوجاتا ہے تو کہتے ہیں کہ یا کسی کر ہا ہے، اس کے تو پاؤں قبر میں ہیں، یالوگ کہتے ہیں چراغ سحر ہے ایک ایک یا تیں کر ہا ہے کہتے ہیں چراغ سحر ہے جان کے جیسے جیسے عمر بیڑھ رہی ہے، کہتے ہیں گیا، پوری دنیا کے مسلمات میں سے ہے کہ جیسے جیسے عمر بیڑھ رہی ہونیا ہے مسلمات میں سے ہے کہ جیسے جیسے عمر بیڑھ اس کے دنیا سے دنیا سے دنیا سے دنیا ہے۔ اس لئے کا دونت قریب آ رہا ہے۔ اس لئے اس کے فکرتو ہونی چاہئے۔

۔ قدم سوئے مرقد نظر سوئے دنیا کہاں جارہا ہے کدھر دیکھتا ہے قبرکوسوچاکریں,فکرآخرت بیداکریں۔ ۔ رہ کے ونیا میں بشر کو نہیں زیبا غفلت موت کا وحیان بھی لازم ہے کہ ہر آن رہے جو بشر آتا ہے دنیا میں سے کہتی ہے تضا میں بھی چیچے چلی آتی ہوں ذرا وحیان رہے

لمتع من شميم عوار نجد فما بعد العشية من عوار

نجد میں ایک خوشبودار بوئی ہے جس کا نام "عرار" ہے، اس کی خوشبوصرف دن میں ہوتی ہے، دات میں نہیں ہوتی، بوثیوں کی مختلف اقسام ہیں، اللہ تعالیٰ کی قدرت اللہ ہے کے بعض بوٹیاں دن میں خوشبود ہی ہیں، بعض رات میں دیتی ہیں، جیسے یہال بھی دن کا راجداور رات کی رائی دونوں قسمیں موجود ہیں، دن کا راجدون میں خوشبود بتا ہے، رات کی رائی میں دن میں کوئی خوشبونییں ہوتی، رات کو خوشبو ہوتی ہے، ایسے بی نجد میں بوتی ہوتی ہوتی ہے رات میں ہوتی ہوتی ہوتی ہے رات میں ہوتی ہے رات میں ہوتی ہے۔ ا

من تسمیم عواد نجد
فعا بعد العشید من عواد نجد
ارے قافل!ارے قافل کرلے جہاں آفاب غروب ہوئے ہوگیا چرکھی کرلے تجھے عواد کی خوشبو خاصل کرلے جہاں آفاب غروب اس وقت تک تو زندہ رہے گا یا نہیں؟ عواد کی خوشبو حاصل کرنا چاہتا ہے تو وقت کو فیمت سمجھ کر کچھ کرلے، اپنی زندگی کا آفاب غروب ہونے سے پہلے دیا وآخرت کے عذاب سے بیجے دی کوشش کراہ ، کچھ ہوش کرہ ہوئے۔سندھی شاعر کی مثال بھی س

ليحث

تنی تدی کاھ
کانھی ویل ویھن جی
منان ٿئی اونداھ
پیر نہ کھین ہرین جو
تو کی سردی ٹس چانا جاجا، پیٹھنے کا وقت نہیں، کمیں اندھرا

کی کامجوب اس ہے الگ ہوگیا ہو پھڑ گیا ہو، وہ مجوب کی طاق بی سر گرداں ہے چکر کان دہا ہے ہوگیا ہو پھڑ گیا ہو، وہ مجوب کی طاق بی سر گرداں ہے جہوب کے پاؤں کے نقوش دیکھ دیکھ کے بیا گا جارہا ہے ، بھاگتے ہوا گا جارہا ہے ، بھاگتے ہوا گئے ارمجوب کو پانے سے پہلے آفا ب غروب ہوگیا تو اند جرے بیں محبوب کے قدموں کے نشان تو نظر آئیں گئے نہیں پھر یہ کیا کرے گا؟ ویکھتے کہی بجیب مثال ہے ، اللہ کا بندہ اپنے محبوب حقیقی اللہ تعالی کو راضی کرنے کے لئے اس مجوب کو پانے کے رات دن لگارہ ، ہمت برصانے کے لئے سوچا کریں کہ زندگی کا پانے رہ بھونے کے بعد تو کہ می نہیں ہو سے گا پھر وہ مجوب کیے لئے کا کا ؟ اس محبوب کی جوب کو بانے کے راضی کرنے کے بعد تو کہ می نہیں ہو سے گا پھر وہ محبوب کیے لئے گا؟ اس محبوب کی بانے کے راضی کرنے کے بعد تو کہ بھی نہیں ہو سے گا پھر وہ محبوب کیے لئے کا گا؟ اس محبوب کیا نے کے راضی کرنے کے بعد تو کہ بھی نہیں ہو سے گا پھر وہ محبوب کیے لئے کہ دار تھے کے کا کا اس محبوب کیا نے کے راضی کرنے کے بی کھا تا بیں ان کی قدر کیجیج

تتي ٿڌي کاه

بی میں ہوئی ہے۔ اور کی است کی است کی است کی است ہیں ہیں ہما گا چلا جا، اور کی جی بی ہما گا چلا جا، سواری کو ہمگا تا چلا جا، سواری کو ہمگا تا چلا جا آگر تو نے یہ خیال کیا کہ ذراتھوڑی در سولوں، می کو مردی کا دفت ہے، دو پہر کو گری ہے ذرا آ رام کرلوں، کی دوست سے کچھ با تیس کرلوں ارب نالائن! وفت گزر جائے گا چرکیا ہے گا ۔۔ نالائن! وفت گزر جائے گا چرکیا ہے گا ۔۔

ہیں ، بھین ہرین جو مطلب میہ ہے کہ اللہ تعالی کو رامنی رکھنے کے بارے میں تھے کتنی ہوی مشقتیر برداشت کرنی پڑیں کچھ بھی کرنا پڑے برداشت کر، اللہ کی رضا تو اس سے حاصل ہوتی ہے کہ خود بھی اللہ تعالی کی نافر مانیاں چھوڑ ہے، دوسروں سے بھی چھڑانے کی کوشش سیجیح ،اس کے بغیراللہ تعالی صرف اوراد و وظائف وغیرہ سے راضی نہیں ہوتے ، بنیا دی چیز یہ ہے کداللہ کی تافرمانیال چھوڑنے چھڑانے کا اہتمام کیا جائے، اللہ کی زمین پر ے اللہ کی بغاوت کوختم کرنے کی کوشش سیجئے ،اس میں آپ کے رشتہ دار ناراض ہول کے، والدین ناراض ہوں گے، کسی کی بیوی ناراض ہوگی، کسی خاتون کا شوہر ناراض ہوگا ، مختلف فتم کے حوادث آپ کے سامنے آئیں گے

مرى مردى جو كي محم مى مو مرتكيف كو برداشت كرتے موئے اينے مالك كى طرف برھتے چلے جائے، ہرشم کی تکلیفوں کوخندہ پیشانی ہے برداشت سیجئے اگر واقعۃ محبت ہے تو، اور اگر محبت کے صرف دعوے ہیں تو منافق ہیں منافق مجبوب کی رضا مقصود نہیں ایسے عاشقوں کا بیرحال ہے۔

۔ ہم فراق یار میں ممل محل کے ماتھی ہوگئے اتنے مکلے اتنے کھلے رہتم کے ساتھی ہوگئے

اگر آپ کے دلول میں الیم محبت ہے تو وہ تو پھر نفاق ہے پھر تو جھوڑ یے، محبت کے دعوے ہی چھوڑ دیجئے۔

جتنی عمر بردهتی جائے ویسے تو بیمعلوم نہیں کہ س کی عمر کتنی ہے گر جتنے زیادہ بوڑھے ہورہے ہیں سوچیں کہ آخر کتنی؟ تا کیے؟ تاکیے؟ تاکیے؟ لحہ یہ لحہ قبر کے قریب جارب میں اس لئے جیسے عمر زیادہ موای مقدار میں زیادہ سے زیادہ کوشش کی جائے کہ اللہ کی زمین پر اللہ کی حکومت قائم ہوجائے، اللہ کی نافر مانیوں سے اللہ ک

زمین کو یاک کیا جائے۔

دینی کامول کی قسمیں:

ا کیک بات اور بھی سمجھ لیس تو مجھ کوشش اور بھی زیادہ تیز ہوجائے وہ یہ کہ دین کے جو کام بھی انسان کرتا ہے ان کی قسمیں دو ہیں:

ن زیاده تواب کے لئے:

ایک تو سه که زیاده سے زیاده ثواب کمالے، ثواب پر نظر رہے کہ ثواب زیادہ ل جائے۔

ا عذاب سے بینے کے لئے:

دوسری فتم یہ ہے کہ عذاب سے فکا جائے، دنیا و آخرت میں اللہ کے عذاب سے فکح جائے۔

اب ذراسو چئے کہ ان دونوں میں سے زیادہ اہمت کس کی ہے؟ ٹواب کی باتیں کتنی ہی کمالے گر اگر عذاب ہی سے نہیں بچا چینک دیا گیا جہنم میں اور دنیا میں بھی اللہ کے عذاب کی گرفت میں آگیا تو وہ ٹواب کے کام اس کے کس کام آئیں گے؟ دنیا میں تجارت وغیرہ کے بارے میں یہ سوچتے ہیں کہ فلاں تجارت کرنے میں فائدہ زیادہ میں تجارت دومری بات بیسا منے ہوتی ہے کہ خمارے سے فی جائیں، سب سے بڑی فکر تو یہ ہوتی ہے کہ خمارے سے نیج جائیں، سب سے بڑی فکر تو یہ ہوتی ہے کہ خمارے سے نیج کی تعدید کھر آگر زیادہ سے زیادہ کمانا وہ بات بعد کی ہے، پہلی بات تو یہ ہے کہ خمارے سے نیج جائیں، کہیں ساری کی ساری لوخی تباہ نہ ہوجائے، دنیا کے معاملہ میں تو انسان میں بڑی عقل ہے اور آثرت کے معالم میں بری عقل ہے اور آثرت کے معالم میں کہ دوسروں کو اللہ کی نافر ماغوں سے بچانا بیرمرف فائدے کا کام نہیں بلکہ یہ یہ سوچیں کہ دوسروں کو اللہ کی نافر ماغوں سے بچانا بیرمرف فائدے کا کام نہیں بلکہ یہ یہ سوچیں کہ دوسروں کو اللہ کی نافر ماغوں سے بچانا بیرمرف فائدے کا کام نہیں بلکہ یہ

ا پے لئے عذاب سے بچنے کانسخہ بھیے میں نے پہلے بھی آیت بتالَ تھی: ﴿ وَاتَّقُواْ فِئْنَةً لَا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُواْ مِنْكُمُ خَاصَّةً ؟ وَاعْلَمُواْ آنَّ اللّهَ شَدِيْدُ الْمِقَابِ ۞﴾ (٨-٢٥)

جولوگ دوسروں کو گنہوں نے نہیں روکتے دہ یہ تہجمیں کہ عذاب آئے گا تو صرف گناہ گاروں پرآئے گا، ان پرنہیں آئے گا، خوب بجھے لیں! ونیا وآخرت دونوں کے عذاب میں یہ لوگ برابر کے شریک ہیں، یہ بی نہیں کتے۔ اللہ تعالی نے اپنی رحمت سے قرآن مجید میں بیان فرمائی ہوئی حقیقت اور اپنے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان مبارک پر جاری کی ہوئی حقیقت جس کے دل میں اتار دی ہو وہ ہر وقت سو چہا رہتا ہے کہ اگر میں نے لوگوں کونا فرمائی ہے بی نے کی کوشش تہیں کی تو میں دنیا کے عذاب سے بھی نہیں بی تو میں دنیا کے عذاب سے بھی نہیں بی سکتا اور آخرت کے عذاب سے بھی نہیں بی سکتا، جس کا عقیدہ یہ ہواسے آرام کیے آئے گا، وہ یہ زیادہ نہیں سوچتا کہ لوگ بی جائیں وہ تو اس سے یہ بیادہ یہ جو جائیں وہ تو اس سے نیادہ یہ بی جو جائیں وہ تو اس سے نیادہ یہ بی ترکز اجاؤں۔

وین کے معاملہ میں ایثار جائز نہیں:

ایک اصول سجھ لیں! دنیا کے معاملات میں تو ایٹار اچھی بات ہے، ایٹار کا مطلب یہ کہ دوسروں کو فائدہ کا بیٹیانے میں اپنا نقصان کرلیں کچھ حرج نہیں، اچھی بات ہے دوسرے کا کچھ بنانے کے لئے آئی دنیا کا نقصان کیا تو وہ در حقیقت نقصان نہیں بلکہ آخرت کا فائدہ ہے، دین کے معاطے میں اصول اس کے برعکس ہے، دوسرے کا دین بنانے کے لئے اپنا دین خراب کرلین صحیح نہیں، آخرت کے بارے میں، اللہ تعالی کو راضی کرنے کے بارے میں، دنیا و آخرت کے عذاب سے بیخنے کے بارے میں اپناننس سب مے مقدم ہے دوسرے لوگ بعد میں پہلے خود کو بچانے کی کوشش کیجے:

اپناننس سب سے مقدم ہے دوسرے لوگ بعد میں پہلے خود کو بچانے کی کوشش کیجے:

النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ﴾ (٦٠-١٠)

اورفرمايا:

﴿ وَأَمُو الْمُلْكَ بِالصَّلْوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا * لَا نَسْتَلُكَ رِزْقًا * نَحْنُ نُرُزُفُكَ * وَالْعَاقِبَةُ لِنتَّقُوٰى ۞ ﴿ ٢٠-١٣٢)

ا پنے اور اہل وعیال کے رزق کی فکر مت کرورزق تو ہمارے ذمہ ہے، ہم نے تمہارے ذمہ پیفرض نگایا ہے کہ خود بھی وین پر قائم رہواورا پنے اہل وعیال کو بھی وین پرقائم رہنے کا تھم دیتے رہو۔

اور فرمایا:

﴿ وَٱنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِسَ ١٦٤ - ٢١١)

تَنْجَعَمَهُ:"أَبِي قُريب تررثتُ واروں كواللہ كے عذاب سے ڈرائے۔"

الله ك عذاب سے اپ نفس ك حفاظت اپ كرانے كى حفاظت اپ قربي رشته داروں كى حفاظت اپ قربي رشته داروں كى حفاظت اپ فيروں كى بنست زيادہ ہے۔ جس كوالله تعالى نے يہ صحح عقيدہ عطاء فرماديا ہو، دل ميں بيد قيقت اتاردى ہوتو اسے آرام كيے آسكتا ہے؟ بيد ورد سب ميں بيدا ہوجائے تو مجارے تو مج

مرے سوز دروں سے آشنائی جب ہی ممکن ہے

کہ میرے دل سے چنگاری کسی کے دل میں پڑجائے
جس کوگل ہی نہیں دو کیا جائے کہ کیا ہورہا ہے، گلے تو پتا چلے۔

میں رونا اپنارونا ہوں تو دہ نس نہس کے سنتے ہیں
انہیں دل کی گلی اک دل گلی معلوم ہوتی ہے

تبلیغ ترک منکرات میں ایٹا فا کدہ:

لوگول کو گناموں سے رو کئے میں اپنا فائدہ ہے جس کی گئی وجوہ ہیں۔

فائده کی وجوه:

🛈 گناہول سے روکنا فرض ہے:

برسلمان پر بدفرض ہے کہ دوسروں کوجہنم ہے بچ نے کی کوشش کرے، اگر نہیں کرتا تو یہ بھی نہیں بچے گا خواہ رات رات بھر نوافل پڑ ھتا رہے نہیں ج سکے گا۔

ا دين يراستقامت مين آساني:

جیسے جیسے دومروں کو گناہوں ہے روکیں گے آپ کے لئے دین پر قائم رہنا اور گناہوں سے بچنا آسان ہوجائے گا، خاص طور پر اپنے گھر والوں کو اپنے موافق ہناہوں سے بچنا آسان ہوجائے گا، جوی موافق ہناہوں کے لئے شوہر موافق ہوجائے، والدین موافق ہوجائی، اولا وموافق ہوجائے، ہوالدین موافق ہوجائی، اولا وموافق ہوجائے، بھائی بہن موافق ہوجائی، قبیلہ کنبہ سارا ہی دیندار بن جائے تو سوچئے ویندار بنا آسان ہوگا یائیں ؟ بہت آسان ہوجائے گا اوراگر پورے گھر انے میں ایک فرد نیک ہے وہ نوافل بھی بہت پڑھتا ہے تبیجات بھی پڑھتا رہتا ہے گر جہاں گناہ فرد نیک ہے وہ نوافل بھی بہت پڑھتا ہے تبیجات بھی پڑھتا رہتا ہے گر جہاں گناہ جھوڑ نے چھڑانے کی بات کرتا ہے تو سارا کنبہ ہی خلاف ہوجا تا ہے، ویندار بنا مشکل ہوگیا، اس لئے لوگوں کو گناہوں سے بچانے کی کوشش کرنے میں اپنا فاکدہ یہ ہے کہ خود کہنے والے کے لئے دین پراستقامت آسان ہوجائے گی۔

المحكوت اسلاميد ك قيام مين آساني:

جیے جیے مسلمانوں سے اللہ کی نافر مانیاں چھوٹی جائیں گی حکومت اسلامیہ پوری د نیا پر قائم کرنا آسان ہوجائے گا، اس کی دو دہمیں ہیں، ایک فلاہر کی دوسری باطنی: طاہر کی وجہ:

ظاہری وجہتو جیسے میں نے پہلے بتادیا کہ آپ کا گھرانا نیک ہوگا تو آپ کو آسانی

ے دین پر استقامت حاصل ہوجائے گی، دنیا میں مسمانوں کی، صالحین کی، اللہ کی نافر مانیوں سے بیخے والول کی جب اکثریت ہوج نے گی تو قوت بڑھے گی جتنی قوت بڑھے کی حکومت اسلامیے کا قائم کرتا آسان ہوج نے گا۔

باطنی وجه:

باطنی وجدیہ ہے کداللہ تعالی کی رحمت متوجہ ہوگی، نافر مانیوں سے نج رہے ہیں، اللہ تعالیٰ کی بخاوت چیوڑ رہے ہیں، اللہ تعالیٰ کی بخاوت چیوڑ رہے ہیں ووسروں سے بھی چیڑانے کی کوشش کررہے ہیں، ایوں اللہ تعالیٰ کی اپنے ایسے بندوں پر رحمت متوجہ ہوگی، رحمت کا اثر یہ ہوگا کہ دنیا پر اللہ تعالیٰ کی حکومت قائم ہوجائے گی، ایسے مدو ہوگی:

﴿ وَعَدَاللّٰهُ الَّذِيْنَ الْمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصَّلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَ الَّذِيْنَ مِنْ لَيَسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ وَلَيْبَكِنَّ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ﴿ ١٤-٥٠)

میں قرآن مجیدی آیت تو پڑھ دیتا ہوں مگراس کی تغییر میں جب بھی کوئی الیک بات بتاتا ہوں جو آج کل کے مسلمان کے دل و دماغ میں اترتی ہی نہیں، انہوں نے کبھی می مینیں ہوگ تو مجھے پھروہی ھبہ ہوتا ہے کہ بیالاگ کہتے ہوں گے معلوم نہیں بیک معرے قرآن لے آیا ہے، ارے یہی قرآن ہے جو آپ لوگ خوانیوں میں پڑھتے ہیں، بیدوہی قرآن لے آیا۔ فرایا کہ اگر آلوگ دو ہیں، بیدوہی قرآن ہے میں کوئی الگ سے قرآن نہیں لے آتا۔ فرایا کہ اگر آلوگ دو کام کرلو، اپنے عقا کہ تھے کرلو اور اللہ تعالی کی نافر مانیاں چھوڑ دو، اس پر بھی لوگوں کو تعجب ہوگا کہ قرآن میں تو ہے کہ اعمال صالحہ کرو اور میں بتارہا ہوں کہ اللہ تعالیٰ کی نافر مانیاں چھوڑو، آئیس اعمال صالحہ کا مطلب شیطان نے یہ سمجھا رکھا ہے کہ شیخ پھراتے رہو۔ فوب بجھ لیجے! اعمال صالحہ کی نیاد یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی پھراتے رہو۔ فوب بجھ لیجے! اعمال صالحہ کی نیاد یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی

نافرمانی چھوڑ دی جائے، عقائد میچ کرلیں اور اُندگی نافرمانیاں چھوڑ دیں، اگر سلمان بیدو کام کرلیں گئے تو ابتد کا وعدہ ہے اللہ کا وعدہ کہ پوری دنیا پر تمہاری حکومت ہوگی، التہ تہمیں حکومت وے دے گا بہت مضوط حکومت، دنیا میں پوری زمین پر تمکین ہوگی، پوری قوت تمہاری ہوگی۔ دوسری جگہ فرمایا:

﴿ وَٱنْتُمُ الْأَغُلُونَ إِنْ كُنْتُمْ مُّوْمِنِيْنَ ۞ ﴾ (١٣٩-٣)

تم مؤمن بن جاؤ تو تم ہی غالب ربوگے، دنیا کی کوئی طاقت تم ہے نکرانہیں سکے گی تمہارے مقالبے میں نہیں آسکے گی ، یہ فیصلہ فرمادیا۔

دوياتنس:

اک بارے میں دو باتنیں اور مزید مجھ لیں۔

🛈 وعدهٔ اقتدار پوری دینداری پرہے:

ایک تو بید که نیک بینے سے بیاثر ہوگا کد دنیا پر اسلام کی حکومت قائم ہوجائے گی،
اس کا مطلب بین سمجھ لیس کہ تھوڑ ہے تھوڑ سے نیک بینے سے بھی ہوجائے گی جے
کہتے ہیں رگروٹ، آ دھا تیز، آ دھا بیر صرف نمازیں پڑھ لیس پڑھالیس یا بید کہ شکل و
صورت مسلمانوں جیسی بنائی اور بیسوچ لیا کہ اب ہم ہوگئے مسلمان، اب ہمیں
حکومت مل جائے گی بیر بہت بڑی غلط ہی ہے، دیکھتے میں جو کچھ تا تا ہوں قرآن مجید
سے بتا تا ہوں، اللہ کرے کہ آج کے مسلمان کوقرآن برائیان آجائے، فرمایا:

﴿ لِمَا لَيُهُمَا الَّذِيْنَ الْمَنُوا ادْخُلُواْ فِي السِّلْمِ كَافَّةٌ صُ وَلَا تَشَيِعُواْ خُطُواتِ الشَّيْطُنِ النَّهُ لَكُمْ عَدُوَّمُبِيْنَ ۞ فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِّنَ بَعْدِ مَاجَاءَ تُكُمُ الْبَيِّنْتُ فَاعْلَمُوا ۖ أَنَّ اللَّهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۞ (٢-٨٠١٥)

الله تعالى كوعلم تفا كرمحاب كرام رضى الله تعالى عنهم ك بعد يجد مدت علت علت

مسلمانوں میں ایساز ماند آئے گاکہ بیتھوڑ نے تھوڑ نے انڈے کچے بنج بننے کے بعد سیم مسلمان بن گئے ، لیکھ مسلمان بن گئے ، اللہ کوتو سب علم تھانا اس چیز کا کہ نماز پڑھ کیں اور شکل وصورت ذرا ذرا بن جائے ، حرام خوری چھوڑ نے کی ضرورت نہیں، ٹی وی جیسی لعنت سے بیختے کی ضرورت نہیں اور بڑے بزے گنا ہوں سے بیختے کی ضرورت نہیں اور بڑے بزے گئے ایسے بن جاؤ ۔ اللہ کوتو ہر چیز کا کی ضرورت نہیں بس تھوڑ نے تھوڑ نے چلتے پھرتے کچھا لیسے بن جاؤ ۔ اللہ کوتو ہر چیز کا علم ہے ای لئے عبد فرمادی:

﴿ إِنَّا يَهُمَا الَّذِينَ الْمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً ص

اے ایمان کے دعوے کرنے والو! شروع ہی کیسے فرمایا، الله تعالی تنب شروع ہی کیے فرماتے ہیں. یا اَبُعُهَا الَّذِيْنَ المَنْهُ السِّحِ بات توبہ ہے کہ یا تو ایمان کے دعوے حچوز دو،مسلمان کہلاتا حچوز دوکوں مجبور لرتاہے کہ مسلمان بنوادرا گرایمان کے دعویے کرتے ہوتوان لوگوں کو ہم خطاب کرتے ہیں جوایمان کے دعوے کرتے ہیں۔ جب ا بمان کا دعویٰ کیا تو اس کا مطلب یہ ہے کہ یا اللہ! ہمیں تیرے ساتھ السی محبت ہوگئی كه بم تيرى ہر بات مانيں گے۔ ہم تيرے عاشق ہو گئے عاشق۔ ارے عاشقو! ايمان کے دعوے کرنے والو اعشق کا دم مجرنے والو! مجھے اگر راضی کرنا ما سبتے ہوتو آ دھا تیتر آ دھا بٹیرنہیں، آ دھامسلمان آ دھا ہندونہیں، میں ایسے دھوکے میں آنے والا التذہیں ہوں، اذخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَةٌ صد يورے كے يورے كمل يوفى سے ايوى تك سارے كے سادے ہر قدم ير ہرمعالمے ميں كيے سيح بورے كے بورے اسلام میں داخل ہوجا ؟، آگر ایسانہیں کیا اسلام کے لاکھوں احکام میں سے سارے احکام پر عمل كرنا شروع كرديا مكركسي ايك يرعمل نبيس كررب تو پھر آپ رحمٰن كا اجاع نبيس كررے شيطان كا اتباع كررے بين اس لئے فرمايا: ولا تَتَبعُوا خُطُونِ السَّيْطُ مل سيطان كا اتباع مت كرو، رحمٰ كا اتباع جب بى بوكا كرحمٰ كم تمام احکام بڑمل کیا جائے۔ یہ تنبیہ فرمانے کے بعد آ گے فرماتے ہیں کہ ہم نے بیاتو بتادیا کرتم رحمٰن کے بندے کیے بنوعے؟ مسلمان کیے بنوعے؟ اگر اس کے باوجود سب
احکام پڑ ممن نہیں کیاایک آ دھ تھم الیا بھی ہے کہ جس پڑ مکن نہیں کرتے ، بھی بھی ٹی وی
دیکے لیتے ہیں یا کہیں کوئی زادساہتے آئی تو اس ہے باتیں واقی بھی کر لیتے ہیں اور بھ بھی
کوآ دھی بیوی سجھ لیا اس ہے بے تکلفی ہے بات چیت وغیرہ کر لیتے ہیں اور بھ بھی
کے لئے دیور محکے کا زیور ہے ہوئے ہیں، ایسے ایسے قصے بھی کر لیتے ہیں اور ساتھ ہی
تماز بھی پڑھ لیتے ہیں، اس پر بوں تنبی فرماتے ہیں:

﴿ فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعُدِ مَاجَاءَ تُكُمُ الْبَيِّنْتُ ﴾

س لوا ہمارے احکام کوئی مبہم نہیں مخلی نہیں صاف صاف احکام ہیں صاف صاف، ایسے نہیں کہ کوئی انہیں مجھے نہ پائے، ایسے صاف صاف احکام آنے کے بعد مجھی اگر کسی نے ان میں سے کسی تھم برعمل نہیں کیا تو:

﴿ فَاعْلَمُوآ أَنَّ اللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۞ ﴾

فاغلَمُوآ کے معنی ' جان او' سی خیرس، عام طور پرعلم کے معنی ' جانا' کردیے جاتے ہیں جبد عربی میں علم کے معنی ہیں ' بیعین کرنا' کی چیز کو بیعین کے ساتھ جانے کو علم کتبے ہیں۔ فاغلَمُوآ بیتین کرلوا اگر اللہ تعالی کی بینات یعنی صاف صاف احکام آنے کے بعد بھی اپنے اعمال کی اصلاح نہیں کی کوشش نہیں کی تو بیتین کرلوا کہ اللہ تعالی غالب ہے۔ کہیں نہیں کی کوشش نہیں کی تو بیتین کرلوا کہ اللہ تعالی غالب ہے۔ کہیں آرہے ہیں، فی وی بھی دیھتے چلے آرہے ہیں، فی وی بھی دیھتے چلے آرہے ہیں، فی وی بھی دیھتے چلے آرہے ہیں، نی وی بھی دیھتے سے کہیں آرہے ہیں، مینہ کردہ ہیں، عزیز۔ اللہ تمہیں کہیں نئی جائمیں گے۔ اللہ تعالیٰ ڈرا رہے ہیں، متنبہ کردہ ہیں؛ عزیز۔ اللہ تمہیں عذاب دیئے پر قادر ہے۔ یہ سوچ لیا کریں کہ اللہ کو قدرت ہے یہ نہیں؟ کی اللہ ہے عناب اللہ تعالیٰ کی قدرت سے کہیں باہر جا گئے جے؟ اللہ تم ہے ڈرد ہاہے؟ ایسا بھی نہیں، کیا اللہ تعالیٰ کی قدرت سے کہیں باہر جا گئے

ہیں؟ باہر بھی نہیں جاسکتے، ہاں ایک عقیدہ ہے آن کل کے سلمان کا وہ یہ کہ کسی بھل عالی ہے وظیفہ پوچھ لیس کے اس قتم کی حرکتیں تو بدلوگ بہت کرتے ہیں تا کہیں بہتی کے کئی مال سے وظیفہ پوچھ لیس کے اس قتم کی حرکتیں تو بدلوگ بہت کرتے ہیں تا کہیں بہتی کئی کئی مال کر با ہے یا رزق کا دروازہ فہیں کھل رہا، جہاں بھی ہاتھ ڈالتے ہیں تا کا می ہوتی ہے، کسی نے بندش لگادی ہے، وہ انہیں کچھ دے دیتا ہے فلیتے پلیتے یا کچھ پڑھنے کو بتادیتا ہے کہ شادی تہیں ہورہی تو منزل پڑھ لو یا مریم پڑھ لو اتن آئی بارادراگر رزق کی کی ہے تو اس کے لئے سورہ واقعہ پڑھ لو، ان لوگوں کا خیال ہے ہے کہ جس دروازے کو اللہ نے بند کردیا اسے یہ برمثل بڑھ لول سکتے ہیں۔ یہ جان کا عقیدہ کہ عامل اللہ کے عذاب سے بچالیتا ہے، اللہ عالی مول سکتے ہیں۔ یہ جان کا عقیدہ کہ عامل اللہ کے عذاب سے بچالیتا ہے، اللہ تعالی مرازے ہیں:

﴿ فَاعْلَمُوْ آ أَنَّ اللَّهُ عَزِيْرٌ حَكِيمٌ ٥

یقین کرلواللہ غالب ہے عالب، اللہ کے عذاب سے کوئی نہیں بچا سکا، نہ عال نہ کوئی اور، کوئی بھی نہیں بچاسکا، رہی ہے بات کہ جب اللہ غالب ہے تو استے سال گزر مجئے نافر مانیاں کرتے پھر عذاب آتا کیوں نہیں، اس کے دوجواب میں:

الله ك نافر مانوں ك پاس جاكران ك حالات كو ديكھيں طرح طرح ك عذابوں ميں پيے جارہ جي بيں مون تو ان ك قريب بھى نہيں ہوئا، ونيا ميں چيلس چوري ان ك حالات كا جائزہ ليں اور جو خود نافر مان بيں وہ اپنے حالات كا جائزہ ليں كر جون ان كريا سكون ان ك قريب محى نہيں حالات كا جائزہ ليں كريا سكون ان ك قريب محى نہيں آ سكا، ميرا الله كہتا ہے تو ميں كيے اس پر ايمان نہ لاؤں؟ يا الله! ججے تير وعدوں پر، تير ع فيصلوں پر يكا يقين، يكا يقين، يكا يقين، يكا يقين ہے، ميں فتميں اشما كركوں كا كرسكون ان ك ول ك قريب بھى نہيں آ سكا، جب الله نے فيصلو كريا ہوں نہيں آ سكا، جب الله نے فيصله كرديا كہم اپنے نافر مانوں ك ولوں ميں سكون نہيں آ نے دوں كا تو ميں كيے افران ك ولوں ميں سكون نہيں آ نے دوں كا تو ميں كيے افران ك ولوں ميں سكون نہيں آ نے دوں كا تو ميں كيے الله كوئ ہے تو ذرا جھے نبل تو

وکھائے! چندلمحوں میں کہدوے گا کہ باں ہاں میں پریثان ہول آپ ہی کوئی تعویز دے دیں کچھ بڑھنے کو بتادیں بہت پرایشان ہوں، ارے آپ تو رہے آپ میں نے تو آپ کے بروں سے بھی اقرار کروالیا، برے کون؟ امریکا، بدد ینوں کو خطاب کررہا ، ہوں، بے دینوں کا بڑا کون ہے؟ امریکا، انگلینڈ، کینیڈا، دیسٹ انڈیز۔ جب میں ان ممالک میں گیا تو جہال بھی جاتے وہاں امیگریشن اور پاسپورٹ وغیرہ کے لئے جانا یرتا جہاں بھی تھوڑی می دیر کے لئے تھبرتے، میں اسپنے ساتھی ہے کہتا کہ پہلے اسے میرا تعارف کروائیں میرے بارے میں بتائیں کہ بیدال کے بہت بڑے اسپیشلٹ ہیں،میراسائھی تعارف کرواتا، میں نے اپنے ساتھی توسمجھ رکھاتھا کہ تعارف کروانے کے بعداس سے یہ کہیں کہ اسپیشلٹ صاحب فرمارے میں کہ آپ کا ول پریشان رہتا ہے، اکثر تو پہلے ہی سوال میں مان لیتے تھے کہ بان پریشان میں کہیں ایک باراہیا موا کہ کس نے چھیانے کی کوشش کی کہا کہ نہیں وئی پریش فی نہیں اس نے سمجھا کہ ایسے ہی بات کل جائے گی،میرے ساتھی نے مجھے بتایا کہ ریتو کہتا ہے کہ کوئی پرایٹانی نہیں تو میں نے اپنے ترجمان ہے کہاس ہے کہویہ کسے ہوسکتا ہے دل کا آنا بڑا اس پیشلسٹ کہدرہا ہے کہ تیرے دل میں پریشانی ہے، میں نے کہا اسے ذرا ڈ انٹ کر کہو پھر جب وہ اس طرح کہتا تو مان لیتا کہ بال یر بیٹان ہوں۔ ہم نے تو بدمعاشوں کے اباؤل ہے اقرار کروالیا بہ کیا ہیں؟ کوئی آئے توسی ہمارے سامنے چند کھوں میں کیے گا کہ بال بریشان موں، اس بر کوئی جنات وغیرہ مسلط نہیں کروں گا، میدامند تعالیٰ کا عذاب بان لوگول ير ماننايزے كاكم يريشان بين معلوم مواب كدامريكا كے سيتالول میں جو بوڑھی عورتیں داخل ہوتی ہیں ان کے علاج میں بیٹ مل ہے کہ پچھالوگول کواس کام کے لئے معین کیا جاتا ہے کہان کے ساتھ ناچیں وہ اُندں بستروں ہے اٹھا اٹھا کر نجاتے ہیں، پدلوگ بڈھے ہو جائیں تو بھی جب تک ناچے نہیں، ٹی وی نہیں ویکھ لیتے اس وقت تک زندہ نہیں رہ سکتے ،ایسی ایسی چیزیں دیکھ دیکھ کرمن من کریہ خورا کیس لے کر بدندہ ہیں، اگر بدلوگ بدح کتیں کرنا چھوڑ دیں تو ایک دن تو کیا ایک لحد بھی زندہ ہیں، اگر بدلوگ بدح کتیں کرنا چھوڑ دیں تو ایک دن تو کیا ایک لحد بھی زندہ نہیں رہ سکتے، بداللہ تعالیٰ کی نافرہانیوں کا اثر ہے اور جو لوگ اللہ تعالیٰ کی نافرہانیوں کو چھوڑ دیتے ہیں، پوری دنیا ہیں قابد کی نیفرنہ نافرہانیوں سے نیچتے والاکی نے پریشان دیکھا ہو، بدہوئی ہیں سکتا کہ اسے بھی نیفرنہ آتی ہو، خواب آور گولیاں کھائی پڑتی ہوں وہ تو بڑے آ رام سے سوتے ہیں۔ ان انگریدوں کو ہیں آیک ہات اور بھی بتاویتا تھا، ہیں بہتا تھا کہ جس کے اللہ بی تین ہیں اسے تو بھی سکون کہاں سے سے گا؟ جس نام کے تین مالک ہوں اسے تو بھی سکون میں سکتا، تہارے اللہ تو تین ہیں ارسے کہاں سے آ یا سکون تہارے پاس، اللہ تو بالی، اللہ تو اسے تو بالی، اللہ تو بالی، اللہ تو اللہ نے قرآن مجید میں ایک مثال کے ذریعہ یہ تھیقت واضح فربادی ہے، ارشاد فربایا:

﴿ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُركَاءٌ مُتَشْكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَماً لِرَجُلِ * هَلْ يَسْتَوِيْنِ مَثَلًا * ٱلْحَمْدُلِلَّهِ * بَلْ آكْنُوُمُرُ لَا يَغْلَمُوْنَ ۞ (٢٥-٢١)

مثال یہ بیان فرمائی کہ کمی غلام کے تین چار مالک ہوں، ایک ادھر سے کھینچتا ہے، ایک ایپ ایک اوھر سے کھینچتا ہے، ایک اپنے کام کے لئے بلاتا ہے دومرا اپنی طرف بلاتا ہے، جس مالک کے حکم کی بجا آوری میں تا خیر کرتا ہے دہ اس کی ٹھکائی لگاتا ہے مارتا ہے، ایسے غلام کو بھی بھی سکون ملا؟ سکون اسے ملتا ہے جو ایک مالک کا غلام ہو، وہ مالک اگر اسے مارتا بھی رہے تو بھی دہ سکون سے رہے گا، جوایک کی غلامی اختیار کرے دہ بھی پریشان نہیں ہوتا اور زیادہ آقا وک کا غلام بھی سکون نہیں پاسکا۔

مصیبت میں ہے جان کس کس کو دیں دل

ہزاروں تو دلبر ہیں اور ہم اکیلے

دلبرایک ہوتو تخیے سکون رہے، تو نے دلبرتو بنار کھے جیں ہزاروں، ہزاروں، ایک

ادھرے تھنچاہ، دوسراادھرے تھنچتاہ، تیسراادھرے تھنچتاہے تو تو عذاب سے کیے بیاہواہے؟ عذاب ہے ان برعذاب، عذاب سے نیجے ہوئے نہیں ہیں۔

🕡 دوسری بات الله تعالی نے خود بی ای آیت میں ارشاد فرمادی:

﴿ فَالْنُ زَلَلْتُمُ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَ تُكُمُ الْبَيِّنْتُ فَاعْلَمُواۤ اَنَّ اللَّهَ عَزِيْزُ حَكِيْمٌ ۞ ﴾ الله عَزِيْزُ حَكِيْمٌ ۞ ﴾

الله تعالی اپنا تافرمانوں پر سے تھوڑی دیر کے لئے عذاب ہٹادیتے ہیں، فرض
کرلیں کہ کوئی عذاب نہیں ہے تو اللہ غالب ہونے کے علاوہ عکیم بھی تو ہے، وہ قادر
ہے عذاب دینے پر گراس کے ہرکام بیں مصلحت اور حکمت ہوتی ہے، ایسے نافر مانوں
پر جلدی اور بڑا عذاب اس لئے نہیں آتا، اللہ تعالی اس لئے تباہ و برباد نہیں کرتے کہ
اس بیں چھے حکمت ہے، استدراج ہے استدراج، ذرا تھوڑی دیر مزے لے لوپھر آگے
چل کر دیکھتے سب کسریں نکالیس کے، اللہ عزیز اور غالب بھی ہے، حکیم بھی ہے، اس
کے ہرکام میں حکمت ہواکرتی ہے۔

ایک بات توبیہ ہوگئ کہ اسلامی حکومت قائم کرنے کے لئے آ دھے تیتر آ دھے بٹیر بنتا کافی نہیں، یورے یورے مسلمان بیننے کی کوشش کریں۔

الموارا الله الغير بور مسلمان نبيس بن عكة:

دوسری بات میر کہیں ان آیات سے بیفلط بھی ہونے گئے کہ بس ہم محرات کو چھوڑ کر پورے مسلمان بن جائیں گئے تھا کہ جھوڑ کر پورے مسلمان بن جائیں گئے تو تکوار اٹھائے بغیر بی اسلامی حکومت قائم ہوجائے گی، بیتاممکن اور محال بات ذہن جے نکال دیں اس لئے کہ سب سے برا محکر، سب سے برای نافر مانی تو ترک جہاد ہے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

﴿ من مات ولمر يغز ولمر يحدث به نفسه مات على شعبة

من نفاق) (صحيح مسلم)

تَنْرِیَحَمَدُ: ''جُوْخُصُ ایس حالت میں مرا کداس نے نہ بھی جہاد کیا اور نہ ہی اس بارے میں بھی کچھ سوچا وہ نفاق کے شعبہ پر مرا۔''

پھراللہ تعالی نے قال کے ایسے زور دارا دکام کیوں نازل فرمائے؟ فرمایا: وَقَاتِلُوهُمُو حَتَّى لاَ تَكُونَ فَعْنَهُ وَيْكُونَ الدَّيْنُ كُلُّهُ لَلَهُ * ﴾

(T9-A)

قال کروقال، الله کے دشمنوں سے قال کرو، اور کب تک؟ اس وقت تک قال کرو کا اللہ کا بن جائے۔ آگر کروکہ اللہ کا بن جائے۔ آگر جہاد کے بغیر ہی صحیح مسلمان بناممکن ہوتا تو اللہ تعالیٰ صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم اور کہا دعوں کے بنیے ہی جو ایک بنے کہ بم صحیح مسلمان بن گئے یا اللہ! اب تو قال کے بغیر ہی اسلامی صورے وہ تو کہتے کہ ہم صحیح مسلمان بن گئے یا اللہ! اب تو قال کے بغیر ہی اسلامی صورے تا کم فرماد ہے۔ قرآن مجید میں جہاد کی تاکید اور اس میں خفلت کرنے پراللہ تعالیٰ کی طرف سے بہت سخت عذاب کی وعیدوں کی پھی تفصیل انشاء اللہ تعالیٰ ورا تھیل کی طرف ہے۔ بہت سخت عذاب کی وعیدوں کی پھی تفصیل انشاء اللہ تعالیٰ ورا

ترك منكرات كي بغير حكومت الهيدكا قيام مكن نهيس:

مسلمان الله تعالی کی نافر مانیوں کو جب تک نہیں چھوڑیں کے اور دوسرول سے چھڑوانے کی کوشش نہیں کریں گے اس وقت تک اللہ کے دشنوں پر غلبہ حاصل نہیں ہوسکتا، ونیا میں حکومت البید قائم نہیں ہوگ ونیا میں البید قائم نہیں ہوگ ونیا میں امن وامان قائم نہیں ہوسکتا اس لئے مجھے زیادہ سے زیادہ سے خیال رہتا ہے کہ لوگ گنا ہوں کو چھوڑیں، نافر مانیوں کو چھوڑیں تا کہ اللہ تعالیٰ کی رضا حاصل ہوجا ہے،

الله تعالی کی رحمت نازل ہو، الله کی زمین پر الله کی حکومت قائم ہوجائے۔ یہ بات خوب سمجھ لیس کداس ہی مطلب نہیں کہ اپنے طور پر گناہوں کو چھوڑ دیں نیک عمل کرتے رہیں، زبانی تبلغ کرتے رہیں تو ایسے ہی الله کی حکومت قائم ہوجائے گ، ایسے نہیں ہوگی۔

ا قامت حكومت الهيه ك لئم مسلح جهاد ضروري ب:

الله کی زمین پرالله کی حکومت قائم کرنے کے لئے سب ہے پہلی بات یہ ہے کہ تقوی کے ساتھ ساتھ سلح جہاد ہو، جب تک مسلح جہاد نہیں کریں گے، الله کی راہ میں جب تک قال نہیں کر یں گے جب تک الله کے وقعمنوں کی گردنیں اڑانے کے جذبات ہی نہیں جب تک ان کی گردنیں نہیں جذبات ہی نہیں جب تک ان کی گردنیں نہیں اڑائیں گے اس وقت تک حکومت اللہ یہ قائم نہیں ہو سکتی، یہ الله تعالیٰ کا دستور ہے شروع ہے لے کر قامت تک۔

تارك جهاد نيك نهيس موسكتا:

سی بچھ لینا کہ جہاد کی طرف توجہ کے بغیر کوئی صائح بن سکتا ہے بنفس وشیطان کا دسمی اور فریب ہے، جہاد کئے بغیرتو کوئی شخص صائح اور نیک بن بی نہیں سکتا یہ ناممین ہے، اس لئے کہ اتنا برا فرض، اتنا برا فرض جو انبیاء سابقین علیم السلوة والسلام پر بھی فرض تھا اور انبول نے بیلے انبیاء کرام علیم السلوقة والسلام کے قال کا کئی جگہ پر ذکر فرمایا ہے اور پھر رسول التدسلی اللہ علیہ مسلم اور حضرات صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنبم کو بار بار اس کی تاکید فرم نی قاتل، قال واللہ قال ،
تاكيد ہواييا مؤكد تھم اس كا تارك كيے صالح مسلمان بن سكتا ہے؟ بن بى نہيں سكتا۔ قرآن مجيد ميں كل مجدرك قال پر بہت خت وعيدين آكى ہيں، بہت خت وعيدين، فرمانا:

﴿ وَإِنْ نَتَوَلَّوْا يَسْتَبُدِلْ قَوْمًا غَيْرِكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُواْ آمْفَالُكُمْ ﴾

(TX-{Y)

آگرتم نے اللہ کے دشنوں کی گردنیں نہیں ازائیں، بردل بن کر بیٹے رہت واللہ تعالی تہیں ہا اگر تم نے اللہ کور سے اللہ تعالی اپنے کوئی دوسرے بندے پیدا کرے گا وہ جباد کریں گے اوراللہ کے دشنوں کی گردنیں اڑا اڑا کر آئیس جہنم رسید کریں گے۔ حضرت عینی علیہ السلام کے بارے بیں تو سب مسلمان جائیں ہی ہیں ان کے تشریف لانے سے پہلے پھھ اتنی کوشش تو کرلیں کہ جب حضرت عینی علیہ السلام تشریف لانے سے پہلے پھھ اتنی کوشش تو کرلیں کہ جب حضرت عینی علیہ السلام تشریف لائیں تو آپ کے حالات کو دیکھ کرخوش ہوجائیں، واہ مجاہدین عینی علیہ السلام تشریف کا تام من کربی دھوتی کی دھلائی کی ضرورت بیش آتی ہے تو کہیں اوراگر کلاشکوف کا تام من کربی دھوتی کی دھلائی کی ضرورت بیش آتی ہے تو کہیں ایسانہ ہو کہ حضرت عینی علیہ السلام سب سے پہلے انہی کی گردنیں اڑانے کا تھم ویں جنہوں نے اللہ کی زیٹن پر اللہ کی حکومت قائم کرنے کی کوشش نیس کی۔ سنے ! میرا اللہ کی کومت قائم کرنے کی کوشش نیس کی۔ سنے ! میرا اللہ کی کومت قائم کرنے کی کوشش نیس کی۔ سنے ! میرا اللہ کی کومت قائم کرنے کی کوشش نیس کی۔ سنے ! میرا

وَعَشِيْرَتُكُمْ وَآمُوالُ إِفْتَرَفْتُمُوهَا وَنِجَادَةً تَخْشُونَ كَسَادَهَا وَعَشِيْرَتُكُمْ وَآزُوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَآمُوالُ إِفْتَرَفْتُمُوهَا وَنِجَادَةً تَخْشُونَ كَسَادَهَا وَمَسْكِنُ تَرْضَوْنَهَ آخَبُ النِّكُمْ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُواْ حَتَّى يَأْتِي اللَّهُ بِأَمْرِهِ * وَاللَّهُ لَا يَهْدِي فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُواْ حَتَّى يَأْتِي اللَّهُ بِأَمْرِهِ * وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْفَقُومَ الْفُسِقِيْنَ ۞ (١-٢٤) الْفَوْمِ اللهُ الرَّهُارِي جَعْ اور تَمَارِي باب اورتهارے بيخ اور تَرَجَمَدَ: "آپ كه ديجَة كراكرتهارے باب اورتهارے بيخ اور

تمبارے بھائی اور تمہاری ہویاں اور تمبارا کنبداور وہ مال جوتم نے کمائے جیں اور وہ تجارت جس میں نکاک شہونے کا تمہیں اندیشہ ہواور وہ گھر جنہیں تم پیند کرتے ہو تمہیں اللہ سے اور اس کے رسول سے اور اس کی راہ میں جہاد کرنے سے زیادہ پیارے ہوں تو تم منتظر رہو یہاں تک کہ اللہ اپنا تھم بھیج دے اور اللہ تعالیٰ بے تھی کرنے والوں کو ان کے مقصود تک نہیں پہنا تا۔"
تک نہیں بہنا تا۔"

کتنی بردی دهمکی ہے، آئ کا مسلمان اولاً تو قرآن پڑھتا بی نہیں اوراگر پڑھ بھی ایا تو پھر اسلمان اولاً تو قرآن پڑھتا بی نہیں اوراگر سجھے گا بھی تو پھر جہاں قبال کا تھم ہے ان آینوں کونہیں پڑھتا اس لئے کہ اگر قبال کی آیتیں پڑھ لیں تو کہیں جنون قبال دماغ پر سوار ہوگیا تو پھر کیا جبیں جنون قبال دماغ پر سوار ہوگیا تو پھر کیا جبوگا؟

ايك بھگوڑا ٹورنٹو میں:

بہت دن ہوگئے یہ قصہ سایا نہیں، کچھ لوگوں نے تو سنا ہوگا مگر بھول کئے ہوں گے، آگے پہنچایا کریں بچھے یہ خیال ہوتا ہے کہ آپ قصے من تو لیتے ہیں آگے نہیں بہنچاتے اگر آگے پہنچاتے او آب تک امریکا فتح ہوچا ہوتا، آگے پہنچاتے ای شیس بیس، آج یہبنچا ہیں اس کے نورنو میں ایک افغانی تھا اس لئے میں نے یوچھ لیا کہ آپ بہارہ افغانی تھا اس لئے میں نے یوچھ لیا کہ آپ بہارہ افغانی تھا اس لئے میں نے یوچھ لیا کہ آپ بہاد افغانستان میں تو جہاد ہور ہا ہے اللہ تعالیٰ کی حکومت قائم کرفنے کے لئے اور آپ ایس بھگوڑے ہیں کہ اے چھوڑ کر یہاں ٹورنو میں پہنچ ہوئے ہیں، یہاں کیے بہنچ ہوئے ہیں، یہاں کیے پہنچ ہوئے ہیں کہا اللہ کے بندے انہوں کو باب اللہ کے بندے انہوں کیا کہ کو باب اللہ کے بندے انہوں کیا کہ کیا اللہ کے بندے انہوں کیا کہا کہ کہا اللہ کے بندے انہوں کیا کہ کہا کہ کہا کہ کہ کیا کہ کہ کہا کہ کہ کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کیا کہ کہ کیا کہ کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کی کہ کیا کہ کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کیا کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کہ کو کہ کہا کہ کہ کہ کہ کیا کہ کہا کہ کو کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کو کہ کہا کہ کے کہ کہا کہ کو کہ کی کی کیا کہ کیا کہ کہا کہ کہ کہا کہ کہ کیا کہا کہ کہا کہ کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہا کہ کیا کہ کیا کہ کی کیا کہا کہ کہا کہ کہ کیا کہ

قریب میں کوئی ملک آپ کوئیں فی سکا تھا افغانستان میں کرتے، پاکستان میں کرتے، بین میں کرتے، بین میں کرتے، بندوستان میں کرتے ان سب ملکوں کو چھوڑا اور مخرب کی طرف فرانس بھی الگلینڈ بھی یہ سرارے ممالک چھوڑ کرآپ آئی دور دنیا کے بالکل دوسرے کنارے کینیڈا ٹورٹو میں آئے ہیں اس لئے کہ آپ جہاد سے بچنا چاہتے ہیں۔ یہ شیطان کے بندے کتنے ہوشیار ہوتے ہیں جہاد کی سرز مین سے بعثی دور جاسکا تھا وہاں جا کر بیٹھا ہوا ہے تبلیغ کے بہانے، کہتا ہے تبلیغ کرنے آیا ہوں، پھی تھوڑی تی تبلیغ ہیں نے بھی اے کردی کہ تو تبلیغ کرنے آیا ہوں، پھی تھوڑی تی تبلیغ ہیں نے بھی اے کردی کہ تو تبلیغ کرنے نہیں آیا تو تو جان بچا کر بھاگا ہے۔ وہیں ای درمیان میں اللہ تعالی نے ایک شعر کہلوا دیا، میں شاعر نہیں ہوں مگر اللہ تعالی وقت پر پچھ مصالح راگا دیتے ہیں، اس وقت سے شعر ہوگا۔

۔ بستر اٹھانا ٹورنٹو پینجنا گردن بچانے کے بیں یہ بہانے

دوسرے دن ہم اپنے مکان سے باہر روڈ پر کھڑے ہوئے تھے وہ بھگوڑا پھر وہاں

آگیا جب اس پرمیری نظر پڑی تو کھڑے کھڑے ایک اور شعروار دہوگیا۔

۔ جھپٹنا پلٹنا پلیٹ کر جھپٹنا لہوگرم رکھنے کے ہیں یہ بہانے

الله كا عاش تو اليا موتا ب، الله تعالى سے عش ما تكاكري عشى، يا الله! الياعش عطاء فرماد، بيسے ہى ميں نے بيشعر پڑھا تو وہ دو تين قدم يجھے كوا يہ ہوكيا كه ابھى كرا، برى مشكل سے بچا، گرجا تا تو روڈ پرسر لگا، سر پھٹ جا تا، گرتے كرتے فئے گيا، اس كى آئكھيں الف پلف ہورہى تھيں جيسے به ہوش ہو، اس وقت جھے قرآن جيد كى دوآ يتي يادآ كئيں جن ميں فرمايا كه جهادكى بات س كرمنا فقول كى حالت به ہوجاتى ہے كدان كى آئكھيں وائيں بائيں چھرنے لگتى ہيں، پھرا جاتى ہيں، يول لگتا ہے ہوجاتى ہے كدان كى آئكھيں وائيں بائيں چھرنے الكتى ہيں، پھرا جاتى ہيں، يول لگتا ہے كو جيدان برموت كى على طارى ہو، سورة احزاب ميں فرمايا:

﴿ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَآيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ اللَّكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ

كَالَّذِي يُغُمُّ في عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ عَلِي (٣٣-١١)

یہاں سے جانے کے بعد قرآن جمید میں دیکھیں، ایسی ایسی آیتیں دیکھا کریں،
آپ لوگ تو بیٹھے دیکھتے رہتے ہوں گے کہ "بیابھا المعزمل" پڑھ لیاشادی ہوگی اور
تین سال تک سورہ مربم پڑھ لی مجربھی شادی نہیں ہوئی، آج کے مسلمان کو تو قرآن
ہیں سبی مطلب ہے اور کوئی مطلب ق قرآن سے ہے بی نہیں، وصیت کرتا ہوں
یہاں سے گھر جا کر پہلی فرصت میں جب وضوء ہوتو سورہ احزاب نکال کر ہیآ ہے
پڑھیں، پھر ذوا سوچیں کہ ایمان کہاں رکھا ہوا ہے، پچھ ایمان ہے بھی یا منافق ہیں
منافق، اپنا احتساب کریں کہ مؤمن ہیں یا منافق، یا اللہ! تو اپنی رصت سے سب کو

سورهٔ محمه کا دوسرانام سورهٔ قبال:

سِلَة يه بات بَجَولين كسورة محدكا دوسرانام بسورة قال سورة كانام بى قال بالله في بات بَجَولين كسورة محدكا دوسرانام بسورة قال بسورة محدكا أيك نام سورة قال بي به خود محلى يادر كس اور دوسرول كومى بتاكين! سورة قال بي فرمايا:

﴿ وَيَقُولُ اللَّذِيْنَ الْمَنُوا لَوْ لاَ نُزِلَتْ سُورَةٌ * فَإِذَا النّزِلَتْ سُورةٌ مَا فَاللَّهُ سُورةٌ مَا فَاذِلَ اللَّهُ سُورةٌ مَا فَاذِلَ اللَّهُ اللّ

تَرْجَهَدَ: "اور جولوگ ایمان والے بیں وہ کہتے رہتے ہیں کوئی سورت کیوں نازل نہ ہوئی، سوجس وقت کوئی ساف ساف سورت نازل ہوتی ہے اور اس میں جہاد کا بھی ذکر ہوتا ہے تو جن لوگوں کے دلوں میں (نفاق کی) بیاری ہے آپ ان لوگوں کو یکھتے ہیں کدوہ آپ کی طرف اس طرح (بھیا بک نگاہوں ہے) ویکھتے ہیں جیسے کی پرموت کی عثی طاری ہو پس عنقریب ان کی کم بخق آنے والی ہے۔"

ووقسمیں بیان فرمادی ایک مؤسین دوسرے منافقین، ایمان والے یہ کہتے رہتے تھے کہ یااتند! قبال کا علم کول نازل ہوتے ہیلے رہتے تھے کہ یااتند! قبال کا علم کول نازل ہوجائے تو پھر دیجے تھے کہ یااتند! قبال کا علم نازل ہوجائے تو پھر دیجے ہم تیرے وشنول کی گرونیں کیسے اڑاتے ہیں، حضرت انس بن نعز رضی اللہ تعالی عند فروہ بدر میں شریک نہیں ہوسکے متھے اس لئے کہ غروہ بدراجا بک ہوا تھا، بہت سے محابہ کرام رضی اللہ تعالی عند عموم ہی نہ تھا کہ یہاں کوئی قبال ہوگا، وہ بجھرے تھے کہ تجارتی قافلہ ہے اس کے لئے تو چند صحابہ بھی کافی ہیں آئیس نمناویں کے اس لئے بہت مختصری جماعت کی سب نہیں گئے، بعد میں بتا چلا کہ وہال پر تو زبر دست قبال ہوا، کافروں جماعت کی سب نہیں گئے، بعد میں بتا چلا کہ وہال پر تو زبر دست قبال ہوا، کافروں

حضرت انس بن نصر رضی اللہ تعالی عند فرماتے ہیں کہ اگر آ بندہ کہیں کی غزوہ میں اللہ تعالی نے <u>مجم</u>م وقع دیا تو:

﴿ليرين اللَّه ما اصنع﴾ (منفق عليه)

یہ تو علماء جانتے ہیں کہ ان الفاظ میں کتنا مزاہے کیسا جوش ہے: لیوین اللّٰه ما اصنع ہالله جھے کافروں ہے کہیں طادے تو کافروں کی گردنیں ایسے اڑاؤں گا کہ میرا اللہ دیکھے گا کہ میں اللہ دیکھے گا کہ میں کرتا اللہ دیکھے گا کہ میں کرتا کیا ہوں۔ یہ ایک عاشق کے الفاظ ہیں، مولوی حضرات کوتو پہلے سے یا دہوں گے ہی مگر شاید ادھر توجہ نہ رہی ہوتوجہ کریں، کہی کہی کہا بھی کریں، کہنے کے ساتھ ساتھ حوصلہ بلند کریں، ایسا نہ ہوکہ کہ تو دیا مگر جب کہیں مقابلہ ہوا تو بھاگ کئے، لیوین اللّٰه بلند کریں، ایسا نہ ہوکہ کہ تو دیا مگر جب کہیں مقابلہ ہوا تو بھاگ کئے، لیوین اللّٰه ماصنع۔ لام قمیہ ہے، اللّٰہ کاشم! کہیں کافروں سے ملاقات ہوئی تو میرا اللہ دیکھ

لے گا کہ میں کمیا کرتا ہوں، کیے ان کی گردنیں اڑا تا ہوں، پھرغزوہ احد میں جب ايك اجتهادى غلطى كى وجديه محابد كرام رضى الله تعالى عنهم كوعارضى كخكست موكى اوران ك ياوك ميدان س اكمر كئة وحفرت الس بن نضر رضى الله تعالى عند في كها: يا الله! میں تیرے سامنے ان امحاب کے عمل سے معذرت اور ان کفار کے عمل ہے براءت پیش کرتا ہوں، پھرآ کے بزھے سامنے سعد بن معاذ رضی اللہ تعالیٰ عنہ لیے، ان سے کہا: اے سعد اجنت ، رب نظر کوئتم ایس اس کی خوشبوا حدے اس طرف یار ہا ہوں، یہ کم کر دشمنوں پر جھیٹے اور ای حال میں شہید ہو گئے، آپ کے جمم پر آلواروں، نیزوں اور تیروں کے اس سے زیادہ زخم تھے، کفار نے آپ کی ناک کان وغیرہ اعضاء کاٹ کرصورت الیک مسنح کردی تھی کہ پیچانے نہیں جارہے تھے، بالآخر آپ کی بہن نے ہاتھوں کی انگیوں کے بوروں سے بیجانا، محاب کرام رضی اللہ تعالی عنبم کے ب ولولے تھے کہ اللہ کہیں کا فروں ہے مقابلہ کروائے تو پھر دیکھتے کا فروں کا کیا حشر کرتے میں اور واقعۃ کر کے دکھایا، بہت زیادہ تمنائیں کہ جہاد کی اجازت کیوں نہیں ٹل ربی بے تاب مورے ہیں، آخر اللہ تعالی نے ان کی تمنائی پوری کردیں، جہاد ک اجازت دے دی، کہ چلو دکھا ؤ جو ہر، اڑاؤاللہ کے دشمنوں کی گردنیں، کھراسی رکوع کے آ خریں گردنیں اڑانے کا طریقہ بھی ہتایاوہ انشاہ اللہ آ کے چل کر ہتاؤں گا۔

تحكم جهاد بر منافقین کی حالت:

اس آیت میں دوتم کے لوگول کا ذکر ہے ایک قو صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عمہم جو جہاد کی تمنا کیا کرتے تھے اور جہاد کی اجازت فی تو ان کی دلی تمنا پوری ہوگئی، دوسری تسم کے لوگ جیں منافق، جب منافقین نے جہاد کا حکم سنا تو ان کی کیا حالت ہوگئی، سننے اللہ تعالی ان کی حالت ارشاد فرمارہے ہیں:

﴿ زَآيْتَ الَّذِيْنَ فِي قُلُوْيِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ إِلَيْكَ نَظَرَ

المُغُشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ﴿)

جن کے دلول میں نفاق کا مرض تھا وہ لوگ آپ کی طرف یوں دیکھنے گئے جیسے موت کی شی طاری موء آگے اللہ تعالیٰ کا فیصلہ من کیجئے:

﴿ فَأُولِي لَهُمْ ١

آئی ان کی تباہی، آئی ان کی تباہی، یہ ڈر ڈر کر آئکمیں پھیر پھیر کہ آٹکموں کو الٹ پلیٹ کر کے اوراپنے نفاق کو چھپا چھپا کر کہیں بھی بھاگ جائیں ان کی تباہی آئی، عبابدین ان کو تباہ کریں ہے، سیدھے سیدھے اللہ کے مسلمان بندے بن جائیں، اپنا ایمان سیح کرلیں ورنہ اللہ کے شیر جھپٹیں ہے چھوڑیں ہے نہیں، انشاء اللہ تعالیٰ حضرت عیسیٰ علیدالسلام کے تشریف لائے ہے ہم بہلے ہی قصہ تمام ہوجائے گا۔

د**جا**ل کوتل کرنے کی نیت:

میں نے تو یہ طے کر رکھا ہے کہ اگر حضرت عینی علیہ السلام میری حیات میں تشریف لے آئے تو میں بیروش کروں گا کہ رسول الله سلی الله علیہ وسلم نے فر مایا ہے کہ علیہ اللہ علیہ اللہ علیہ وسلم نے فر مایا ہے کہ علیہ السلام تازل ہوں کے اور وہ دجال کوئل کریں گے آپ جھے اجازت وے دیں میں آپ کی طرف سے وکالة دجال کوئل کروں گا۔ ایک بار ایک برقی نے مناظرے کا چینے کر دیا، میں وہاں تھا نہیں اس نے مجھا میدان خالی ہے، خالی میدان مالی ہے، وہاں تھا ہے، کچھ طلبہ نے جھے بتایا کہ وہ ایسے ایسے کہ رہا ہے میں جب وہاں پہنچا تو وہ بھاگ کیا، اس پرایک نظم ہوئی جوانوار الرشید میں ہے، اس کا ایک شعرے۔

۔ مسیحا ہے کچھلٹا جارہا دجال تھا کویا عجب پرکیف تھا بس وہ فرار بے نگام اس کا وہ جھےد کھرکرایے بھاگا جیسے حضرت بیسٹی علیہ السلام سے دجال بھامے گا۔

۔ میجا سے تبلن حاربا وجال تھا گویا عجب پرکیف تھا بس وہ فرار بے لگام اس کا

بات ہورہی تھی من فقین کی حاست کی ، قرمایا جب ہم نے قبال کی سورۃ نازل کردی تو جن کے دلوں میں غاق تھا ان ہفتنی کے دور سے بڑتے گئے، آپ لوگ بھی ذرااس طرح کیا ترین کی کے سامنے جباد کا ذکر کریں اگراس میں جوش افعہ ہے تو ایمان صحیح ہدادرا گر گھرا جا تا ہے تو منافق ہے پھرا سے سورہ احزا ہے اور سورہ محمد کی مید آ میش بھی دکھا ویا کریں کدد کی میکاس میں تو مید ہے کہ جن کے دلوں میں نفت کی بھاری ہوتی ہوجاتی ہیں ، آنکھیں الٹ پلٹ ہوجاتی ہیں اور موست کی سی عشی طاری ہونے گئی ہے، یہ اللہ تعالی کا فیصلہ ان لوگوں کو سنادیا میں ارس

عبرت کی بات:

ایک دوروز کی بات ہے کس نے کیلی فون پر جھے سے پو چھا، یہ نمیلی فون بھی بوری نعمت ہے، مسائل بتانے کا ثواب تو ملتا ہی ہے، ساتھ ساتھ عجیب عبرت کی بہ تیں بھی سامنے آج تی ہیں، کسی نے کہا کہ فضائل کی کتاب میں اگر دوسری چیز دل کے بارے میں فضائل کی حدیثین ہے حتا ہوں اور جن دک فضائل کے بارے میں جو حدیثیں ہیں وہ نہ پڑھوں تو قیامت نے دن یہ تناب میری کردن پکڑے گی یانہیں؟ کہ تونے جہاد کی حدیثیں کول تبیں ہے حیار کا حدیثیں کول تبیں ہے حیار کا حدیثیں کول تبیں ہے حیار کا حدیثیں کیول تبیں ہے حیار کا اور کتاب پکڑے نہ کیارے اللہ تو تھے کردن سے خرور پکڑے گا۔

سد رحر جوا سرتم جوا سدسر جوا ای کے تو بتد با بول کے آج کل لوگ اولا تو قرآن پڑھتے ہی ہیں گرت اور اگر سیھنے کی وشش نہیں کرت اور اگر سیھنے کی کوشش نہیں کرت اور اگر سیھنے کی کوشش بھی کرت ہیں تو ان آبات کو قرآن کی شش بھی اللہ کے داگر م نے اللہ کی راہ میں قبال نہیں کی تو جوہ بوجاؤ کے دونیا اور آخرت میں اللہ کے مذاب سے نہیں نی کی سیعت اللہ کی مذاب سے نہیں نی کی مذاب سے نہیں کی مذاب کی دونی تو ان آن میں وقر آن سے اکال آبی و سیے ، اگر قرآن کی حفاظت کا در اللہ کے داریا موال تو اللہ کی اللہ کر ہے۔ کا در اللہ کی دونی تو ان آن میں وقر آن سے اکال آبی و سیے ، اگر قرآن کی حفاظت کا در اللہ کی دونی تو ان اللہ کر ہے۔

کافروں کی گردنیں اڑاؤ:

مورہ محمد میں بی آئے جل کر فرمایا

﴿ فَإِذَا لَقِمْنُهُ النَّذِيْنَ كَعَرُوا مَمَرْتِ الرِّقَابِ * حَتَّى إِذَا الْخَمْنُهُمُ عُمْرٌ فَشُدَّوا الْهَالَ * فَإِمَّا مَثَا الْعَلَّدُ وَإِمَّا فِدَاءٌ حَتَّى تَضَعَ الْحَابُ الْوَرَارُهَا فَا اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّ

جب كافروں سے طوتوان كى مرد غير ازادً فَعَمَّوْبَ الرِّقَابِ مُلَّ رَدُوعِي ارْاؤَ فَعَمَّوْبَ الرِّقَابِ مُلَّ كَرُوعِي ارْاؤَ مَنَ حَتَّى إِذَا آَ أَفَعَنْنُمُوهُ مِنْ صَدَّوا الْوَمَاقُ فَى مَبِ تَكَكَّرُونِينَ ارْائَ رَبُوهِ الله اقت تَكَ كَيْخُوبِ خُونَ رِيْنَ كَرُوهِ هِ مِنْ صَدَّدِ يَا بَشِيكِيسِ اثنا خُونَ بِهاؤَ الله سَتِ بِهِ كُولَى نات موجِئے كى اجازت بى نہيں ، ركومت ، برصتے بى جليے جاؤه ارائے چلے جاؤه ارائے جلے جاؤجب خوب ذوب أو ب أن يرى بوجات تو چرا فَشُدُّوا الْوَثَاقَ في جَهر کافروں کی مشکیس باندھاو، قید کرلو، فیاماً مَنااً بَعْدُ وَامناً فِدَاءً حَتَّى تَصَعَ الْحَدُبُ وَالْما فِدَاءً حَتَّى تَصَعَ الْحَدُبُ وَ الْحَدُبُ وَ الْحَدُبُ الْحَدُبُ وَ الْحَدُبُ وَ الْحَدُبُ اللَّهِ مِنْ مِثُورُ دو، فرب و حرب اور پکر دھکڑ کا سلسلہ اس وقت تک جاری رکھو کہ دشمن بتھیار ڈال دے، شلیم موجائے، کون کون کون کی آیت البھی پوری نہیں ہوتی کہ دوسری سامنے موجائے، فرمایا:

هُمَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسُرِى حَتَّى يُثُخِنَ فِي الْأَرْضِ ﴿ ﴾ (٨-٢٧)

علاء تھتے ہیں کہ قانون کے لحاظ ہے اس کا ترجمہ کیا ہے، مَا مُحَانَ لِینَبِی کی بھی نی کواس کی اجازت نہیں کہ کافر اس کے پاس قید ہو کر آئیں اور وہ کسی مروت میں آگر انہیں چھوڑ دیں اور اُنہیں قبل نہ کرائیں حتیٰ یُنٹینٹ فی الْاُرُضِ۔ خون بہاؤ خون، کافروں کے خون سے اللہ کی زمین بھردو، ندیاں بہاؤ، بیرسورہ محمد میں ہے۔

مسئد بیہ ہے کہ کی کو جرز اسلمان نہیں کیا جاتا کی پر جرکیا جائے کہ اسلام قبول کرواگر نہ کیا جائے کہ اسلام قبول کرواگر نہ کیا تو تیری گردن اڑادیں گے، ایسے نہیں ہے لیکن اسلام کی حکومت کوشلیم کرلو، اسلام کی حکومت کوشلیم کرلو، اسلام کی حکومت کوشلیم کرلو، اسلام کی حکومت کے تحت رہنا جزید ویٹا قبول کرلو، مسلمانوں کے سامنے ذلیل ہوکر رہو، بیرکروا کرچوڑیں ہے۔

حكومت صرف الله كي موكى:

حكومت بوكى تو صرف الله كى ،صرف الله كى ،صرف الله كن : (١- ٥٠) المُحكمُ الله الله على (١-٥٠)

اگر مسلمانوں نے اس کے لئے کوشش ندی توان کی گردنیں پکڑی جائیں گی کہ کیوں اللہ کی حکومت قائم ندکی؟

﴿ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلْبِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةٌ * ﴾

(T.-T)

حضرت آدم عليه السلام كو پيدا فرمانے سے پہلے بى اللہ تعالى نے ملائكہ كو بتاويا
كه بين زين پرا بني حكومت قائم كرنا چاہتا ہوں، زين پر بيرى حكومت ہوگى بين ابيا
انسان پيدا كروں گا جوزين پر ميرى حكومت قائم كرے گا: إنّى جَاعِلٌ في الْآرْضِ
خَلِيْفَةٌ طُ حضرت آدم عليه السلام كوزين پر جيجنے كا مقصد بيد بيان فرمايا كه الله كى
حكومت قائم كريں مي، ارب چر بات ادھر چلى جاتى ہے، بيد با تين تو قرآن كى بتار با
ہوں آئ كے مسلمان كوتو قرآن سے دهنى ہے تو آئيس بتا كركيا كروں؟ دعاء كر ليجنے يا
الله! جن مسلمانوں كے دلوں بين قرآن جيد سے دهنى اور عداوت ہان كے دلوں كو
عداوت قرآن سے پاك كرد بي، قرآن پر ايمان عطاء فرما، يقين عطاء فرما، اعتاد عطاء
فرما اور اسپنے احكام پرعمل كرنے كى توفقى عطاء فرما، نفاق سے ان كے دلوں كو پاك

الله تعالى ينيس فرماد ب كرصرف زبانى تبليغ كروا چونكه زبانى تبليغ سار ب لوگ نبيس ما ناس الله قائم الله كل حكومت قائم الوگ نبيس ما ناس الله قائم موجائ بعن يا تو اسلام قبول كريس موجائ بعن يا تو اسلام قبول كريس ورنه جزيد و كرمسلمانوں كتابع موكرد بيس بكرجو چا بيس انا خرب افتيار كريس مكر حكومت اسلام كى موكى يوكم عرب كسوائ، عرب كي بارے بيس فرمايا:

﴿إِمَا الاسلام وإما السيف)

یہاں صرف حکومت کی بات نیس بلک ددکاموں میں سے آیک، یا اسلام یا تلوار بس اور کوئی تیرا راستہ درمیان میں ہے بی تیس، عرب سکے لوگ اگر بیکیس کنہم اسلام کی حکومت کو تسلیم کرتے ہیں محر مسلمان نیس ہوں سے تو ان کے بارے میں بیہ حکم ہے کہ اڑاؤ گرونیں: اما الاسلامہ واما السیف۔ یا اسلام یا تکوار، بس دونوں میں سے ایک کام کرنا ہوگا، یہ بھی دعاء کرلیں کہ انڈ تق لی عرب کی حکومتوں کو سخیم مسلمان بنانہیں چ ہے، مسلمان بنانہیں چ ہے، مسلمان بنانہیں چ ہے، مسلمان بنانہیں چ ہے، یہود و نصار کی سے مرعوب اور ان کے غلام ہے ہوئے ہیں، اند تعالی ان کے دلول میں اسلام کی محبت و عظمت عطاء فرمادیں، وہ یہ جھے لیں کہ القد کے فیصلے سیح ہیں، انہیں اللہ کے فیصلوں پرعمل کرنے کی توفیق مل جے۔ سورہ محمد میں دشمنول کی گردنمیں اللہ کے حکم کی تفصیل بتار ہاتھ، فرمایا:

﴿ فَإِذَا لَقَيْتُمُ الَّذِينَ كَفُرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ " حَتَّى إِدَا الْخَنْتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقُ " فَإِمَّا مَنَّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّى تَضَعَ الْحَرْبُ أُوزَارَهَا ﴾ (٧٠-١)

اس کے بعد فرمایا: دلیلگ ۔ "دلیلگ" ایک لفظ ہے، حروف کتے ذال، اام اور کاف بین حرف ہوئے، تین حرف ہو ے، تین حرف ہو اس کے لفظ میں اللہ تعنی نے گویا و نیا کو ہدا کر رکھ دیا، ججھوڑ کر رکھ دیا بشرطیکہ اللہ پرائیان ہو، دعاء کرلیس یا اللہ! اپنی ذات پرائیان عطاء فرمادے، اوپر جب بیڈر مایا کہ کافروں کی گرونیں اڑاؤ جب تک پوری دنیا میں لوگ اللہ کی حکومت کو تسلیم نہیں کر لیے گرونیں اڑاؤ! بیچم دینے کے بعد فرماتے ہیں: ذلیلگ دو، "دو، "یتی بین می مراب ہے جس کی چیز کی اہمیت بیان کرتے ہیں تو زیادہ تفصیل کی بجائے مختمر نہدو ہے ہیں: "ارے وہ بات ہے" اس سے بھی مختمر ہے کہ "وہ بات ہے" اس سے بھی مختمر ہے کہ "وہ بات ہے" اس سے بھی مختمر ہے کہ ہاتھ کو زور سے جھٹک کرسامنے کی طرف پھیلا کر چلا بات ہے" اس سے بھی مختمر ہے کہ ہاتھ کو زور سے جھٹک کرسامنے کی طرف پھیلا کر چلا بات ہے۔ اس موقع پر "دلیلگ" کا بات ہے۔ اللہ کی تم میں بتا نہیں سکتا، ججھے مشکل کر بات کی سے بھی آتی ہے کہ جھاؤں کیے جو بات دل میں سے وہ دوسروں کے داوں میں کسے بی پیش آتی ہے کہ سمجھاؤں کیے؟ جو بات دل میں سے وہ دوسروں کے داوں میں کسے بیٹ بیش آتی ہے کہ سمجھاؤں؟

- زبال بول ب اور دل ب زبال ب بائ مجورى

بیان میں کس طرح وہ آئے جو دل پر گزرتی ہے
گزرتی ہے ہماری جان پر جو کچھ گزرتی ہے
کسی کو کیا خبر دل پر ہمارے کیا گزرتی ہے
اللہ کرے کہ دلوں میں بات پہنچ جائے، کسی کے دل میں ذرای ایمان کی رمق
ہوذرای تو قربان ہوجائے اللہ کے اس ایک لفظ پر"وہ" لیعنی جوہم نے تھم دے دیا
اس پر عمل کرو، یباں " ذلیك" پروقف کیا کریں اوراس کی حقیقت کوسوچ کراپنے اندر
جہاد کے حذیات کو جمڑکا کریں۔

الله مسلمانول كوكيون مرواتا ب:

بِبَعُضٍ ﴿ ﴾ (١٧- ٤)

اللہ جا ہتا تو ممہیں ندمرواتا، الله تعالی کافروں کو ار دیتا اور مہیں حکومت دے دیا، آرام سے بیٹے بیٹے حکومت کرتے رہتے، الله اس پر قادر ب مگر الله تعالی جومروا رہا ہے تو وہ مہارے عشق دو تھے نا، ایک حقیق عاشق دو تھے نا، ایک حقیق عاشق اور دوسرا بالیدہ کھانے والا عاشق، الله تعالی نے فرمایا کہ ذرا تمہارا امتحان بھی تو لینا ہے کہ ایمان کا وعویٰ کہاں تک صحیح ہے، کہیں وہی قصہ تو نہیں کہ جیسے

ا یک فحض درخت کے نیچے میٹھا ہوا کہ رہاتھا یا اللہ! اٹھالے، یا اللہ! اٹھالے، ایک فحض درخت کے نیچے میٹھا ہوا کہ رہاتھا یا اللہ! اٹھالے، یا اللہ! اٹھالے، ایک فحض درخت کے اور چڑھ کیا وہاں سے رسانے پچے لڑکا کر کہا: میرے بندے اسے گلے میں ڈال لیا اوپر سے اس نے کھینچنا شروع کیا تو ہے عاشق کہتا ہے: ''دہنیں نہیں، یا اللہ! بس' یا اللہ! بس' ارسے ایمان کے دعوے کرنے والو! اللہ ایمان کا امتحان لیتا ہے۔

﴿ اَحْسِبَ النَّاسُ اَنْ يَّتُركُواْ اَنْ يَقُولُواْ امْنَا وَهُمْ لاَ يُفْتَنُونَ ﴿ وَلَقَدُ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِيْنَ صَدَّقُواْ وَلَيَعْلَمَنَّ الْكُذِيْنَ ﴾ ﴿ ٢٠-٢٠ ؟

کیا لوگوں نے یہ بچھ رکھا ہے کہ انہوں نے آ منا کہددیا اور ہم نے امتحان کئے بغیر بی تسلیم کرلیا کہ ہاں تو مؤمن ہے، دنیا میں کوئی انسان تو امتحان کے بغیر کسی کا دعوائے عبت قبول نمیں کرتا تو اللہ کیے قبول کرے گا:

﴿ وَلَقَدُ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبُلِهِمْ ﴾

ہمادا بدوستور صرف تمبارے لئے بی نہیں، بلکہ جب سے دنیا کو پیدا کیا ہے ای وقت سے ہمارا بد دستور ہے کہ ہم امتحان لے کر چوں اور جموٹوں کو الگ الگ کردیتے ہیں، لوگوں کو دکھا دیتے ہیں کہ بیمومن نہیں منافق ہیں جن کا چہرہ جہاد کا نام س کر مرجما جاتا ہے اور آلکھیں چھرا جاتی ہیں، مومن وہ ہیں کہ جہاد کے نام سے ہی ان کا خون جوش مارنے لگتا ہے، بیاصول ہم نے شروع سے رکھا ہوا ہے، فرمایا:

﴿ وَلَوْ يَشَآهُ اللّٰهُ ۗ لَانْتَصَوَمِنْهُمْ ۗ لا وَلٰكِن لِيَبْلُوا بَعْضَكُمْ لِبَعْضُكُمْ لِبَعْضَكُمْ ل بِبَعْضِ * ﴾

الله چاہتا تو تہمیں ندمروا تا ویسے ہی کافروں کو ماردیتا تہمیں حکومت دے دیتا کر الله تمہارے عشق ومحبت اور ایمان کے دعوے کا امتحان لینا چاہتا ہے، پھر کسی کو خیال ہو کہ امتحان تو لے لیا ہم اپل جانیں بھی دے دیں تو ملا کیا، تجارت بھی جھوٹی، یوی بیوہ ہوگئ، ﴿ يَحِيثُمُ بُوكِ ، بَمَ إِنِّى جان ہے كے ، استحان تو لِلْ اِكْرُولَا كِيا؟ فرمايا: ﴿ وَالَّذِيْنَ فَتِلُواْ فِى سَبِيْلِ اللَّهِ فَلَنْ يَّضِلَّ اَعْمَالُهُمُ ۞ سَيَهُ دِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالْهُمُ ۞ (٧٠- ء ، ٥)

> ے جان دی دی ہوئی انہی کی تھی حق تو ہے ہے کہ حق ادا نہ ہوا

(وَيُدُخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ١٠-١٠)

الله ان كو جنت ميں داخل كرے كار عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿ لَهِ لَهِي لَهِي آيتِي تو من رہے ہيں ان ميں عاص فاص دل ميں بنا يے عرَّفَهَا لَهُمْ ﴿ كَا تَعْمِر اوْجِهِ اِن مِين ان مِي عند ميں جائے كا اوْ وہاں اير ہوش كى طرح كوئى دكھانے دائى ميں موگى كہ تيرى السبت يهاں ہے، وہاں بتانے دالوں كى ضرورت عى نہيں دائى نہيں ہوگى كہ تيرى السبت يهاں ہے، وہاں بتانے دالوں كى ضرورت عى نہيں

🗗 دلیک،جس کی تغییر بتاچکا مول پھراسے ذہن میں دھرالیں_

تاركين قال الله كعذاب كالتظاركرين:

فرمایا که بیاعلان کردی که اگرانله کی راه میس جهاد لینی فخال مچهوژ دیا، جان لینے

دييز کي باتنس جيموز دي تو:

﴿ فَتَرَبُّهُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِآمْرِهِ ﴿ ﴾ (١-٢١)

پھر اللہ کے عذاب کا انتظار کرو، سوچے کہ دھمکی دینے والا کون ہے؟ کہیں یہ دھمکی اللہ کے عذاب کا انتظار کرو، سوچے کہ دھمکی دے رہا تھا، ایک خض نے ٹیلی فون پر کہا کہ ایران طالبان کودھمکی دے رہا ہے اور اس نے کئی مما لک ہے گئے جوڑ کر لی ہے، اس سلسلہ میں ایک و فقد امران جارہا ہے تا کہ ان سے پچھ بات چیت کر کے آئیس افغانستان پر حملہ کرنے سے دو کے، پھر جھ سے کہنے گئے کہ آپ کو بھی ساتھ لے جائیں گے، میں نے قواس کی خوب خبر لی، میں انقاق کرایا ہے، آئیس ذرا آنے دو دُکر پھیر جس کہ بھر اللہ کہتا ہے کہ یہ دو کر پھیر جس کہ بھیر اللہ تو یہ کہ رہا ہے، ورہ قرم میں ہے:

﴿ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُنْتَصِرٌ ۞ ﴾ (١٥-١١)

تَنْزَحَمَٰ لَدُنْ مُن كَبِعَ بِين كَهُم بهت ي جماعتيں ائٹھی ہوگئی ہیں۔'' ·

وُسَيهُ زَمُ الْجَمْعُ وَيُولُونَ الدُّبُرُ ١٥٠ (١٥-١٥)

میں نے ٹیلیفون پر بار بار بہت چلا چلا کراور بہت جوش سے کہا: ویولون الد بر۔ اس کے تو طوطے بی اڑ گئے ، ول میں کہدرہا ہوگا یا اللہ! کب چھوڑ ہے گا، مگر میں دیر تک رگڑ انی کرتا رہا اور بار بار بہت ویر تک پر جوش طریقے سے دہرا تا رہا: سَیْهُؤَمْرُ الْجَمْعُ وَيُولُونَ الدَّهُورُ ﴾۔

ان کی جماعتیں مغلوب ہوں گی، دم دبا کر بھاکیں گی، دہریعنی پیٹے پھیر کر بھاکیں میے، ابھی بھائے، ابھی بھائے، اللہ تو یوں کہدرہا ہے، بات وہی ہے کہ آج کے مسلمان کواللہ پراعتاد نہیں اگر اللہ پراعتاد ہوتو سارے کام آسان ہوجائیں۔ایک حدیث من لیس بلکہ یادکرلیس، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وکلم نے فرمایا: ﴿ من مات ولـم يغزولـم يحدث به نفسه مات على شعبة . من نفاق﴾ (مسلم)

جو مخف ایسی حالت میں مرا کہ اس نے بھی مسلح جہاد بھی نہیں کیا اور مسلح جہاد کرنے کی بات بھی بھی تہیں سو پی وہ نفاق کے شعبہ پر مرے گا، کتنی زبر دست دشمکی کتنا برداعذ اب ہے۔

الله برتوكل كى بركت:

حضرت سعد بن ابی وقاص رضی الله تعالی عند ایک بار فارس پر جملے کے لئے فکے، کسری تک ویڈی بیٹ و جود کوئی کشتی ند مل کی، ادھر دجلہ میں بہت زیردست طوفان بیا تھا، بہت بولناک موجوں کے تصادم سے دریا جماگ میں کہ ادھر دخلہ کے کہا تھا، بانی بالکل سیاہ نظر آ دہا تھا، حضرت سعدرضی الله تعالیٰ عند نے دجلہ کے کنارے پر اپنے لئکر سے خطاب فرمایا، پہلے الله تعالیٰ کی حمد و ثناء کی محد و ثناء کی محد و ثناء کے محد و ثناء کی محد و ثناء کے محد و ثناء کے محد و ثناء کے محد و ثناء کی مح

''وقمن تک کانچنے کے لئے اس دریا کوعبور کئے بغیر کوئی راستہ نہیں، میں
نے اس سمندر کو پار کر کے دقمن تک تینچنے کا فیصلہ کرلیا ہے۔''
پور لے لشکر نے اس فیصلہ کا پر چوش خیر مقدم کیا، آپ نے تھم دیا:
'' دریا میں گھوڑے ڈال دو۔''
دریا میں گھوڑے ڈال دو۔''
کیم آپس میں کہنے گئے: '' تم انسانوں سے قال نہیں کرر ہے، تمہارے مقابلہ میں جنات ہیں۔''
دریا میں گھوڑے اتارتے وقت حصرت سعد رضی اللہ تعالی عنہ نے لشکر کو بیہ
دریا میں گھوڑے اتارتے وقت حصرت سعد رضی اللہ تعالی عنہ نے لشکر کو بیہ
کلمات کھنے کا تھم دیا: ﴿ نستعین بالله و نتوکل علیه، حسبنا الله و نعم الوکیل، ولا حول ولا قوة الا بالله العلی العظیم ﴾ پرآپ نے دریا میں محورا وال دیا، ساتھ ہی پرے نظر نے بحی بوحرک دریا میں محورا وال دیا، ساتھ ہی پرے نظر النے وقت کہا:

"اس نطف سے ڈرتے ہو؟ _"

بمراس نے بدآیت برحی

﴿ وَمَا كَانَ لِنَفْسُ أَنْ تَمُوْتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتَبًّا مُؤَجَّلًا *)

(120-5)

تَرَجَعَكَ: ''اور الله كي حكم كي بغير كي مخص كوموت آنامكن نبيل، اس كي معين ميعاد كعني رهتي ہے۔''

دریا میں ایسے اطمینان سے باہم باتیں کرتے جارہے تھے جیسے زمین پر چل رہے ہوں، اگر کوئی محمورا تھک جاتا تو اللہ تعالی اس کے سامنے دریا میں ٹیلا بلند فرما دیتے، وواس پر دک کرتازہ دم ہوکر بھر دریا میں چلنے لگتا، دریا کے سفر میں معفرت سعد رضی اللہ تعالی عند فرماد ہے تھے

(حسبنا الله ونعم الوكيل، والله لينصون الله وليه، وليفلهون الله دينه وليهزمن الله عدوه، ان لم يكن في الجيش بغى اوذنوب تغلب الحسنات) ترجَمَّدُ: "الله كاتم الله الحسنات) وين كو فرد مدوكر علا الدايخ دين كو فرد ما الله اليخ دوستول كي فرد مدوكر علا ادر ايخ دين كو فرد ما الله ايخ ويمنول كو فرد رم فلوب كر ما الله على المراح الله على الله على المراح الله الله على المراح الله الله على الله على المراح الله الله الله على الله

الله تعالى كى مدد سے بورالشكر محج سلامت دريا كے دوسرے كنارے بر ينفي كيا، كوڑے دريا سے دوسرے كنارے برينفي كيا، كوڑے دريا سے نظات كرائى كردنوں كے بال جماز رہے تھاورمتى

ہے ہنہارہے تھے۔

لشَّنر مداَّن میں داخل ہوا تو اے بانکل خالی پایا، کسری اپنی فوج سمیت وہاں ہے بھاگ گیا تھا،مسلمانوں نے بے صدوحساب، بے بہاخزانے پائے۔

اللد کے بندے بیہوتے ہیں، بیہوتا ہے توکل، جواللد پر توکل کرتا ہے اللہ تعالی اس کی مدد فرماتے ہیں:

﴿ لِنَا يَنُهُا الَّذِيْنَ امَنُوا إِنْ تَنْصُرُو اللَّهَ يَنْصُرُكُمْ وَيُثَبِّتُ الْفَاهَ يَنْصُرُكُمْ وَيُثَبِّتُ الْفَدَامَكُمُ لَاكُ (٧-١٠)

تم اللہ کے دین کے لئے کھڑے ہوجاؤ، اللہ کی زمین پر اللہ کی حکومت قائم سرنے کے لئے اسلحہ لے کرفکل پڑوتو یہ نصور گھڑ۔ اللہ تمہاری مدد کرے گا اور جواشعتا ہی نہیں، بلکہ بیتو ایسا نالائق ہے کہ جہد دکا نام من کرزمین میں دھنتا چلاج تا ہے اس کا علاج تو حضرت عیسیٰ علیہ انسلام ہی کریں گے انٹ ، اللہ تعالی۔ دعاء کرلیں کہ حضرت عیسیٰ علیہ انسلام کے نزول نے پہلے مسلمان سدھر جاکمیں تاکہ پھر آئییں ان پر محنت بنہ کرنا پڑے، ان کا کام ذرا آسمان ہوجائے۔

تاركين جهاد كنزديك الله مجرم:

مخالفین جباد کہتے ہیں کہ مجاہدین کا فرول کو مار مار کر جبنم میں پھینک رہے ہیں، اس بارے میں ایک صدیث من لیں! و یسے تو جو قرآن کی صاف صاف آ یتوں کو نہ مانیں وہ رسول کی بات کیسے مانیں گے؟ سننے! صبح بخاری میں حدیث ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسم نے فرمایا:

﴿ تقاتلون اليهود حتى يختبئ احدهم وراء الحجو فيقول: يا عبدالله هذا يهودى ورائى فاقتله ﴾ جب حضرت عيى عليه السلام تقريف لأمي كاور يهوديوس سے قال موگا تو

یبودی پھر کے پیچھے چھے گا، وہ پھر آ واز دے گا ارے اللہ کے بندے! میرے پیچھے

یبودی پھر کے پیچھے چھے گا، وہ پھر آ واز دے گا ارے اللہ کے بندے! میرے پیچھے

یبودی چھر ہوں کے جو یبودی کو پناہ نہیں دیں گے، عینی علیہ السلام بھی بجرم ہولئے کہ

یبودیوں کوئل کروا کروا کرجہ ہم بھی پھینکیں گے اور ان کے نزدیک سب سے بوا بجرم تو

اللہ ہے کہ کافروں کوئل کروا نے کے لئے پورا قرآن تھم قمال سے بھر دیا قبل کرو، قبل

کرو، قبل کرو، بھی گن کرتو ویکھیں قرآن میں قبل کا لفظ کتی جگہ ہے میرا خیال ہے کہ

آپ لوگ نہیں گئیں سے کہ اگر قبل قبل تین بار کہد دیا تو کہیں خود ہی بیٹھے بیٹے قبل نہ

ہوجائیں۔

`۵اسباب عبرت:

جتنی عمرزیادہ ہوگ دنیا میں عبرت کے نمونے ، انقلابات، تغیرات اس کی نظر میں زیادہ ہوں گے، یہ پوری کی پوری دنیا عبرت کی جگہ ہے۔

بہاں میں ہیں عبرت کے ہر سونمونے
گر تھے کو اندھا کیا رنگ و بو نے
کبھی غور ہے یہ بھی دیکھا ہے تو نے
جو معمور تھے وہ کل اب ہیں سونے
گا ہی کی لگانے کی دنیا نہیں ہے
میرت کی جا ہے تماثا نہیں ہے
میر عبرت کی جا ہے تماثا نہیں ہے

دنیا عبرت کی جگہ ہے عبرت کی جگہ، جب یہ ہے ہی عبرت کی جگہ تو عبرت عاصل کرنے کے واقعات اس میں بہت ہوتے رہتے ہیں اس لئے جس کی عمر جنتی زیادہ کمبی ہوگی ہر وقت اس کے سامنے عبرت کی چیزیں ہوں گی، عمر کمبی ہونے کے بادجود اگر اسے بی فکر نہیں ہوتی کہ جہنم سے بیخنے بچانے کی کوشش کی جائے تو اس جیسا ساہ دل کون ہوسکتا ہے؟ سیکسی شقاوت اور بدینتی ہے کہ اللہ تعالی نے اتنی ڈھیل دے دی، اتن کمبی عمر ہوگئی چربھی مید خیال نہیں ہوتا کہ ہم خود جہنم سے بھیں اور دوسرول کو بھی بچانے کی کوشش کریں۔

الله تعالی فرماتے ہیں کیا ہم نے جہیں آئی عمرتییں دی کہ کوئی هیعت حاصل کرنا چاہتا تو اسے هیعت حاصل کرنا چاہتا تو اسے هیعت ٹل سکتی تھی، کیا آئی عمرتییں دی؟ بدیمر بی کافی تھی نعیعت حاصل کرنے کے لئے پھراس کے ساتھ ساتھ دوسری بات یہ کہ ہم نے ڈرانے والا بھی بھیجا، یہ ڈرانے والا کون ہے؟ اوراس لبی عمرے کیا مراد ہے؟ اس کی مختلف تغیریں کی مجھیا، یہ ڈرانے والا کون ہے؟ اوراس لبی عمرے کیا مراد ہے؟ اس کی مختلف تغیریں کی

"نذر" کی پانچ تفسیری:

ميل تفسير: پلي تفسير:

مَّذِیْوٌ (ڈرانے والا) رسول اللّہ صلّی اللّہ علیہ وسلم ہیں اور عمر وہ مراو ہے جس میں رسول اللّه صلّی اللّٰہ علیہ وسلم کے دعوائے نبوت کاعلم ہوجائے۔

دوسری تفسیر:

ڈرانے والا قرآن ہے اور عمر ہید کہ قرآن کا کلام اللہ ہونے کا وعویٰ معلوم جائے۔

تيسرى تفسير:

عرے مراد ہے ساٹھ سال کی عمر اور ڈرانے والا کیا ہے؟ بال سفید ہوجانا، آخ کے مسلمانوں نے کیا کیا کہ ڈاڑھی تو ویسے ہی منڈ دادوتا کہ سفیدی نظر ہی نہ آئے اور مر کے بالوں پر خضاب نگالو، ارے! سفیدی چھپانے کے لئے ڈاڑھی منڈانے کی کیا ضرورت ہے؟ چھے مر پر خضاب لگاتے ہیں ڈاڑھی پر بھی رنگ کرلیں، مر یا داڑھی بالکل سیاہ نہ کریں، بالکل سیاہ کرناحرام ہے، ڈرانے والا آچکا، بالوں ہیں سفیدی آگئی، بالوں کی سفیدی یا حث رحت ہے۔

بالول كى سفيدى باعث رحمت بنه كه زحمت

سغیدی سے ڈرنے والو! رسول الله صلی الله علیه وسلم فرماتے ہیں:

"الله تعانی سفید بالوں والے مسلمان کا سوال پورا نہ کرنے سے حیام

کرتے ہیں۔' (السندلا بن الی عاصم، ابن المجار) اللہ کی رحمت تو کوئی بہانہ طاش کرتی ہے۔

ے رحمت حق بہانہ ی جوید

رحمت حق بہا می جوید ان کی رحمت کو بہانہ جاہے، کم ہے کم اللہ والوں کی نقل بی بنالیس ہوسکتا ہے اللہ تعالی اس نقل کو اصل بنادیں۔

> ۔ ترے محبوب کی یا رب شاہت لے کے آیا ہوں حقیقت اس کو تو کردے میں صورت لے کے آیا ہوں

> > نه جانے کس چیزیران کی رحمت متوجہ موجائے۔

۔ نہ گوری ہے مطلب نہ کالی ہے مطلب پیا جس کو جاہے سہاکن وہی ہے

جس کی عرساٹھ سال ہوگئ اس سے رہ پو چھا جائے گا کد کیا تیرے پاس ڈرانے ۔ والانہیں آیا تھا؟ بعنی تیرے بال سفیدنیس ہو گئے تھے؟ بیر جمنڈی ہے موت کی کہ بس موت آیا تی جاہتی ہے۔

چوخی تفسیر:

"نذید" ہے اولاد کی اولاد مراد ہے۔ اولا د کی اولا دموت کی حبصتْدی:

سفید بال آئیں یا نہ آئیں اولاد کی اولاد ہوجائے تو یہ اشارہ ہے کہ اب پلیٹ فارم خالی کریں اس پلیٹ فارم پر کب تک بیٹے رہیں گے؟ اب مسافروں کی دوسری کھیپ آئی ہے، لقد! اب جاؤ، اولاد کی اولاد، پوتے، نواسے یہ 'نذری' میں، موت کا پیغام ہیں، خوش ہوجانا چاہیے کہ وطن وینچنے کا سامان بن رہا ہے اور اس مسافر خانے سے جانے کے اسباب پیدا ہورہے ہیں، سجان القد! کیا کہنا ہے، یا القد! ہم سب کوشوق وطن عطاء فرما، کی شاعر نے خوب کہا ہے۔

یہ تو بوڑھوں کی کیفیت ہے، ذرا نوجوان سوچیس کہ ان ہے کم عمر والے کئے قبروں میں پہنچ کے اورالیے بچوں کی کی نہیں جو مرتے پہلے ہیں اور پیدا بعد میں ہوتے ہیں، مال کے پیٹ بی میں مرکئے اور پیدا بعد میں ہوئے، آپ کو ہزاروں ایسے ملیس کے کہ داوا پوتے یا پڑ بوتے کو قبر میں اتار رہا ہے، اس لئے نوجوانوں کو بڑھا ہے کی موت پر نظر نہیں رکھنی چاہئے وہ یہ سوچیں کہ ان کے ہم عمر اور کم عمر والے کتے قبروں میں جارہے ہیں۔

بانجوين تفسير

. عمرے مراد ہے بالغ ہونے کی عمر اور ڈرانے والے سے عقل مراد ہے۔ حقیقی بالغ کون؟

درحقیت بالغ تو وہ ہوتا ہے جیےا بنے مالک کو پیچاننے کی عقل آ جائے، بلوغ تو عقل ہے ہوتا ہے نہ کہ عمر ہے، جس کی عقل نے مسافر خانے اور وطن کا فرق معلوم كرلياوه بالغ ب، جس كي عقل نے حال اور معقبل كي نوعيت كو جان ليا كه جس زماند میں گزررہے ہیں وہ حال ہے معتقبل آ مے ہے، آمے کی زندگی لیعنی آخرت کا ذخیرہ كيا ہے؟ اسے جس كى عقل نے يجيان ليا وہ ب بالغ الركى بالغ موجاتى بالما، سال کی عمر میں اورلڑ کا ۱۳۰۱ سال کی عمر میں۔ دنیا کا بلوغ تو تیتر بٹیروں کی طرح جلدی جلدی ہورہا ہے اصل بلوغ ہے آخرت کا بلوغ، یا اللہ! تو سب کو آخرت کے ا بالغ بنادے، آخرت کے بالغ کون ہوتے ہیں؟ یو چھے اللہ تعالیٰ ہے، وہ فرماتے ہیں: ﴿ رَجَالٌ لا لاَّ تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلا بَيْعٌ عَنْ ذَكُو اللَّهِ ﴾ (٢٧-٢١) د نیا کی بڑی ہے بڑی تجارت اور منافع ان کو مالک ہے غافل نہیں کرتے ، پیہ ہں آخرت کے بالغ ۔ اس تغییر کے مطابق القد تعالیٰ کے اس ارشاد میں کہ'' کیا ہم نے اتن عرنبیں دی تھی جونصیحت حاصل کرنے کے لئے کافی ہوجاتی'' کونی عمر مراد ہے؟ بالغ ہوجانے کی عمروہ جو بھی ہو، بہرحال جب بالغ ہوگیا تو اتی عمر دے دی کہ اس میں نصیحت حاصل کرسکتا تھا اور فر مایا:" تمہارے یاس ڈرانے والا بھی بھیجا'' ڈرانے والا کون؟ عقل، ہم نے عقل بھی عطاء کی تھی جس کے ذریعہ ہے انسان پیچان سکتا تھا کہاس کا کوئی مالک حقیق ہے، جسن ہے، بید نیا گزرگاہ ہے، مسافر خانہ ہے،اس کی منزل آ مے ہے،اہے آ مے جانا ہے،اپنے وطن پینچنا ہے،اتی مقل دے دی تھی مگر پھر بھی اسے مجھے نہ آئی، کچھ حاصل نہ کیا، کیوں؟ بیسوال ہوگا آخرت میں۔جس مخف کے قلب میں اللہ تعالی ان چیز وں کا استحضار عطاء فرمادیتے ہیں اس کا جیسے جیسے وقت گزرے گا عمر زیادہ ہوگی آخرت کی فکر بڑھتی جائے گی کہ جنٹی زیادہ مہلت مل رہی ہاک کا فائدہ اٹھایا جائے، خودجہنم سے بہتے اور دوسروں کو بچانے کی کوشش زیادہ ک جائے، اس کی فکر اور درد بڑھتا ہی جائے گا۔

اسباب عبرت كي تفصيل:

(آ)اموات:

توتجى جائے گا۔

عبرت مامل کرنے کے اسباب میں سے ایک موت ہے۔ موتی کتنی ہور ہی ہیں۔

۔ مرا درمنزل جانان چہ امن وعیش چوں حر دم جرس فریاد می دارد کہ بربندید محملھا ہر دفت یہ مھننے نگے رہے ہیں کہ دو گیا، دہ گیا۔ ایسے حالات ہیں امن سے، سکون سے، چین سے کون ہیٹھ سکتا ہے، دنیا میں ہروقت کھندن کر ہاہے کہ دہ گیا

> ۔ راگالے ری چزی گندھا لے ری ی د جانے بلالے پیا کس مگری تو کیا کیا کرے کی گھڑی کی مگری تو رہ جائے گی ری کھڑی کی کھڑی

جب وقت آ جائے گا تو ایک لی کی مہلت نہیں دی جائے گی ہوش کر و پکھے ہوش۔ موت سے عبرت حاصل ہوتی ہے جتنی عمر زیادہ ہوگی زیادہ اموات کی خریں اس کے مائے آئیں گی، دیکھے گا، نے گا فلاں جگہ کوئی مرکبیا، فلاں جگہ مرکبیا، گئی جنازوں میں شریک ہوگا۔ موت تو ایسی چیز ہے کہ ایک بی خبر انسان کی اصلاح کے لئے کانی ہے اورا کی بھی خرنہ ہوتو خود اپنے بارے یس کہ بھی نہ بھی موت آنے والی ہے ہی سوج لینا کائی ہے۔ آئ کل تو ذرائع ابلاغ بھی بہت ہیں، پوری و نیاییں جہاں جہاں موتی ہوتی ہیں اللہ تعالی سب کی خبر یں جمع کر کے پہنچادیے ہیں، یدائلہ تعالی کا کرم ہے کہ آئ کے مسلمان میں بیسے جمعے فقلت بڑھ رہی ہے اللہ تعالی اپنی رحمت سے عبرت عاصل کرنے کا بہت عاصل کرنے کا بہت عاصل کرنے کا بہت ماس کرنے کا بہت بڑا سبب ہای لئے قرآن مجد میں اللہ تعالی نے اصلاح اعمال کے لئے جا بجا بہت کرت سے موت کا بیان فرمایا۔ اس دنیا میں جمید فیس رہتا ایک دن موت آئی کی احتر میں احر یہ ہوگا اللہ تعالی کے سامنے بیشی ہوگی پھر جنت یا جہنم۔ یہ قبر میں احر یں گے، حشر ہوگا اللہ تعالی کے سامنے بیشی ہوگی پھر جنت یا جہنم۔ یہ واقعات اللہ تعالی نے بہت کرت سے بیان فرمائے ہیں۔

موت تمام لذتوں کو شم کردیت ہے:

رسول الله صلى الله عليه وسلم في قرمايا:

﴿ اكثروا من ذكر ها زمر اللذات الموت ﴾ (نرمذی) تَوْرَ هَمَدُ: "موت جوتمام لذلول كو يكم ختم كردينے والى ہے اس كا ذكر بہت كثرت سے كماكرو"

بہت کش سے موت کو یاد کیا کرد ۔ گانا ہوں پر اکسانے والی چیز فلس کی الذخیں
جیں بیدانسان کو تباہ کرد تی جیں اس لئے فرمایا کہ موت الی چیز ہے کہ تمام تر الذتوں کو
ختم کرد ہے گی اس لئے موت کو زیادہ سے زیادہ یاد کیا کرد، یاد کرنے کا بیہ مطلب نہیں
کہ تبیع پر کن کن کر پڑھتے رجیں، وظیفہ بنالیں موت موت موت بلکہ اس کا مطلب
بیہ ہے کہ کچھ موجا کریں، چوہیں مھینے میں کم از کم ایک باردات کو مونے سے پہلے بستر
پر لیٹ کرموجا کریں کہ ایک دوز مرنا ہے، اللہ تعالی کے ماسنے چیش ہوتا ہے۔ بعض
پر لیٹ کرموجا کریں کہ ایک دوز مرنا ہے، اللہ تعالی کے ماسنے چیش ہوتا ہے۔ بعض
اوگر کہتے جیں کہ بستر پر لیٹنے می فودا نیندا جاتی ہے تو لیٹنے سے پہلے بیٹے کر کچھ تھوڑی

ورسوج لیا کریں، بیمطلب ہے موت کو یاد کرنے کا۔

موت سب سے برا واعظ:

دوسرى حديث مين فرمايا:

﴿ كفي بالمود، واعظا ﴾ (طبرابي)

یہ حدیث اگرچ ضعیف ہے مگر فکر آخرت پیدا کرنے کے لئے موت کی یاد کا نسخہ قر آن مجید اور احادیث میچھ سے ثابت ہے۔ نصیحت حاصل کرنے کے لئے موت کا تصور یا موت کود یکھنا بہت کا فی ہے۔

دنیا میں بڑے بڑے واعظ لینی نصیحت کرنے والے ہیں، بہت سے انسان بھی لوگوں کو نسیحت کرتے ہیں، اس کے علاوہ دنیا میں ہونے والے حوادث و واقعات بھی نصیحت کا ذریعہ ہیں، سب چیزیں انسان کو فیصحت کرتی ہیں سدھر جاؤ، سدھر جائے ہیں۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ اگر موت کو یادر کھا جائے تو کسی اور فیصحت کی ضرورت ہی نہیں: کھی بالموت واعظا۔ موت نصیحت حاصل کرنے کیلئے کائی ہے، یہ یادر کھا جائے کہ ایک ون سرنا ہے۔

۔ قدم سوئے مرقد نظر سوئے دنیا کہاں ، جارہا ہے کدھر دیکھنا ہے جدھر جارہے ہیں نظر بھی ادھر ہی رہنی چاہئے ورنہ کی چیز سے نکرا کر یا کسی کھٹے میں گر کر ہلاک ہوجائے گا،موت سے فلات نہآنے یائے۔

دوست كاانتظار:

حضرت ابوبكررضى الله تعالى عنه كاشعرب_

کل امرئ مصبح فی اهله
 والموت ادنی من شراك نعله

عرلى مين صبح ك وقت ايك دوس كو كمت بين: صبحك الله بالخير آپ لوگ کیا کہتے ہیں: گذ مارنگ۔ اپنی زبان تو مسلمان نے سیمی ہی نہیں ، تھوڑی بهت جوسيهي تووه بعلادي الكريز كعشق مين عرب مين كبت بين صبحك المله بالخير يا: صباح الخيو الله تعالى تيرى صح فيريت عري، شام موتى بت كتے بن: مساء الخيور الله تعالى تيرى بيشام خيريت سے گزاري، ايے دعائيں دیتے ہیں اور جو سکتے سر کے بنیجے لے کرسوتے ہیں ان براس طرح کے دعائے کلمات لکھے ہوئے ہوتے ہیں: صبحك الله بالخير- تيري مج خيريت سے ہومائے، كى تكيد برنكها بوتا بن نوم الراحة - آرام كى نيندسومائيل - ايك بار ديدمنوره میں مجھے بیان کے لئے کہا گیا وہی ای مجلس میں کچھ دری آ رام کیا وہاں جو سکئے رکھے ہوئے تھے ان ہر ای طرح کی دعائیں لکھی ہوئی تھیں، بیان ای برشروع ہوگیا کہ بزارول دعائيں ليتے ديتے رہيں جب پہنچ حميا دوست، دوست كون ہے؟ "ملك الموت ۔ ' ملک الموت بہت بڑا دوست ہے جو دوست کو دوست سے ملادے وہ کتنا بڑا دوست ہوگا؟ اللہ کے بندے کومسافر خانے سے نکال کر وطن اصلی میں پہنچادے، اللہ کے بندے کواللہ سے ملادے وہ کتنا بڑا دوست ہے، وطن آخرت کا شوق ایسار ہے کہ ملک الموت کا انتظار رہے کہ کب تشریف لائیں گے اور جب تشریف لائیں تو تہیں ارے دوست! بہت دیر ہے تشریف لائے ہم تو تیرا انظار کرتے کرتے تھک گئے تو نے بہت انظار کروایا۔

۔ کانے نہیں کٹا تیری فرقت کا زمانہ ہوتی نہیں اب شام جو مر مر کے سحر کی پھکٹا ہوں شب و روز پڑا بستر غم پر ہوتی ہے بری ہائے گل آگ جگر کی اللہ تعالیٰ کی محبت ایسی غالب رے کہ ایک ایک لیے بہاڑ گلے جس کوایی ملی موکی اس کا توبیال موگا۔

۔ کاٹے قبیں کٹا تیری فرقت کا زمانہ ہوتی نہیں اب شام جو مر مر کے سحر کی

ال كے سامنے جب ملك الموت آئيل كو و و كتا خوش ہوگا؟ زندور بنے كى تمنا ہوا الله تعالى كدين كى خدمت كے لئے، وطن آخرت بنانے كے لئے، محبوب كى ياد جب تو يائى كرے درير بورى ب، وطن كى ياد ستانے كے او پھر تىلى كى ياد جب تو يا الله! تيرى دضا كے لئے، پھر اور كام كرنے كے لئے، وطن آخرت بنانے كے لئے، پھراور سامان مہيا كرنے كے لئے جولى ات ل جائيں وہ فراق كے لئے اللہ اللہ كے كہا ت رواشت كريں مع اس لئے كہ تيرى دضا بھرت قر بورى ب

- اگرچه دور افخادم بدین امید خرسندم . کدشاید وست من بار دگر جاتان من میرد

دور تو بین محرتملی موری ہے کہ یا اللہ ایکی نہ کی دن تو بلائی لے گا، دور مونے سے پریشانی تو بہت موجاتی ہے کہ انشاء اللہ تعالیٰ جائیں تو بہت موقی ہے کہ انشاء اللہ تعالیٰ جائیں گے، دو چھوڑے کا تو نہیں اور جب تک چھوڑے ہوئے ہے تو اس وقت تک تیری رضا کے اسباب اور زیادہ طبع جائیں اور زیادہ اور زیادہ۔
زیادہ۔

ب بینا جابوں لو کس مجروے پر زندگی ہو تو بر در محبوب

زندگی موقو آخرت بنانے کے لئے مو، الله تعالی کی رضا میں ترتی کے لئے مو اگر ایسانہیں تو پھر زندگی ہے موت بہتر ہے۔ حضرت ابو بکر رضی الله تعالی عند کا شعر بنار ہاتھا۔

کل امرئ مصبح فی اهله
 والموت ادنی من شراك نعله

تَرْجَمَدَ: "برفض روزانه مج كولوكول ب دعائي ليمّا ب اور موت ال كج جرتے كے تم سے بحى زياده قريب بـ"

یا صاحبی لا تغترر بتنعم
 فالعمر ینفد و النعیم یزول
 واذا حملت الی القبور جنازة
 فاعلم یانك بعدها محمول

اے دوست! ونیا کے عیش ونشاط میں پڑکر دھوکے میں جتلا نہ ہوجانا، اس لئے
کے زندگی ایک ون فتم ہوجائے گی اورعیش وعشرت کا بیر سرارا سامان تمہارے ہاتھ سے
چمن جائے گا، یہ چیزیں اول تو ونیا میں بی تمہارا ساتھ چھوڑ ویں گی، اگر رہ بھی کئیں تو
زیادہ سے زیادہ موت تک رہیں گی، موت آتے ہی دنیا کی ہر چیز چھوٹ جائے گی۔
جبتم قبرستان کی طرف کوئی جنازہ لے کرچلوتو چلتے ہوئے سوچتے جایا کروکہ کی روز
جمیں بھی کوگ یو ٹی اٹھا کر لے جائیں گے۔

فانی چیزول کی محبت مصیبت:

جن چزوں کی محبت میں آگر اپنے محبوب حقیقی کو ناراض کررہے ہیں وہ ساری بے وفا ہیں، فانی ہیں، محبت تو اس محبوب سے رکھنی چاہئے جو بمیشد رہنے والا ہے۔

مشت نبود عاقبت نظے بود
مشت بامردہ نباشد پائیدار
مشت را با حی با قیوم دار
مشت را با حی با قیوم دار

د نیوی چیل بیل کی وجہ سے، رنگ وروفن کی وجہ سے، زیب وزینت کی وجہ سے جو مجبتیں موتی میں وومشق نہیں منتریب موت آئے گی تو پتا چل جائے گا کہ بیاتو

ساری کی ساری مصیبت ہے مصیبت۔

۔ عشق ' بامردہ نباشد پائیدار عشق را ہا می با قیوم دار مردہ سے عشق کتنی بزی حمافت ؟ مرنے والی چیزوں سے عشق و محبت کس کام کی؟

۔ ارب یہ کیاظم کررہا ہے کہ مرنے والوں پہ مررہا ہے جو دم حینوں کا بھر رہا ہے بلند ذوق نظر نہیں ہے بیخوو بھی فانی اور جن چیزوں کے عشق میں مرا جارہا ہے وہ بھی فانی اس لئے فرمایا کہ تی وقیوم کے ساتھ محبت بدا کرو، محبت کے لائن تو بس وی ہے۔
مرایا کہ تی وقیوم کے ساتھ محبت بیدا کرو، محبت کے لائن تو بس وی نہیں موجوب حقیق کوئی نہیں ہے کوئی نہیں وی تورکر نے وہی تو ہمیشہ ہمیشہ رہنے والا ہے، محبت کرنے والا اور محبت کی قدر کرنے والا ہے اس کے ساتھ محبت قائم کی جے۔

ظ عشق را با می و با تیوم دار

دوسرول كى موت سے عبرت حاصل كريں:

کی کی موت کی خرمین آوائی موت کوسوج کر اگر آخرت پیدا کریں۔

واذا سمعت بھالک فنیقنن
ان السبیل سبیله فنزود
دنیا میں کہیں بھی کی جانے والے کی خبر سننے میں آئے آواس کی موت پرغم
کرنے کی بجائے عبرت حاصل کریں کہ جہاں وہ گیا ہمیں بھی جانا ہے کہی بھی مرنے
والے کی خبر سننے میں آئے آویقین کرلویقین لیخی اس یقین کا استحضار کرلو، بات دل
میں اتارہ عبرت حاصل کرو کہ جہاں وہ جارہا ہے وی معالمہ موت کا تیرے ساتھ بھی

پیش آنے والا ہے، ملک الموت تخفی مل مال میں بھی چھوڑے گانہیں۔ مفرت سعدی رحمد الله تعالی فرماتے ہیں۔

> ۔ خیرے بگن فلاں و ننیمت شار عمر زاں پیشتر کہ پانگ برآید فلاں نماند

اس سے پہلے کہ لوگوں میں تیرے بارے میں یہ بات چلے کہ فلال مر گیا، اس سے پہلے کہ فلال مر گیا، اس سے پہلے پہلے پہلے کہ تاری کرلے، ول سے ففلت کے پردے ہٹالے، اپنی نفسانی خواہشات کا علاج کرلے ورنہ جب وہ وقت آگیا کہ لوگ کہ کہنے گئیں کہ فلال مر گیا تواس کے بعد تیرا کیا ہے گا؟ پھر تدارک کی کوئی صورت نہیں ہوکتی، اس وقت کوفنیمت بھے۔

۔ اک جنازے پر میں گزرا اور حسرت سے کہا میں بھی ٹل لیتا اگر یہ اور جیتا ایک دن بولی مالیک ارے نادان! جب آجاتی ہے موت ایک دم بھی زندگی مشکل ہے کیما ایک دن

۔ رہ کے دنیا میں بشر کو نہیں زیبا غفلت موت کا دھیان بھی لازم ہے کہ ہر آن رہے جو بشر آتا ہے دنیا میں سید کہتی ہے تعفا میں بھی بیچھے چلی آتی ہوں ذرا دھیان رہے دوسروں کے حالات سے عبرت حاصل کیا کریں۔

کل ہوت اس طرح سے ترغیب وی تی تھی جھے خوب ملک روت اور کیا سرزمین طوت ہے گر میسر ہو تو کیا عشرت سے کیجھے زندگی

اس طرف آواز طبل ادهر صدائے کول ہے میں سے تا شام چلا ہو سے کلاں کا دور شب ہوئی تو باہرویوں سے کنارو بول ہے شخ میں تو جرت یہ بولی اک تماشا میں تھے گل دکھاؤں تو جو قید آز کا محبول ہے کی کیارگ گور غربیاں کی طرف جس جگہ جان تمنا ہر طرح مایوں ہے مرقدیں دو تین دکھا کر گئی کہنے جھے مرقدیں دو تین دکھا کر گئی کہنے جھے یہ سکندر ہے یہ دارا ہے یہ کیکاؤی ہے یہ کیچہ تو ان سے کہ جاہ وحشمت دنیا ہے آئ کیچہ تو ان سے کہ جاہ وحشمت دنیا ہے آئ

دنیائے مردار کے عاشقوں کا حال:

آن کل لوگوں میں بیرونی ممالک جانے کا شوق بہت ہوگیا ہے کیا سوچے ہیں؟ امارات جائیں کے، سعودیہ جائیں کے، مدینہ کا عشق کینچے لئے جارہا ہے، مرجاؤں مدینے کی خاک میں پوند ہوجاؤں اور روف مرارک کی گرو و غبار کا سرمہ بنالوں، مدینے کی ہوا بالوں کی تنظمی بن جائے اور مکہ میں جاجا کر طواف کروں، وہیں مرجاؤں۔ یہ اللہ تعالی کوفریب دینے والی باتیں ہیں۔

ا پی حقیقت کوخوب مجتاب کربیرجذبات کا اظهارتو او پراوپر سے ہمل میں مال کمانے جامل میں مال کمانے جامل میں مال کمانے جارہ ہے ہے اللہ کو فرد ہو چھتے ریال کمانے جارہ کی میں دیال خوار پر دال کی جمع ریال مائیں ریال (حضرت اقدی دھمداللہ تعالی لطیفے کے طور پر دال کی جمع ریال جماعے) جماعے)

عمرة متقبلة:

ایک بارش ریاض کے مطار پرامیگریش کی قطار میں کھڑا ہوا تھا ایک افسرخود ہی میرے پاس جلے آئے اور بڑے جوش سے کہنے گئے:

(عمرة متقبلة)

تَخْرِيَحُمَدُ: "الله تعالى آپ كاعمره تبول فرماكيں۔" بس ان كا اتنا كہنا تھا ميرى مبت كوشة گئی۔

نظر نظر سے جو مکرا گئی تو کیا ہوگا مری محبت کو شہ آگئ تو کیا ہوگا میں نے عربی کے دو تین عشقیا شعار پڑھ دیئے تو انہوں نے انچھل کرزور سے

():

"زد___اورسائے"

ش نَهَا كَرُفُيكَ عِنْمَ جَائِيَ جَبِ شَ نَهِ الْحَامِرِ ثِرْصِ على بوبع العامرية وقفة يملى على الشوق والدمع كاتب ومن ديدنى حب الديار لاهلها وللناس فيما يعشقون مذاهب

محبوب کے مکان پر جاکر چکرکا ٹنا میری عادت بن چک ہے اور جب وہاں جاتا ہوں تو محبوب کی نشانیوں کو دکھ کرشوق چھ تعموا تا ہے اور میرے آ نسو تکھتے ہیں تو وہ افسر بڑے تجب سے کہتے ہیں:

"الدمع يكتب؟ ---كياآ نوبى كماكرت بن؟" مي ني كها: "ايودموعى نكنب ـــــال ميري آ نسولكه يي-"

اس کے بعد وہ کہنے گئے کہ یہ جو اتی کبی کبی قطاریں ہیں ان میں عمرہ کرنے والے صرف آپ ہیں باقی سب کمانے جارہے ہیں۔ یہ ہے ریاض میں اسیگریشن کے ایک افسر کا تبصرہ۔

مدیدمنورہ میں ایک قاری صاحب ہیں انہوں نے مجھے یہاں کے ایک شخص کا خط دکھایا جس میں لکھا ہوا تھا کہ آپ مجھے مدینے میں بلالیں پھراس میں عشق ومحبت کے اشعار لکھے ہوئے تھے، ایک ایس یا تیس کرمدینے میں رہ جاؤں چرمدینے ہی کی مٹی میں پوند ہوجاؤں، آپ مجھے ضرور بلالیں اور میرا نام استعمال کیا کہ اس کامرید ہول، آپ کا پیر بھائی ہوں۔ قاری صاحب نے مجھے خط دکھایا اور لوچھا کہ اے بلالوں، میں نے کہا کہ اس خط پر آپ میرے حوالے سے اے لکھے کہ میں نے انہیں خط دکھایا تھا تو انہوں نے رہے جواب کھوایا ہے کہ چلومحاذ پر تین چلے لگا کرآ ؤ، اس کے بعد قاری صاحب ہے بات کرنے کی بجائے مجھ سے بات کریں پھر میں یہ بتاؤں گا کہ ابھی تجھ سے اور چلے لگوا تا ہوں یا مدینہ بھیجتا ہوں، بس چر کوئی جواب نہ ملا خاموش،معلومنہیں کہاں چلا گیا شایدوہ بین کر کہ محاذیر جانا پڑے گا پہلے ہی مرگیا ہو، عاذ كا نام س كرخوف سے جان نكل رہى ہے اور مغربى ممالك كى محبت ميں مرے جارب میں بس سی طرح ویزا مل جائے امریک کا، کینیڈا کا، اٹکلینڈ کا، فرانس کا، آسريليا كارسعوديدكا، امارات كا، ببت سالوك ان سے يسيے لے لكر كھا جاتے ہیں پھروہ نہ ویزا دیتے ہیں نہ یلیے دیتے ہیں پھر بھی مرے جارے ہیں وظیفے یو چھتے پھرتے ہیں، ملک ہے باہر حانے کی الیں اس امنگیں دلوں میں اٹھتی ہیں ان لوگوں کا خیال ہے کہ یا کتان میں کوئی اور اللہ ہے اور بیرونی ملکوں میں کوئی ووسرا اللہ ہے، مرے جارہے ہیں کہ باہر جاکر زیادہ سے زیادہ مال کمائیں، فلال ملک میں خوب آمدنی ہے، فلال ملک میں نوکری بہت المجھی مل جائے گی، تکلونکلو یہال سے، یہال کا تو معیار زندگی بہت پہت ہے دوسرے ممالک کا معیار زندگی بلند ہے۔ کل ہوں اس طرح سے ترغیب دیتی تھی مجھے خوب ملک روں اور کیا سرز مین طوس ہے طوں تو اب دنیا میں شاید ہے نہیں، ہوسکتا ہے کداس ملک کا نام بدل گیا ہو مجھے

عوں کو اب دیا یں ساید ہے دیں، ہوستا ہے کہ اس ملک کا نام بدل کیا ہو بھے۔ معلوم نیس،رہ گیاروس تو اس مجاہدین نے چنے چہوادیئے۔

ے کل روس بھرتے ویکھا تھا اب انڈیا ٹوشا دیکھیں گے ہم برق جہاد کے شعلوں سے امریکا جاتا دیکھیں گے

انشاء الله تعالى، روس كو چنے چبواد يے امريكا انتظار كرد ہا ہے، بہت ہى انتظار كرد ہا ہے، بہت ہى انتظار كا اسريكاكو، نيندي الرى موتى بيس كم مجاہدين اب پہنچے، اب پہنچے، ونيا كے عاشق امريكا جانے كے عاشق امريكا جانے كے عاشق

۔ کل ہوں اس طرح سے ترغیب دیتی تھی جھے فرب ملک روس اور کیا سرزمین طوس ہے

ارے کہیں باہر نکلو باہر کہیں روس میں پہنچو، طوس میں پہنچو، امریکا میں پہنچو،
انگلینڈ میں پہنچو، امریکا ہیں جرب ہی نے بیا کہ جولوگ دوئی میں انگلینڈ میں پہنچو،
انگلینڈ میں پہنچو اور امارات تو بہت ہی قریب ہے۔ کس نے بتایا کہ جولوگ دوئی میں رہنچ ہیں وہ کہتے ہیں کہ اگر دوئی کو پہنے لگ جائیں، کتا اشاا شاگر جہاز وں کے جہاز ہر کر لے جائیں، کاش کہ دوئ کو پہنے لگ جائیں اے کھنچ کر لے جائیں۔
ایک بار ہم عمرے ہے والیس پر جہاد کے ایک اہم کام کے لئے دوئی میں از میے وہاں سے جب یہاں کرا چی ایئر پورٹ پر پہنچ تو یہاں ائیگریشن کا عملہ دوئی سے وہاں سے جب یہاں کرا چی ایئر پورٹ کی ہور با تھا، یہ لوگ دوئی سے آنے والے مامان ویکھ کر بہت خوش ہور با تھا، یہ لوگ دوئی نے آنے والے سامان کو دیکھ دوئی سے جباز آئے گاکیس ان کو چورڈ نہ دیجے گا۔ ہم

جب ان کے قریب سے گزررہ جھو ایک نے بلالیا خوثی سے چہرہ کھلا ہوا ہا چیس پھٹ دری تھیں اور مندرال سے ہمرا ہوا، میز پرخوشی کی متی سے بہت زور سے ہاتھ مار کر بریف کیس رکھنے کا اشارہ کیا، براخوش ہورہا تھا، میں نے کہاہ کیے لیس بجر بھی ہیں ہے، وہ بہت پریشان ہوا چراس کو میری بات پریفین آئیا کہ ان کے پاس بچر بھی نہیں ہے، کہنے لگا اچھا چھا جائے، اس کا مطلب میتھا کہ ان سے تو بچھ طے گا تہیں اور ان کا سامان و کیفے میں دو تین منٹ لگیں کے تو دوسرے جو بزے برے مرفے بیں ان کا سامان و کیفے میں تا خیر ہوجائے گی، اپنا انتا برا نقصان کیے کریں اس لئے ہیں ان کا سامان و کیفے میں تا خیر ہوجائے گی، اپنا انتا برا نقصان کیے کریں اس لئے ہیں جلدی سے دوست کرویا۔

۔ کل ہوں اس طرح سے زغیب دیج تھی مجھے خوب ملک روں اور کیا سرز مین طوں ہے

ارے جاؤروں میں، طون میں، دوئی میں، مقط میں، یحرین میں، ارے فلال جگہ جاؤہ فلال جائے ہیں دجے ہوں کے چھوجرت حاصل کیا کریں۔ یہ ہوں کے بندے جب کہیں باہر جانے گئے ہیں تو بیگم سے کہتے ہیں کہ میں تو باہر جارہا ہوں لین ابھی آپ کو لے جانے کا انتظام تو نہیں ہو سکے گا آپ اکیلی کیے رہیں گی؟ وہ کہتی ہیں نہیں آپ ضرور جائیں کوئی پروائیس، بیگم کو مال سے اتی محبت او میں میں اکمی رہ جائے، عزت جائے، داحت جائے، ہرتم کا سکون جائے کوئی بات نہیں، میں اکمی رہ بول گی، بال راجا جائیں، آ رام سے جائیں، کوئی فکر نہ کریں، یہاں بہت ہیں سنجالئے والے آپ تو بس کما کم کر لائیں، ہیسا جائے ہیں۔

۔ گر میسر ہو تو کیا عشرت سے سیجئے زندگ اس طرف آ واز طبل اودھر صدائے کوں ہے منع سے تا شام چلا ہو سے گل کوں کا دور شب ہوئی تو ہاہروہوں سے کنارو ہوں ہے سنتے ہی عمرت یہ بولی اک تماشا میں تجے چل دکھاوں تو جو قید آز کا محبوں ہے گئی کیارگ گور غریباں کی طرف جس جگھ جان تمنا ہر طرح مایوں ہے مرقدیں دو تین دکھلا کر گئی کہنے مجھے یہ سیندر ہے یہ دارا ہے یہ کیکاؤس ہے پہچھتو ان سے کہ جاہ وحشمت دنیا ہے آج کیم بھی ان کے ہاں غیرازحمرت وافسوں ہے

اللہ تعالیٰ کی عطاء کردہ تو بق ہے عبرت کی بات سانے آ جاتی ہے، ہوں نے تقریری کہ قلال ملک میں چاو، یہ انگلینڈ وغیرہ میں جا کر بیت الخلاء کی صفائی یا ہوٹلوں وغیرہ میں برتن ورتن ما نجستے ہیں، وہاں ایسے ایسے کام کرتے ہیں اور یہاں آ کر کہتے ہیں انگلینڈ ہے، امر یکا ہے، کینیڈا ہے اور وہاں ہوٹلوں میں برتن ما جھتے ہیں۔ ہوں نے تقریر کی کہ چلو کما کہ چلو کما کہ معیار زندگی بلند کرو، اتنا کما کہ کہ کتان میں جا کر خوب جا سیدادی کہ چلو کما کہ جو کما کہ معیار بلڈیگ بنائیں۔ جب اتنا کمالے گاتو چردوسری شادی کا سونچ گاوہ بہل جس دوسری شادی کا سونچ گاوہ بہل جس نے کہ کہ کہ کمانے کے لئے بھیجا اس کو کہتا ہے کہ تو بوڑھی ہوگئ، اب میں دوسری شادی کروں گا بکہ بہت ہے تو وہیں باہر ہی دوسری شادی کر لیتے ہیں اور پہلی بیوی چین چلاتی رہ جاتی ہوں کہتا ہے کہ تو برقی ہوگئ، اب میں دوسری شادی کر لیتے ہیں اور پہلی بیوی چین گلاتی رہ جاتی کروں گا ہوں کہ تو ہروں کو زیادہ کمانے کے لئے مت بھیجا کرو، وہ جب زیادہ کمالیتا ہے تو پہلی بیوی کو چھوڑ دیتا ہے یا رکھتا بھی ہے۔ لئے مت بھیجا کرو، وہ جب زیادہ کمالیتا ہے تو پہلی بیوی کو چھوڑ دیتا ہے یا رکھتا بھی ہے۔ لئے مت بھیجا کرو، وہ جب زیادہ کمالیتا ہے تو پہلی بیوی کو چھوڑ دیتا ہے یا رکھتا بھی ہے۔ لئے مت بھیجا کرو، وہ جب زیادہ کمالیتا ہے تو پہلی بیوی کو چھوڑ دیتا ہے یا رکھتا بھی ہے۔ لئے مالی کی موت میں خودی اپنے سرمعیت ڈالتی ہیں۔ شادیاں کرلیتا ہے، یہ خورتی بالی کی موت میں خودی اپنے سرمعیت ڈالتی ہیں۔

شن چلی پیس بے اجرت برکی کا تھی کا مراکا ان کر نے جارہا تھا اور ساتھ ساتھ بیسہ چہتا جارہا تھا اور ساتھ ساتھ بیسہ چہتا جارہا تھا کہ اس کی اجرت ہے انٹرے خریدوں گا، ان کی تجارت میں ترتی ہوگ تو مرغیاں پھر ترتی کر کے بر بیاں پھر گائے، بھینس، اونٹ، کھوڑے وغیرہ، پھر شادی کروں گا، اس سے نیچے پیدا ہوں گے وہ مجھ سے بیسے ہاتھیں گے تو ہاتھ کو جھنگ کر کہوں گا، ہو پرے، بیسہ چتے ہوئے ہاتھ کو ایسا جھنگا دیا کہ مشکا گر کر ٹوٹ گیا، مالک نے کہا کہ اگر کہیں تو بھسل کریا تھو کھا کر گر تا اور مشکا ٹوٹ جا تا تو تو معذور تھا، تو نے کہا کہ تو تھدا جسکے سے مشک کوگرا کر تو زا ہے، مشکا اور مشکل کی قیست نکالو۔ شنخ چلی نے کہا کہ آپ کا تو ایک مشکا تی گیا، جبکہ میرا تو سارا کنیہ بی جا بہ وگیا۔ ایسے تی بیہ باہر جانے آپ کا تو ایک مشکل ایسے بیسہ وچتے ہیں کہ فلال جگہ جائیں گے پھر فلال جگہ جائیں گے پیر، بالکل ایسے بیسہ وچتے ہیں کہ فلال جگہ جائیں گے پھر فلال جگہ جائیں گے پھر فلال جگہ جائیں گے پھر فلال جگہ جائیں گر کھیک ما تھتے ہیں وہ بھی

ہوں نے برباد کردیا:

انسان کو ہوس نے تباہ کر دیا۔

۔ مبع تا شام چلنا ہو سے گل گوں کا دور شب ہوئی تو ماہروایاں سے کنارو بیس سنتے ہی عبرت سے بولی اک تماشا میں کجھے چل دکھاؤں تو جو قید آز کا محبوں ہے

"أ ز" رص كوكت بي عبرت بولى كه تجه پر رص و بول سوار بوگى وه تخفيه ايسك خفد كارى ب جيسے فث بال كو خفد كائے جاتے بي، ارب بول كے بندے! تو ادهر آ كچه ميرى بات بھى من لے، بوس نے تو تخفيه يہيں بسر پر لينے لينے سارى دنياكى سركروادى، ميں تخفي كيزكر ساتھ لے چلول گى۔ مُطباتُ الرشير ما من المراب كل طرف من المراب كل طرف المراب المرا جس جگہ جان تمنا ہر طرح مایوں ہے

دنیا میں انسان آرزوؤں اور تمناؤل کے سہارے جی رہا ہے کہ یہ جوجائے، وہ جوجائے یا مہ کہ ابھی تو مجھے بیرکرنا ہے اور وہ کرنا ہے، ان جھوٹی تمناؤں کا انجام و <u>کھنا</u> ہے تو ذرا قبرستان چلیے جاؤ ساری حسرتیں جمنائیں اور آرزو کیں خاک میں ملی ہوئی ہیں۔شاعر کہتا ہے کہ عبرت پکڑ کر مجھے قبرستان لے گئی۔

> ۔ مرقدس رو تین دکھلا کر گلی کہنے مجھے یہ سکندر ہے یہ دارا ہے یہ کیاؤس ہے

سکندر، دارا اور کیکاؤس مدسب کے سب مشہور بادشاہ گزرے ہیں۔ برے برے ناموراور مشہور باوشاہوں کی قبر س دکھا کر کہنے گی کہ بدسکندر ہے، بدوارا ہے، بد کیکاؤس ہے۔

> ا يوجيدتو ان سے كه جاه وحشمت دنيا سے آج سچیر بھی ان کے باس غیراز حسرت وافسوں ہے

بدلفظ جشمت ہوگوں نے کہنا شروع کردیا تشمت پھرنام رکھنا شروع کردیا حشمت على اور نام ريكيت بن عابدعلى "على كى عمادت كرنے والا" عابر حسين " حسين كى عبادت كرف والأ عشمت تو مونى حائي صرف الله كي، وين كي، نام ركهت بي حشمت علی' علی کی حشمت'' اللہ تعالیٰ مسلمانوں کوتھوڑی سی عقل دے دس تھوڑی ہی، مجھی یہ خبیال ہوتا ہے کہ اگر کہیں ہے صفر اعشار پیصفر صفر ایک فی گرام عقل ایک کروڑ رویے میں مل جائے تو میں وہ بھی خرید کر ایسے احقوں کو بلا دیتا، سب کوعقل دے دیا، اس پر بیسوال بوگا کداتی تھوڑی معقل سب کو کیسے بلاول گا؟ تواس کا جواب رہے کہ جائے میں گھول گھول کر بلادوں گا، جائے کے تو لوگ عاشق میں نا، بروہ چیز جونقصان کرتی ہے آج کا انسان اس کا عاش ہے بیاللہ تعالی کی طرف سے عذاب ہے، چائے کی بیالی میں اس تھوڑی تی عقل کو گھول کر ایک بہت بڑی ہی دیگ میں ڈال دوں گا کچر بیالیاں بحر بحر کرسپ کو ملادوں گا۔

> ب پوچھ تو ان سے کہ جاہ وحشمت دنیا ہے آج کچھ بھی ان کے پاس فیراز حسرت وافسوں ہے

ذرا ان سے پوچھوا تمہاری تمناؤں سے بڑھ کران کی تمنائیں تھیں۔ اس زمانے کے بادشاہوں کو آج کل کے کسی صدر یا دزیر پر مت قیاس کیجے، بیلوگ ان کے سامنے بونے ہیں، آج کا بڑے سے بڑا صدر بھی اس زمانے کے چھوٹے سے چھوٹے بادشاہ سے بھی چھوٹا ہے، بیدوہ بادشاہ شے جن کی آ دھی آ دھی و نیا پر حکومت تھی بلکہ بعض نے تو پوری دنیا پر حکومت کی عبرت بولی ان بادشاہوں سے پوچھوا انہوں بلکہ بعض نے تو پوری دنیا پر حکومت کی عبرت بولی ان بادشاہوں سے پوچھوا انہوں خیمتناؤں اور آ رزوؤں کے کیسے کیسے کی تھیر کرر کھے تھے لیکن موست نے آ کر سارے میں ملادیا۔

- جہاں میں ہیں عبرت کے ہر سو نمونے
گر تھے کو اندھا کیا دگ و یو نے
جو معور تھے وہ کمل اب ہیں سونے
گہ جی لگانے کی دنیا نہیں ہے
یہ عبرت کی جا ہے تماثا نہیں ہے
نہ ولدارہ شہرہ جوئی رہے گا
نہ کرویدہ شعر گوئی رہے گا
نہ کوئی رہا ہے نہ کوئی رہے گا
نہ کوئی رہا ہے نہ کوئی رہے گا
نہ کوئی رہا ہے نہ کوئی رہے گا
دہ کا تو ذکر کھوئی رہے گا

یہ جرت کی جا ہے تماثا نہیں ہے لیے طے خاک میں ابلی شاں کیے کیے کیس موصے لامکاں کیے کیے زیں کھا گئی آساں کیے کیے میے مضل میں کے نشاں کیے کیے میے جگہ جی لگانے کی دنیا نہیں ہے یہ حرت کی جا ہے تماثا نہیں ہے یہ حرت کی جا ہے تماثا نہیں ہے یہ حرت کی جا ہے تماثا نہیں ہے

بیز مین بڑے بڑے آسانوں کو کھاگئی، بڑے بڑے آسان، شجاعت و بہادری کے آسان، مال و دولت کے آسان، علم وعقل اور فنون و ہنر کے آسان، حسن و جمائل کے آسان، دنیا ہیں جتنے کمالات کا آپ تصور کرسکتے ہیں کرلیس ان تمام با کمال لوگوں کوز مین کھاگئی۔

موت كاوقت معلوم نهين:

یہاں کراچی میں ایک بہت مشہور ڈاکٹر صاحب تھے، اول نمبر شار ہوتے تھے۔
یہ بہت مت کی بات ہے عبرت کی باتیں جھے یاد رہتی ہیں، پھر عربی لمبی ہوگی تو
عبرت کے دافعات بہت سامنے آتے ہیں، اللہ تعالی برکت عطاء فرمائیں، ان لمحات کو
ہیتی بنادیں، زیادہ سے زیادہ فکر آخرت عطاء فرمائیں۔ آخرت بنانے کے لئے زیادہ
سے زیادہ اسباب عطاء فرمادیں۔ جب اللہ نے آئی لمبی عمر دے دی تو آئی تو ہوجائے
کہ میری حیات میں امریکا فتح ہوجائے اور ساری دنیا پر اسلام کی حکومت ہوجائے،
میرے لئے یہی دعاء کیا کریں، آیک بی تمنارہ گئی ہے ایک بی تمنا۔

ہم تمنا دل سے رخصت ہوگئ

برتمنادل سے رخصت ہوگی، صرف ایک ہی تمنارہ گئی کہ میری حیات میں امریکا فتح ہوج نے، اب تو گری کا موسم بھی آ رہا ہے، گرمیوں میں کرا پی میں سیب نہیں ملتے، واشکشن کے سیبوں کی ضرورت پیش آ رہی ہے، الند کرے کمئی کا مهید شروع ہونے ہوئے سے پہلے امریکا فتح ہوجائے، وہیں جا کر آپ لوگوں کو بھی سیب کھلاؤں گا کی بات ہے مہد میں بیٹھ کروعدہ کرتا ہوں ایسے او پر او پر نے نہیں کہدرہا، فتح ہوجائے تو جس باغ میں لے جا کر سیب کھلاؤں گا انشاء سے میرے لئے سیب آتے ہیں سب کواس باغ میں لے جا کر سیب کھلاؤں گا انشاء اللہ تعالی ۔

قصہ بتارہا تھا کہ ایک بہت مشہور ڈاکٹر صاحب تھے، ان کے بارے میں سیہ معلوم ہوا کہ ایک مریض معاینہ کروانے گیا ڈاکٹر صاحب بنی شا ندار کری پر بیٹھے اس کی نبض دیکھ رہے تھے ای دوران ملک الموت ڈاکٹر صاحب کو لے گیا، مریض بیٹھارہ گیا اور ڈاکٹر کا قصہ ختم ، کچھ معلوم نہیں کہ کب جانے والے ہیں، اس کے باوجود موت سے اتی غفلت اتی غفلت، اللہ تعالی کچھ عمل عطاء فرمائیں، عبرت عطاء فرمائیں۔

ایک تخص نے حفرت سلیمان علیہ السلام ہے عرض کیا کہ آج ملک الموت مجھے بہت گھور گھود کر دیکھ رہے ہے۔ عام لوگ موت کے فرشتے کوعزرائیل کہتے ہیں بیت گھور گھود کر دیکھ رہے تھے۔ عام لوگ موت کے فرشتے کوعزرائیل کہتے ہیں بیت گھے والول نے خود می گھر لیا ہے، حضرت سلیمان علیہ السلام سے عرض کیا کہ آپ ہوا کہتم دیں کہ مجھے ہندوستان لے جائے، سلیمان علیہ السلام نے موجا کہ اگر اس کی موت آئی ہے تو یہ دیا میں کہیں بھی چلا جائے ملک الموت چھوڑے گا تو نہیں دنیا ہے موت ہوتے ہوتے اس کی تمنا تو پوری کر ہی دوں، ہوا کو تھم دیا کہ اسے ہندوستان رضصت ہوتے ہوتے اس کی تمنان علیہ السلام کے پاس پہنچی، سلیمان علیہ السلام نے فرمایا کہ جب تھے اس کی جان قبض کرنے کا تھم تھا تو ایسے ہی قبض کر لیے ، پہنچ گھور گھور کھور کھور کھور کے دریتان کیوں کیا؟ ملک الموت نے کہا کہ جس نظر کے باس کی جان قبض کرنے کا تھم تھا تو ایسے ہی قبض کر لیے ، پہنچ گھور گھور کھور کے دریتان کیوں کیا؟ ملک الموت نے کہا کہ جس نظر

جب سے دیکھ رہا تھا، اس نے سمجھا کہ نظر خضب سے دیکھ رہا ہوں، ہیں تو تجب سے دیکھ رہا ہوں، ہیں تو تجب سے دیکھ رہا تھا کہ جھے آج اسٹے بہتد وستان ہیں اس کی روح قبض کرنے کا تھم ملا ہے اور سے بہاں ہے ہیں میسوج رہا تھا کہ اسے ہزاروں پرلگ جائیں تو بھی ہیاس وقت تک ہندوستان نہیں پہنچ مک آپ نے میسئلہ کل کردیا وہ آپ کے پاس پہنچا آپ نے ہوا کو تھم دیا اس نے وہاں پہنچا آپ نے ہوا کو تھم دیا اس نے وہاں پہنچا دیا ہیں اس کی روح قبض کرکے آر ہا ہوں۔

(۲)اولاد:

عبرت کے اسباب میں دوسری چیز اولاد ہے۔ بندشیں لگانے کے باوجود کتنے

نچ پیدا ہورہ ہیں، مکوشیں پوری طاقبیں خرج کردہی ہیں کہ نیچ پیدا ند ہوں۔ پھھ

مدت پہلے کہتے تحے '' نیچ تین ہی اچھ'' ایک دوسال کے اندر پھر بورڈ نظر آنے لگے:

'' نیچ دو ہی اچھے' اب میں تو باہر نگانہیں شاید کردیا ہو: '' پچدایک ہی اچھا'' اور ہوسکا ہے کہ بھی کہد یں: '' پچدا یک بھی نہ ہوتو اچھا'' جور فقار چلی آربی ہے اس سے پچھ بعید

نہیں کہ ایسے کریں، پورا زور نگادیا کروڑوں روپخرج ہورہے ہیں کہ نیچ پیدا نہ

ہوں اس کے باوجود وھڑا دھڑ دھڑا وھڑ دھڑا وھڑ اللہ تعالیٰ جیجی رہے ہیں مجاہد بھی تو اللہ تعالیٰ کو پیدا کرے ہیں ان

﴿ لَخُرِجُ الْحَى مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ لَهُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ لَهُ ﴿ لَا

میرے اللہ کا کرم ویکھنے والدین نافر مان بودین اور اولاد جاجا کر اللہ کی راہ میں شہید ہورتی ہے۔ بہت سے لوگ مجھ سے پوچھتے ہیں کہ ہم جہاد پر جانا چاہتے ہیں مگر والدین اجازت نہیں وے رہے۔ میں ان سے کہا کرتا ہول کہ جہاد پر والدین کو بھی ساتھ لے جائیں، ای تو وہاں بیٹھ کرنفل پڑھ پڑھ کر دعائیں کریں گی اور ہوسکے تو مجابدین کے گئے کھانا بھی لکائیں اور ابوکود مجھل میلہ، پر بھادو، انہیں چہل میلہ نہ سے خابدین کے گئے کھانا بھی لکائیں اور ابوکود مجھل میلہ، پر بھادو، انہیں چہل میلہ نہ سے

تو مرے یاس آئیں میں دلوادوں کا انشاء اللہ تعالی۔ ہوسکتا ہے کہ کس مفتی کو یہ خیال پیدا ہو کہ والدین کی اجازت کے بغیر جہاد پر جانا تھیجے نہیں، جس مفتی کو یہ خیال پیدا ہووہ يبلي توفر أتين باراستغفاركرے، يدكنا مول كا دبال بىكدان كومساكل بجونيس آت، تین باراستغفار کے بعد پھرا گرمسکا حل نہ ہوتو جھ سے یو چید لے پھر میں بتادوں گا اور اگراستغفارنیس کریں مے تو مسلد بتائے کے بعد بھی سجھ میں نہیں آئے گا، اللہ بھی نافرمانی کرنے والے کے دل میں اینے قانون کاعلم عطان ہیں فرماتے ، استغفار کرلیں اولاً تو الله تعالى خود بخود بن ايسے مفتى كے دل كو كھول ديں ملے كه اس ميں والدين سے اجازت لینے کی کوئی ضرورت نہیں، اس جہاد میں جواب چل رہا ہے اس کے بارے میں بتارہا ہوں، اگر پر بھی مسل مسلم میں نہ آئے تو استغفار کرنے سے دل میں اتن صلاحيت توبيدا موى جائى كه بتاني بربات بمحدثس آجائى انثاء الله تعالى اولاد کی بات موری متمی کہ القد تعالی کتنے انسان پیدا فرما رہے ہیں اگر ان کی بندشیں کارگر موجاتیں بیج بیدا مونے ختم موجاتے اور بڑے جہاد کرتے نہیں سے بھی پیدا نہ ہوتے تو جہاد کون کرتا؟ رسول الله صلی الله علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ جہاد'' قمال دجال' تک جاری رہے گا، ایک روایت مشہور ہے کہ قیامت تک حاری رہے گا مگر مدیث میں'' قیامت'' کا لفظ نہیں مدیث میں یمی الفاظ میں کہ'' قمال دجال'' تک جاری رہے گا بات ایک ہی ہے صرف الفاظ کی بات کررہا ہوں وجال کے قال کے بعد پھرآ کے جہاد کی ضرورت نہیں رہے گی، آخری جہاد اور قال وہی ہوگا جو حضرت عیسیٰ علیہ السلام دجال کے مقابلے کے لئے کریں مے، دنیا کی کوئی بھی حکومت جہاد کو ختم نہیں کرسکتی۔سوچے! کیا رسول الله صلی الله علیه وسلم کی پیش کوئی غلط ہوسکتی ہے؟ اگر کسی کا ید خیال ہے کہ غلط ہوسکتی ہے تو وہ اپنے ایمان کی خیر متائے، دوبارہ ایمان تازه کرے،استغفار کرےاور تجدید نکاح بھی کرے۔

اولاد کی بات ہورہی تھی، اولاد کا پیدا ہونا اللہ تعالٰی کی قدرت کا کرشمہ ہے۔

ارے! اورتو کیا ڈاڑھی منڈے مردول کے پیٹوں سے بھی اولا و پیدا ہونا شروع ہوگی ہے، ڈاڑھی منڈول کے پیٹوں سے پیدا ہونے والی اولاد کو بھی شاید اللہ تعالیٰ مجاہد بنادیں، اللہ تعالیٰ پر کیا مشکل پھراس کے آگے بھی اس کی جنتی تسلیس ہوں اولاد، اولاد کی اولاد تیامت تک سب جہاد کرتے رہیں۔

اولاد میں تغیرات، اولاد کا پیدا ہونا، مرنا، پھران کے طالات میں بھی فرق، کوئی صالح کوئی فات ، کوئی کیسا، کوئی کیس، اولاد میں کیسے کیسے تغیرات اللہ تعالی کی قدرت کر شم ہیں:

ولادت كاانجام:

ولادت کے انجام کوسو چنے 🕳

لدوا للموت وابنوا للعنواب مرولادت كالنجام موت اور برتغير كالنجام تخريب ہے۔

جو بشر آتا ہے دنیا میں ہد كہتى ہے قضا میں بھی مجتھے چلى آتى ہوں ذرا دھيان رہے در كونيس زيا غفلت دو كونيس زيا غفلت موت كا دھيان بھى لازم ہے كہ برآن رہے

جسے بی بچہ بیدا ہوتو ای وقت موج لیا کریں کہ یہ مرے گا۔ ایک محض نے بتایا کہ جب ہم برتن فریدتے ہیں تو وہیں دکان پر بی برتن اشانے سے پہلے ایک دوسرے سے کہتے ہیں کہ یہ برتن بھی ٹوٹے گا بھی، ابھی سے تیار ہوجا و، کہیں بعد میں اچا تک ٹوٹے پرافسوس کرو۔ ایسے بی جو بھی بچہ بیدا ہوتو یہ موج لیا کریں، یہ سالگر ہیں لگانے والے، اللہ تعالی کی اتنی بڑی بھت پر اللہ کی نافر مانیاں کرنے والے، اللہ کو ناراض کرنے والے یہ بیس موج کہ جس نے بچہ دیا ہوت ہے وہ لے بھی سکتا ہے بلکہ ایک ناراض کرنے والے یہ بیس موج کہ جس نے بچہ دیا ہوہ لے بھی سکتا ہے بلکہ ایک

ندایک دن نے لے گا، اس لئے اس بچے کے آنے کی خوشیاں اس طریقے سے منائیں کداللہ ناراض نہ ہو،لوگ اس کے برنکس کرتے ہیں، انظار کرتے رہے ہیں کہ جب سال يورا ہوگا تو سالگرہ منائيں گے، جينے سال اتن موم بتياں لگاتے ہيں، پي سالگرہ نیس سالگرا ہے گرا۔ اگر کوئی ساٹھ سال کی عمر لے کر آیا اور ایک سال گزر گیا تو اس کا ایک سال گرم یا پیلے عرتنی ساٹھ سال، اب رہ گئی انسٹھ سال، اسی طرح برسال دنیا میں رہنے کی مدت ایک سال کم ہوتی جائے گی ،سال تو گررہے ہیں اور یہ لوگ فکر آ خرت کرنے کی بجائے، پچھ عبرت حاصل کرنے کی بجائے ناجائز طریقوں سے خوشیال منادہے ہیں اللہ تعالی کو ناراض اور شیطان کوخوش کررہے ہیں۔ جس طرح اموات میں عبرت کے اسباق میں ای طرح اولاد میں بھی عبرت کے بزے اسباق ہیں، والدین کو اولا وکی کتنی تمنا ہوتی ہے؟ کتنی آرز وؤں اور تمناؤں کے بعد اولا دلمی تو نافرمان اور نالائق، جس اولاد کی خاطر په الله کو ناراض کرتے ہیں اس کا وہال په پرتا ہے کہ وہ اولاد ان کے لئے عذاب بن جاتی ہے، والدین کوطرح طرح سے تکلیفیں پنجاتی ب،حی کدایے واقعات بھی سنے میں آرے میں کداولاد نے والدین کولل كروْ الا،الله تعالى سب كى حفاظت فرمائي _

۳)ازواج:

پہلے تو صرف ولادت کی سالگرہ ہوا کرتی تھی، اب شادی کی بھی سالگرہ ہونے گئی ہے۔ ذراسوچے ! دنیا بھی سالگرہ ہوا کرتی تھی، اب شادی بی ان شادیوں کا انجام کیا ہوا؟ جب میرے بڑے بیٹے کی شادی ہوئی تو حضرت ڈاکٹر عبدالحی رحمہ اللہ تعالی تشریف لاے ، فرمایا کہ جب اولادکی شادی ہوتو سوچنا چاہئے کہ بھی ہماری بھی شادی ہوئی تھی، بھی نے عرض کیا کہ حضرت ! اکا برکی برکات ہیں، بھی صرف اپنی شادی نہیں سوچ رہا بلکہ بھی تو بیسوچ رہا ہول کہ کی دان حضرت آدم علیہ السلام کی بھی شادی ہوئی

تمی پھران کی اولاد کی شادیاں ہوئیں ای طرح آج تک بیسلسلہ چلا آرہا ہے۔ یہ سوچیں کدان شادیوں کا انجام کیا ہوا، ویسے تو آپ لوگوں کو بھی حالات کا خوب علم ہوگا مگر شاید جھے آپ لوگوں سے زیادہ علم ہوا سے نیادہ ہیں، تعلقات آپ لوگوں کے زیادہ ہیں کیک دنیا جس جلتے پھرتے تو آپ لوگ زیادہ ہیں، تعلقات آپ لوگوں کے زیادہ ہیں اس لئے مسائل جھے سے زیادہ بوچھتے ہیں، اور مصیبتوں جس دعائیں بھی کرواتے ہیں اس لئے شادیوں کے طالات بھے زیادہ معلوم ہیں۔

بدين لوگول كمسائل:

جس محتی مولی تی ده ابھی ہوئی نیس نی، بنے والی تی کہ اس کو بیلفظ کہددیا،
 اس سے اب لکا م ہوجائے گا یائیس؟ نکاح سے پہلے بی قصے تم ہورہے ہیں۔

بعض مسائل ایسے آرہے ہیں کہ نکاح تو ہوا تھا مگر زعمتی نہیں ہوئی تھی اور طلاق دے دی۔
 دے دی۔

🗗 رخست ہوکراڑی شوہر کے کمر چلی گئی اہمی آپس میں سلے بھی نہیں ہتھے کہ طلاق وے دی۔

رفعتی کے بعد ابھی ایک بی دن گزرا تھا کہ تین طلاقیں وے دیں اور آ ہے پھر
 دوون، تین دن ، ایک ہفتہ، ایک مہینہ آ گے ای طرح بڑھاتے جائیں، یہ بیں اللہ کے نافر مانوں کی شاویوں کے انجام۔

يوتو موكيا كرطلاق دے دى اور سنے شاديوں كے بارے من:

ا شادی کر کے لائے تھے تو یوی کرچیل چلاری ہے، دولتی لگاری ہے، یو یول نے بہت پر یواں نے بہت پر یواں نے بہت پر بیٹان کر رکھا ہے کچھ پڑھنے کو بتادیں۔ میں کہتا ہول کہ ٹھیک نہیں ہوتی تو طلاق دے وہ کہتے ہیں نہیں نہیں! یوی کا ابا یہ کہتا ہے کہ اگر میری بٹی کے لئے تو نے مجھی طلاق دینے میری بٹی کے لئے تو نے مجھی طلاق کا نام بھی لیا تو تیری جان کی خیر نہیں، طلاق دینے

ک بات توری الگ اگر مجمی طلاق کا نام بھی لیا تو تیری خرنہیں۔

 بہت ی خواتین چلاری چیں شوہر براظلم کرتا ہے، خرج نیس دیتا، مارتا پیٹیا ہے،
 بہت تکلیف پہنچاتا ہے، دومری مورتوں سے ناجائز تعلقات قائم کئے ہوئے ہیں گھر میں آتا ہی نیس۔

ک شوہر چھوڑ کر کہیں ہیرون ملک چلا کمیا ہے معلوم نیس کہاں ہے، خرج تو کیا دیتا، پائی نہیں کہاں ہے اب ہم کیا کریں؟

عدالت سے ظلع لے آیا ہے، جبکہ عدالت کے ضلع دغیرہ کا شرعاً کوئی اعتبار نہیں،
 ضلع لے کر پھر کہیں دوسرا تکاح کر لیتی ہیں عمر بحر بدکاری ہوتی رہتی ہے۔

تین طلاقی دے دیں۔اب کوئی کہتا ہے کہ طلاکر والو، بس ایسے لوگوں کا علاج

یک ہے کہ طالبان کی حکومت جلدی ہے آجائے سب سے پہلے ان کی گرد نمس اڑائیں
گے انشاء اللہ تعالی رمول اللہ صلی اللہ علیه وسلم المحلل
والمحلل له (دارمی، ابن ماجه)

تَنْ يَحْمَدُ: " حلال مرخ والى برجم لعنت، حلاله كروان والى برجم لعنت، حلاله كروان والى برجم لعنت."

حدیث بی ان دونوں پر لعنت کی تو صراحت ہے لیکن ایسا حرام کام کرنے والی عورت لعنت سے کیے فالے ان کام کر فوب خورت لعنت سے کیے فالی کی خورت لعنت سے کیے فائی سے میں ہے دیوٹ لوگ ہیں، ایسی دیوٹی کو اسلام کی طرف منسوب کر کے پوری و نیا بی اسلام کو بدنام کر دہ ہیں، ایسی بے فیرتی تو و نیا بیس کی بدترین محلوق بی مجی ٹہیں، کما اور خزریکی ایسی بے فیرتی کو برداشت ٹہیں برتا، سے بدترین محلوق بی مجی ٹہیں، کما اور خزریکی ایسی بے فیرتی کو برداشت ٹہیں کرتا، سے بیر بی خورتی کو برداشت ٹہیں کرتا، سے بیر بی بیرین اور بیٹ ایسی تو زبان سے کہ کی جب ہم میں استطاعت ہوگی تو بھرد کھنے کیے روکتے ہیں، انجی تو زبان سے کہ

رہے ہیں جب آئی کاشکوف تو سارے نمیک ہوجائیں کے انشاء اللہ تعالی ۔

کی لوگ تمن طلاقیں دینے کے بعد کی غیر مقلد نے فوی لے آتے ہیں کہ ایک بی نوطلاق ہوئی ہے اس لیے ایک بیل کے بیل کے ایک بیل اور عمر بعد بدکاری کرتے رہنے ہیں، چندروز کے بیش کے لئے آخرت تباہ کررہے ہیں، اور عمر بعد باتیں بتاتا ہوں یادر کھیں:

- 🕒 دنیا کی چندروزہ لذت کے لئے اپنا ندہب چھوڑ کر دوسرا ندہب افتتیار کرنا اور آخرے کو بر ماد کرنا کتنی بری بدختی ہے؟
- فیر مقلدین کا خرب بس یہ ہے کہ دوسرے سب خابب کی کالفت کرو، ان کے خرب کی حقیقت بی کہ دوسرے سب خابب کی کالفت کرو، ان کے خرب کی حقیقت بی کچھ تفصیل میرے رسالہ "بلبک الفرید" اور رسالہ "شل المرام" میں ہے، پہلا رسالہ احسن الفتاوی جلد اول میں ہے، وروسرا احسن الفتاوی جلد رابع میں ہے، اس بارے میں دو کیسٹیں بھی ہیں: "فیر مقلدین نمبرا اور نمبراء"
- کی تین کو ایک قرار دیے جیسی حاقت مرف عیمائی ذہب یل ہے کہ وہ تین خداوں کو ایک قرار دیے جیسی حاقت مرف عیمائی ذہب یل ہے کہ وہ تین خداوں کو ایک کیتے ہیں، تین چزیں ایک کیے بن عمل میں قبل کا علائ یہ ہے کہ انہیں تین تھیٹر لگا کر کہیں کہ ایک بی قو لگایا ہے یا کی غیر مقلد ہے تین ہزار لے کر ایک ہزار والی سیجے، اگر وہ زیادہ کا مطالبہ کرے تو کہتے کہ میں نے ایک ہزار بی لئے ہرا۔
 - ان کا بیانو کھاندہب نقل وعثل اوراجماع است کے خلاف ہے۔
- یوگ اپنی خرافات کی تأیید میں سعودیہ کے علاء کا نام لیتے ہیں حالا تکہ حکومت سعودیہ کے دارالا قباء (ریاض) ہوا ہے کہ تین طلاقوں کو ایک قرار دیتا غلط ہے، ان کا یہ فیصلہ ڈیز مصوصفحات پر مشتل ہے جو احسن افتادی جلد فامس میں ہے۔
- 1 اگر کی نفس کے بندے کولذات نفسانیے کے غیر مقلدین کا غیب اختیار کرنا

بی ہے تو پھران کا پورا فدہب اختیار کرے، ان کے فدہب میں تو بی ہمی ہے کہ معاذ اللہ! رسول الدّصلی اللّه علیہ و کی زیارت کی نیت سے مدینہ منورہ جانا شرک ہے۔ کیا کوئی مسلمان ایسا خیال کرسکتا ہے؟ غیر مقلد بنا بی ہے تو پورے بنیں، بیکیا کہ آ دھا تیتر آ دھا بیر۔

ہم گلہ اختصار ہے باید کرد
کیک کار ازین دو کار ہے باید کرد
یاتن برضائے دوست می باید داد
یا تطع نظر زیار می باید کرد
مجبوب کے تالع ہوکررہو،اس کی رضائے لئے دنیا بحرکی لذات کولات
ماردوورند مجبت کے دعوے چھوڑ دو۔

۔ دو رکل مچھوڑ دے کیک رنگ ہوجا سراسر موم یا پھر سٹک ہوجا

(٣) أقارب:

والدین، بھائی بہن، چیا، چیوپھی، ماموں، خالداور ان سب کی اولاد، بیسب رشتے منقطع ہونے والے ہیں، کوئی نہیں رہے گا اور جس کی عمر بڑی ہوگئ اس نے تو اپنی آنکھوں سے میدان خالی دکھ لیا، چیر قیامت میں:

﴿ يَوْمَرَ يَفِوُّالُمَرُءُ مِنْ آخِيْهِ ۞ وَأُمِّهِ وَآبِيْهِ ۞ وَصَاحِبَتِهِ وَيَنِيْهِ ۞﴾ (٨٠-٢٤ تا٢١)

حفرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے اپنے بھائی حضرت عبدالرحمٰن بن ابی بکر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی وفات کے بعد ریشعر پڑھے۔

کنا کندمانی جذیمة حقبة
 من الدهر حتی قبل لن یتصدعا

فلما تفرقنا كأنى ومالكا لطول اجتماع لمر نبت لبلة معا المحادث
بہر بھائی، بھائی ہے جدا ہونے والا ہے۔

وكل اخ مفارقه اخوه لعمر ابيك الا الفرقدان

شاعر کہتا ہے کہ ہر بھائی اپنے بھائی سے جدا ہونے والا ہے لیکن فرقدین میں جدائی نہیں ہوگی، اگر بیشاعر مسلمان تھا تو اس کا مطلب بیہ ہے کہ فرقدین میں تیا مت سے پہلے جدائی نہیں ہوگی ورنہ بروز قیامت تو سب ستارے بھی ٹوٹ کر گر پڑیں گے:

وَإِذَا الْكُوَاكِبُ انْتَفَرَّتْ ١ ١٠٠)

الله تعالى عبرت كى آئكھيں عطاء فرمائيں۔

احباب:

دنیا کے تغیرات اور اسباب عبرت میں سے احباب میں بھی بہت بزی عبرت ہے۔اس بارے میں بہلی بات تو بیک اس زمانے میں کہیں بھی محبت میں اخلاص نہیں، صرف دکھا وے کی عبت ہے۔

۔ یاران این زمانہ ہم چوں گل انارند پر رنگ آشنائی بوئے وفا ندارند انارکے پھول کی طرح بظاہر بہت جاذب نظر محروفا کی خوشبو سے بالکل خالی۔ ۔ ندیاروں میں رہی یاری نہ بھائیوں میں وفاداری محبت ازگئی ساری زمانہ کیما آیا آج کل سب محبتیں دنیوی ہوں ،خود غرضی اورنفس پرتی پر بنی جیں ، جب تک کی ہے کا کی دنیوی طعع وابستہ ہے تو محبت میں گویا مرے ہی جدرہے ہیں اور جہال کام لکلا تو گویا بھی کوئی آشنائی تھی ہی نہیں ،اگر کسی نے یوں یا دولانے کی کوشش کی۔

عظام مجمعی ہم بھی تم بھی تھے آشنا تمہیں یا د ہوکہ نہ یا دہو

تو جواب ہے گا.

''ہم نے آج تک بھی آپ کا نام تک بھی نہیں سا۔'' کس کے پاس مال و منصب ہوتو ہر وقت دوستوں کا جُمع نگا رہتا ہے اور ا اُسرکوئی گردش آگئی تو سب دوست ایسے بھا گئے ہیں کہ تااش کرنے پر بھی کوئی نظر نہیں آتا۔

- بوقت بخکدی آشا بگانه می گردد صراحی چوں شود خالی جدا یمانه می گردد

صرامی میں جب تک پانی ہوتا ہاں کے اردگردلوگ جمع رہتے ہیں کین پانی ختم ہونے کے بعد صراحی کا قریب ترین اور دائی ساتھی لینی پیالہ بھی اس کا ساتھ چھوڑ دیتا ہے الگ ہوجا تا ہے۔

تنجوري كوسلام:

ایک محکیم صاحب پہلے مسکین متھ چر مالدار ہو گئے تو لوگ آ آ کر انہیں سلام

"خكيم صاحب! السلام عليم."

وه جواب ميں ڪہتے.

''بهت احجما پہنچا دوں گا۔''

سن نے پوچھا کہ اس کا کیا مطلب؟ لوگ تو آپ کوسلام کہتے ہیں آپ ان کے سلام کا جواب دینے کی بجائے کہتے ہیں: ''مپنجا دول گا'' ان کا سلام کس کو پہنچ تے بیں؟ حکیم صاحب نے جواب دیا '' یہ بوگ جھے سلام نہیں کہتے میری تجوری کوسلام کہتے ہیں، اس لئے میں جواب میں کہتا ہوں '' رہنی دوں گا' مطلب یہ کہ تجوری کو پہنچادوں گا، میں جب سکین تھا تو کوئی جھے سلام نہیں کہتا تھا بلکہ میں کس کوسلام کہتا تھا تو کوئی جواب بھی نہیں دیتا تھا، اب القد تعالیٰ نے مجھے مال دے دیا تو ہر طرف ہے سلام ویخنے گئے ہر وقت:

" فكيم صاحب! السلام عليم."

ال سے ٹابت ہوا کہ بیسلام جھے نہیں ، میری تجوری کو کیے جارہے ہیں۔'' بیسب مال ودولت کے کرشے ہیں۔

رأيت الناس قد مالوا الى من عنده مال ومن لا عنده مال فعنه الناس قدمالوا رأيت الناس قد ذهبوا الى من عنده ذهب ومن لا عنده ذهب فعنه الناس قد ذهبوا رأيت الناس منفضة الى عن عنده فضة ومن لا عنده فصة فعنه الناس منفضة

ان اشعار کا مطلب بھی وہی ہے کہ نوگ مالدار کی طرف بھاگے جارہے ہیں اور۔ مسکین سے دور بھا گتے ہیں۔ آج کے انسان کو سی انسان سے دوتی نہیں، مال و دولت اور سونے جاندی ہے دوتی ہے۔

رسول الله صلى الله عليه وسلم كي عجيب تعليم:

رسول الله صلى الله عليه وسلم في دنياكى دوسى اور دهمنى كے بارے ميس بهت مجيب تعليم دى ہے. تعليم دى ہے.

احبب حبيبك هونًا ما، عسى ان يكون بغيضك يومًاما

وابغض بغیضك هونًا ما، عسى ان يكون حبيبك يومًاما ﴾ (ترمذي)

مطلب بید کدوئ اور دشمنی میں اعتدال کھو، اس سے کہ اغراض دنیو یہ مبنی دوئی اور دشمنی کو ہدلتے درنہیں لگتی۔

دنیا کی محبتوں کے بارے میں دوسری بات یہ کداگر بالفرض اس میں تغیر نہ یمی آیا تو آخر کب تک؟ موت تو ضرور کسی نہ کسی دن جدائی کر بنی دے گی،رسول الله صلی الله عليه وسلم نے فرماید

(احبب من شنت فالک مفارقه دوسلا طبرای کتو آخری الله می دوسلا طبرای کتو آخری کرد بالآخریتینا فران بوگا۔ کو الله کی خاطر ہو۔

کی اور پائیدار مجت صرف وہ ہوتی ہے جواللہ کی خاطر ہو۔

عشتم نبود عاقبت ننگ بود عشق نباشد پائیدار عشق را باتی و باتیوم دار عشل را باتی و باتیوم دار نام کی رنگ وروغن اور چک دمک کا انجام بہت خراب ہوتا ہے۔ نظام کی رنگ وروغن اور چک دمک کا انجام بہت خراب ہوتا ہے۔

۔ رنگ رلیوں پہ زمانے کی نہ جانا اے ول یہ خزاں ہے جو بانداز بہار آئی ہے

۔ ارے یہ کیا ظلم کررہا ہے کہ مرنے والوں پہ مررہا ہے جو دم حسینوں کا بھر رہا ہے بلند ذوق نظر نہیں ہے بی عالم بیش و مخرت کا بیر حالت کیف و متی کی تخیل کر بلند اینا که بیر باتیں بیں پستی کی جہال درامل و براند ہے گومورت ہے بستی کی بس اتی کی حقیقت ہے فریب خواب بستی کی کہ سے تکھیں بند ہوں اور آدی افسانہ بن جائے

۔ یہ ونیا اہل دنیا کو کبی معلوم ہوتی ہے نظر الوں کو ہیا ابڑی ہوئی معلوم ہوتی ہے ائدار، ہمیشہ رہنے والی اور دنیا وآخرے دونوں میں کامآ

دائی، پائیدار، بمیشدر بنے والی اور دنیا و آخرت دونوں میں کام آنے والی محبت به اللہ کی ، اللہ کے رسول اللہ صلی اللہ علیه کی اور اللہ کا در اللہ کا اللہ علیه کی استعادیا کہ مایا: وسلم نے فرمایا:

﴿ثلات من كن قيه وحدحلاوة الايمان ان يكون الله و رسوله احب اليه مما سواهما و ان يحب عبدًا لايحبه الا لله وان يكره ان يعود في الكفر كما يكره ان يلقى في النار﴾ (منفق عليه)

تَتَوَجَعَتَنَدُ: "جُسِ مِیں تین چیزیں ہوں وہ ایمان کی طاوت محسول کرتا ہے، ایک یہ کدانتد اور اس کا رسول صلی اللہ علیہ وسلم اسے پوری دنیا سے زیادہ مجوب ہوں، دوس یہ کہ اللہ کے کمی بندے سے صرف اللہ کے لئے محبت رکھی، تیسری یہ کہ اللہ تعالیٰ ک نافرہ الی کی طرف اوشنے سے الیے ڈرے جیسے آگ میں چھیکے جانے سے ڈرتا ہے۔"
الیسے ڈرے جیسے آگ میں چھیکے جانے سے ڈرتا ہے۔"

﴿سبعة يظلهم الله في ظله يوم لاظل الاظله، امام

عادل و شاب نشأفی عبادة الله عزو جل و رجل قلبه معلق بالمساجد و رجلان تحابافی الله اجتمعا علیه و تفرقا علیه و رجل دعته امرأة دات حس و حمال فقال انی اخاف الله و رحل تصدق مصدقة فاحفاها حتی لاتعلم شماله ما تنفق یمیمه و رجل ذکر الله خالیا ففاصت عبناه (مته عنه)

تَكَرِيهُكَا؟ ''الله تعالى سات قتم كُ لوگول كواس دن البيخ سائے ميں جگه ديں گے جب كه اوركوئى سامەنبىي ہوگا.

- عادل باوشاه، ما م لوگ' عادل' كم معنى صرف يه تجهيقة بين كه فيصله
 يس انصاف كرك ليكن شريعت مين اس كمعن بيه بين كه برمعامله مين
 دين پرة مم ريب، امنه تعالى كى برقتم كى نافر، نى سے يجے۔
 - 🕡 وه جوان جس کی اٹھان ہی القد تعالی کی عباوت میں ہوئی ہو۔
 - 🕝 وہ مخض جس کا ول معجدوں ہے۔
- 🕜 ایسے دو محض جو باہم صرف اللہ کے لئے محبت رکھتے ہول بوقت ملاقات بھی اور خانمانہ بھی۔
- جس شخص کو کسی حسن و جمال والی عورت نیز گناه کی دعوت دی تو
 اس نے کہا میں اللہ ہے ڈرتا ہوں۔

ک جس کی خلوت میں اللہ کی یاد سے آنکھیں بہ پڑیں۔ اور

بعض حضرات کے لئے جلوت بھی خلوت ہے۔

۔ حسینوں میں دل لاکھ بہلا رہے ہیں گر ہائے پھر بھی وہ یاد آرہے ہیں

ے ہمہ تھر پر زخوبان منم و خیال ما ہے چہ کنم کہ چیثم کیک بین تکند کبس نگا ہے

۔ دور باش افکار باطل دور باش اغیار دل جج رہا ہے ماہ خوہاں کے لئے دربار دل

انی جعلتك فی الفؤاد انیسی
 وابحت جسمی لمن یكون جلیسی
 فالجسم منی للجلیس مؤانس
 وحبیب قلبی فی الفؤاد انیسی

۔ اے خیال دوست اے بیگانہ ساز ما سوا اس بھری دنیا میں تونے مجھ کو تنہا کردیا

۲ عمارات:

ذراعبرت كى نگاه ب و كيسى بخور كيجى دنيايس كتى ممارتى بنيس اور پحرگري . رئي لدوا للموت و امنوا للخواب "برولادت كانجام موت اور برتعير كانجام تخريب ب-" تنی بستیال برباد ہوگئیں، کتنے محلات کھنڈرات میں تبدیل ہوگئے۔

ط بہ عبرت کی جا ہے تماش نہیں ہے

کیکن اللہ کے نافر مانوں ، اپنی جان کے دشمنوں نے ان عبرت کے مقامات کو بھی تماشاً گاہ بنا رکھا ہے، درس عبرت کی بھےئے سیرو تفریح بلکدلہو ولعب اور خرمستوں کا ذربعيه بناركها ہے،ان كى ظاہرى آنكھيں تو د كمچەرى مېںلىكن دل كى آنكھيں جويت. ﴿ أَفَلَمْ يَسِيْرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ يَعْقَلُونَ بِهَا اَوْ الذَانُ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ^عَ فَانَّهَا لاَ تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِنِي فِي الصُّدُورِ ١٣٠ ﴿ ١٣٠)

غز وہ تبوک میں رسول التدصلی اللہ علیہ وسلم کا عذاب سے تباہ شدہ بستی'' حجز'' پر گذر ہوا تو فرمایا که عذاب سے تباہ ہونے والی بستیول برمت جایا کرو، کبیل تم بر بھی عذاب ندآ جائے، بھی وہاں سے گذرنا ہی پر جائے تو روتے ہوئے گذرا کرو پھرآپ صلی الله علیه وسلم اینا سر و ها تک کرجلدی ہے گذر گئے۔ (بخاری)

کیکن میرسیاہ دل لوگ جوایسے مقامات پر تفریح کے لئے جاتے ہیں املہ کے عذاب ہے کیے نڈراور کیے جری ہں:

﴿ فَمَآ أَصُبَرَهُمْ عَلَى النَّادِ ١٧٥-٢٥)

(2)زراعات:

دنیا کے انقلابات وتغیرات میں دروس عبرت میں سے زراعت بھی ہیں، کہبی مات تو یہ کہ زمین میں تخم ڈالنے کے بعد اے اگا تا کون ہے؟ اللہ جائے تو تخم زمین کے اندر ہی جل حائے ، اللہ تعالی نے تختم کوا گایا ، بیودا بنایا ،لہلہاتی ہوئی دل ریا قصلیں ، سرسبر وشاداب باغ، برگ و بار کی بهاری، پھروہ چاہیں تو سب کچھ چند محات میں۔ ا پسے تباہ کردیں کہ گویا پہال کچھ تھا ہی شہیں، ادر اگر فصل کینے تک باقی رہ گئی تو درانتی

پڑتے پرصاف چینیل میدان، یہ ہے حیات دنیا عبرت ہی عبرت، عبرت ای عبرت، عبرت ای عبرت، عبرت ای عبرت، عبرت ہی عبرت کے اسباق رہے ہیں ہیں۔ دراعات سے عبرت کے اسباق رہے ہیں

آَوَانَّمَا مَثَلُ الْحَيْوةِ الدُّنْيَاكَمَا وَانْوَلْنَهُ مِنَ السَّمَا وَ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضُ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ * حَتَّى إِذَا اَخَذَتِ الْأَرْضُ نَبَاتُ الْأَرْضُ وَخُرُفَهَا وَازَّيْنَتُ وَظَنَّ اَهْلُهُا اَنَّهُمُ قَدِرُونَ عَلَيْهَا لَا اَتَٰهَا اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَخُرُفَهَا وَازَّيْنَتُ وَظَنَّ اَهْلُهَا اَنَّهُمُ قَدْرُونَ عَلَيْهَا لَا اَتَٰهَا اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَهَا حَصِيْدًا كَانَ لَمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ * كَذَٰلِكَ نَفْصِلُ الْأَيْتِ لَقُومِ لِنَّامِ اللهِ اللهُ
﴿ وَاصْرِبُ لَهُمْ سَّثَلَ الْحَيْوةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ اَنُزَلْنَهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاصْبَحَ هَشِيْمًا تَذُرُوهُ الرِّيْحُ * وَكَانَ اللّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدَراً ۞ (٨٠-٤٥)

﴿ وَنَحْنُ خَلَقُونَةٌ آمَدُ نَحْنُ الْخُلِقُونَ ۞ آفَرَة يَثُمُ مَّا تُمْنُونَ ۞ آفَرَة يَثُمُ مَّا تُمْنُونَ ۞ آنَتُمْ تَخْلُقُونَةٌ آمَدُ نَحْنُ الْخُلِقُونَ ۞ نَحْنُ قَدَّرُنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا لَخُنُ بِمَسْبُوقِيْنَ ۞ عَلَى آنُ نُبَدِّلَ آمْغَالَكُمْ وَنُنْشِنَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۞ وَلَقَدُ عَلِمُتُمُ النَّشَاةَ الْأُولِى فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۞ آفَرَةً يَتُمُ مَّا لَا يَعْلَمُونَ ۞ وَلَقَدُ عَلِمُتُمُ النَّشَاةَ الْأُولِى فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۞ آفَرَةً يَتُمُ مَّا تَعْرُونُونَ ۞ وَلَقَدُ عَلَمُتُمُ النَّشَاةَ الْأُولِى فَلَوْلَا تَذَكُرُونَ ۞ آفَرَةً يَتُمُ لَكَ مَكُونُونَ ۞ آفَرَهُ يَتُمُ النَّاكُ لَعْنَمُونَ ۞ اللَّذِي تَشْرَبُونَ ۞ وَلَا لَكُعْرَمُونَ ۞ بَلْ يَحْنُ الْمُؤْنِ آمُ نَحْنُ الْمُؤْنِ وَلَا تَشْكُرُونَ ۞ آفَتُمُ النَّالَ اللَّذِي تَشْرَبُونَ ۞ وَاللَّذِي تَشْرَبُونَ ۞ وَلَا تَشْكُرُونَ ۞ الْمُؤْنِ الْمُنْوِلُونَ ۞ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَهُ الْجَاجًا فَلُولَا تَشْكُرُونَ ۞ الْمُؤْنِ اللَّهُ عَلَيْهُ الْمُؤْنِ وَ اللَّذِي تَشْكُرُونَ ۞ آفَتُهُ اللَّهُ الْمُؤْنِ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْنِ وَ اللَّهُ الْمُنْوِلُونَ ۞ الْمُؤْنِ وَلَ الْمُؤْنِ وَ اللَّهُ الْمُؤْنِ وَ اللَّهُ الْمُؤْنِ وَ اللَّهُ الْمُؤْنِ وَ اللَّهُ الْمُؤْنِ الْمُعْلِيْمِ ۞ فَالَالِكُولَةُ وَمُنَاعًا لِلْمُقُولِينَ ۞ فَسَلِحُ الْمُعْلِيْمِ ۞ اللَّهُ الْمُعْلِيْمِ اللَّهُ الْمُعْلِيْمِ اللْمُولِي الْمُعْلِيْمِ الْمُؤْنِ الْمُعْلِيْمُ اللَّهُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمِ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِي الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمِ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعُلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُؤْلِقُولُ الْمُسُالَةُ الْمُعْلِيْمُ اللَّالِلْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُعْلِيْمُ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْلِقُ الْمُعْلِيْمُ اللَّهُ الْمُعْلِيْمُ الْمُولِلْمُ الْمُؤْمُونَ الْمُؤْمُولُ الْمُؤْلِقُ الْمُؤْمُولُ الْ

سیسی قطرہ منی ہے کس نے بیدا کیا؟ تخم ہے کھیتی کس نے اگائی؟ بادلوں سے پانی کس نے برسایا؟ تہارے فائدے کے لئے آگ کا درخت کس نے پیدا کیا؟ اس ربعظیم کے بندے بن جاؤ۔

(٨)امارات:

حکومتوں کے بدلنے میں، چڑھنے اتر نے میں کتنی بوی عبرتیں ہیں:

- ﴿ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَبْرِعُ الْمُلْكَ مِنْ تَشَاءُ وَتُلْمِعُ الْمُلْكَ مِمْنُ تَشَاءُ مِيدِكَ الْحَيْرُ اللَّهُ وَلَذِلَّ مَنْ تَشَاءُ مِيدِكَ الْحَيْرُ اللَّهِ اللَّهَ عَلَى كُلّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴾ (٣-٢١)
 - ﴿ وَرَبُلُكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ٢ ﴾ (٣-١٥) بين النَّاسِ ٢ ﴾ (٣-١٥)

۔ ' توشاہوں کو گدا کردے گدا کو بادشاہ کردے اشارہ تیرا کانی ہے گھٹانے اور بڑھانے میں کتنے بڑے بڑے جابر بادشاہ اپنی رعیت ہی کے کسی فرد کی قید میں گرفتار، بے بس ولا جار، ذکیل وخوار صرت سے کہدرہے ہیں۔

و کنا نسوس الناس والامر امرنا اذا نحن فيهم سوقة نتنصف فناء لدنيا لايدوم نعيمها تقلب تارات و طورًا تصرف

ایک شخص کی گاڑی میں ایک کری بہت زیادہ ال رہی تھی،اس پر جب کوئی بیٹینے ککتا تو وہ کہتے:

"خیال سے بینحیں صدارت کی کری ہے کہیں گرنہ جائے۔"

صدر اور وزیر اپنی حیات ہی میں اپنا عبرت ناک انجام و کیھ رہے ہیں، اور اگر کوئی قائم رہا بھی تو آخر کب تک؟ موت آگر صفایا کردے گی۔ اللہ تعالیٰ نے ان حالات سے عبرت حاصل کرنے کی بار بار حجیہ فرمائی ہے:

﴿إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِأُولِي الْأَبْصَادِ ٢٠ (٣-١١)

یمی آیت دوسری جگہ بھی ہے (۲۳-۲۳)

اورفرما<u>یا</u>:

﴿إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأَبْتِ لِأُولِي النَّهٰي ۞ (٢٠-٥٠)

یمی آیت دوسری جگه بھی ہے(۲۰-۱۲۸)

اور فرمایا:

﴿إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكُرِى لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴾ (٢١-٢١)

جس کی عربعتنی زیادہ لمبی ہوگی اسی قدر اس کے سامنے بید اسباب عبرت زیادہ آئیں گے۔ میری عمر زیادہ لمبی ہوگئی دنیا کے انقلابات وتغیرات اور اسباب عبرت بہت زیادہ دیکھے، اس لئے تو لوگوں کو دنیا و آخرت کی جہنم سے نکالنے کی فکر بڑھارہی ہے۔

9 ا کابر:

مضمون سے چلا آ رہا ہے کہ میں خود کو اور دوسروں کو جہنم سے بچانے کے لئے اتی زیادہ کوشش کیوں کرتا ہوں، اس کی دجوہ کا بیان چل رہا ہے آٹھ وجوہ کا بیان ہو چکا نویں دجہ ہے''میرے اکابر''

میں بار بارسوچتارہتا ہوں کہ میرے اکابر، والدین، اساتذہ اور مشائ نے میری تربیت میں کیسی کیسی محنتیں اور شقتیں برداشت کیس، کتنی دعائیں کیس اور مجھ سے کیسی کیسی تمنائیں اور تو قعات وابستہ رکھیں، ان اکابر کے دلوں کی آواز میرے کا نوں میں یوں گونچ رہی ہے۔ ے پیلا پھولا رہے یارب چن میری امیدوں کا جگرکا خول دے دے کر میر پودے میں نے پانے میں

جبر کا حول دے دے رہ یہ پودے میں نے پالے ہیں مطابق نہ میں نے بالے ہیں مطابق نہ میں نے ان کا کیا حق اداء کیا، اگر میں ان کی تمناؤں اور دعاؤں کے مطابق نہ بنا، اشاعت دین کا کام نہ کیا، امت کوجہنم سے نکالنے کی کوشش میں ذرای بھی نخلت کی تو میں روز قیامت اپ اان اکابر کوکیا منہ دکھاؤں گا، شرم میں ذوب ذوب جارہا جوں، بس اس تصور سے میری ہمت کومہیز لگ جاتی ہو، تازہ وم ہوجاتی ہوں اور انل دنیا کی ملامت کی پروا کے بغیر کام میں لگ جاتا ہوں، اپنے بھائیوں کوجہنم سے بچانے کی زیادہ سے زیادہ تنبیہات کرنے پر مجبور کی زیادہ سے زیادہ تنبیہات کرنے پر مجبور

ياالله!اس بندهٔ عاج كوروز قيامت اسيخ اكابر كسامن رسوان كيجيكا: (رب لا تخزني يوم يبعثون)

🕩 تغيرزمان:

عمر بہت ہی ہوگی، اس طویل عرصہ میں زمانہ کے حالات میں بہت جمرت انگیز تخیر ادرانقلاب عظیم آگیا ہے، سب دیکھ تی دے جی کدروز بروز بلکہ لی بلیحہ آزادی، بعد دینی اورفسق و فجور کا سیاب بڑھتا تی چلا جارہا ہے، اس ہے اندازہ لگائیں کہ تقریباً ایک صدی میں کتنا انقلاب آیا ہوگا، میں نے جس زمانے میں آنکھ کھولی اس میں ریفسور بھی نہیں کیا جاسکتا تھا کہ مسمانوں میں الی بے حیالی پیدا ہوجائے گ، میں رود دورتک وہم و گمان بھی نہ تھا کہ بھی شیطان مسلمانوں کو بول نگا کرے ان کہاں دور دورتک وہم و گمان بھی نہ تھا کہ بھی شیطان مسلمانوں کو بول نگا کرے ان کے ساتھ بول کھیلے گا، اور آئیس بول نچائے گا، دور نہ جائیں اپنے ہی ماضی قریب کے مالات پر بی ایک سرسری نظر ڈال کر بچھ جبرت حاصل کریں پچرمعلوم کریں کہ جس خالات دیکھ کرکیا گذر

رعل رزگ په

۔ گذرتی ہے ماری جان پر جو کھ گذرتی ہے ۔ کسی کو کیا خر دل پر مارے کیا گذرتی ہے

ہمارے خاندان میں بہ استور تھا کہ اگر بھی بھمار کسی خاتون کو کسی مجودی ہے کھر کے خاندان میں بہ استور تھا کہ اگر بھی بھمار کے فائر دو باند ھا جاتا، چرگاڑیان کاڑی کو گھر کے تحق میں کھڑی کرکے خود باہر چلا جاتا، جب اس میں خواتین بیٹے جاتا، منزل مقسود پر وینچتے تو بھی پردے کا جاتا، منزل مقسود پر وینچتے تو بھی پردے کا ایسان اہتمام ہوتا، کھر کے مردکین ایک طرف ہوجاتے تو گاڑی تھی میں داخل ہوتی، گاڑی بان باہر نکل جاتا تو خواتین گاڑی ہے۔ باہر نکلتیں۔

ماضی قریب ہی میں خواتین کی آ مدورفت کے لئے ڈولی کا انظام تو کئی لوگوں

 رمن ہے آزاد ہوکرشیطان ہے جزرہ ہیں، ان کی اولا داورئی پودکا تو کیا کہن دیندار
لوگ خود ہی باغی ہورہے ہیں، جوخوا تین ڈولی کے بغیر گھر ہے باہر پاؤں ندر گھتی تھیں
ان کی اولاد تو بے حیائی ہیں انگلینڈ اور امریکا کوشر ماہی رہی ہے، کیکن خودان کا اپنا بھی
سے حال ہے کہ جب چاہتی ہیں جہاں چاہتی ہیں نکل جاتی ہیں، شتر ہے مہار کی طرح
آزاد پھر رہی ہیں، ان کے رشتہ وار مرد بھی اندھے ہوگے، ان دیوثوں کو بھی شرم نہیں
آئی، غیرت کا جنازہ نکل میا۔ حاصل میک میں پرانے زمانے کا بنیاد پرست مسلمان
ہوں اور آج کے مسلمان نے دور کے ترقی یافتہ وسیح انظر، روثن دماغ، نی روشن کے
دل دادہ، جن کے خیال میں حیاء وغیرت بہت بوی گائی ہے، ایسے میں انہیں کیے
حلول دادہ، جن کے خیال میں حیاء وغیرت بہت بوی گائی ہے، ایسے میں انہیں کیے
سمجھاؤں؟

ے بنے کیوں کر جو ہو سب کار الٹا ہم الٹے بات الٹی یار الٹا

سٹیں روتا اپنا روتا ہوں تو وہ بنس ہنس کے سنتے ہیں انہیں ول کی گئی اک ول گئی معلوم ہوتی ہے دنیاوآ خرت کی جہنم اور ذلت ورسوائی سے بچانے کے لئے چیخ رہا ہوں، چلار ہا ہوں مگر۔

ع مری فریاد کی برجیمی کسی دل میں نبیس گڑتی

آخری بات:

اگر میری بیفریاداور چیخ و پکار کسی کے دل پر پچھاٹر کررہی ہے تو ان ہدایات پڑھل کریں۔

🛮 میری کتاب 'آکرام مسلمات' غورے پڑھیں، بار بار پڑھیں، پڑھتے ہی

ر میں اور اس میں دی گئی مدایات برعمل کریں۔

بہش زیورغورے پڑھا کریں اور اس پڑمل کریں، بڑے درد کی بات ہے کہ بہش زیور پڑھنے والے لوگ اس کی بہش زیور پڑھنے والے لوگ اس کی مخالفت کررہے میں، القد تعالی آئیمیں ہوایت دیں۔

کی ایسے برزگ سے اصلاحی تعلق قائم کریں جو حدود اللہ پر مضبوطی سے قائم ہوں، زمانے کی رومیں بہنے والے نہ ہوں بلکہ زمانے کا رخ موڑنے کے حوصلے اور عزائم رکھتے ہوں، تعلقین کی کوتا ہیوں اور غفلتوں پر روک ٹوک کرتے رہتے ہوں اور انہیں برقتم کے مشکرات و بدعات ہے بیجنے بحانے کی تاکید کرتے رہتے ہوں۔

جہاد میں زیادہ سے زیادہ حصد لیں اور یہ حقیقت خوب سمجھ لیں، دلوں میں اتار لیں کہ سلح جہاد کے بغیر کفر اور فسق و فجور سے بیچنے کی کوئی صورت ممکن نہیں، قرآن و حدیث، اجماع امت اور عقل سلیم کا متفقہ فیصلہ ہے کہ سلح جہاد کے بغیر اللہ کے عذاب سے نیچ ذکلنا نامکن، ناممکن۔

آخر میں نہایت ہی دردمندانہ ومیت کررہا ہول کہ للہ! میری چیج و پکار پر کان دھری، میں تو اب عمر کے لحاظ ہے دخت سفر باند منے والے مہمان کی طرح ہول، رخصت ہونے والے مہمان کی قدر کیجے:

أكرموا الضيف المرتحل

اس سے جسمانی خدمات مرادنہیں،مقصدیہ ہے کدمیری بتائی ہوئی باتوں پڑمل کریں۔

م نفیحت گوش کن جانان که از جان دوست تر دانند

جوانان سعادت مند پند پیر دانا را

ایک بارامام رازی رحمداللدتعالی نے منبر پر چڑھ کر اہل اصلاح سے عوام کی ہے۔ اعتمانی اور غفلت پر بہت زبروست تنبیفرمائی اور بیشعر پڑھا۔

الموء ماكان حيا يستهان به ويعظم الوزء فيه حين يفتقد تَرَجَمَدَ: "انان كي حيات بن اس كي قدرنبيس كي جاتي اوراس كرمن پربهت زيادورخ وغم كياجاتا ہے۔"

ذراغور کیجئے کہ کسی کے مرنے کے بعداس کے مناقب بیان کرکر کے اس پر واویلا کرنے سے کیا فائدہ؟ اگر واقعۃ کسی کے ساتھ عقیدت و محبت ہے تو اس کی حیات میں اس سے ہدایات حاصل کرکے ان کے مطابق عمل کرکے اپنی ونیا و آخرت سنوارنے کی کوشش کیجے ، ان لمحات کوننیمت بچھے۔

القد تعالی اپنی رحمت سے سب کو اپنی مرضی کے مطابق سیچے اور کیے مسلمان بنادیں، نفس وشیطان، برے ماحول اور برے معاشرے سے مقابلے کی ہمت وتوفیق عطاء فر ہائیں، اللہ تعالیٰ کی زمین پر اللہ کی حکومت قائم کرنے کے لئے اس کی راہ میں جان لینے دینے کے جذبات عطاء فر ہائیں۔

وصل اللهم وبارك وسلم على عبدك ورسولك محمد وعلى الله وصحبه اجمعين. والحمد لله رب العلمين.

عرض مرتب:

یہ وعظ'' درد دل'' کُل بفتوں ہے مسلسل چل رہاتھا، وعظ پورا بھی نہ ہونے پایاتھا کہ درمیان میں ہی حضرت اقدس رحمہ اللہ تعالی کوائ '' درد دل'' کے اثر ہے آ واز بیٹھنے کا عارضہ لاحق ہوگیا جس سے زبانی وعظ و ارثاد کا سلسلہ منقطع ہوگیا، حضرت اقدس رحمہ اللہ تعالی نے اس وعظ کے بقیہ جھے کی بذریع تحریز تحییل فرمائی ہے، والمحمد للّٰہ علی ذلك۔ آ واز بیٹھنے کے عارضہ کے درران حضرت اقدس رحمہ القد تعالی نے اس سلسے میں چند تحریرات سپر دقلم فرمائی تھیں جن میں بدایت و فکر آخرت کا بہت بردا فرخیرہ ہے، بالضوص علاج کے بارے میں بہت ہی فیتی نصائح ہیں، ان سب تحریرات کا مجموعہ '' تنبیہات'' کے نام سے مستقل کتا ہے کی صورت میں شالع ہو چکا ہے جس کے بارے میں حضرت اقدس رحمہ اللہ تعالی کا ارشاد ہے:

"اگر کسی کو بچھ سے محبت ہے تو وہ اس کتائیج کو زیادہ سے زیادہ شائع کرے۔"

اس تفصیل کے چیش نظر کتا بچہ "تنیبهات" کواس وعظ" درددل" کے آخر میں لگا دیا ہے، امید ہے کہ درددل رکھنے والے حضرات کو جیسے اس وعظ سے نفع ہوگا و سے بی کا کتابچ "تنیبهات" سے بھی ہوگا، اس لئے اس پورے کتا ہے کا کوخوب فور سے پردھیں، بالخصوص تح رینمبرہ سے حضرت اقدس رحمہ اللہ تعالی کے درددل کا کچھا تھا نہ و لگانے اور عبرت و ہدایت حاصل کرنے کی زیادہ سے زیادہ کوشش کریں، اللہ تعالی تو فی عطاء فراکس۔

مسيحائے زمان تمہیں بیٹھے جو دیکھا تو کوئی پیرنسساں ریکھا تمہیں چلتے جُویا ہا توجوانوں سے جواں رمکھا نهين دمكها كولئتم سابهت دنسياجهان دكيها تهاريختن بيرين فيعب نوري مان دمكيصا ہزاروں دل کئے میراب تیری مستاجھوںنے ترسے ہی روپ میں سب نے سیجائے زمال دیکھا جوابل باطل وشیطان کے دل کوئمی جلا ڈالے تمہارے دعظیں بم نے دی آت و فال ریکھا توفقة ظاہروباطن كاايت الشمسيس كامل ہے سارے ماند رہتے ہیں جماں تھے کوعیاں دیکھا عر عرد المال برستانارا بردم قلم میں آپ کے سب نے دی تاب تواں دیکھا يه عالم آج توسيسري مجت مين ما ايس تمہی کو دل بمہی کوجاں ہمہی کو جانِ جاں دیجھا

بنطالة المتالين

لَعَلَّكُ بَالْحِيْ نَفْسَكُ الْآلِيَكِ فَوْ الْمُوْمِنِ الْكَالَّةُ لَكُولُ وَالْمُومِنِ الْكَالَّةُ لَلْكَال "شايدتها مع مه النامان بي المعاديد على المعاديد في التعاليف المالكيوني التعاليف المسترخم بر بعن بما بمرى المنظر المراكبة المر



فقیالعکرفق افغ تحدیدا قدر مفتی رشید التی و است الماری المرادی المردی
بِنمِّلْ مَنْلِالتَّحْنَالِقَهُمْ اَسَنَبَاقِ مَعْرفت

🗨 مچرچههاه بعدایک منبور ژاکشرنه ایک بهت مقوی مشروب کامشور و با جس سے مرض مجرکوٹ آیا ۔

بھرتقریباً آتھ اہ بعار حضرت اقدس کے قلب مبارک میں نواب میں مخانب اللہ ایک ہوئی ہوئی ہے۔
 مغانب اللہ ایک ہومیو بیٹے کہ دوائکا إلقاء ہواجو چند فرز کھانے سے بجہ فیصد کواز کی ایک میں میں ہور ہاتھا۔

ٛ اس َدوان ایک بہت مشہور کیم صاحب سے اصرار پرایک عام مقوی شو^{د.} شر*وع ک^{رد}یا جس سے آواز بھر پویلیگئی ، اسے چو ڈنے سے حت* کافی ہتر بھور ہی ہے۔ حاصل :

ا - ماہرین من کے منتخب مقوی مشریات سے بہت سخت نقصان بہنجا۔ ۱

۷ _ مجرُّعَ تِقَرِّعُ سولہ ماہ محتلف بھیموں اور ڈاکٹروں سے علاج سے وئی فائدہ نہوا بلکہ ایک بھیم صاحب کے علاج سے بہت نقصان ہوا۔

٣ - حضرت اقدسى خود تجريز فروده معولى يدواء سے فالده موا-

الله تعالی کے تیصرفات بی رہے ہیں کے مکیوں اور ڈاکٹروں کا عِلم اور دواؤں کا از سب کھواللہ تعالی کے اِختیار میں ہے۔ مرفوم ۱۳۲۲ میں اور کا ۱۳۲۲ میں اور کی اور کا ۱۳۲۲ میں اور کی اور کی دور کی کی دور کی دور کی کی دور کی دور کی دور کی دو

بعد المناه الدون التوجي

فيقيده العضمفتعظم حَضرَت فِدس هنتي ريشير (فيرصاريزيا بمحرِّج لماؤت نے کے عَارِضَہُ سے متعلق کچھ وَخ

ستنتكثيري ابتدادمين حضرت اقدس كوآواز بييضف كاشكايت نثروع ببون معمول معتدل علاج سے فائدہ نہ ہوا بلکہ سلسل وعظ وتقریر کا سلسلہ جاری بہنے کی ومبسطاس عارصنه في اليسي شدت اختيار كرلى بي كدوعظ اور ثيليفون رمساً كن تيافي كاسلسلە بندكرنا يزگيا ہے - أحباب مفرت اقدس ي أواز بيضني كن خبر شن كرمبت يينيان ہورہے ہیں اس کینے حضرتیا قدس نے لینے دستِ مُبارک سے ایک وضاحت سخ پر فرمانُ ہےجو درج ذیل ہے۔

بحدالة تعالى ميرى حست ببت بترب، الندتعالى في السيمكون وراحت سيلوا ب كونايرى دنياير كسى كونميتريو، راي آواز بيضف كاعار ضرتواس سيمبى مجدالله تعالى مفی و دراس می برایشان نهین، اس کی دو وجیس بین ا

أ ميرا الله في مجفي اين برتقدر بريضا في كامل كي تعمت سنوازا البي "ما قدر رائله" يايان كاس عطاه فراياب اس كايمطاب مركز تبين كم معاذالله مين اس نعمت ے بے نیازی کا دعویٰ کررہا ہوں، میں تو مرامر ہندہ مختاج ہوں اور اپنے رہ کی رحمت کا طلبگار مقصد سے کہ اس رب کریم کی طرف سے جومالت بھی گذر ری سے بحدالند تعالى مجياس سيكون بريشان نبس اس مين ميراكون كمال نبير عض أنبى *ى عطاسي، ولاحول ولاقوة الآبه*.

الله تعالى في من ابنى منت مري واعظيك كتابين كيشي اورج ا كاعلر ذا الفرخ من پوری دنیایس بھیلادیے میں ، اگرمیری آواز بیٹھ ٹی تو کوئی فکر کی بات نہیں اس کے کہ الله تعالى"صوت الرسشيد"كو بورى دنيايس بينجارب بين اوريى مقصوب-الله تعالى في رحمت سے قبول فرائیں اور تاقیامت صدقہ حاربیبائیں -رسول النّصل لنَّ علیہ کا فات يرحفرت الويكروض الله تعالى عندات آب كي بينيال مُبارك بربوسه دس كركها : لن يجمع الله عليك موتتين. -- "الله قال آب يردوتوس بر أزم سكريك."

مطلب بركمآپ بر توموت آگئ مگرآپ كرديد امت نگ بېنجندوال مدايات پرموت نېس آئى گى، وەقياست نگ ننده رئيل گى، مجي بى اپندالله رئيتان ب كر اس نے محض اپن رهت سے فجه جيسے ناكارہ سے اپنے دين كى جو خدمات لى بين وه الهين قياست مك جارى ركوين كے، وماذنك عليه بعديدز.

جكمت:

اس عارضه میں اللہ تعالیٰ کی پوری مکمتوں کو تو وہی جاشاہے نیکن دوکتیں بہت واضح ہیں:

🛈 تخسد ريات علميه كے كئے فرصت ل كئى ۔

﴿ متعاقِين كوقدر روء ،ابن اور دوسسرول كن زياده سے زياده اصلاح ك فِكر بو-

مُتَعَلِقُون كووَصِيّت؛

دنیامی شکون راب درب گا،اس اغیس اینسب ملتین کوبهت تاکید ب دهینت کابون داگرانین واقد مجرت به تومیری می تعلیف برمامیری وست برسی وُم کنی بجائے ان بالیات برعل کریں جو الد تعالی نیمیری زبان او تھم سے است تک بنجائی بی ، میرے واحدی کابوں بمیٹوں اور جادے علم فراز خرب اور کا کو یادہ سے زباد فائن کریں۔ رول الدّمی الله علیہ تعلیم کی وفات برحض او بکرون الله تعالیم کامیار شاق میں یاد کھیں، من کان منکم یعبد عدد افان محتد اقد مات ومن یعبد الله وحدہ

فان الله حي لايصوت "تمين سي أركون محرص الدعلية كلم عادت كراتها مودة توذات بإكفاور والدتمال

ک عبادت کرتاہے توبیشک النہ بھیشرزہ دہ کا بھی جمیں بہیں مرے گا۔" اس سے قبل میں نے" وصیت کا پیغام علماءِ امت سے نام "لکھا تھا تو خرب مُون"

میں اور الگ مے مقل تھی شائع ہو بچاہے اسے زیادہ سے زیادہ شائع کریں ، اس کے مطابق تور بھی جہادیں زیادہ سے زیادہ حصر لیس اور دو مروں کو بھی زیادہ سے نیادہ جہادیں انگانے کی

ئۇمىش كىن ——سىرىيە ئے دُعاد كامعول بىن جارى ركھيں -كىشىن اڭسىك اڭسىك

يى الأقدام بي ١١٢٨م

علاج سے تعلق صفرتِ اقدس كا وعظا علاج يا عداب ؟ پڑھ كر دنيا و آخيت كا سكون حاصل كري -

وصييت كابيغام علماءأمتت عنام

المراس الخين الخفر

دینی لحاظ سے کئی مشہ پڑھیت کے انقال کے موقع پر ریخ وغم اور مناقب شائع کرنے کا دستورہے ، یں اس کی بجائے یہ وصیت کرتا ہوں ،

انسخهٔ صَبرُ وسُکون :

ان تله ما اخذولهٔ ما اعطى وكل شى وعندالله باجل مسى رنسائ

"بیشک الله بی کا ہے جو کھ اس نے لیا اوراس کا ہے ؟ بو کھ اس نے دیا اور اللہ کے نزدیک برچز کا وقت معین ہے ؟

﴿ دَرِسِ عِبرت :

دُرُدائیری کی بجائے ایسے وارتخسے عمرت حاصل کر کے اپنی حیات کے بقید لمحات کو خنیت بھتے ہوئے اعلاء کلتہ اللہ کسلئے اپنی مساعی اور فِرجُد کو تیز کردیں، ہاہی اختلافات کو مُعلا کر سب تحدیو کر دنیا سے فسق و تور، منکرات و بمعات کو مثالث اور اللہ کی زمین پراللہ کی حکومت قائم کرنے کے لئے جہاد میں نیادہ سے زیادہ حسابس۔

میں بیمی دھیت کرتا ہوں کرمیرے انقال کے موقع پراظہار رہنج وقم اور رسی توزیت کی بجائے میرائبی مضمون زیادہ سے زیادہ شائع کیا جائے۔ رسٹ پیدا جمد

غرة محرم ١٣٢٠ه

آواز بنطیخه کا عارضه (تخریر۲)

أواز بيطف عارضه كواكرعلاج كعباو تودجلدى فائده ندم وتوسكو في تنويش ک بات نہیں الیے کی قصے سننے میں آرہ ہیں کہی کوببت اُوینے علاجوں کے باوجود جد مینے کے بعد اور کسی وانکلینڈاور امریا سے علاج کروانے کے باوجودایک سال ك بدالته تعالى فيكس معول سير سصحت عطاه فرادى يعض حضرات نے میری رضا کے بغیرحلق کے اسپیشاسٹ کو بلوالیا ہیں نے بادل ِ تُحواست مروّۃ اجازت دے دی۔اسپیشلسٹ صاحب نے بتایا کہ کوئن تشویش کی بات نہیں میں نے کہا پہلے تۇدۇ، تىنولىش كى بايەنىبىي تىقى گرايلوپىيىتىك علاج يېھىموافق نہيں آ مااس كەل تتويش بوكئ كدخدا تخواسته بيروس وظيفه شريرها إيسا مكيف لم أمت وفي بطني حبة الدكتور"ميرالشكى قدرت كميربيي بن داكمرك كول كي كي بن پھر جھی نہیں مراکر ایمایک اعجوبہ قدرت کی طرف اشارہ ہے، اس کی تفصیب ل بلكهامس سيهى بهت بزے بہت سے عبرت آموز عجائب قدرت كى تفاصیل وعظ" علاج یاعذاب بُرمیں ہے۔ مرتب) مجھے دَوا د کھے انے کی ہت نہیں ہورہی تھی لیکن بعض تخلصین کے کہنے پر نٹرون کر دی مگر نفع کی تجائے نقصان - دومنفتے کی دَواء دی تھی بڑی شکل سے نو دن کھا کر چھوٹر دی۔ مجھے ابلوپھی کی دُواسکے تصوّرہے ہی وطن یادآنے لگاہے۔ دوادیے استعمال سے دولان وُزاّنہ كئ باركبتاريا، لبتيك اللهم لبيك مطلب يدكه دواء سے وطن جاليكا تكث تومل گیا ہے میرے اللہ ایس تیار ہوں ۔ رُعاد کیجئے کرجب تک حیات مق زر بالترتعال خدمت دين سے مروم ند فرمائيں۔ جینا چاہوں تو*کس بھردسے پ* نندگی ہو تو ہر در مجبو سب ميس تمجسا ہوں كەيەنقصان مبليفون سے پہنچاہئے ايك گھنٹا صبحاورآدها

گھنشارات کو فون پُرِملسل ولنارِ ٹماہے لیک لمح بھی توقف نہیں ہوتا، بیرون مجی كاردلس بحس كم بارس ير بعض كاكبراب كاس كافن ونقصال بيخيا ے،اللہ کاشکرے کہ کان توضیح ہیں، ون کرنے والے بھی جدب مجسسے میں خورت ع في زياده بي كرتي التى كوي بواس في جوم جوم كرماريا-التٰدتعالٰ نے اپنے فضل و کرم سے میری اس ذراسی تعلیف کو ایک ہوہیو پیتنک ہسپتال اور کالج کے پورے ماتول بلکہ ان کے جاننے والے بیٹنار لوگوں كى بى بدايت كا ذريعيه بنايا ب ع سينكثرون كوموختر ززني مسلمال كردما يرسوداببت مئستاثابت بواع متاع جان جاناں جان دینے *رہبی ست* ہے ولاحول ولاقوة الاباثله. یں علاج کے سلسلہ میں یہ قاعدہ بتایا رہتا ہوں ، "معول علاج سے فائدہ ہوجائے تو دونفل شکرانے مرمیں فائدہ نبوتو دونفل توسے پرصیں۔ اُو پنج علاج سے فائدہ ہوجائے تو رونفل توب كريرهين فائده نه بوتو دففل تمكيل في كريرهين 4 مجية مول علاج سے فائدہ نہیں ہوا تو رونفل توب مرجع بھار پیشلٹ كے علاج سے فائدہ نہيں ہوا تو رونفل شكرانے كريشے، ان شاء الله تعالى کسی معولی چنرے فائدہ ہوجائے گا تو پھر دونفل شکرانے کے پڑھوں گا۔ و اذامرضت فهویشفین.

ترشیداند یمالامد۱۲۲مفر۱۲۲۰۰

آواز بنيطه كاعارضه (تخرير٣)

علاجميس مزاج شناسى كى اهميت

بعض مخلصین نے ایک شہور کیم صاحب کو بُلالیا، انہوں نے غذا، تبدیل کر دی، جس سے اصل مرض کو تو کوئی افاقہ نہ ہوا، مزید ہاضمہ کی کچھ محلیفیں پیدا ہوگئیں۔

میری اغذیه معتادہ کو تبدیل کرناایساہے جیسے اسباب حیات کو منقطع کرنا،صورت تبدیل میں ذاتی تجربہ کی بنا، پرضریقینی ہے اور تبدیل نہ کرنے میں طبیب کی رأی میں جو ضریب وہ ظن ہے، دوا، اورغذا، کے سلسلے میں مریض کے تجربہ کو طبیب کی رأی پر ترجیح ہے

میراایک فاص مزاج ہے دوسرے مولات کی طرح نور و نوش بھی ایک خاص نظم و ضبط کے تحت ہیں ، جو معالہ بھی میرے اس خاص نظم طبعی کی رعایت نہیں کرے گا ، اس کے علاج سے مجھے نفع کی بجائے نقصان ہوگا۔ آگاہ نئر تہ ہے۔ درون را نہ شدہ میں دروں سرا

نشترچهزنی رگ جنون را

ہومیو پیقک علاج میں تہی کوئی چیز خلاف مزاج پیش نہیں آئی شفاء اللہ تعالیٰ کے ماتھ میں ہے۔

وضعف ایمان کے مہلک مضمیں مُبتلامر صوب کاعلاج بعض ضعیف الایمان لوگ میری آواز بیٹینے کے عارصنہ کے بارے میں خبری اُڑا رہے ہیں کی سے خاد وکر دیا ہے ،ان کا یہ خیال مُرا سراطِل

ہے،اس بارےیں دوباتیں:

 کفظ الله تعالی مجدر کسی کاکوئی جادوقطعاً نہیں جل سکتا، اس پارشکال وجواب او تفصیل" انوارا لرسٹ بیر" جلد ثان سے باب پیکشف و کرا مات" میں ہے۔

﴿ وَن سِحِس فَتَف كِ بارك مِن سِي عِلْ يَعِي كَيْهِ كَا صُورت عَلَى اور مجصاس بارمين توكيريس كهنا تقاوه بعون الشدتعالى خوب كحول كحول كر كبديحا بول اوروه سب كجر مجد التأد تعال ميرى كما بوس ، مطبوعه واعظاور کیسٹوں میں محفوظ ہے جو پوری دنیا میں شیائع ہورہاہے اور اِن شلالتٰ تعالیٰ قیامت تک شائع برواری کا، اس لے اب کسی شیطانی تصرف سے میری للكرسنے سے بج محلے توكيافائدہ ؟ دين س أجرنے والے برفتنے كى مركونى ے علاوہ طالبین بدایات سے لئے بھی التارتعالی نے اپنی رحمت سے بہت کچرکہلوا دیا جمعنوظ کروا دیا اور پوری دنیا میں پھیلا دیاہیے۔الٹد تعالیٰ نے جو خدمات مقدّر فران تقيس بظاہران ميں سے بلند آواز سے متعلق كوئي آم كام باقى نېيىر با البته تخريرى خدمات كى خرورت باق جە، الله تعالى فاس عارضه كوان كحسكة فرصت كاذر بعيه بناديا -التُدتعالُ ابن مرضى مصطلحات زیادہ سے زیادہ کام لے لیں ، اپن رحمت سے قبول فرائیں ، اُمّت کے لئے ناقع بنائیں اورتا قیامت صدقۂ جاربیہ بنائیں۔ آخر دم تک خدمات دینتیہ سے خروم نہ فرمائیں۔

ميناچابول *توکس بعوسے پر* نندگی بوتو پر در مجوسب وما توفیقی الابالله علیہ توکلت والیہ انہیب . یہ دومری بات تویں نے مض ضعیف الایمان کوگوں کی خاطر کہہ دی ور نہ حقیقت وہی ہے کہ بحفظ اللہ تعالیٰ مجھ پکسی بڑے سے بڑے شیطان اور کرسی بڑے سے بڑے شیطان سکتا، اگر کسی خبیت شیطان میں اتنا حوصلہ ہے تو اپنے شیاطین کے تمام الشکروں کو ساتھ کے کرسامنے آئے ۔ اس ساسلہ میں وعظ "آسیب کا علاج "ضور پڑھیں اور اپنے"ضعف ایمان کے بہت خطرناک اور دین و دنیا دونوں کو تباہ کر دینے والے تہلک مرض کے علاح کے لئے" انوار الرشیری بار بربہت غورسے پڑھیں اور اسس وقت تک پڑھے رہیں جب تک کہ بار بربہت غورسے پڑھیں اور کسس وقت تک پڑھے رہیں جب تک کہ اللہ تعالیٰ آپ کو اس جہلک مرض سے شفاء کا مل نہیں عطاء فرا دیتے ۔ اللہ تعالیٰ آپ کو اس جہلک مرض سے شفاء کا مل نہیں عطاء فرا دیتے ۔

رسشىداحمد جمعه ارربيع الاول ١٣٢٠ھ



آواز پیشنےکاعارضہ(کریم) انتخاب معلج کے بارے میں ہدایت

روس معاملات کی طرح علائے کے مسلمہ میں بی دیندار معلی منتف کرنا چاہئے، اگر خدائخ استداس سے فائدہ نہ ہو اور معالی بدننا بڑے تواس کی ابتیت اور بھی نیادہ بڑھ حوال ہے کہ دومرامعالی پہلے سے دینداری میں کم نہ ہو،اس لئے کہ اگراس سے فائدہ بڑگیا تواس میں بہ قباحتیں ہیں:

دیندارید دین کوقیت ۔

🕜 دینداروں کی حوصل فیکن اور بے دینوں کی حوصلہ افزال۔

برقصة سن كرلوگوں كارجوع بے دین معالجی طرف زیادہ ہوگاتو دسندار معالج ی بنبست بے دین کا جوت اورمال میں ترقی ہوگی بالخصوص جبکہ دوفوں معالج ی بنبست بے دین کی شہرت، عزت اورمال میں ترقی ہوگی بالخصوص جبکہ دوفوں معالج یک بی طریق عالم سن علق رکھتے ہوں توریزار اور بے دین کے درمیان تقابل زیادہ وائٹ ہو آئور معمول کا نصیع تو ہار شیط والی کے بہر کا اقدس کے ایک بہر ہو گئیس ہے، میری آواز بیلے کے عارض کی نبرس کر لندن سے فون آئے ہیں کتم ہے بہر کا میری آواز بیلے عارت سے بہی مامر ڈاکٹروں سے بات کر لی ہے، بہاں آجا بیس کیے جاسکتا ہوں ؟ البت آگر برے اللہ احراد کرتا ہوں ؟ البت آگر برے اللہ کے دین بہاں کہ تو ایش میری البت آگر برے اللہ کے لئے بہاں کے تو ایش میری اور ایک کے ایک بہاں کہ تو ایش کے ایک بہاں کے دین بہاں کہ کا ایش بھر مرسے اللہ کے لئے بہاں کہ تو ایش اور ایک کے ایک بہاں کہ کا ایش بھر مرسے اللہ کے لئے بہاں کہ کا ایش بھر مرسے اللہ کے لئے بہاں کہ کہ اور ایک کی اجازت چاہیں آواں برمین خور کرسکتا ہوں۔

زمشیدانحد معلامل ویعن (صدرامریاکا قصر ابرارشیطاول کے درم دالاس دیکمیں جام)

۱۲۰ريخ الأول ۱۳۲۰ هر

آواز بيشف كاعارضه (تخريه)

ایکم شہورہومیو پیتھک ڈاکٹر نے میرے لئے خم دفکر سے پیا ہو نے والے عوارض کی شہور دوا ڈاکٹیشیا می تونیک ، ڈاکٹر صاصب کی تینفیس بائٹل صحیح ہے ، مجھے دوج نے وں کی فکرنے ٹرھال کر رکھا ہے :

میری حیات ہی میں پوری دنیا پرمیرے الٹدکی حکومت قائم ہوجائے ، اس مقصد کے لئے الٹیک و تمنول پر ہمیٹنے اور اس کی راہ میں جان لینے دیئے کیے ہت شدید جذبات مجھے قرار نہیں لینے دیتے ۔

۲۲ ربيع الاوّل ۲۲ ۱۳۲۸

ئە اللەتغان كى كىرىتىن كىنى چىرىسى ئالىزىلى يەكىم ئۇسلى ئەرىيىن ئىكىم يەلگىلىن ئىلىن بىلىن ئەتەرەپ -

وَقُتِلُوهُمُوحَثَّىٰ لِاتَّكُوْنَ فِسَتَنَةً ۚ وَكُذُّ الدين كُلَّهُ لِلَّهِ ٢١٠ ١٣٩) أورأن سترتال كروتنا كفتنها ق مندب اور أورادين الثاكا يوجآ مَنْ مَاتَ وَلَمْ يَغُزُ وَلَمْ يُحَذِّفُ بِهِ نَفْسَهُ مَاتَ عَلَىٰ شَعْبَةِ مِنْ نِفَاقٍ. رَواهُ مُسلم فيخض ايس مالت ميں ماكه اس نے ندئمبنی جیاد کیا اور نه ہی اس بارے میں بھی کھے سوچا وہ نِفاق کے شعبہ برمرا۔'' من این عِلم وفراست بارکاهی نمی میسر كهازتيغ وبهير بيكانه سازدمرد غسباري را بغيرزخ اين كالأبكيري سُودِ مِند أَفْت م بفرسید ومن دلیانده بادراک رازی را "بوعِلم وفراست مرد غازی کو تینج و*مپرسے بیگانه کونے ایس*ے نزریک اس کی قیمت کھاس کی خٹک ہی جتنی بھی نہیں۔ بأورى دنياك دوات أفاكراس خزاني كوهاص كرتي تو بھی سوداست تاہے، مؤمن دیوان کی ضرب سیان مولولوں كوبنى بنق روها دوء برغم خودامام رازى بنے بيتے يال <u>"</u> وشنداكتد والأخارة وآلاخارة فيكتابكانك ليلة السبت ارذى الحيال الثالث نقلابصرمني المهضون الترامين المحركة والتباركة كالمراب المعالي المنطاع تبليغي بهَا الميول كالم

تبلین بھائیوں کے ہارے میں بعض خرابیوں کی خبریں بہت شہرہیں ' اس گئے اس سے قطع نظر کہ پی خبریں کہاں تک صحیح ہیں صرف ازراہ محبت اس طرف متوجہ کرنامقصو ہے کہ اگر کسی میں ایسی کوئی خرابی ہو تواہی اسلام کی فکر کرے۔اس سلسلے میں ان ہدایات پرعمل کریں ،

چہادی مخالفت نہ کریں۔

مسلح جباد کے بارے میں قرآن وحدیث کے کھلے اور واضح ارشادات
 کو توقیم روز کر تبلیغی جاعت رچیاں ند کریں۔

جوڑپیدا کرنے کی خاطر کوئی ناجائز کام نہ کیں مثلاً جس مجلس میں گناہ
 کاکام ہورہا ہو وہاں نہ جائیں ۔

صرف اور صرف ابنی ہی جماعت کے بارسے میں یہ دعویٰ شکریں کہ
 ہی جماعت بنج رسالت رہیے۔

جس خلوص و مُحبّت سے فضائل کی تعلیم کرتے ہیں بالکل ای طح ترکب نکرات کی بھی تبلیغ کریں ۔

اینے بیوی بخوں کی اصلاح کی بھی فکر کریں۔

اہل حقوق کے حقوق صالع نہ کریں۔

ر مشیبیل انتخمک دارالافکاروالارشاد نالم آباد - کراپی

لیلة التبست ۸ردی الجد ۲۱۹۱۹ ه

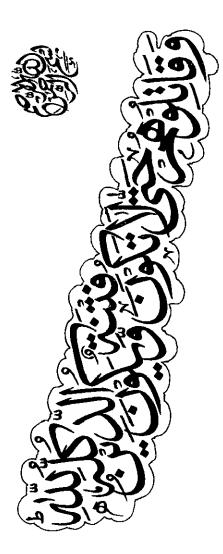
إصلاح امت كدوطريق:

عوام مے لئے عمومی وعظ و تذکیریونی بیان کا مروجہ طریقہ۔

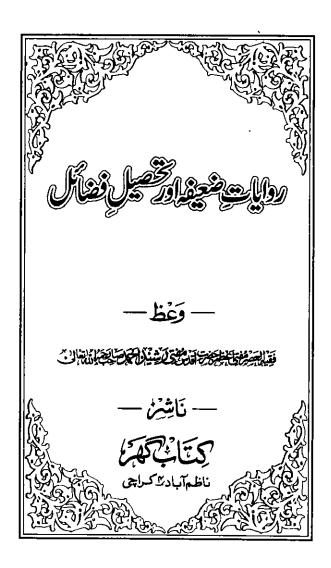
· فاص ابل ملسل مع مع فانقابي نظام -

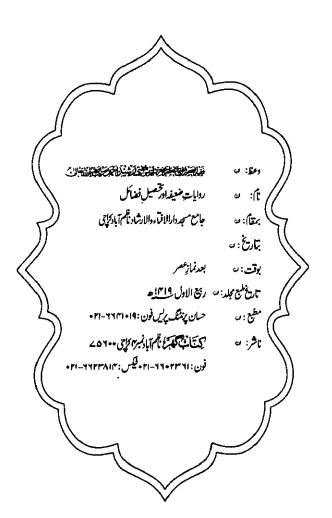
ابل سلسلہ کے لئے وعظ کے مروج طریقت کی ضورت نہیں، بلکہ باضابطہہ اصلاحی تعلق رکھنا، بتائے گئے طریق کاراوراس کے اصول وضوابط کی تملی بیاندی کرنا لازم ہے۔ وعظ کے عام مرقن دستورسے بیمقصد حاصِل نہیں ہوسکتا۔

وعظامه مروجه طريقيك زربعيوام كووعظ وتذكير كيملسله مي الشدتعياني في محض اپنے نفسل و کرم سے جھسے ہر وخوع پرا تناکام لیائے کہ کوئی ضوی ہا ت باقی نہیں رہی ، سوچنے پریسی کوئی ایسی بات خیال میں نہیں آرہی حمر *کے کہنے* ى خرورت باق بو، الله تعالى إين رحت مقول فرائي اورتاقيامت صدقه جاريه بنالين التاتعال فيمير يبب واعظ يستون اوركتابيون من مخوظ واليفين مجص استغاده ي طلب ركف والول كم الفيهي كيشي اورُ طبوعموا عظ كافي مِنْ اس لئے بہاں بین سانے کاسلسلہ رہے گا۔ اُگر کسی کو براہ راست بیان سننے سے زياده فائده بوقا موتوه كهيس براه راست بيان والمجلس مين جله جاياكين مقعد تورين فائده بهاس كي جب كوجهال فائده بهووه وين تعلق ركه يتيف فيرا إج كا <u>ے لئے ہےجن کامجی</u>سے اصلاحی تعلق نہیں، اصلاحی تعلق رکھنے والوں کے لئے يە اُصول كەلىنى تىملىك سواكسى دومرى جگەجانا جائزىبىن،اس سىفائدە ی بجائے نقصان ہوتا ہے ،اصلاح کا اصل طریقے ہیں ہے کہ سی ایک شیخ سے باضابط اصلاح تعلق ركها جائية عام وعظو تذكير سيمي اصل مقصرين كةوامين كسي شيخت اصراح تعلق ركين كاشعور بيدا بوءاس كيغير كمل مرأيت



اور ان ہے اس صرتک لڑوکر ان میں فسادعقت برہ ند رہے اور دین النہ ہی کا ہوجائے (۸ --- ۹ ۳)





وعظ

روايات ِضعيفه الخصيل فضائل

(١٩رشعبان ١٩١٨ه)

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيأت اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله صلى الله تعالى عليه وعلى اله وصحبه اجمعين.

اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم، بسمر الله الرحمن الرحيم.

الوحمن الوحيم. ﴿ لَقَدُ جَاءَ كُمُ رَسُولٌ مِّنُ أَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتَّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُ وُفْ رَّحِيْمٌ ۞﴾ (٩-١٢٨) آج روايات معيفه سے متعلق مِجْهِ كُمْ أَنْ وَاردہ ہے اس مضمون كوجلد از جلد شائع كريں اور زيادہ سے زيادہ واتھوں تک پہنچائيں۔

دین کےوسائط:

ہم تک جودین پہنچا ہے اور انشاء اللہ تا قیامت بیددین محفوظ رہے گا۔ اس کے بارے میں بیسوچنا چاہیے کہ ہم تک اس دین کے وین پنج میں وسالط کیا کیا ہیں؟ تو بتا پہلے گا کہ رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم فیصلہ کرام رضی اللہ تعالی عظیم تک بید میں پہنچایا، آپ صلی اللہ علیہ وسلم کو امت پر بہت شفقت تھی، ہر خیر و برکت کی بات امت تک پہنچا نے میں بہت حریص تھے پھر صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عظیم نے ای جذبہ سے تابعین تک پہنچایا، تابعین نے تیج تابعین تک، پھر انہوں نے آگے، اس طرح سے بیدین تک پہنچایا، تابعین نے تیج تابعین تک، پھر انہوں نے آگے، اس طرح سے بیدین چلا آ رہاہے۔ فور کرنے کی بات یہ ہے کہ جو فضائل احادیث صعیفہ سے ثابت بیس ان کے بارے میں آ خرکوئی قوی روایت کون نہیں متی ؟ پچھے عقل سے کام لیا جائے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وکلی قوی روایت کون نہیں متی ؟ پچھے عقل سے کام لیا جائے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وکلی قوی تھے انہوں نے ان احادیث کو کون نہیں لیا؟

وسائط کی اقسام:

وسائط والی بات یا در کھیں، وسائط علی ہے تو ہم تک دین پہنچا ہے، ان وسائط کی دو قسمیں ہیں:

- 🛈 توی جوقابل اعتاد ہیں۔
- 🕝 ضعف جونا قابل اعتاديس_

جونضائل روایات ضعیفہ سے ثابت ہیں آخران کے بارے میں کوئی قوی روایت کیوں نہیں ملتی ؟ تھوڑی ی عقل سے کام لیس، اُس بات کو بیجھنے کے لئے تھوڑی سی بھی عقل کافی ہے۔

قابل اعتادراد بول نے ایس احادیث کیون نہیں لیں؟:

قابل اعتادرادیوں نے ان روایات کو کیوں نہیں لیا، اس بات کوسوچا جائے! بیتو

خیس کہا جاسکا کہ انھیں فضائل اور عبادات نافلہ کی رغبت نہیں تھی، یہ بھی نہیں کہا جاسکا کہ وہ عبادات نافلہ کی رغبت نہیں تھی، یہ بھی نہیں کہا جاسکا کہ وہ عبادات نافلہ اور فضائل کی خصیل سے عافل ہے، ادھر انہیں توجہ نہیں تھی کہا جاتا چیز دل سے غافل ہوں بھلا وہ دین کے دمائلہ بی کیا ہوئے پھر انہیں تو ی بھی کہا جاتا ہی، کیا معاذ اللہ! وہ سارے نصائل کے حاصل کرنے سے عافل تھے؟ اس طرح تو ان پر بیالزام آتا ہے کہ وہ غافل تھے۔ انہیں بیدخیال نہیں تھا کہ ہم خود بھی زیادہ سے زیادہ فضائل حاصل کریں اور احت تک بھی پہنچائیں، جب اس طرح خور کیا جاتا ہے۔ تو بہ جات تو کسی طرح بھی محقول نہیں کہ ضعیف روایوں کو فضائل کی خارجی محقول نہیں کہ ضعیف روایوں کو فضائل کی زیادہ فکر تھی اور تو میں بھی نہیں تھی، انہیں راجب و شوی کی دیا ہے کہ وہ جاتے ، انہیں راجب و شوی کی دیا ہے۔ انہیں ایک ہو تھی نہیں تھی، انہیں راجب و شوی کی اس بات کو سوچیں۔

- شاید که از جائے زے دل مین مری بات

روایات موضوعه کی علامات:

حضرات محدثین حمیم اللہ تعالی نے روایت کے موضوع ہونے کی کچھ علامات بیان فرمائی میں جن میں ہے اس وقت دوعلامتیں بتا تا ہوں:

تیسری صدی کے بعد شائع ہونے والی روایات۔

🗗 وہ روایات جن میں عمل قلیل پر اجر عظیم کی بشارات ہیں۔

ال موضوع برميرارساله "حديث ضعف برعل كرني مين مفاسد" و يكهي .

ارشادات صيحه بجهم منهين:

قربات کے درجات زیادہ سے زیادہ طے کرنے کے لئے حصول فضائل اور عبادات تا فلہ سے متعلق قرآن مجید اور رسول القصلی الله علیہ وسلم کے ارشادات مجید جو صحیح اور قوی وسا نظ سے جارت جیں، قوی اور قابل اعتاد حضرات سے جم تک پہنچے جیں وہ کہی کم نہیں۔

الله تعالی نے جو فضائل کی چزیں قرآن مجید میں ارشاد فرمائی میں اس طرح رسول الله سلی الله علیہ وسطی الله علیہ وسطی الله علیہ وسلی الله علیہ وسطی الله علیہ وسطی الله علیہ الله الله علیہ وسطی الله الله علیہ الله وسطی الله الله مسلمان سوچنا کہ ان سے مقصد لورانہیں ہوتا چلیں کوئی ضعیف روایت بھی لے لیس، مسلمان سوچنا کہ ان تو کی روایات بھی لے لیس، میتوی روایات بھی لے لیس، میتوی روایات بھی لے لیس، میتوی روایات بھی کے کم ور روایات بھی الله کوئی سے نہیں، جب ان میں کی نہیں تو بھرضعیف روایات کی طرف توجہ کیوں جاتی کوئی کی ہے نہیں، جب ان میں کی نہیں تو بھرضعیف روایات کی طرف توجہ کیوں جاتی ہے؟

ضعيف روايات كى طرف التفات كالمطلب:

جولوگ ضعیف روایات کے سہارے سے فضائل لیتے ہیں، بیفضیلت اور وہ فضیلت، ان کے اس عمل سے یول لگتا ہے گویا کہ وہ توی روایات سے ثابت شدہ الله تعالیٰ کے بیان فرمودہ فضائل کو کانی نہیں ججعتے ، اس لئے تو ادھراُ دھر بھی جماعتے ہیں۔ ایسا لگتا ہے کہ انہیں ان قوی روایات براعتاد نہیں، جے گھر بیٹھے بوری غذاء مل رہی ہو ایسا لگتا ہے کہ اور تالا کرنے کی کیا ضرورت؟ وہ تو اس پر شکر اداء کرے گا۔

آخرت میں سؤال ہوگا:

اللہ کے بندہ! اللہ تعالیٰ کے بتائے ہوئے فضائل ادراللہ کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے بیان فرمودہ وہ فضائل جوروایات تو یہ وصحہ سے ثابت جیں، انہیں کافی کیوں نہیں سیمجھتے؟ کیا آخرت میں اللہ تعالی اوراس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم پوچھیں گے نہیں کہ ہم نے جو چزیں بتائی تھیں اورصحے وقوی رجال ثقات ہے تم تک پنچی تھیں، شمعیں ان پرمبر کیوں نہ آیا؟ فضائل سے متعلق ضعیف ضعیف با بیں نکال کر تمہاری توجان کی طرف کیوں جارہ کھی؟ ذرا ابھی سوچ لیس کہ اس سوال کا کیا جواب ہوگا؟

حضرت حكيم الامة رحمه الله تعالى كالمفوظ:

حضرت تحكيم الامة رحمه الله تعالى كاايك لمغوظ فل كرتا موں ميرے ذہن سے توبيہ بات نکل می تھی لیکن آج ہی آیک مولوی صاحب نے یاد دلائی، ای لئے کہ رہا ہوں کہ ان سب باتوں کوجلداز جلد شائع کریں ،ظن غالب بیہ ہے کہ حضرت حکیم الامۃ رحمہ اللہ تعالی نے بدملفوظ اپن طرف سے نہیں لکھا بلکہ پہلے بڑے بزرگوں کے حوالہ سے لکھا ب كدفضائل كے بارے ميں ضعيف حديثوں برزياده عمل كرنے كى كوشش كرنے ميں کفریر مرنے کا خطرہ ہے، کفر کا خطرہ اس طرح ہوتا ہے کہ بسا اوقات بوتت موت انكشافات ہوتے ہیں، اللہ تعالی اشیاء کے حقائق منکشف فرما دیتے ہیں، کوئی کسی ضعیف حدیث میں کسی عمل پر بہت بزے اجر وثواب کی بشارات پڑھتا سنتار ہا، اس کے مطابق عمل کرتا رہا اور عمر بحر بدعقیدہ ایکا کرتا رہا کہ فلال عمل کا اتنا تواب، اتنا تواب، اتنا ثواب کچرم نے وقت حقیقت منکشف ہوئی کہ رعقبہ و محیح نہیں تھااس عمل میں اتنا تُوابِنہیں یا پچر بھی نہیں تو شیطان اسے قرآن، احادیث اور پورے اسلام کے بارے میں بہکائے گا کہ بہ ہے تیرااسلام،ساری زندگی عمریں لگا لگا کر مشقتیں اٹھا اٹھا کر گزار دی بہاں تو نزانہ ہی خالی ہے کچو بھی نہیں، جیسے اس ایک بات میں تیرا عقیده غلط نکلاتو عربجر سجمتار ما که کوشمیاں بعری پڑی ہیں محریباں تو خزانہ بالکل خالی ہے، کچوبھی نہیں، ایسے ہی اسلام کےسب وعدے، بشارتیں اور سارے احکام غلط ہیں، سارے کا سارا اسلام ایسائی ہے، نتیجہ یہ کہ کفر برمرے گا۔

شیطان تو آخری وقت میں ایر ی چوٹی کا زور لگا دیتا ہے کہ بیر میرے پنج سے بچا جار ہا ہے، جہنم سے لکلا جار ہا ہے، وہ اپنا پورا زور صرف کر دیتا ہے، اللہ تعالی اپنی حفاظت میں رکھیں۔ ایک دعاء ہے:

﴿ رضينا بالله ربا وبالاسلام دينا و بمحمد صلى الله

عليه وسلم نبيا)

اے اللہ! ہم تھو کورب مان کر راضی ہیں، جو احکام اور جو فضائل تو نے جس طریقہ سے قرآن مجید میں ارشاد فرما دیہے، ہم اس پر راضی ہیں، اسے چھوڑ کر کسی اور کی ضرورت نہیں۔

وبالاسلام دينا)

یا اللہ! اسلام میں جو جواحکام پختہ طریقے سے ہم تک پہنچ ہم ان پر راضی جیں ہمیں نئ نئی چیزوں کی ضرورت نہیں، کھود کر ید کر کر کے، ادھرادھرمنہ مارنے کی ہمیں ضرورت نہیں، یہ پختہ احکام ہمارے لئے کانی ہیں۔

﴿ وبمحمد صلى الله عليه وسلم نبيا ﴾

یا اللہ! محمصلی اللہ علیہ وسلم کو نبی مان کر ہم راضی ہیں۔ان کی جو جو با تیں صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہ منے پھر ان سے رجال ثقات نے، قو می اور قابل اعتماد لوگوں نے آگے است تک پہنچائیں، ہم ان پر نہ صرف راضی ہیں بلکہ وہ ہمارے لئے کافی ہیں، ہمیں اور کسی چیز کی کوئی ضرورت نہیں۔

عبادات نافلہ سے جی چرانے والے وی کیسے ہوسکتے ہیں؟

ایک اہم بات مزید ذہن نشین کرلیں جو دسائط توی تھے، معتبر تھے، ہر لحاظ سے
امت میں مسلم تھے اگر ان کا حال یہ تھا کہ وہ فضائل سے کتر اتے تھے اس لئے انہوں
نے بید فضائل بیان ٹہیں کئے، خافل تھے، ڈرتے تھے، عبادت کرنے سے جی چراتے
تھے تو چھریہ حضرات قابل اعتاد کہاں رہے؟ جو فضائل حاصل کرنے سے ڈرے،
عبادات تافلہ سے جی چائے وہ قابل اعتاد کیے رہا؟ سوجب بیدوسائط بی قابل اعتاد
ندر ہے تو ان سے جتنا دین ہم تک پنچا دہ سارا مخدوث ہوجائے گا، ذرا سوچیس کہ اس
در سی کا حشر کیا ہوگا؟

اللہ تعالیٰ ہم سب کواٹی مرضی کے مطابق بنالیں، خرافات سے بچائیں، گھڑ گھڑ کر جو فضائل لوگوں نے بنا رکھے ہیں اس کی بجائے اللہ تعالیٰ صحیح معنیٰ ہیں اپنی اور اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کے اتباع اور اپنی اور اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت عطاء فرمائیں۔

منگھوت فضائل رعمل كرنے والوں كامقصد:

جولوگ ایسے فضائل پر چلتے ہیں ان کا مقصد الله کو اور خود کو دھوکا دیتا ہے، یہ مضمون تو اکثر بیان ہوتا ہو ہی صفحون تو اکثر بیان ہوتا ہو ہی حائے۔

بیلوگ ایسے کیوں کرتے ہیں کہ فلال رات میں ایسے ایسے کرو، فلال دن میں السے ایسے کرو، فلال دن میں السے ایسے کرو، فلال دن میں السے ایسے کرو، پہلے بھی کی باراس کی حقیقت بتا چکا ہوں، ان کے دواہم مقاصد ہیں:

1 ایک تو اللہ کو دھوکا دینا مقصود ہے، اللہ کو دھوکا ایسے دیتے ہیں کہ گناہ چھوڑتے ہیں پھر خبیں، نافر مانی چھوڑتے ہیں پھر جب اللہ پوچھے گا نالائق! تو میری نافر مانی کرتا رہا، تو وہ کہ گا کہ میں نے فلال رات میں است زائے نوافل پڑھ لئے تھے، فلال وقت میں فلال عمل کرلیا تھا، اس طرح یہ میں است نوافل پڑھ لئے تھے، فلال وقت میں فلال عمل کرلیا تھا، اس طرح یہ لوگ اللہ تعالی کو دھوکا دینا چاہے ہیں، بیا ایسے نالائق ہیں جھتے ہیں کہ ہم اللہ کو دھوکا دینا چاہے کہ کم میں گاتو ہم کمیں دے سکت ہیں، اللہ تعالی پوچھیں کے کہ تم نے ہماری عبادت کیوں نہیں کی تو ہم کمیں کے تی بہ ہم سے تا ہم کہیں گاتو ہم کمیں کے تی بہ سے تو کی ہے، الفرض نافر مانی نہیں چھوڑتے۔

ورسری بات بیہ کربیائے نفس کود موکا دے رہے ہیں یا بول کہیں کفس سے دھوکا کھا رہے ہیں یا بول کہیں کفس سے دھوکا کھا رہے ہیں، وہ اس طرح کراللہ کی نافر مائی نہیں چھوڑتے، اللہ کی بخاوت نہ چھوڑتے ہیں اور نہ ہی چھوڑنے کا ارادہ ہے، اس پر بیر مؤال پیدا ہوتا ہے کہ تم نے اپنا نام تو رکھ دیا "عبداللہ" کہلاتے ہو مسلمان، فارموں ہیں نہ ب کے خانے ہیں

"مسلمان" كليمة بير ليكن كام تو مسلمانوں بيسے بين نبيس، تو تو الله كا باغى ب، عبدالله كبال ہے، تو تو "عدو الله" ہے "عدو الله" يعنی الله كا وشن، الله كا بنده كبال ہے، بس اس الزام سے بيخ ہے لئے ذرااو پر سے ليپاو تی كرتے ہيں، اگر اپنا بى ذہن سؤال كرے كہ تو مسلمان كبال ہے؟ تو يہ جواب دين نبيس نبيس! بم في قلال رات بورى جاگ كر گذارى ہے، و كيمية بم مسلمان ہيں جبي تو فضاكل والى فلال رات عبادت ميں گذارى ہے۔ فارم كے خانہ ميں جو لكھا ہے مسلمان تو اگر كوئى ہو جھے كبال عبادت ميں گذارى ہے ان لوگول كا ہے تو مسلمان؟ تو بتاكيں گے و كيمية بم ايسے ايسے كام تو كرتے ہيں، بيہ ہان لوگول كا اصل مقصد، الله تعالى عظاء فر اكبير قورى مى عقل بھى بل جائے تو كام بن جائے۔

برغم خوليش اولياء الله:

استحضار کے لئے وہ قصہ پھر بیان کردوں کہ ایک شخص کا فون آیا کہدرہا تھا کہ فلاں مجد کے اہام صاحب نے ڈاڑھی منڈ انے والے کو فائن کہددیا، فائن، مجھ سے شکایت کردہا تھا، مقصد اس شکایت سے یہ تھا کہ میں اہام صاحب کو ڈاٹوں گا، سمجھاؤں گا کہ ایسا کیوں کہا؟ استے بڑے ولی اللہ کو فائن کیوں کہددیا؟ وہ شخص یہ بھی بتارہا تھا کہ ہم دین میں بہت آ کے ہیں، ہمادا پورا خاندان بہت او پی وٹی پرواز پر ہے، تجد بڑھے ہیں، اشراق پڑھتے ہیں، جج اور عمرے بھی بہت کرتے ہیں، صدقات و خیرات بھی بہت کرتے ہیں، صدقات وخیرات بھی بہت کرتے ہیں، صدقات مولانا صاحب نے ہمددیا کہ فائن ہیں فائن، مصاحب کون ہیں یہ یہ ہوا کہ اس زمانے میں الی سمجے با تمیں بتانے والے مولانا صاحب کون ہیں یہ یہ تو قابل زیارت ہیں اس لئے میں نے پوچھا کہوہ مولانا صاحب کون ہیں، تو بتایا کہوہ آپ کے پائن آتے دہتے ہیں، جب انہوں نے یہ بات بتائی تو اس کہوں نے یہ بات بتائی

کوئی تعجب نہیں، جو یہال نہ آئے اور پھر ڈاڑھی منڈوں کو فاس کے، ایسے لوگ قابل زیارت ہیں، تعجب تو ان برہے۔

محض اوراد و وظا كف عذاب سے نہيں بچا سکتے:

ایک اور تازہ واقعہ ن کیجئے! ایک دودن کی بات ہے،کسی نے فون پر بتایا کہ میں نے ایک سؤال کھا،اس میں ریکھھا:

''آج مسلمانوں کا دستور ہوگیا ہے کہ آخرت و دنیا کی مصیبتوں ہے بیچنے کے لئے اللہ کی نافرمانی نہیں چھوڑتے ، نافرمانی کرتے رہتے ہیں اور ساتھ ہی الیک الیک حرکات بھی کرتے رہتے ہیں لیتن فلال ختم کروالو، بید ختم کروالو، وہ ختم کروالو، درود شریف کا ختم کروالو، لیسین کا ختم کروالو، الدخش نافرمانی نہیں چھوڑتے۔''

انہوں نے بتایا کہ میں نے بیسوال لکھ کر دارالعلوم و یو بند، دارالعلوم کورگی، مولانا یوسف صاحب لدھیانوی اور بھی کئی بڑے بڑے اداروں میں بھیجا، سب نے بیلکھ دیا کہ بید بہت مخت غلطی ہے، ایسا کرنے سے اللہ کے غذاب سے نہیں فئے کئے، ہر جگہ سے ایسا ہی جواب آیا، جھیے میں نے ان کی یہ بات می فوراً انٹرکام سے دفتر میں بتایا کہ لکھوان بشارت عظمیٰ ہے کہا مراد کہ لکھوان بشارت عظمیٰ سے کہا مراد ہے۔ پھر میں جب دفتر میں آیا تو سب کو بتایا۔

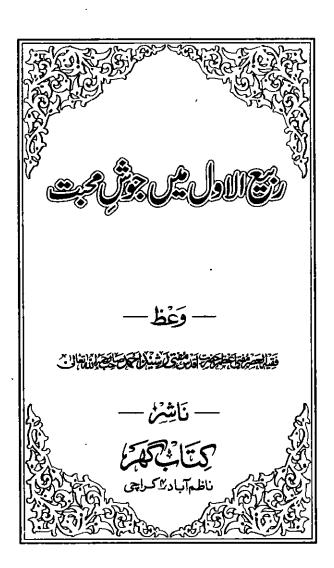
میں نے ان صاحب سے یہ بھی کہا کہ آپ یہ سارے پر پچ یہاں لے آئیں ہم انہیں مرتب کر کے کتابی صورت میں شائع کریں گے، آپ حضرات کے لئے بھی ہے ''بشارت عظمٰی'' ہے۔

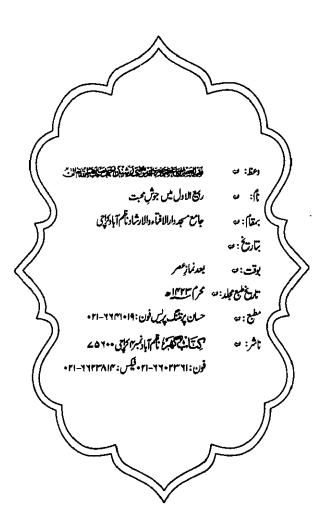
لوگ میرے بارے میں کہتے رہتے ہیں کہ ایس ایس باتیں بد کہتا ہے اور تو کوئی است کم بات کہتا نہیں، بس اب تو ان اعتراض کرنے والوں کا جواب ہوگیا، سب

حضرات نے لکھ کر فیصلہ وے دیا ہے۔ اللہ تعالی ہم سب کو اپنی مرضی کے مطابق بناكيس اور اين اور اين حبيب صلى الله عليه وسم كا كامل اتباع و سحى محبت عطاء فرمائیں۔

وصل اللهم وبارك وسلم على عبدك ورسولك محمد وعلى اله وصحبه اجمعين. والحمد لله رب العلمين.







وعظ

ربيع الاول ميں جوشِ محبت

(رتيع الأول ٢٠٠١<u>١ه</u>)

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيأت اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله، صلى الله تعالى عليه وعلى اله وصحبه اجمعين.

اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم، بسمر الله الوحمن الوحيم.

﴿ يَا اَيُّهُا النَّبِيُّ اِنَّا اَرْسَلُناكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَدِيْرًا ۞ وَيَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَدَاعِيًا اللهِ بِاذْنِهِ وَسِرَاجًا مِّنِيْرًا ۞ وَيَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِأَنَّ لَهُمُ مِّنَ اللهِ فَضُلاً كَبِيْرًا ۞ وَلَا تُطِعِ الْكُفِرِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَدَعُ اَذْنَهُمْ وَتَوَكُّلُ عَلَى اللهِ وَكَفَى بِاللهِ وَكَفَى بِاللهِ وَكَفَى بِاللهِ وَكِفْلَ عَلَى اللهِ وَكَفَى بِاللهِ وَكِفْلَ عَلَى اللهِ وَكَفَى بِاللهِ وَكِفْلَ عَلَى اللهِ وَكَفَى اللهِ وَكَفَى اللهِ

﴿إِنَّاۤ ٱرْسَلُنْكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّندِيْرًا ۞ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعَرِّرُوهُ وَتُوفِّرُوهُ * وَتُسَبِّحُوهُ بُحُرَةٌ وَآصِبُلاً ۞ إِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَ اللَّهَ * يَدُاللَّهِ فَوْقَ ٱيْدِيْهِمْ * فَمَنْ نَكَتَ فَإِنَّمَا يَنْكُتُ عَلَى نَفْسِهِ * وَمَنْ ٱوْفَى بِمَا عَهَدَ عَلَى نَفْسِهِ * وَمَنْ ٱوْفَى بِمَا عَهَدَ عَلَيْهُ اللَّهُ فَسَيْوُتِيْهِ آجُرًا عَظِيْمًا ۞ ﴿ ١٠٤ - ١٠١٠)

آج ربی الاول کے بارے میں کی کھے کہنا چاہتا ہوں القد تعالیٰ اپنی رضا کے مطابق کہنے کی توفیق عطاء فرما کیں اوراس کے مطابق عمل کرنے کی توفیق عطاء فرما کیں۔ سب سے پہلی بات رہے کے محسن اعظم صلی اللہ علیہ وسم کی ولادت اور وفات سستاری میں ہوئی؟

تاریخ ولادت میں غلط نبی:

یہ بات جوزبان زدعوام وخواص ہوگئ ہے کہ ۱۱ روئیج الاول تاریخ ولادت اور ۱۱ رکیج الاول ہی تاریخ ولادت اور ۱۱ رکیج الاول ہی تاریخ وفات ہے، یہ بالکل غلط ہے، تجب کی بات یہ ہے کہ ترقی کے اس زمانے ملا تا ہے جس میں ایٹم کو بھی تقسیم کر کے آھے اس کی تقسیم در استانے مونا سا تقسیم ہورہی ہے، پرونان اور پھر اس کے وار کس بھی نکال ڈالے، مگر اتنا مونا سا حساب لوگوں کی سجھ میں نہیں آ رہا، اس سے معلوم ہوا کہ اصل تاریخ جو بھلوادی گئی اس میں بھی الند تعالیٰ کی حکمت پوشیدہ ہے، ورند اتنا ترقی یافتہ دماغ جو زہرہ اور چاند پر میں بھی الند تعالیٰ کی حکمت پوشیدہ ہے، ورند اتنا ترقی یافتہ دماغ جو زہرہ اور چاند پر مکندیں ڈال رہا ہے، چاند اور سورج کی حرکتوں کو ماپ رہا ہے، منٹوں سیکنڈ وں اور اعشاریہ دراعشاریہ کا حماب لگانے والا یہاں آ کر کیسے مات کھا گیا، آپ نے دیکھا اعشاریہ دراعشاریہ کی جو جنتریاں شائع ہوتی ہیں کہ مثل کی جنوری کو رکھ الاول کی اتن اسال کی جنتریاں پہلے ہی تیار کر کے شائع کی ایک تاریک کے جنتریاں پہلے ہی تیار کر کے شائع کی ۔ یہ جنریاں پہلے ہی تیار کر کے شائع کی ۔ یہ جن بی، ایک سال کیا سینکڑوں سالوں کی جنتریاں پہلے سے ہی شائع کی ایک ۔ یہ جنوری کو رکھ جن بیں مائع کی ۔ یہ جن بی، ایک سال کیا سینکڑوں سالوں کی جنتریاں پہلے سے ہی شائع کی ۔ یہ جن بی، ایک سال کیا سینکڑوں سالوں کی جنتریاں پہلے سے ہی شائع کی ۔ یہ جن بی، ایک سال کیا سینکڑوں سالوں کی جنتریاں پہلے سے ہی شائع کی ۔ یہ جن بی، ایک سال کیا سینکڑوں سالوں کی جنتریاں پہلے سے ہی شائع

ہورہی ہیں چرآب سالہاسال سے و کھورے ہیں کہ جاند د کھو کر فیصلہ کرنے اور ان. حسانی فیصلوں میں کوئی فرق نہیں ہوتا جھی فرق ہوا بھی تو صرف ایک دن کا ،تو کیا ان لوگوں پر کوئی وی نازل ہوتی ہے، کچھ نہیں میرکوئی گہری بات نہیں صرف اتن ی بات ہے کہ متنی اور قمری سال کی آپس میں نسبت دیکھ کران کا حساب نکال کر ان کو آپس میں مطابقت دی بس متجہ سامنے آگیا، پوری دنیا کے حسابات ای طرح چل رہے ہیں، پورب اور لندن وغیرہ کی شاہی رصدگاہوں سے اس پر کما ہیں بھی شائع ہورہی ہیں، ان حسابات کی رو ہے بھی ولادت اور وفات کی بیتاریخ کمی صورت میں نہیں بنتی بلکہ یننے کا کوئی امکان بی نہیں، اگر کوئی محاسب اس تاریخ کوحساب سے ثابت کرے تو ذراجمیں بھی بتادے کہ کیے حساب نگایا ہے؟ بے شار کما بیں اس موضوع برلکھی کئیں گرسارے کےسارے محققین اس نقطے بیشفق ہیں کہ بیتاریخ پیم ولادت قرار یاتی ب نه ای موم وفات ، بد بالکل بدیمی اور واضح غلطی ب، و میحت آج بروز جمعه ۲۲ راجع الاول ہے اور ۱۳۰۰ دیمبر، سواگر کوئی کہے کہ ۳۱۱ دیمبر ہوگی پیر کے دن تو سب اس کو بیوقوف کہیں مے یانیں؟ یہ ہو کیے سکتا ہے کہ ۳۰ رتو جمعہ کے دن ہواور ۱۳۱ بجائے ہفتے کے بیرکوآ جائے! مگر دوالک رٹ لگائے جارہاہے کہ اسار دمبر ہوگی بیر کے دن، ۳۱رد مبر ہوگی پیر کے دن۔

اگر پیچیاوٹ کر گزشتہ چودہ سوسال کا حساب نگانا مشکل کام ہوتو چلئے بالکل مخضر سا حساب بتا تا ہوں اس پر پوری دنیا کا اجماع ہے کدرسول الله صلی الله علیہ وسلم کا آخری فی جمعہ کے دن ۹ مرذی الحجہ کو ہوا سوال سے ۱۳۳ سال پہلے کا حساب کر لیا جائے تو پیر کے دن تا اربیج الاول کی صورت نہیں بتی بلکہ اس کے قریب تجمی نہیں بتی صحیح حساب اگر بنما ہے تو پہلی تاریخ کا یا دوسری کا یا آ شویں یا نویں کا ، اس لئے کہ ربیج الاول کا مہیداور پیرکا دن مید دوبا تیس تو مسلم ہیں اور ان دونوں کا اجتماع ۱۲ رتاریخ کے کسی صورت ممکن نہیں ، البتہ نہ کورہ تاریخوں میں سے کوئی می تاریخ لے کی جائے تو

حساب بن جاتا ہے، علامہ مغلطائی رحمہ اللہ تعالیٰ نے اربیج الاول قرار دی ہے گر حضرت ابن عباس وجبیر بن مطعم رضی اللہ تعالی عنہم سے ۸ربیج الاول مأثور ہے اور اکثر محدثین ومؤرضین کا بھی مختارے۔

تاریخ وفات میں غلط نہی:

اب لیجئے وفات کا حساب، سو میتواس ہے بھی زیادہ آسمان ہے، ولادت میں تو ۱۳ سال پیچیے جانا پڑتا ہے اس میں صرف ۳ مہینے کا حساب ہے اور بالکل بدیمی ہے جے عامی ساخخص بھی آسانی ہے نکال لے ذی الحجہ کی نویں تاریخ جمعہ کے دن تھی اس ك بعد آبي صلى الله عليه وسلم كي وفات تك صرف ٣ جاند بنت جي محرم، صفر رئي الاول، ان کا حساب بالکل ان بڑھ سے ان بڑھ خض بھی نکال سکتا ہے، تیوں جا ند ۲۹ کے لگالیں تو پیر کے دن۱۲ رئیج الاول نہیں بنتی، تیوں جا ند ۳۰ کے لگالیں تونہیں بنتی، دو۳۰ کے لگالیں ایک ۲۹ کا لگائیں تو نہیں بنتی، دو ۲۹ کے لگائیں ایک ۳۰ کا لگائیں تو پیرکو۱۲ ر بنی الاول نہیں بنی ، اگر پیر کو ۱۱ بنی ہے تو اس طرح بنی ہے کہ دو میا ند لگالیس ۳۰ کے اور ایک نگائیں ۳۱ کا،سو آپ ہی بتائیں جھلا ۳۱ کا مجھی جاند ہوا ہے؟ اولا تو ۳ جاند مسلسل ٣٠ كے بول بيجى ذرامشكل بي تكر پھر بھى ممكن بيے بھى ابيا ہوجا تا ہے تكر ٣١ كا جاند كسيم مانير؟ اس سے ثابت ہواكہ وفات كى تاريخ جو ١٢ رئيج الاول مانى جاتى ہے رہی بالکل غلط ہاس کا بھی کوئی امکان نہیں۔ پھر حقیقت کیا ہے؟ صحیح احادیث اور منج تواریخ ہے اتنا جابت ہے کہ رسول الله صلی الله علیه وسلم کی وفات ابتداء رئیج الاول میں ہوئی اور میر کے دن ہوئی سشی اور قمری سالوں کو اگر تطبق دیجاتی ہے یا اس طرح ٣ جاندوں كا حساب لگايا جاتا ہے تو رئيج الاول كى ابتداء ميں پير كے دن جو تاریخیں تھیج ہوسکتی ہیں ان میں ہے اکثر نے ارائے الاول کواختیار کیا ہے، حافظ ابن تجر رحمه الله تعالى فرمات بين كه كتب تاريخ مين دراصل يون لكها تها: "ثانبي شهو دبيع الاول. "شهرميني كو كهتے بيں يعنى ماہ رئيج الاول كى دوتارتى ، تمر بعد ميں كى ناقل سے لكھنے يا پڑھنے ميں غلطى ہوئى اس نے اس كو پڑھ ليا: "ثانى عشو دبيع الاول." خانى عشر كتب بين اكو، اصل لفظ تھا شہرا سے عشر پڑھ ليا كيا اس طرح ٢ كا ١٢ بن كيا اور يا يكل باطل ہے، يا لكل باطل ہے، يا لكل باطل ہے، اسكى تفصيل احسن الفتاوي جلده "سائل شتى" ميں ہے۔

میلاد کی حقیقت:

دوسری بات بد ہے کہ صحابہ کرام رضی القد تعالیٰ عنہم کے دور میں بیر عید میلا دالنبی نہیں تھی اوراس طریقے سے جلے جلوس نہیں تکالے جائے تھے، ایصال تواب کے نام سے دموتیں نہیں ادائی جاتی تھے، ایصال تواب بھی اچھا تکالا ہے، ایصال تواب بھی چیز اور تواب ہے معنی ہیں اچھی چیز لیمنی لڈو پہنچا وی مسلمان کا ایصال تواب سارا کرکرا کے بدرہ گیا کہ لیر دیکھیں چڑھا وی تورے پید میں اتارو، مغیال اڑا وی پھیل چڑھا وی بھا تا اللہ! کیا کہ اس وقت کی ہوتلیں چڑھا وی بھان اللہ! کیا کہ باللہ! تو ہی اس قوم کو ہدایت دے، اللہ کے بندے کی سے کہنا اس ایصال تواب کا بیاللہ! تو ہی اس قوم کو ہدایت دے، اللہ کے بندے کی سے خود بی کھا وی بیال تواب کا سے طریقہ کہ خصر یہ کہا ہوتا کہ ایصال تواب کا بیطریقہ کہ خود بی کھاؤ ور ایسال تواب کا بیاللہ اواب نہیں شکم پرتی ہے۔ آج اس موضوع کو نہیں خود بی کھاؤ در ایصال تواب کا میرا وعظ" بدعات مروج" اور" مرض وموت" پڑھ

صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم کے دور بیں اگر عید میلا دائی طرح منائی جاتی تھی تو سوچنے پھر کیا اس کی تاریخ کے بعول جانے کا کوئی امکان تھا؟ ظاہر ہے کہ کوئی امکان نہ تھا، فرض سیجئے آج کوئی ولی اللہ صاحب کرامیت بزرگ اپنی کرامت سے پیش کوئی کردے کہ ۵ سال بعد بلکہ ۵ چیوڑ کر ۵۰ یا ۱۰۰ سال بعد لوگ اس منگھوست تاریخ ولادت لینی ۱۲ ریج الاول کو بھول جائیں کے تو کیا اس کی اس بیش گوئی کو سیجھ سمجھا جائے گا؟ اس ير مرفحف يبي كم كاك مامكن ب، تاريخ بعولنے كاكوئي سؤال بي نہيں پیدا ہوتا، آخرید کیے ہوسکتا ہے؟ جبکہ بوری دنیا بیدون مناری ہے ہرشریس، برمحلے میں ، گلی کو چوں میں اتنے ہنگاہے، اتنے شور، ریڈ بواور ٹی وی پروگرام الگ جن میں گانے والے مردوں ہے زیادہ گانے والی عورتیں رات دن گا گا کر سناری ہیں، آخریہ ہو کیسے سکتا ہے کہ بیتاریخ آیندہ بھلادی جائے؟ دنیا ہے اوجھل ہوجائے؟ کوئی عقل مندید بات باور کرنے کو تیار نہ ہوگا۔ سوچنے کہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنبم کے دور میں بھی صورت حال اگر یمی ہوتی ای کیفیت سے جلنے جلوی، وعوتیں ہوتیں میلاد يره على جات توية تاريخ كوئى بحول كيب سكنا تها؟ إصل تاريخ مين تحريف كيب بوق اخلاف کیسے برتا؟ اتن بات تو یقیی ہے کہ بہتاریخ اصل تاریخ نہیں اس میں تحریف ہوچکی ہے لہذا نابت ہوگیا کہ بہ سارے ہنگامے جو آج ہورہے ہیں صحابہ کرام رضی الله تعالی عنهم کے دور میں نہ تھے، اس وقت ان کا کوئی اتا یتا نہ تھا یہ ساری خرافات بہت بعد کی پیدادار ہیں، اصل تاریخ کا بھول جانا اس کی داضح دلیل ہے، اس سے یز ھاکر کوئی دلیل نہیں : وعلق ، به دویا تیں ہوگئیں۔

أيك سؤال:

تیسری بات میر ہے کہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم میہ تاریخ کیوں بھول گئے،
جب میہ ثابت ہو چکا کہ ۱۱ اصل تاریخ نہیں اور اصل تاریخ ولادت صرف دو صحابہ ہے۔
منقول ہے اور تاریخ وفات کسی ایک ہے بھی نہیں، صحابہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم اس سے
کیسے عافل رہے؟ انہوں نے اس بات کو کیسے نظر انداز کردیا سوچنے! ذراغور کیجے! کیا
صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے دلول میں رسول اللہ صلی اللہ عدیہ وسلم کے ساتھ محبت
میں کوئی کی تھی؟ بیتو کوئی نہیں کہ سکتا بلکہ حضرات صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کی محبت

کے بارے میں بلاتر دو دہوں کے ساتھ کہا جاستنا ہے کہ جب سے دنیا پیدا ہوئی اس وقت سے لے کر جب تک دنیا باتی رہے گی پوری تاریخ میں محبت کی ایی نظیر نہیں پیٹی کی جاستی معابیہ کرام رضی اللہ تعالیہ تعالیہ وسلم کے ساتھ جتنی محبت بھی بیٹی کی جاستی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ جتنی محبت بھی بیٹی کی ہے نہ آبیدہ کہی پیٹی کرعتی ہے، دنیا بیس کی کوکی کے ساتھ اتی محبت ہوئی نہیں سکتی ممکن ہی نہیں اپنی جانیں، اولاد، اپنے اموال، اپنی حجازتیں اور وطن غرض سب کچھ جو ان معرات کے بس میں تھ آپ سلی اللہ علیہ دائی ہوریا ہی ان جسمال قربانیوں سامنے اور فی کی بات تھی، یہ سے کھی کر گرز نے کے باوجودا بی ان بے مثال قربانیوں سامنے اور فی میں نادوں۔ سے بیجی ندو سے جھی سادوں۔ سے بیجی ندو سے جھی سادوں۔ سے بیجی کو کھی ایک میں اللہ علیہ وسلم میں اللہ علیہ وسلم کی مثال آ

حضرت انس رضی اللہ تعالی عند نے ایک بار دیکھا کے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کھانا تناول فرما رہے ہیں، سالن میں گوشت اور نوکی کے فکڑے ہیں، دونوں کا ملا ہوا سالن ہے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم کھانے کے دوران پیالے میں لوگی کے فکڑے تلاش کر کر کے تناول فرما رہے ہیں، حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عند فرماتے ہیں کہ اس روز سے مجھلوکی سے مجبت ہوگئی (ابوداود)

کہنے میں بیرتو آسان ی بات ہے گراس پر ذراغور بیجے اینیس فرماتے کہ اس دوز سے میں نے لوک کھانا شروع کردی، بلکہ فرماتے ہیں کہ لوک کے ساتھ محبت ہوگی، کھانے کی چیز کاکمی کو مرغوب ہونا، پند ہونا بیا کیے طبعی چیز ہے، دل کا ذوق ہے جو دوسرے کے کھانے سے یا پند کرنے سے بدل نہیں سکنا گرصحافی رسول صلی الندعلیہ وہلم کا ذوق بدل گیا اندر کی کیفیت تبدیل ہوگی، کیا دنیا محبت کی الی انوکھی مثال چیش کرستی ہے کہ کوئی محب اپنے محبوب کو ایک چیز صرف کھاتے ہوئے ویکے لے اور اس
کے اندر کا طبعی ذوق بدل جائے؟ مجھی نہیں، گر حضرت انس رضی التہ تعالی عند فرماتے
جی کہ میں نے محبوب صلی اللہ علیہ وسلم کو لوگ تناول فرماتے ویکھا بس ای وقت سے
لوگ مجھے مرغوب ہوگئی، محبوب کی اداد کی کر اندر کی کیفیت فوراً بدل گئی، دل کے اندر ہی
اندر انقلاب بریا ہوگیا، ذرا سوچنے! بہکتنا بڑا انقلاب ہے؟

دوسری مثال:

حضرت معاویة بن قره رضی الله تق الی عنبها ت روایت ہے که ان کے والد نے ایک بار رسول الله صلی الله علیه وسلم کوال علی بار رسول الله علیه وسلم کوال علی و یعا کہ آپ صلی الله علیه وسلم کے حکم بیان مبارک کے بین کھلے ہوئے تھے، یہ ذہب سر حضرت معاویہ اور آپ کے صاحبزاد کو بیاداایس پیشد آئی کہ ونول نے عرجر اپنا گریبان کھلا رکھا، بھی بیش بند کے بی نمیس (ایوداور)

حالانکہ یہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی عادت شریفہ نہ تھی، اس وقت القال سے عمر یبان مبادک کھلا ہوا تھا گرانہوں نے خاص نظر جو تجوب سلی اللہ علیہ وسلم پر ڈالی تو نظر پڑتے ہی بین خاص کیفیت الی پسند آئی کہ مرتے دم تک اسے نہ چھوڑا عمر بحر بیش نہیں لگا ہے۔

تىسرى مثال:

حضرت ابوعد وره رضی اللہ تعالی عندا بھی بیجے سے مسلمان بھی نہیں ہوئے سے، ایک بار رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم باہر نظاتو ، یکھا کہ کفار کے چند بیچ کھڑے ہوکر مسلمانوں کی اذان کی نقل الاررہ بیں، بچوں کا کیا ان کو تو ایک تھیل ہاتھ آگیا، اللہ تعالی جب سمی کی ہدایت کا سامان فرماتے ہیں نوا پی طرف تھینج لیلتے ہیں، ہدایت کے اسباب پیدا فرمادیتے ہیں، دیکھتے! ان کی ہدایت کا کیا سامان مور ہاہے کہ نقل التارتے موے رسول الله صلى الله عليه وسلم في و كيوليا، فيج تو اور بعى بهت عظمر رسول الله صلى الله عليه وسلم نے ان کوطلب فرمایا اور ارشا د فرمایا: کیسے اذان دے رہے تھے ذرا سٰاؤ! انہوں نے اوان شروع کی، الله اکبرتو بلندا وازے جار بار کبددیاس لئے کدالله تعالی ک کریائی کے قائل تو کفار بھی تھے،لیکن اس کے بعد جب شہادت کی بات آئی توحید ورسالت کی شہادت ، تو ڈر گئے کہ برکلمات کیسے کہوں؟ کہیں اعزہ وا قارب نے و کھولیا یا آ وازین کی تو یٹائی ہوجائے گی، اس لئے شہادتین کے کلمات کہدتو دیے تکر بالکل آ بسته، وصبى آواز ، رسول الله صلى الله عليه وسلم في ابناوست مبارك ان كرسر ير رکھا اور فرمایا بلند آ واز ہے کہو، بس آپ صلی الله علیہ وسلم کا دست مبارک رکھنا تھا کہ ایمان کی دولت سے مالا مال ہو مئے اور بلند آ واز سے سر کلمات پھر دھرائے ،ان کاعشق و كھے انہوں نے كيا كيا؟ ايك توبيك اگرچداؤان كي حقيقت يكي ہے كہ اشهدان لا اله الا الله اور اشهدان محمدا رسول الله دو دوبار کے جائی اور شروع عی ہے بلندآ واز ہے کیے جائیں ممرانہوں نے رسوچ کر کہ میرے محبوب صلی اللہ علیہ دہلم کے ساتھ میرا کیا معاملہ ہوا تھا کہ پہلے ریکلمات آ ہستہ آ واز ہے کیے ہے مجر بلند آواز ہے دہرائے، بس عر بحر بمی معمول جاری رکھا، جب بھی اذان وسیتے سملے شہادتین ولی آواز سے محمر بلندآ واز سے۔(ابوداؤد، نسائی)

ایک کام تو بر کیا اور دوسرا کام بر کیا، ذرا دلول پر ہاتھ دکھ کر بیر بات سنے کدرسول الله صلی الله علیہ وسلی کا ہاتھ پھر گیا، بیتی ان حقرات کی محبت کہ جن بالول پر آپ صلی الله علیہ وسلم کا ایک بار ہاتھ پھر گیا عمر مجران بالول کی حفاظت کی اور آج عشق رسول صلی الله علیہ وسلم کا حرق آپ کی مبارک صورت اختیار کرنے کو تیار نیس، چہرے پر دوز اٹھ کر بچاوڑا چلاتا ہے، ذرا مبارک صورت اختیار الله الله علیہ وسلم کا حرکم کی مبارک صورت اختیار کرنے کو تیار نیس، چہرے پر دوز اٹھ کر بچاوڑا چلاتا ہے، ذرا

صورت مبارکہ سے محبت ہوجائے اور ایس محبت ہوجائے کد ساری دنیا طعن کرتی رہے خداق اڑاتی رہے مگر میکسی کی پروا نہ کرے، میہ بات تو درمیان میں آگئی محبت کے واقعات بھر مجمی سناول گاان شاءاللہ تعالی۔

یہ واقعات بھی اس لئے بتائے کہ محابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم جو ولادت و دفات کی تاریخ بھول کے تو کیا اس کا سبب ان کی مجبت میں کی تھا؟ ہرگز نہیں، یہ بات تو کوئی سوچ بھی نہیں سکا، پھر دوسری وجہ کیا ہو کتی ہے؟ کیا حافظے ان کے کزور تھے؟ آج تو لوگوں کو یہ بھی یاد نہیں رہتا کہ فجر کی نماز میں کون می سورت پڑھی گئی، امام کوئی یاد نویس رہتا دوسروں کی کیا بات، فجر کی بات تو دور رہی ابھی مغرب کے بعد نوافل سے یاد نہیں رہتا دوسرے نے درا ہو چھ لیس کہ کوئ کی رکعت میں کیا پڑھا گیا؟ شاید کی فارخ ہوکرا کیک دوسرے سے ذرا ہو چھ لیس کہ کوئ کی رکعت میں کیا پڑھا گیا؟ شاید کس کو یاد نہیں ہوگا، بال آگر مسلمان سے یہ ہو چھا جائے کہ فلال میلاد میں کیا ہوا تھا کوئ کوئ سے کھانے سے جھوائے۔

صحابہ کرام رضی اللّٰدتعالیٰ عنہم کے حافیظے محابہ کرام رضی اللّٰہ تعالیٰ عنم کے حافظے کزورنہیں ہے بحثق ومبت کی ماندان

كے حافظے ان كى قوت ياد داشت بھى ضرب المثل تقى۔

قوت حافظه کی ایک مثال:

حضرت وحثی رضی اللہ تعالی عند کے پاس حضرت عزہ رضی اللہ تعالی عند کی شہادت کا قصد معلوم کرنے دو محض آئے، ایک نے کہا انہوں نے بالکل بچپن میں بجھے دیکھا تھا اب دراان کے حافظے کا احتمان کیس کہ پہلان لیتے ہیں یا نہیں؟ اس نے اپنا چہرہ اور پوراجم خوب اچھی طرح چھپا لیا، صرف آئے میں اور پاؤں کیلے تھے، حضرت وحثی رضی اللہ تعالی عند سے پوچھا کہ آپ جمھے بہلا نے ہیں؟ انہوں نے پاؤں

پرایک نظر ڈالی اور فرمایا جمیعے یوں معلوم ہوتا ہے کہ جب میں غلام تھا تو میرے آقا کے ہال ایک بچہ پیدا ہوا تھا میرے آقا نے تھم دیا تھ کہ اس بچے کواٹھ کر لیجاؤ، اور فلال دودھ پلانے والی اٹا کودے آؤ، اس زمانے میں یہی رواج تھا مائیں خود دودھ نہیں پلاتی تھیں۔

فرمایا آپ کے پاؤں اس بچے کے پاؤں سے ملتے جلتے ہیں، اور وہ واقعۃ وہی بچہ اندازہ لگائے کیا حافظ تھا، اس میں پہلی بات یہ ہے کہ جب بچہ دووھ پلانے کے لئے اٹا کے حوالے کیا جا تا ہے تو اس کی عمر ہی کیا ہوتی ہے، چند کھنٹے تک بغیر خوراک کے رکھا جائے تو زندہ بی نہیں رہ سکتا، اس بچے کی عمر بھی چند کھنٹوں سے زائد نہیں ہوگی، دوسری بات یہ کہ ایسے وقت بچے کا چہرہ دیکھا جاتا ہے پاؤں کو کوئی نہیں دیکھتا اور چہرے کو بھی اس توجہ اور انہاک سے کون دیکھے گا کہ مدت کے بعد میرا امتحان لیا جائے گا، اس لئے اس صورت کو خوب غور سے دیکھ کریا در کھول، ایسے وقت چہرہ ایک سرسری نظر سے دیکھے جائیں چہرہ ایک سرسری نظر سے دیکھے جائیں ہو جود حضرت وحثی رضی القد تعالی عند اس نقاب پوٹر، کے بھر جوان کو پہیان لیتے ہیں کہ یہ وہی حشرت وحثی رضی القد تعالی عند اس نقاب پوٹر، نو جوان کو پہیان لیتے ہیں کہ یہ وہی شیر خوار بچہ ہے جو میں نے اٹھایا تھا۔

حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالی عنه فرمات بیں ایک بار رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے بچھ مے فرمایا چادر بچھاؤ، میں نے چادر بچھادی، آپ صلی الله علیه وسلم نے پچھ کے مراس پردم کیا اور فرمایا کہ اس کو سینے سے لگالو، میں نے سینے سے لگالی، اس وقت سے کوئی ایک بات جو میں نے رسول اللہ صلی الله علیہ وسلم سے شنہیں بھولا (متنق علیہ)

محدثين كرام حمهم الله تعالى كاحيرت انكيز حافظه

حفرات محدثین رحمیم اللہ تعالیٰ کے حافظوں کی ایک جھلک بھی و کیھ لیجئے! حضرات صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنیم کے بعد جنہوں نے دین کی حفاظت کی۔

ىپلىمثال:

امام بخاری رحمہ اللہ تعالیٰ ایک جگہ تشریف لیے گئے، ابھی مالکل نوعمر تھے لیکن شهرت ہو چکی تھی، وہاں کے محدثین کو خیال ہوا کہ ان کا امتحان لیا جائے، چنانچہ دس محدثین نے وس وس حدیثیں اس طرح یاد کیں کہ ہر حدیث کی سند اور متن کو کسی دوسری حدیث کی سنداورمتن کے ساتھ خلط ملط کردیا، سندایک کی متن دوسری کا، اس طرح ایک فکزاایک حدیث کا دوسرافکزا دوسری حدیث کا،اس طرح سے حدیثوں میں قطع و برید کرکے ایک ایک تحف نے دل دل مدیثیں یاد کیں اور آ کر بیٹھ گئے امام صاحب رحمه القد تعالى كا امتحان لينع، يبلى حديث يرهى تو آپ نے فرمايا: الاادرى_ مجھےمعلوم نہیں، دوسری پرهی تو بھی: لاا دری۔ میں نہیں جانیا، تیسری چوشی یانچویں غرض آخرتک برحدیث کے جواب میں یہی فرماتے رہے کہ لاادری میں نہیں جانا، حاضرین سب حیران کدیدکیا ماجرا ہے؟ مرحدیث کے جواب میں لاادری، لاادری گو کہ نوعمر تنظ مگر قوت حافظہ اور حدیث دانی کی دھاک تو دنیا پر بیٹھ چکی تھی اور اس سئے توا تنابزا اجتماع ہوا، لوگ تو اس جواب سے تشویش میں پڑ گئے مگر وہمتحن حضرات سمجھ رہے متھے کہ کامل ہیں، ان کا یہ جواب کم علمی کی دلیل نہیں بلکہ کمال کی دلیل ہے، ہم تو خلط ملط كركے يو چهر ب جي جو واقعة حديث نيس لېذا ان غلط احاديث كمتعنق لاادری کہنا بالکل بجاہے، جب یہ دس محدثین فارغ ہوگئے اور ان کی سواحادیث یر هی جا چلیس تو آپ نے فرمایا سنواب میں پڑ هتا ہوں۔ سو کی سواحادیث سمجھ سنداور صحیح متن کے ساتھ سنا ویں۔ مؤرخین فرماتے ہیں سواھ دیث پڑھ وینا امام بخاری رحمه الله تعالیٰ کا کوئی کمال نہیں، بھلا جس کو لاکھوں حدیثیں از بر ہوں وہ سوحدیثیں سنا و او کیا کمال ہے؟ کمال ہیکہ جس ترتیب سے ان محدثین نے سوحدیثیں براھی تھیں ای ترتیب سے سنادیں، ای مجلس میں ایک بارس کرسو صدیثوں کی ترتیب یاد ہوگئ، چنانچہ ای ترتیب سے سنادیں، پہلے محدث کی دس حدیثیں پہلے سنادیں ترتیب وار، دوسرے کی اس کے بعد ترتیب وار، تیسرے کی اس کے بعد آخر تک۔ بتاہیۓ ایسا غضب کا حافظ کوئی عقل میں آنے والی بات ہے؟ آج دنیااس کی نظیر چیش کر عتی ہے؟

دوسری مثال:

ایک محدث فرماتے ہیں میں نے سوقج کئے ہیں اور ہر تج الگ اونٹ پر کیا ہے،
ان سواونٹوں میں سے جواونٹ بھی میر سے سامنے لایا جائے دیکھ کربتا دوں گا کہ اس
اونٹ پر میں نے فلال سال حج کیا تھا، ان کوسواونٹوں کا صرف حلیہ ہی یاونییں رہا بلکہ
پر تفصیل بھی یا در ہی کہ اس اونٹ پر کس سال حج کیا تھا اور اس پر کس سال، اس طرح
سواونٹوں میں سے ہرایک پر حج کرنے کا سال بھی یاد۔

تىسرى مثال:

آخر میں حضرت امام ترخدی رحمدالله تعالی کا قصه بھی من لیجے! آخر عمر میں آپ کی نظر جاتی رہی ہیں، نابیعا ہوگئے تھے، ایک بار اونٹ پر سوار اہیں جارے تھے اچا تک ایک جگد سر جھکا دیا؛ فر مایا یہاں ایک جگد سر جھکا دیا؛ فر مایا یہاں ایک درخت ہے، اس کی شاخیس جھکا دیا۔ خادم نے عرض کیا حضرت! اس جگد تو بر بھکا دیا۔ خادم نے عرض کیا حضرت! اس جگد تو ریب بھی کوئی درخت نظر نہیں آ رہا، چہ جائیکہ یہاں ہو، فر مایا: یہیں ہے، جائیا اونٹ سے اتر کے اور فر مایا تھیں ہے۔ وار فر میرا خیال اگر خلط ہے تو آئیدہ کے لئے دوست ہے، ور نہ میرا خیال اگر خلط ہے تو آئیدہ کے لئے صدیت بیان کرنا چیوڑ دول گا کہ میرا حافظ کر در ہوگیا ہے، حافظ میں فرق آ جائے تو حدیث بیان کرنا جائز نہیں، چنانچہ وہ خادم قریب کی آبادی میں گیا اور حقیق کی تو ہوں حدیث بیان کرنا جائز نہیں، چنانچہ وہ خادم قریب کی آبادی میں گیا اور حقیق کی تو ہوں حدیث بیان کرنا جائز نہیں، چنانچہ وہ خادم قریب کی آبادی میں گیا اور حقیق کی تو ہوں

وہ تو کٹ چکا اس کا نام ونشان بھی نہیں رہا۔ یہ حافظے تھے ان حضرات کے نظر نہیں آرہا مگر چلتے چلتے تھیک اس جگہ جھک جاتے ہیں جہاں ورخت تھا۔ یہ چند مثالیں

بتاویں۔

بات میچل رہی تھی کہ کیا صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے حافظے کمزور ہتے جس کی وجہ سے ولاوت ووفات کی تاریخ بھول گئے؟ الی بات تو نہیں اور یہ بھی نہیں کہ ان کی محبت میں کی تھی کچمرآخر بات کیا ہے؟ بھول کیوں گئے؟

اصل سبب:

سنے! اصل وجہ ہیہ ہے کہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم نے سب سے زیادہ جس چیز کی حفاظت کا اہتمام فرمایا وہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم کے ارشاد فرمودہ احکام تھے، اس کے کہ بعث کا حقیقی مقصد ہی دین وشریعت کے احکام ہیں، مخلوق کو اللہ تعالیٰ کے احکام اور اس کی رضا حاصل کرنے کے طریقے بتانا، ان کوجہنم کی گہرائیوں سے نکال کر جنت کے محلات میں پہنچانا، اللہ کے بندول کو اللہ سے ملانا یہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا مقصد تھا، اس کی تفصیل آ مے چل کر بناؤل گا ان شاء اللہ تعالیٰ۔

سلف کا جذبه حفاظت دین:

صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم نے سب سے زیادہ جس چیز کے یا در کھنے پر زور دیا، ہر قیمت پر جس کی حفاظت کی، تمام جز کیات کو محفوظ کیا اور امت تک پہنچایا، وہ ہے آپ صلی اللہ علیہ وہلم کی احادیث کا ذخیرہ جے صحابہ نے حرز جان بنا کر سینوں میں محفوظ کہا چھر تابعین نے مزید حفاظت کے لئے تحریر و کمابت کے ذریعے حدیث کی تدوین شروع کی، ۹۹ جمری میں عمر بن عبدالعزیز رحمہ اللہ تعالی نے اس کا بیڑا الشابیا اس وقت سے احادیث کتب میں محفوظ کردی گئیں، اس معاطے میں ان محسنین امت کی توت سے احادیث کتب میں محفوظ کردی گئیں، اس معاطے میں ان محسنین امت کی توت حافظہ دیانت واحتیاط اور احادیث کی صحت کا اندازہ اس سے لگائے کہ آئی ج

سے تقریباً سوسال پہلے رسول اللہ سلی اللہ علیہ وہلم کے وہ مبارک خطوط جو آپ سلی اللہ علیہ وہلم نے کفار بادشاہوں کو تحریر فرمائے ہے وہ اصل خطوط دستیاب ہو گئے ، ان کے جو قسس شائع ہوئے تو ان بیں اور محد ثین جو کتب حدیث میں بیخطوط درج کر گئے ان بیس ایک حرف کا بحق فرق نہ لگا، چودہ سوسال گزرنے پر بھی احادیث جوں کی تو سل محفوظ میں ایک حرف کا فرق بھی نظر نہ آیا۔ یہود ونصاری نے تو آسانی کتابوں میں ایک تحرف کا فرق بھی نظر نہ آیا۔ یہود ونصاری نے تو آسانی کتابوں میں ایک تحرف کا فرق بھی اللہ علیہ ایک حدیث کا بیا لگانا ناممکن ہوگیا گر یہاں قرآن مجید تو الگ رہارسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی حدیثوں کی حفاظت کا بیا مالم کہ اب تک ذرہ برار فرق نہیں آیا۔

صحابة كرام رضى الله تعالى عنهم كي توجه كا مركز وه احاديث ربي جن بن احكام شرعیہ بتائے ملے ہیں،سب سے زیادہ ان کی حفاظت کی، پھر دوسرے درج میں وہ احادیث جن سے احکام شرعیہ برعمل کرنا آسان موجائے، جیسے جنت وجہم کا ذکر،اللہ تعالیٰ کے فرمانبردار بندوں اور نافرمانوں کے حالات، اللہ تعالیٰ کی قدرت اور احسانات كابيان بحن اعظم صلى الله عليه وللم كاحسانات، كمالات اورحسن وجمال كا ذكر، ان چزوں كى معرفت سے مبت بيدا موتى ہے اور محبت سے اطاعت بيدا موتى ے،معصیت اور نافر مانیوں سے نجات مل جاتی ہے،سب سے آخری در بے میں وہ چزیں بیان کیں جو تھ محبت یر بنی ہیں ، محبوب کے حالات میں سے ہر حالت معلوم كرنے كاشوق موتا ہے، جيسے آپ سلى الله عليه وسلم كى ولادت اور وفات كى تاريخ ، آپ کونبوت کتنی عمر میں ملی، نبوت کے بعد مکہ تکرمہ میں کتنے سال قیام فرمایا اور پھر مدینہ منوره میں کتنے سال، فلاں فلاں سفر میں کہاں کہاں قیام فرمایا،حضرات صحابہ کرام رضی الله تعالی عنبم کے عشق ومبت کا بیرحال که بیبال تک بھی بتا دیا که آخر عمر میں آپ صلی الله عليه وسلم كى دارهم مبارك ميس سفيد بال كتف تعم، يدسب كمان سعبت ن كرايا، ايك توبية حفرات تقے كەمجوب صلى الله عليه وملم كى ايك ايك حالت كواس درجه احتیاط داستیعاب کے ساتھ محفوظ کررہے ہیں۔

آج كل كي عشاق:

آج بھی عشق ومحبت کے دعویداروں کی کی نہیں مگر حالت یہ ہے کہ محبوب سلی اللہ علیہ وسلم کی اللہ علیہ وحشت اور نفرت، ایسے دلوں میں ایمان کیسے رہ سکتا ہے؟

أيك اعتراض اور جواب:

آگے بیسوال ہوتا ہے کہ آگر والا دت اور وفات کی تاریخ کے ساتھ کوئی شرع علم وابستہ نہیں تھا کہ ان کی حفاظت کا خاص اہتمام کیا جاتا تو تقاضائے محبت ہے ہی محفوظ کر لیتے کہ ہمارے محبوب سلی اللہ علیہ وسلم فلال تاریخ میں پیدا ہوئے، دنیا میں تشریف لائے اور قلال تاریخ کور صلت فر ہائی، ایسا کیوں نہ کیا؟ سنے! اس کی وجہ یہ کہ حضرات صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنبم نے جان ہو جھ کر ولا دت اور وفات کی تاریخ کا ذکر نہیں فر مایا یا یہ بھی کچھ بعید نہیں کہ اللہ تعالی نے بی جعلوا دیا اور اس میں بردی حکست پنہال ہے، وہ یہ کہ ولا دت پر بدعات وخرافات کا سلسلہ شروع ہوجاتا اور بردی حکست پردی حکست نہاں ہے، وہ یہ کہ ولا دت پر بدعات وخرافات کا سلسلہ شروع ہوجاتا اور کے اللہ تعالی نے دونوں تاریخ میں، اس کی ایک دوسری مثال ہمارے سامنے ہے کہ بیعت رضوان جس کے جارے میں اللہ تعالی نے فرون تاریخ میں مثال ہمارے سامنے ہے کہ بیعت رضوان جس کے بارے میں اللہ تعالی نے فرمایا:

﴿ لَقَدُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمٌ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَانْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمُ وَانْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمُ السَّامِينَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمُ السَّلَاقِينَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةِ السَّلَاقِينَ السَّكِينَةِ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ اللَّهُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَاسِطُونَ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَاسِطِينَ السَّكِينَةُ عَلَيْهُمُ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَاسِطُونَ السَّكِينَةَ عَلَيْهُمُ السَاسِطِينَ السَّكِينَا السَّلِي السَّكِينَ السَّلِينَ السَاسِطُ السَاسُولَةَ السَاسُولِينَا السَّلَاسُ السَّلَالِينَا السَّلِينَ السَّلِينَ السَّلَاسُ السَّلَاسُ السَاسُولَةُ السَاسُولُ السَّلِينَ السَاسُولُ السَّلَاسُولِينَا السَلْمُ السَّلَاسُ السَاسُولُ السَّلَاسُ السَاسُولُ السَّلَاسُ السُلْمُ عَلَيْهُمُ السَاسُولُ السَّلَاسُ السَاسُولُ السَّلَاسُ السَاسُولُ السَّلَاسُ السَّلَاسُ السَاسُولِينَ السَّلَاسُ السَاسُ

تَذَرِيَحَهَدُ: '' بِالتَحْقِينَ اللهُ تعالَى ان مسلمانوں سے خوش ہوا جبکہ بیاوگ آپ

ے درخت کے بیچے بیعت کررہے تھے اور ان کے دلوں میں جو پکھ تھا ، اللہ کو وہ بھی معلوم تھا اور اس وقت اللہ تعالیٰ نے ان کے قلب میں اطمینان بیدا کردیا اور ان کوایک لگتے ہاتھ وفتح بھی دیدی۔''

ظاہر ہے ہیہ بیعت جس درخت کے بینچ ہوئی وہ برا مبارک درخت تھالیکن اللہ تعالی نے دوسرے ہی سال یہ ورخت صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم کے ذہنوں سے نکلوادیا، آئییں بعلوا دیا، محابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم فرماتے ہیں دوسرے سال ہم نے اس کو تلاش کیا بہت تلاش کیا گراس کا کوئی پتا نہ چلا، اللہ تعالی نے ذہنوں ہے بالکل بعلوادیا کہ آنے والے لوگ کہیں اس کی بوجا پاٹ نہ شروع کردیں، محابہ کرام رضی اللہ تعالی عنہ کو تو ہزار کوشش کے باوجود نہ ملائٹ مگر کہاں چھوٹتے ہیں؟ کی آیک ورخت کو پکڑئی لیا اور مشہور کیا کہ یہی ہو وہ مبارک درخت، حضرت عمر رضی اللہ تعالی عنہ کو معلوم ہوا تو وہ درخت فوراً کوادیا اور فرمایا یہ وہ درخت تو ہے نہیں گرتم لوگوں نے وہی قرار دیا، اس لیے لوہم اس کو بھی جڑے اکھاڑ دیتے ہیں۔ آج آگر حضرت عمر رضی اللہ تعالی عنہ ہوتے تو ان جلے جلوس کرنے والوں کو مار مار کر، مار مار کر ایسا سیدھا کرتے کہ آ بیدہ یہ لوگ کمی تیا سیدھا کرتے کہ آ بیدہ یہ لوگ کمی تام نہ لیتے ، یااللہ! اب بھی کوئی عمر پیدا فرما ورہ دے ہیں، آگر جمیں مل گئی خرما ورہ نے ہیں، آگر جمیں مل گئی خرما ورہ نے دیے ہیں، آگر جمیں مل گئی ورہ سے ہیں، آگر جمیں مل گئی درہتے ہیں، آگر جمیں مل گئی خومت تو ان شاء اللہ تعالی مار مار کر ان کو درہ خاصل کرتے دہ جو ہیں، آگر جمیں مل گئی خومت تو ان شاء اللہ تعالی مار مار کر ان کو درہ خاصل کرتے دہ جو ہیں، آگر جمیں مل گئی خومت تو ان شاء اللہ تعالی مار مار کر ان کو کو کا د مارغ درست کریں گے۔

(الله تعالی نے اپنی رحمت سے حضرت اقدس رحمہ الله تعالی کی بیدعاء بہت جلد قبول فرمائی اور بے دینوں کی سرکوبی کے لئے افغانستان میں امیرالمؤشنین ملاعمر مجاہد حفظہ الله پیدا فرماد ہے۔ جامع)

مختمرید که الله تعالی نے صحابہ کرام رضی الله تعالی عنبم کے ذہنوں کو اس طرف متوجہ ہونے ہی ند دیا کہ اس تاریخ کو یا در کھیس اور کسی کو اگر یاد تھی بھی تو بعلوا دی اور اس میں حکمت و مصلحت طاہر ہے کہ اگر صحیح تاریخ محفوظ ہوتی تو لوگ جوخرافات کرتے، بدعات کرتے ای مبارک تاریخ بیس کرتے گراس کے باوجود سلمان کبال
باز آتا ہے، کبال ہاتھ سے جانے دیتا ہے جلے جلوسوں کی رونق کو، طوے اور قورے
کی لذت کو، ایسال قواب کے سنہری مواقع کو، اس نے سوچا اگر ولاوت اور وفات کی
صبح تاریخ خبیں ملتی تو نہ ہلے کی کوتو پکڑیں لو، آخر ۱۲ کو پکڑلیا اور ہنگاے شروع
کردیئے۔ اللہ تعالی کا کرم تو دیکھئے کہ اپنے صبیب صلی اللہ علیہ وسلم کی ولاوت اور
وفات کی سیح تاریخیں ان خرافات سے بچالیس ولادت کی سیح تاریخ تھی ۸ کر یہ میلاد
منارہے ہیں اکو، ان کو بھنا بھی کوئی سجمائے بھی بازئیس آئیں گئی گئی رہی اڑے
منارہے ہیں اکو، ان کو بھنا بھی کوئی سجمائے بھی بازئیس آئیں گئی کے ان شاء اللہ تعالی کر بھی اور یہ سے کہ ان شاء اللہ تعالی کہ بھی یعین ہے کہ ان شاء اللہ تعالی اس میں بھی کوئی کرنے گئے
اس تاریخ میں کوئی ہنگامہیں کرے گا، اگر یہ خطرہ ہوتا کہ اس میں بھی کوئی کرنے گئے
گا تو میں نہ بتا تا۔ لوگوں نے ولادت کے اصل مقصد کو بیجھنے کی بجائے اس تاریخ میں
ہنگاے شروع کردیئے۔

رسالت كاحقيقي مقصد:

میں نے میان کے شروع میں قران مجید کی جوآیات پڑھی ہیں ان میں پہلی جار آیات سورہ احزاب کی ہیں اور ان کے بعد تین آیات سورہ فتح کی ہیں، ان میں اللہ تعالیٰ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی بعثت کا مقیمد میان فرمایا ہے، اس لئے بعدر ضرورت مختصر ان کی پچو تشر تک کرتا ہوں۔

یا بھا النبی: نی کے معنی میں الله تعالی کے احکام بتانے والاء اس میں سمبیر فرمادی کدآپ سلی الله علیدو کلم کا ہرتھم الله تعالی کا تھم ہے، اس لئے آپ مسلی الله علید وسلم کے برتھنم کی اطاعت فرض ہے۔

انا ارسلنك: بلاهمدآپ كوم في بعجاب ينى يه بات محق، يقى اور كى بك الله الله الله الله الله كالله كالله كالله كالله

علیہ وسلم کا ہرار شاو واجب التعمیل ہے، کسی بات میں بھی آپ کی نافر مانی جائز نہیں۔
ساھدا: ہم نے آپ کو عام انسانوں کی صورت میں اس طرح بیجا ہے کہ آپ
کے سب حالات ان کی آتھوں کے سامنے ہیں، اگر اللہ تعالی کوئی تھی تکھائی کتاب
نازل فرما دیتے، جیسے کہ مشرکین اس کا مطالبہ بھی کر رہے تھے تو لوگ اس کتاب کے
سیھنے میں اختلاف کرتے، اس لئے رسول پر کتاب نازل فرمائی تا کہ وہ اس کی تشریح
کرے امت کو سمجھائے، چنا نجے ارشاد ہے:

﴿ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتْبُ وَالْحِكْمُةَ ﴾ (١٦٠-٢١) يَوَيَتِي وَهِ مِن مِن مِن مِن فَي الْحِكْمَةِ ﴾

تَخْرَجُهُ مَدُ "اوران کو کتاب کی اور فہم سلیم کی تعلیم دیا کریں۔" مرحم نیس

دومری جگه فرمایا:

﴿ وَٱنْوَلُنَاۚ اِلَّهِٰكَ الذِّكُو لِتُنَبِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُوْلَ اِلنَّهِمُ وَلَعَلَّهُمُ يَتَفَكَّرُونَ ۞ (١٠-::)

تَوَیَحَمَدُ: ''اورآپ پر بیر آن اتارا ب تاکد جومضاین لوگول کے پاس بیمیع کے ان کوآپ ان سے ظاہر کردیں اور تاکدوہ فکر کیا کریں۔''

مشرکین کا یہ بھی مطالبہ قا کر کی فرشتہ کورسول بنا کر بھیجا جائے ، اللہ تعالی نے ان کا یہ مطالبہ بھی پورانیس فرمایا ، اس لئے کہ لوگ بول کہتے کہ فرشتے کا اتباع ہمارے بس کی بات نہیں ، وہ تو لوازم بشرینیس رکھتا ، اس کو کھانے پینے ، سونے اور بول و براز آگی حاجت کی اس فروت نہیس ، یوی نیچ نہیں رکھتا، تھکتا نہیں ، اس میں قوق شہونہ بنیس ، کتا ہوں کے تقاضے ہی اس میں تہیں ، ہمارے اندر تو بیسب لوزی ہوجہ و ویل مارے اندر تو بیسب لوزی ہوجہ و ویل مراح اندر تو بیسب لوزی ہوجہ و ویل ایم فرشتے کا اجاع کے کے کرسکھ ہیں؟

لولوں کی اس جبت کو قتم کرنے کے لئے اللہ تعالی نے فرشتے کی بجائے بشرکو رسول بظ کر بیجا، ان تمام لوازم بشرید کے ساتھ جوعام انسانوں کے ساتھ ہیں، بلکدان سے بھی زیادہ ید کہ عام انسانوں کی ایک بوی یا زیادہ سے زیادہ چار بویاں ہیں اور رسول الندسلى الندعليه وللم كى بيك وقت نويويان، غرضيكه آپ ملى الندعليه وسلم كى صفات بين مغت "شاهد" لان سي بين مقصد رسالت بتانا مقصود بركه آپ ملى الندعليه وسلم كي وائد السيامة عليه وسلم كيا وائد النه عليه وسلم كيا وائد والنه عليه والنه
و مبشراً و تَذِيراً: آپ صلی الله عليه و کلم الله یک اتباع کرنے والوں کو دنیا و مبیود کی بیات کا مبسرا و تو اول کو دنیا و ترت کی فلاح و بهبود کی بشارت دینے والے ہیں اور نافر مانوں کو دنیا و ترت کی رسوائی اور عذاب سے ڈرانے والے ہیں، اس میں الله تعالیٰ کی طرف سے قطعی اور واضح محم ہے کہ لوگوں کو الله تعالیٰ کی نافر مانیوں کے عذاب سے ڈراتے رہا فرض ہے، صرف فضائل پڑمل کرتا اور ان بی کی تبلیغ پر اکتیاء کرنا کافی نہیں، ہوتم سے گناموں اور نافر مانیوں اور عافر مانیوں کو بیانے کی کوشش میں گئے رہنا فرض ہے، اس میں نافر مانیوں کے بارے میں قرآن وصدیث میں بہت مخت و عمدیں آئی ہیں، غلت کرنے والوں کے بارے میں قرآن وصدیث میں بہت مخت و عمدیں آئی ہیں،

آ مے کی آیات میں بیان فرمودہ صفات میں بھی مقصد رسالت یہی بتایا گیا ہے کہ احکام البریکا اجاع کیا جائے۔

وَلَا تُطِعِ الْكَفِرِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَدَعُ أَذَابِهُمُ وَتَوَكَّلُ عَلَى اللّهِ وَكَفْي بِاللّهِ وَكِيْلًا ۞: (٣٣ - ١٨)

آس آیت میں سیبید کی عمی ہے کہ اللہ تعالیٰ کی تافر مانیوں سے روکنے پر لوگ مخالفت کریں گے، وشن ہوجائیں گئی طرح طرح کی تکلیفیں اور ایڈ ائیس کہنچائیں کے، آپ ان کی طرف سے جنچنے والی تکالیف پرصبر کریں، مشرات اور نافر مانیوں سے روکنے کی تبلیغ کے فرض کو ہرگز نہ چھوڑیں، ان کی مخالفت اور عداوت سے ہرگز نہ ورکنے کی تبلیغ کا فرض اداء کرتے رہیں، اس فرری، ان کی تبلیغ کا فرض اداء کرتے رہیں، اس میں کوتانی کی ہرگز اجازت نہیں، اس کے بعد سورہ فتح کی آیات:

انا ارسلنك شاهدا ومبشرا ونذيرا ١٩ لتؤمنوا بالله ورسوله

وتعزروه وتوقروه وتسبحوه بكرة واصيلا: (٤٨ – ١٠٨)

ان من مجى مقصدرسالت يبى بنايا كيا بكدادكام البيكا اتباع كرير... آخرى آيت:

ان الذين يبايعونك انما يبايعون الله يدالله فوق ايديهم فمن نكث فانما ينكث على نفسه ومن اوفى بما عهد عليه الله فسيوتيه اجرا عظيما: (۱۸ - ۱۰)

اس میں مقصد رسالت بول بیان فرمایا ہے کہ آپ صلی الله علیہ وسلم کی اطاعت الله تعالیٰ کی اطاعت الله تعالیٰ کی اطاعت ب الله تعالیٰ کی اطاعت ہے، پھراس کے نتیج سے خبردار فرمایا کہ نافرمانوں کے لئے دنیا و قرت کی رسوائی ہے ادر فرمانبرداروں کے لئے دونوں جہانوں کی کامیابی۔

حاصل بیک بعثت کا مقصد میہ کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول صلی اللہ علیہ وسلم پر جو احکام نازل فرمائے ہیں ان کا اتباع کیا جائے اور بچی محبت کا معیار اور کسوئی بہی ہے کہ محبوب کے ہر عظم کی اطاعت کی جائے اور ہرنافرمانی سے بچا جائے، چھوٹی سے چھوٹی نافرمانی بلکہ اس کے تصور سے بھی شرم آئے۔

سجى محبت كاقصه

چی محبت کیبی ہوتی ہے اس پرایک قصہ سنے! رسول الندسلی اللہ علیہ وسلم مکہ مرسہ ہے ہجرت فرما کر مدینہ منورہ تشریف لائے تو اہل مدینہ استقبال کے لئے روز نگلتے اور انظار کرکے واپس ہوجائے، چھوٹی پچیاں بھی گھروں کی چھوٹ پر ٹے مکرروزانہ دیکھتی رئیس، کی دن انتظار کے بعد جب نظر پڑی کہ آپ سلی اللہ علیہ وسلم اپنے اصحاب سمیت تشریف لارہے ہیں، اس وقت بچیوں نے پچھاشعار پڑھے، یا اللہ! ان بچیوں کے دلوں کی کیفیت کا مجھ حصہ ہمیں بھی عطاء فرما!

طلع البدر علينا من ثنيات الوداع

وجب الشكر علينا ما دعا لله داع ايها المبعوث فينا جنت بالامر المطاع

بیمعصوم بچیال بھی مجھی تھیں کہ بعثت کا مقصد کیا ہے؟ کہتی ہیں اے" شخیات الوداع" کی طرف سے امجرنے والے چودھویں کے جاند! اس پہاڑ کا نام" شخیات الوداع" تھااس لئے کہ لوگول کو میں سے وداع کیا جاتا تھا۔

وجب الشكو قيامت تك جارى گردنين شكر بي جمكى جوئى جي، مگر شكر كيك اداء كري معي؟ شكر كها كرنبين، آجكل مضائيان كها كرشكر اداء كرتے جي، بي شكرنيين، شكر كيك اداء كيا جاتا ہے:

ايها المبعوث فينا جئت بالامر المطاع.

تَوْرَضَكُ: "اف وو ذات جو ہماری ہدایت کے لئے ہم میں مبعوث کی گئی! تیرے امری اطاعت کی جائے گی۔"

ہم وعدہ کرتے ہیں کہ آپ کا جو تھم ہوگا ہم اسے بجالائیں گے، دل وجان سے اطاعت کریں گے۔ دل وجان سے اطاعت کریں گے۔ بیان بچوں کے جذبات تھے، وہ خوب بھی تھیں کہ رسالت کا مقصد رسول کی اطاعت ہے، یا اللہ! ان بچوں کے دل میں جو مجت تھی، جو جوش اطاعت تطاء فرما ہجی وہ مجت عطاء فرما، وہ جوش اطاعت عطاء فرما ہجی ہیں۔ بالکہ عام یاد آئی جو پہلے بھی ہمیشہ بتاتا رہتا ہوں مگر ابھی اللہ تعالیٰ نے اس کا ایک عجیب مطلب دل میں ڈال دیا:

﴿ اللهمر ارزقنا حبك وحب من يحبك وحب عمل يقرب الى حبك (نرمذى، مستدرك) تَوْرِيَحَكُ: " إِالله اللهم سبكوا في مجت عطاء فرما، الى مجت والول كى مجت

عطاء فرما، اور ایسے اعمال کی محبت عطاء فرما جو تیری محبت سے قریب کردیں'' دوسرے جیلے کے ظاہری معنی تو ہیں اہل محبت کے ساتھ محبت مطاء فرہا، مگر میرے دل میں اللہ تعالی نے بیر مطلب ڈالا کہ یااللہ اہل محبت کے دلوں میں جوتو نے محبت بھر دی ہے اپنی وہ محبت ہمیں بھی عطا مفر ماء عربی الفاظ میں اس معنی کی بھی تھے آئش سے۔

اب تك تين چيزول كابيان موا پمرد براليج:

🕕 اررئ الاول نەتارىخ ولادت بىنىتارىخ وفات ـ

محابر کرام رضی اللہ تعالی عنیم کے دور میں ہنگا ہے نیس بنے، اگر ہوتے تو میح
 تاریخ کا مجولنا ممکن نہ ہوتا۔

윹 محابة کرام رمنی الله تعالی عنبم نے منجح تاریخ اس خطرے کے پیش نظر محفوظ نہ فرمائی کہ لوگ اس میں بدعات وخرافات کے ہنگاہے کریں گے۔

اس بدعت کی ابتداء:

رسول الشصلی الند علیہ وسلم، حضرات صحابہ کرام رضی الند تعالی عنہم، تا بعین، تع تا بعین، تع تا بعین اللہ عنہ اللہ تعالی بلکہ ان کے بعد بھی چے سوسال تک و نیاش کیں بھی اس بدعت کا کوئی نام ونشان نہیں تھا، ساتویں صدی ۱۹ جری بیں ایک بہت بڑا بے دین اور عیاش بادشاہ مظفر الدین کوکری بن ارغل گزرا ہے، اس نے اپنی عیاشیوں اور برستع س کو تا ویر وین سے اگا کو کا تا کر ویا نے برستع س کو تا ویر وین سے لگا کا کا تا کر وین کے لئے اپنی حکومت کو طول دینا ضروری سمجھا تو رعایا کو اپنی طرف ماکل کرنے ، اپنی عظمت قلوب بھی بھانے اور دین سے لگا کا کا تا کر وینے کے طرف ماکل کرنے ، اپنی عظمت قلوب بھی بھانے اور دین سے لگا کا کا تا کر وینے کے طرف ماکل کرنے ، اپنی عظمت الدول بھی بھانے کوئی دینی فرونگ رہا ہے ۔ کہ بھر یا دور بھر میا دی بدعت ایجاد کرنے کا منصوب بتایا۔

اس مقصد میں پوری طرح کامیانی کے لئے اس مکار وجالاک بادشاہ نے ایک زبردست تدبیرافتیار کی، وہ بیر کہ بیت المال کے خزانہ سے طبقہ علاء سوء کوخریدنے کی کوشش کی جو ہمیشہ دین بچ کر دنیا کھانے کے لئے منہ پھاڑے ہیں خیں۔ چنانچہ اس طبقہ کے ایک مکار وکذاب، ائمہ مجتہدین وعلاء سلف کی شان میں بہت سخت گتاخی کرنے والے بخش کو متلبراور دنیا پرست مولوی عمر بن دجیہ ابوالخطاب نے اس برعت کے جواز کے لئے مواد اکٹھا کرنے کا کارنامہ انجام دیا اور ہوں پرتی میں اپنے مقتدیٰ سے ایک ہزار دینار کا صلہ پایا۔

(تاریخ این خلکان، دول الاسلام للذہبی، لسان المیز ان لا بن حجر)

حفرت عبدالله بن السبارك رحمدالله تعالى في مج فرمايا:

ُ وهل أفسد الدين الا الملوك واحبار سوء و رهبانها تَرْجَمَكَ: "بهول برست بادشابول، دنيا پرست مولويول اور جاأل صوفيول نظر دين كوتها كيا-"

اب ایک بهت اہم بات اور سنتے!

اہل بدعت ہے سوال:

سوچنے کی بات ہے کہ یہ چیزیں جب ندرسول الندسلی اللہ علیہ وسلم کے دور میں ہوئیں، نہ صحابہ کرام کے دور میں، نہ ائمہ مجتبہ بن کے وقت میں پھر لوگ کیوں کرتے ہیں؟ جواسلام میں کسی نے بھی نہ کیا، کہتے ہیں آ جکل سائنس کا زمانہ ہے، سائنس کے معنی ہیں عقل، آج کا انسان بڑا تنظندانسان کہلاتا ہے، حتی کہ دوین کے معاملے میں بھی اپنی عقل کے گھوڑے دوڑا رہا ہے، عجیب عجیب یا تیں لوگ ہم سے پوچھتے ہیں، دات کی نمازوں میں قراء ت آ واز سے کیول ہے؟ دن کی نمازوں میں قراء ت آ واز سے کیول ہے؟ دن کی موج سے کروں ہے کہ اس میں حکمت کیا ہے۔ یہاں بھی کوئی معمولی کام نہیں ہورہا سوچ سمجھ کر کرتا ہے کہ اس میں حکمت کیا ہے۔ یہاں بھی کوئی معمولی کام نہیں ہورہا

ائنے بڑے مصارف، اس قدر محنت ومشقت، اشنے بڑے بڑے ہنگاہے، آخر یہ اتنا بڑا کام کیول کررہے ہیں؟ سننے! اگر بات مجھ میں آگئی تو ان شاء اللہ تعالی ذرایعہ ہدایت ہوگی، اللہ تعالی دلول میں اتاردیں۔

میرے خیال میں ان لوگوں کے نزدیک اس کی تین وجہیں ہو کتی ہیں۔ آپ لوگ بھی سوچیس دوسروں ہے بھی پوچیس بلکہ ان ہنگامہ کرنے والوں ہے دریافت کریں کوئی نئی بات ان کے علاوہ سامنے آئے تو جھے بھی بتائیں۔ پہلی وجہ یہ کہ اسے تھم شریعت بچھ کر کرتے ہوں گے۔

بدعت میں کیا کیا مفاسد ہیں؟

الله ك بند اليها على الله على الله على الله على الله الله الله ك مبيب ملى الله عليه وسم في بنايا، نه الله ك مبيب ملى الله عليه وسم في بنايا، نه الله على الله عليه وسم في بنايا، نه الله تعالى عليه وسم الله تعالى عنهم في توت به غرض الله كي شريعت على تو اس كار خير كاكبيل نام ونشان نبيل ماتنا في طرف سے كبال سے كمر ليا؟ يا تو يول كبيل نعوذ بالله إلى الله تعالى كو بالله عالى في الله على الله تعالى في الله على الله عليه السلام في خيانت كى، رسول الله صلى الله عليه وسلم تك نبيل بنجايا، يا جريل عليه السلام سے داست على شيطان في جين ليا، جريل عليه السلام سے داست على شيطان في جين ليا، جريل عليه السلام كار بارے على الله تعالى فرماتے بين الله عليه الله على الله تعالى فرماتے بين الله تعالى فرماتے بين الله تعالى فرماتے بين الله تعالى الله تعالى فرماتے بين الله تعالى الله تعالى فرماتے بين الله تعالى الله تعالى فرماتے بين الله تعالى فرماتے ب

﴿ ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِيني ۞ مُطَاعٍ ثُمَّ آمِين ۞) ﴿ وَيُ اللَّهِ مِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِيني

جریل علیه السلام بہت بڑی قوت والے ہیں، اور امین بھی ہیں، نه شیطان کی دیمتی کا احمال بوسکتا ہے اور نہ بی خیانت کا۔

اور قرآن مجید کے بارے میں فرماتے ہیں کداس میں کوئی ردوبدل اورقطع و برید

مکن نہیں:

﴿ وَإِنَّهُ لَكِتَبُ عَزِيْزٌ ﴾ لاَ يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلاَ مِنْ خَلْفِهِ لَا مَنْ خَلِفِهِ وَلاَ مِنْ خَلْفِهِ لَا مَنْ خَكِيمِ حَمِيْدٍ ﴾ (١٠-١١، ٢١)

تَرْجَعَكَ: "اور يه برى باوقت كتاب ہے جس میں غير واقعی بات نداس
کَ آگ کی طرف ہے آگتی ہے اور نداس کے چھے کی طرف ہے، یہ الشّکیم محمود کی طرف ہے نازل کیا گیا ہے۔"

یا یوں کمیں مے کہ جریل علیدالسلام نے تو رسول الشمسلی الله علیہ وسلم تک پہنچایا محرآب صلی الله علیه وسلم نے امت کونہیں بتایا، کویا معاذ اللہ! دین کہنجانے میں خیانت کی، یا پھر یہ کہ آپ ملی اللہ علیہ وسلم نے تو بتایا مگر محابہ کرام رضی اللہ تعالی عنهم نہیں سمجے، ثمل نہیں کیا، غفلت برتی۔ آخر جس بات کا زمانۃ خیرالقرون میں دور دور تک کوئی بیانہیں ماتاس کی توجید کیا کریں ہے؟ سیدھی بات بہ ہے کہ بدکار ثواب نہیں، الله تعالی کی حکومت کے مقالبے میں اپنی متوازی حکومت بنانا ہے، جو بڑا بھیا تک جرم ہے، کو کی محض کسی کی حکومت میں رہے ہوئے کیسا بی جرم کرے ہوسکتا ہے کہ حکومت اسے معاف کردے محراس حکومت میں رہتے ہوئے جو مخص این حکومت قائم کر لے وہ "بانی" کہلاتا ہے، اے کی صورت میں بھی معاف نہیں کیا جاسکنا، کسی کام میں اواب یا تمناہ بتانا اللہ تعالٰی کا کام ہے، اللہ تعالٰی کاعلم محیط ہے، کوئی چیز اس کےعلم ۔ے باہر نہیں، کیا اللہ تعالیٰ کو اس کارٹواپ کاعلم نہیں تھا؟ یاد رکھتے! بزے سے بڑا گناہ بھی چھوٹی سے چھوٹی بدعت کے مقاملے میں چھوٹا ہے اور بیتو بہت بڑی بدعت ہے، اللہ کے دین میں خل اندازی ہے، چھوٹی ہے جیموٹی بدعت سے متعلق رسول الله صلّی الله عليه وسلم نے ارشاوفر مايا كه وہ جنم من ليجانے والى ہے، كيوں؟ وجديد سے كه كوكى فخص بدكارى كرتا ہے، چورى كرتا ہے، ذكيتى كرتا ہے ياان سے بھى برھ كرقل كا مرتكب موتا

ب بینافر مان تو ضرور ہے، بحرم ضرور ہے تکریٹیس کہا جائے گا کہ اللہ تعالی کی حکومت کے مقابعے میں اپنی متوازی حکومت قائم کررہاہے، نافرمان ہے، کناه گار ہااتلہ تعالی حاییں تو معاف فرما دیں لیکن جو مخف بہ کہتا ہے کہ یہ کام اللہ تعالیٰ نے تو نہیں بتایا تکر میں بتاتا ہوں، میں اس میں ثواب مجمتا ہوں، بتائے یہ"می" کو اللہ تعالیٰ کے مقابلے میں لایا یانہیں؟ خودکواللہ تعالیٰ کا شریک تغیرایا یانہیں؟ ریکننی بدی بات ہے، کیا یہ جرم قابل معافی ہے؟ آخرت میں ایسے لوگوں کے ساتھ بدمعالمہ ہوگا کہ رسول اللہ صلی الله علیه وسلم حوض کوثر بریانی بارہے ہول کے ای دوران آب ملی الله علیه وسلم دیکمیں کے کہ بدعوں کی ایک جماعت کوفرشتے مار مار کرجنم کی طرف بیجارہے ہوں مر، بولك وف وار كاطرف آنا جايس محكر فرشة ماد مادكردور بنائي مر آب ملی اللہ علیہ وسلم ان کے چیروں سے بیمجیس مے کہ بیمسلمان ہیں، فرشتوں سے فرمائیں کے ان کو کیوں نہیں آنے دیے؟ فرشتے جواب دیں مے یارسول اللہ! آپ صلی اللہ علیہ وسلم کوعلم نہیں کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد امت میں ایک ایس جماعت پیدا ہوئی تھی جن کی صورتیں مسلمانوں کی سی تھیں تھرمیرت مسلمانوں سے الگ، انہوں نے نی نئی بدعات اپنی طرف ہے گمڑیں، نئی نئی باتنی اللہ کے دین میں واظل كير، الى الى باتي جن كاندالله تعالى في حكم وياند آب ملى الله عليه وسلم في: لاندرى ما احدثوا بعدك-آپ ملى الدعليوملم كومعلوم بيل كرآب ملى التدعليد ولم کے بعد انہوں نے کیا کیا بدعات ایجاد کیں، کیے انہوں نے اللہ تعالی کے مقالے میں اپنی متوازی مکومت قائم کی، یہ باغی میں، ان کے بارے میں آپ سلی الله عليه وسلم كى سفارش بعى تبول نبيس موكى ، آب مسلى الله عليه وسلم فرمائيس مي : سحقا معتقاران كودور بناؤ، دور بناك برقى كابيانجام بوگار بدعت ين ايك بزى خرالى بد بھی ہے کہ برقتی کومرتے دم تک استے ہوئے جرم سے توبہ کی تو فیق نہیں ہوتی، جس

جرم کووه کار ثواب مجمتا ہے اس سے توبہ کیے کرے گا؟

لمحة فكربية

یہاں ذراایک بات مجھ کیں یہ جوحدیث میں آیا ہے کدرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان لوگول کی صورت د کھ کر مجھیں سے کہ بیمیری امت کے لوگ ہیں،جن لوگول کی صورت ہی مسلمان کی نہیں وہاں ان کا کیا ہوگا؟ ان کے بارے میں تو بول معلوم ہوتا ہے کہ شاید آپ صلی اللہ علیہ وسلم کسی طرح بھی ان کا اسلام قبول نہ فرمائیں مے کہ یہ کیے مسلمان ہیں جن کی صورت بھی ہم سے مختلف ہے؟ بیر میلادی لوگ صورت تو مسلمان کی می رکھتے ہی گراندر ہے کچھاور ہی گرجن کی صورت عی مسلمانوں کی نہیں ان کو آپ سلی اللہ علیہ وسلم حوض کوٹر سے کیے باکس مے؟ سیرت کی پھان تو صورت سے ہوتی ہے،کسی کو بھیجا قربانی کا بکرا خریدنے وہ کتا پکڑ کے لے آیا، کیو جما جاتا ہے، ارے احتہیں تو بمرا خریدنے بھیجا تھا یہ کیا پکڑ لائے؟ وہ جواب دیتا ہے دیکھو''اس کے دودانت، دودانت' بین کہا جائے گا کہ احمق اس کی تو بکرے کی صورت ې نبيس، دانتو کو د کيو کر کيا کريس، وه دومول خواه آڅه، پېلې چيز تو صورت يے محروه ایک بی رٹ لگائے جاتا ہے دو دانت دو دانت، دانت دکھانے سے وہ کما بحراتھوڑا بی بن جائے گا، مسلمان کی بچان اسلامی صورت سے ہوتی ہے، پہلے اس کی صورت کو دیکھا جائے گا، اگر صورت مسلمانوں کی د ہے تو دیکھیں مے کہ اندر سے بھی مسلمان ہے پانہیں،جس کی صورت ہی مسلمان کی سی نہیں وہ تو وہیں جیٹ گیا، یا اللہ! تو ہدایت عطا وفرما،مسلمان کی صورت افتریار کرنے کی تو نیق عطا وفرما، جب صورت بن جائے تو ال مورت من حقیقت بھی عطا وفر ما۔

> ب ترے محبوب کی یارب شاہت لے کے آیا ہوں حقیقت اس کو تو کردے بس صورت لے کے آیا ہون

ایک بات میہ ہوگئ کہ وہ ان خرافات کو کار ثواب سمجھ کر کرتے ہیں یہ بتاویا کہ کار ثواب نہیں بلکہ بیدور حقیقت اللہ تعالیٰ کا مقابلہ ہے۔

دوسری وجدوہ یہ بتا کے ہیں کہ جمیں رسول الشملی الشعلیہ وسلم سے مجت ہاور محبت بیا اور محبت بیا اور محبت بیا اس کے جم ایسا کرتے ہیں اور جونیس کرتے ان کول محبت سے اللہ علی اللہ علی یہ بات سوچنے کی جونیس کرتے ان کے دل محبت سے خالی ہیں، اس بارے بش بھی یہ بات سوچنے کی عب بات سوچنے کی محبت بیل محب کہ کیا صحابہ کرام رضی الشہ تعالی عنہم کی محبت سے بردھ کرہے؟ محبت بیس تھی، کیا تم ان سے برد سے عاشق ہو؟ ان کی محبت بی اللہ تعالی شہادت و سے درے ہیں کہ یہ مارے محبوب صلی الشه علیہ وسلم کی بیت ہیں کہ عبت ہیں کہ ان کی محبت ہیں ہماری محبت بیں ہماری محبت بیل کہ محبت بیل کہ محبت بیل کہ عبت آپ لوگوں کی محبت کی بنسیت بدر جہا بردھ کرشی محبت ہیں کمال حاصل ہے، ان کی محبت آپ لوگوں کی محبت کی بنسیت بدر جہا بردھ کرشی مضائیاں کھا کہ ان کی محبت بنے بیٹمام کام کیوں نہ کرائے؟ اگر واقعی بیکہا جائے کہ محبت بی تم سے بیکام کرا دبی ہے تھیں اپنے کے موب کا فرمال بردار ہوا کہ محبت بی تام کرا دبی ہے تھیں اپنی ہوئیں۔ کہ محبت بی تم سے بیکام کرا دبی ہے تھیں اپنی کی تقریب بی تم ہیں ہوئیا۔

امتحان محبت ميس كامياني وناكامي كامعيار:

امتحان محبت میں کامیابی وناکائی کا معیار یکی ہے کہ دعوائے محبت اور محبت کے طریقے محبب اور محبت کے طریقے محبوب کی رضا کے مطابق ہیں یا خلاف؟ رسول الشصلی الله علیہ وسلم نے اظہار محبت کے دعوے میں بالکل سچاہے اور اگر اظہار محبت کے لئے ایسے انو کھے طریقے ایجا دکرتا ہے جو ندرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بیان فرمائے نہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنبم نے نیان فرمائے نہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عنبم نے نامی دو اللہ تعالی منبی کے انتھار کے تو یہ محب اللہ تعالی عنبم

کے دیوے میں جمونا ہے، محب کا ذب ہے، ان لوگوں کے اظہار محبت کے تمام طریقے بھی اسپ ایجاد کردہ ہیں، معلوم ہوا یہ چھی محبت نہیں صرف دیوائے محبت ہے جومجوب صلی اللہ علیہ وسلم کی رضا کے مراسر خلاف ہے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی شریعت کے سراسر خلاف ہے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی شریعت کے سراسر خلاف ہے۔

بدلوگ کیتے ہیں ہمیں محبت مجود کرتی ہے کہ بدکام کرو، ذرا سوچے؛ بدعشاق چوئی سے لے کر ایڈی تک صورت وسیرت ہیں مجوب ملی الله علیہ وسلم کے خلاف ہیں، آثر محبت آپ سے کھانے پینے دو تیں اڑانے، نعرہ بازی اور جلے جلوسوں کا کام تو کرواتی ہے دوسرے کام کول نہیں کرواتی ؟ حضرت ابو محدورہ وفنی اللہ تعالی منہ کا محت کہ دوسرے کام کول نہیں کرواتی ؟ حضرت ابو محدورہ وفنی اللہ تعالی منہ کا محب نے ان کے سر پر ہاتھ پھیردیا تو انہوں نے عربی ہر بال نہیں منڈوائے اور ان محبت کے دو ہے داروں کو ڈاڑھی کے بال رکھنے کی بھی تو نیتی نہیں، دو کی محبت کا مگر زندگی سرتا پا شریعت کے خلاف، کھانے کہانے کی بھی تو نیتی نہیں، دوروں میں شرعی پردونیس، میں طال دحرام کی تمیر نہیں، جائز ناجائز کی بوچے ٹیس، موروں میں شرعی پردونیس، محب ہے کی احدت، تصویر کی احت خوش زندگی کا ہر شعبہ معاصی میں اٹا ہوا، یہاں محبت کے ٹیس کراتی آگر کراتی ہے تو صرف یہی کہ ہنگا ہے کر ونعرے لگاؤ اور دوقش محبت ہے کوئیس کراتی آگر کراتی ہے تو صرف بھی کہ ہنگا ہے کر ونعرے لگاؤ اور دوقش اڑا کر ہی ہیں۔

وَلَنَبُلُوَنَّكُمْ حَتَّى نَعُلَمَ الْمُجْهِدِيْنَ مِثْكُمْ وَالصَّيرِيْنَ لَا وَنَبْلُوَاْ أَخْبَارَكُمْ ۞) (١٧-٢١)

تَنْدَ عَجَمَدُ: ''اورو شوار کامول سے ہم ضرورسب کی آ زمائش کریں گے تا کہ ہم ظاہر طور پر بھی ان لوگول کو معلوم کرلیں جوتم میں جہاد کرنے والے ہیں اور جو ثابت قدم رہنے والے ہیں اور تمہاری خبروں کی تحقیق کر لیں۔''

اور فرمايا

﴿ أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتُركُواۤ أَنْ يَقُولُواۤ امَّنَّا وَهُمْ لَا يُقُولُواۤ امَّنَّا وَهُمْ لَا

تَوَجَعَنَدُ ''كيا ان لوگول في بيخيال كردكا بكدوه اتنا كيني پرچهوث . جاكي كه بم ايمان ليآئ اوران كوهم هم كه معائب سيآ زمايا نه جائيگا."

اللد تعالى كحول كحول كرسنار ب بين: ارسك لوكون في كيا سجوليا كرمرف اتنا كهددية سے كه بم ايمان لائے اور احتمان ديے بغير به دعوى قبول كراما جائے كا؟ برگر جمیں ، اللہ کے لئے ذرااس آیت کوسائے رکھ کرایے حالات کا جائزہ لیں! بیسورہ عكبوت كى بهلي آيت ہے، قرآن مجيد كھول كريمبله ديكھ ليجة ااطمينان كر ليجة! مجراينا ماسر کیج: اَحسب النَّاسُ الله تعالى كى طرف سے كيما زبردست اعلان سي؟ لوكول نے كيا خيال كيا كرمرف" امنا" كهددين سے امتحان ديتے بغير بم كامياب ہوجائیں گے؟ بید دعویٰ بغیر دلیل قبول ہوجائے گا؟ ہرگز نہیں، یہ خیال ذہن سے نکال دیں، اللہ تعالیٰ پہلے تمہارا امتحان لیں ہے، کسوٹی پر برخمیں ہے اور خوب رکڑ رکڑ کر بر ميس كر اس امتحان مين جو كامياب لكل اس كا ايمان قبول ب ورند بركز قبول نبيس ، يركموكملا دهوى مندير مارديا فأئ كاءات باربارسوجينا أحسيب بيكون كهدرباب ایمان اور مجت کے دعوے توسب میں ہیں مگریدا بھان زندگی میں نظر کھال آرہا ہے؟ شرع بردے کا نام نہیں، گانے بجانے کی لعنت کی کی میں برس ربی ہے، تصوروں کی لعنت قدم قدم برموجود، ندمورت مسلمان كي ندسيرت مسلمان كي، نداندرند بابرة خر بداسلام ے کمال؟ برتو وی تصد ہوگیا کدایک محص تصویر کودنے والے کے یاس کیا اور کہا میرے باز ویرشیر کی تصویر کود دیجتے! ایبالوگ شایداس لئے کرئے ہیں کہ تصویر بنانے سے ہم بھی شیر بن جاکس سے،اس نے تصویر گودنا شروع کی پہلی سوئی چھولی تو ذرا سا درد موابد چلا اٹھا تھہر جاؤ تھہر جاؤ کیا بنارہ ہو؟ اس نے کہا یہ یاؤس بنارہا

ہوں، ارے! شیر کنگرا بھی تو ہوا کرتا ہے، یاوں کے بغیر شیر بنادو، اس نے چھر سوئی چھوئی،ارے تھبر جاؤ تھبر جاؤ، یہ کیا بنارہے ہو؟ اس نے کہادم،ارے! شیرلنڈورا بھی تو ہوتا ہے بغیر دم کے ہی بنادو۔اس نے پھرسوئی چیھوئی تو چیخاارے!تھہرو ذراتھہرو یہ کیا بنا رہے ہو؟ اس نے کہا کان، ارے! شیر بوجا بھی تو ہوتا ہے بغیر کان کے ہی بنادو، اس مصور نے جھنجھلا کر کہا اللہ کے بندے! ایبا شیر جس کے یا وال ندوم نہ کان اپیا شیرتو اللہ تعالیٰ نے پیدا ہی نہیں کیا جا کر گھر میں بیٹھ،سوئی چھوانے کی ہمت نہیں اورشوق آمکیاشیر بنوانے کا۔ آج کامسلمان بھی سجان اللہ! وہی شیر بنوانے والامسلمان ہے، ذبان سے باد باریمی رٹ کہ ہم مسلمان ہیں،مسلمان بھی ایسے ویسے نہیں محت اور عاشق مسلمان، ان سے ذرا بوجھیں مسلمان ہوتو مسلمان کی صورت کہاں گئی؟ ارے! بیتو بہت مشکل کام ہے ریکام ہم ہے نہیں ہونے کا ویسے ہیں مسلمان، اچھا اگرمسلمان ہوتو ناجائز ذریعۂ معاش کیوں نہیں چھوڑتے؟ مسلمان حرام تو نہیں کھاتا، اجی! مجوکے مرحائیں ہے یہ ہاتیں چھوڑ ہے ویسے ہیں مسلمان، اچھا شرعی یردہ ہے تمہارے گھر؟ مسلمان بے غیرت اور دیوٹ تونہیں ہوتا، ارے! بردہ کیا تو گھٹ کر مرجائیں مے، ایسااسلام نہیں جاہے ویسے ہیں مسلمان۔اس برایک عورت کا قصہ بتاتا موں، اس کے شوہر نے خود بنایا کہ س نے بول کور جمدقر آن برهانا شروع کیا، شوق سے پڑھتی رہی پڑھتی رہی ور جہاں مپنچی سورہ نور پر جس میں پردے کے احکام مِين تو چلااڻمي اور قرآن بند کرديا، پيقرآن بمين نبيس ڇاہينے .قرآن بمين نبيس ڇاہيے، وہ تو مرتے وم تک سورہ نور کونہیں بھولے گی شوہر نے بہت سمجھایا کہ ترجمہ اتنا سارا یڑھ گئ آ گے بھی پڑھ لے، قرآن مجیدختم کرلے، توفیق ہوجائے توعمل کرلیما ورنہ یڑھنے میں کیا حرج ہے؟ مگراس کا ایک ہی جواب کہنیس بیقر آن نہیں جائے۔ یہ قرآن تومسلمان كوصرف خواني كرنے، لذو كھانے اور جائے پینے كے لئے جاہے، یردے کے لئے بیقر آن تھوڑا ہی گھر میں رکھا ہوا ہے۔اس مسلمان سے یو چھتے تمہارا

اسلام ہے کہاں؟ مرے دیکھنا شروع کرتے ہیں ایزی تک کوئی بات اسلام کی نظر نہیں آئی ، آخر بیاسلام کہاں چھپار کھا ہے،صورت مسلمان کی ندمیرت مسلمان کی گر دعویٰ اسلام کا بحثق رسول کا ، اور اسلام بھی وہ چاہئے جے بین خود پیند کرے، قرآن کی وہ ' آیات ، رسول صلی امتدعلیہ وسلم کی وہ احادیث جو اسے اچھی گتی ہیں مزے دار معلوم ہوتی ہیں، خوب یادر کھتا ہے۔

اتائ كى بغير محبت كے دوئ برگز تبول نہيں، ارش د ب: ﴿ قُلُ إِنْ كُنْتُمْ نُعِبُونَ اللّهُ فَانَّيْعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبْكُمْ ﴿ وَاللّهُ عَفُودٌ دَّحِيمٌ ﴿ ﴿ ﴾ (٢-٢٦) تَتَوَجَمَكَ: '' آپ فرماد بجئ كراگرتم القد تعالى سے محبت ركھتے ہوتو تم لوگ ميرا اتباع كرد القد تعالى تم سے محبت كرنے لكيس كے اور تمہارے سب گناہوں كو معاف كرديں كے اور القد تعالى بن سے معاف كرنے والے

ایک حدیث کی تشریخ:

ہیں بردی عنایت فرمانے والے ہیں۔"

کسی نے فون پر کہا: ''حدیث میں ہے کہ آخر زمانے میں اسلام کے آگر دسویں حصے پر بھی مگل کرلیا تو نجات ہوجائے گی' میں نے کہا یہ حدیث پڑھ پڑھ کرلوگ بغلیں بجارہ ہوں گے کہ بس کا میاب ہوگئے چلے گئے جنت میں، دسویں جصے پر تو عمل ہودی رہا ہے، اب کیا ضرورت ہے گناہ چھوڑنے کی، زیادہ محنت کرنے کی، شاید سب مسلمانوں نے یہ حدیث یاد کررکھی ہوگی اور خوب خوشیاں مناتے ہوں گے اسے پڑھ کر، من لیجئے کان کھول کر کہ اس حدیث میں جس اسلام کے دسویں جھے کا ذکر ہے یہ وہ اسلام نہیں جہ والقد تعالیٰ نے اپنے روالسلام نہیں جہ والقد تعالیٰ نے اپنے روالسلام مراد ہے جوالقد تعالیٰ نے اپنے رسول صلی الله علیہ دسلم پر اتارا جے رسول الله صلی الله علیہ وسلم نے امت پر پیش کی

محابد کرام رضی الله تعالی عنبم، ائد دین رحم الله تعالی نے اس برعمل کرے دکھایا وہ کائل داکمل دین مراد ب، طاہر ب آئ کے کی کال متنی پر بیز گارسلمان کاعمل بھی اس اسلام کے دمویں جھے پرنہیں،عوام کی بات تو حجوز ہے! یہوج سوچ سوچ کر بغلیں نہ بجائیں کہ ہم دسویں جھے برعمل ہیرا ہیں البذا جنت ہاتھ ہے کہیں نہیں جاتی یہ خیال ذ بن سے نکال دیجے، درویں جھے برہمی ممل کرنا کوئی آسان بات نہیں، جارسوسال يهل حفرت مجدد الف الى رحد الله تعالى في فرمايا كدا كرآج كوئى صحابى ونيايس زنده بوكرا جائة وه أن ع مالات وكيوكر كم كاكرونياش اس وتت كوئى بمى مسلمان نہیں،سب کافر ہیں، کس میں ایمان کا ذرہ نہیں اور دنیا والے بیکہیں مے کہ بیکمل طور ر یاک ب،ال شی عقل کا ذرہ مجی نیس، بیآن سے جارسوسال پہلے کی بات ہاں دتت كا اندازه خودكر ليج بردن تباى كى طرف جارها ب، بررات تزل مي جارى

بعثال کتے یں کرمبت ہم سے برسب پکو کرواری ہے، مجت کی سوئی کہیں چھونے تو دیجے: ذرا دکھا ہے تو سمی ! بداسلام ہے کہاں؟ مبت کا آپ نے کون سا امتحان دیا کرانشدتعالی نے آپ کوکامیاب قرار دے دیا؟ اگر کوئی دیوی کرتا ہے تو مجھے نبض دکھادے دومنت میں بتا جل جائے گا کہ کتنے یانی میں ہے؟ اللہ تعالی فکر آخرت عطاء فرائیں، دھیری فرائیں، اس کی دھیری کے بغیر کھٹیں ہوسکا۔ یہ دویا تیں موتئں۔ ہوتئیں۔

تسري دجہ يه و على ہے كہ شايدكوئي كينے والا كهه دے بميں محبت ہے تو نہيں مر مبت پیدا کرنے کے لئے آپ ملی اللہ علیہ وسلم کی مجت کی نقل اتارتے ہیں، شاید اس طریقے سے مبت پیدا ہوجائے۔اس کے بھی دوجواب ہیں، ایک توبیر کہ اگر آپ واقعۃ مبت پیدا کرنا جاہے ہیں تو چرمبت پیدا کرنے کے وہ نیخ کیوں نہیں استعال کرتے جوالله تعالی اوراس کے مبیب ملی الله علیه وسلم نے بیان فرمائے ، محابه کرام رضی الله تعالی عظیم نے ائر دین رحم اللہ تعالی نے ان پر مل کیا اور اپ دلول کو مجت سے لریز کیا اس بھی جو سلمان کی مجت پدا کرنا چاہ تو اس کے لئے وہی نئے ہیں، المحدث آپ سنتے رہتے ہیں، بہ المحدث آپ سنتے رہتے ہیں، بہ المحدث آپ سنتے رہتے ہیں، بہ المحدث کو اندہ تو ہرآ نے والا حاصل کری لیتا ہے، بہت بن کئی، کمل طور پر نہ سمی کی نہ کی فاکدہ تو ہرآ نے والا حاصل کری لیتا ہے، بہت سول کی صورت مسلمان کی می بن گی، سیرت بھی ان شاء اللہ تعالی بن جائے گی۔ تو ایل طرف سے محبت کے نئے لئے ایجاد کرنے کی کیا ضرورت بیش آئی جب کہ اللہ تعالی اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم نے جرب نئے بیان فر اور یہ بحبت پیدا کرنا والی اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم سے محرطریقہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا چھوڑ کر اپنا والی اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم سے محرطریقہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا چھوڑ کر اپنا ور اس بی رسول صلی اللہ علیہ وسلم سے محرطریقہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا چھوڑ کر اپنا

دومراجواب یہ ہے کہ اگر آپ واقتی مجت پیدا کرنے کے لئے قل اتارہ ہیں ہے اس نے ان سے طریعے آزمارہ ہیں و ہمیں کوئی ایک خض ایبا الکرد کھا دیجے ! جس نے ان جلے جلوسول کی وجہ سے گناہول سے قوبہ کرلی ہو، اللہ تعالیٰ اور اس کے طبیب صلی اللہ علیہ دسلم کی نافر مائی سے باز آگیا ہو، نیز تو جب استعال کیا جاتا ہے کہ اس کا اثر بھی ہواس سے فاکدہ بھی پنچے، ان جلے جلوسول کے بنتے جس، میلا دول کے بنتے جس، کوئی ایک فض می ایسا دکھا دیں جس نے سالہا سال کے بعد ان کے ذریعے کوئی گناہ چھوڑا ہو، صرف ایک فخص دکھا ہے جس نے صرف کے بعد ان کے ذریعے کوئی گناہ وں مرف ایک فخص دکھا ہے جس نے صرف ایک گناہ وں بھی اس افاقہ ہوگیا ہو، ہرگز نہیں دکھا سکتے ، ایسے تو بہت لمیس کے جن کے گناہ وں بھی اس اضافہ ہوگیا ہو، ہرگز نہیں دکھا سکتے ، ایسے تو بہت لمیس کے جن کے گناہ وں شرف ایک گناہ وں سے میرے دل پر ایبا اثر ہوا کہ جھے ذھونڈ سے بھی نہ سلے گا جو کیے کہ ان ہنگاموں سے میرے دل پر ایبا اثر ہوا کہ جھے دان گناہ چھوٹ کیا۔

یہ تین وجیس موکئیں کہ ثواب مجھ کر کرتے ہیں، عبت کراتی ہے یا عبت پیدا

کرنے کے لئے ایبا کرتے ہیں،مزیر تحقیق کے، نتیجے میں ورکوئی وجہ کسی کے سامنے آئے تو مجھے بتائے میں منتظم ہوں۔

میں نے جب غور کیا تو سمجھ میں آیا کہ لیہ تینوں دہمیں میں، تینوں دعوے غلط ہیں پھرآ خرابیہ کیوں کرتے ہیں؟اس کی بھی تیں جہیں ججو میں آتی ہیں:

ایک تو به که شیطان دین کا مقابلهٔ برار ، ہے که امالا تعالیٰ کی عکومت کوشلیم کرلیا تو مصیبت میں بڑجاؤگے، بروہ کرنا بڑے گا. بہنائی ، تندوئی، پچازاد، خالدزاد اورسارے زاد چھوٹ جائیں گے، ساری دنیا ہی چھوٹ جاے گی ،اس لئے آسان کی بات بیہے ، كها ين حكومت بنالو_

ایک سیاسی لیڈر نے ایک مرنبہ شور محایہ ک ملک بین شرکر بہت گراں ہوگئ ہے، مقصد ریرتھ کہ جمیں اقتدارال جائے تو شکرسٹ کردیں گئے، شکرسٹی کرنے کا نسخہ مد ہے کہ ہمیں ووٹ دو، آج کے مسلمان کو شیطان نے مہتمجھا دیا کہ اللہ کی حکومت تو مشكل سے اس كوتسليم كرليا تو مشكل ميں يز جاؤ يّر، زين بن مكومت بنالو، لگاؤنعرے، نكالوجلوس، كھاؤ مٹھائياں اور بن جاؤ كيےمسلمان عاشق رسول۔

دوسري وجديد بحق مين آتى ب كدخودكود طوة دينا جائية بين كدويسي تومسلمان بننا بہت مشکل کام ہے ندصورت مسلمان کی ندیرت مسلمان کی چرکیے مجھیں کہ ہم بھی مسلمان بین ارے لگاؤنعرے، کروہنگاہے،خوب نام پیدا کردبس بن گئے مسلمان۔ عملاً مسلمان نہیں نتے توجیئے یوں ہی سہی۔

تیسری وجہ یہ ہوسکتی ہے کہ اللہ تعالی اور اس کے حبیب تعلی اللہ علیہ وسلم کو دھوکا وینا جاہتے ہیں، منافقین کا کرور اداء کررہ ہیں، جن کے بارے میں الله تعالی

﴿ يُخْدِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِيْنَ 'امَّنُواْ ٢ ﴾ (١-٩)

تَكْرَجُهَكَ: "حالب زى كرتے ميں اللہ تعالى سے اور ان اولوں سے جوايمان

لاچکے ہیں۔''

یادر کھئے! اللہ تعالی کو دعوکا دینے کی کوشش کرنے والوں کے لئے اللہ تعالیٰ کا کیا

اعلان ہے؟

﴿يُخْدِعُونَ اللَّهُ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ٢ ٢٠١٠)

ی سزاان تودیئے والے ہیں۔ دوسری جگد فر ماتے ہیں:

﴿ وَمَكُرُوا مَكُرًا وَمَكُونَا مَكُرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۞﴾

(o.=YY)

تَنَوَيَحَكَدُ "اورانهوں نے ایک خفیہ قدیر کی اور ایک خفیہ تدییر ہم نے کی اور ایک خفیہ تدییر ہم نے کی اور ان کو خربھی نہ ہوئی۔"

اورفرمایا:

﴿ وَمَكُووْا وَمَكُو اللّٰهُ * وَاللّٰهُ خَيْدُ الْمُكِوِيْنَ ۞ ﴿ ٣-٥٠) تَتَرَيَحَكَنَدُ "اوران لوگول نے خفیہ تدبیر کی، اور الله تعالی نے خفیہ تدبیر فرمائی، اوراللہ تعالی سب تدبیرین کرنے والوں سے اجھے ہیں۔ "

آج کل کے مسلمان کی حالت:

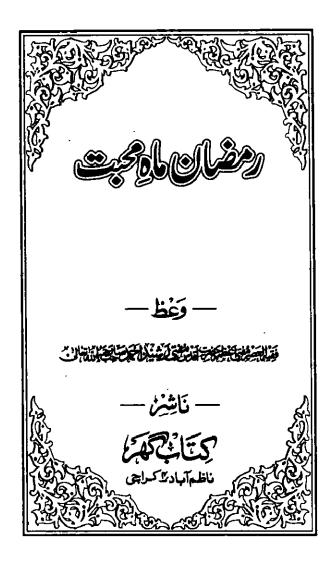
کچھ لوگ سفر میں جارہ تھے کھانے کا وقت آیا کہنے گے کام تقیم کرلو، کوئی سوختے کے لئے کلائی لائے، کوئی بائی اے، سوختے کے لئے کلائی لائے اور کوئی آٹا گوندھے، کوئی سالن پکالے، ایک سے کہا آپ جلانے کے لئے کلزیاں لئے آئیں، وہ کہنے لگا سے کام جھے سے نہیں جو پاتا، کہن کا باتھ جس جات، پائی زیادہ پڑجائے گا، اچھا سالن بی پکالو یہ جی نہیں جات جل جاتے گا، اچھا سالن بی پکالو یہ جی نہیں جات جل جات جل جاتے گا، اچھا سالن بی پکالو یہ جی نہیں جات جل جاتے گا، اچھاروٹی پکالو کہنے لگار ق

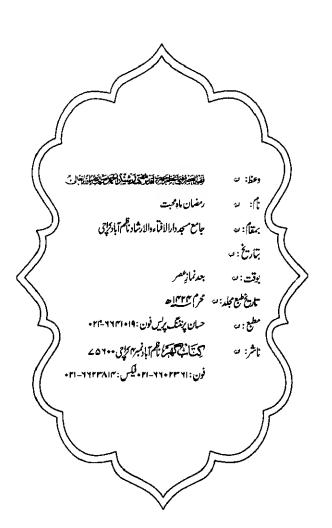
بہت مشکل کام ہے جل کرمر جاؤں گا، جب سب پکھ تیار ہوگیا تو ساتھیوں نے کہا اچھا کھا تو لو، کینے لگا یارتم بھی کہو کے کہائیا تالائل ہے کس کام کائیس دوسرے کام تو کرند سکا چلو بیکام تو کردی نوں۔

آئ بین کیفیت مسلمان کی ہے اور تو دین کی کوئی بات ہے تیس، ندمسلمان کی صورت، ندشری پردہ، ندحلال کی کمائی، نداور کوئی عمل، چلو بیکھانے پینے اور نعرے بازی کا وحندا تو افتدار کری لو۔

ب الله! تو ہم سب کو ہدایت عطاء فرما، کچی محبت عطاء فرما، محبت کے میچے نسخے استعمال کرنے کی تو نیٹی عطاء فرما۔

وصل اللهم وبارك وسلم على عبدك ورسولك محمد وعلى اله وصحبه اجمعين. والحمد لله رب العلمين.





وعظ

رمضان ماه محبت

(۲۹رزى الحبه ٢٠١١هـ)

الحمد لله نحمده ونستعینه ونستغفوه ونؤمن به ونتوکل علیه ونعود بالله من شرور انفسنا ومن سیأت اعمالنا من یهده الله فلا مضل له ومن یضلله فلا هادی له ونشهد آن لا آله آلا الله وحده لا شریك له ونشهد آن محمدا عبده ورسوله صلی الله تعالٰی علیه وعلی اله وصحبه اجمعین.

اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم، بسم الله الرحمن الرحيم.

﴿ يَا يَهُمَا الَّذِيْنَ امَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى اللَّهِ الصَّيَامُ عَدُودُتٍ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَقُوْنَ ﴾ آيامًا مَعْدُودُتٍ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرُيْطًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ آيام أَخَرَ * وَعَلَى الَّذِيْنَ مُعْلِقُونَهُ فِذْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ * فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُو خَيْرًا فَهُو خَيْرًا فَهُو لَا يَعْدُو لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَيْرًا فَهُو خَيْرًا فَهُو خَيْرًا لَهُ مَا كُنْ مُنْ كُنْتُمْ

ان آیات میں دو باتمی بیان کی گئ ہیں ایک روزہ کو آسان کرنے کے نیخ اور دوسری روزہ کی حکمت۔

روزہ کو آسان کرنے کے بندرہ ننے:

مرسری نظر سے ان آیات میں روزہ کو آسان کرنے کے پندرہ ننخ سائے
آئے، ان بے بہا پندرہ یواقیت کی طرف جتنی زیادہ توجہ کریں گے اور جس قدر زیادہ
سوچس کے ای قدر روزہ آسان سے آسان تر ہوتا چلا جائے گا، اب اکسیر کیمیا تأثیر
لنخ سفے:

🗗 يا يها الذين امنوا:

تم الله تعالى پرايمان اوراس كے ساتھ مجت كے دفوے كرتے ہو، اگرتم اپ ان دفووں ميں سچے موقو تمبيس روزه كى ذراس مشقت برداشت كرنا كيول مشكل لگ ربا ہے، حبت سے قومشكل سے مشكل كام محى آسان ہوجاتے ہيں۔ بط از مجت تلخيا شيرين شود

کتب علیکم الصیام کما کتب علی الذین من قبلکم:
مشکل کام وه بوتا ہے جومرف ایک مخض کے سرڈال دیا جائے، وہ دوسروں کو

وکھ کر کہتا ہے کہ میں مصیبت میں پڑگیا، جھ پرآفت آئی۔لیکن اس کام پراگرسب کو لگا جائے کہ بیم مالت لگا جائے کہ بی الت کا لایا جائے تو وہ کسی کو مشکل نہیں لگا۔ برخض بیسوج کر الحمینان کر لیتا ہے کہ بی حالت و سب پر گذرری ہے، اس طرف متوجہ کرنے کے لئے اللہ تعالی فرما رہے ہیں کہ روزہ مرف تم پر بی فرض نما ما بیا علیم السلام پر اوران کی امتوں پر روزہ فرض تھا، جسے انہوں نے بنی خوشی بی فرض اداء کیا تم بھی اداء کرو۔اب اگر کوئی کے کہ روزہ تو بہت مشکل ہے، ہم ہے جس رکھا جاتا تو بھی کہا جائے گا کہ بیا اس کی ہے بھی کہ بو ہے ہو رہے ور کوئی تو چھے کہ جو کام ساری دنیا کے سلمان کررہے ہیں وہ تھا کیلے کے لئے کوں شکل ہوتی تر سب کے کئے ہوتی، یہ کیا کہ ساری دنیا کے لئے ہوتی، یہ کیا کہ ساری دنیا کے لئے سہل اور آسان، صرف ایک مخص کے لئے دوتی، یہ کیا کہ ساری دنیا کے لئے سہل اور آسان، صرف ایک مخص کے لئے دوتی، یہ کیا کہ ساری دنیا کے لئے سہل اور آسان، صرف ایک مخص کے لئے دوتی، یہ کیا کہ ساری دنیا کے لئے سہل اور آسان، صرف ایک مخص کے لئے دوتی، یہ کیا کہ ساری دنیا کے لئے سہل اور آسان، صرف ایک مخص کے لئے دوتی، یہ کیا کہ ساری دنیا کے لئے سہل اور آسان، صرف ایک محض کے لئے دوتی، یہ کیا کہ ساری دنیا کے لئے سہل اور آسان، صرف ایک مخص

🕝 لعلكم تتقون:

روزہ میں بیتا ثیر ہے کہ تم روزہ رکھنے سے تقی بن جاد کے اور اللہ تعالیٰ کی نافر مانیاں چھوڑ دو کے اور جو اللہ تعالیٰ کی نافر مانیوں سے پچتا ہے انلہ تعالیٰ اسے ونیا و ترت دونوں میں پرسکون زندگی مطاء فرماتے ہیں، ہر حم کی پریشانی سے محفوظ رکھتے ہیں، اتی بڑی دولت حاصل کرنے کے لئے روزہ کی ذرای مشقت برداشت کرلیما تو کیا اتی جان قربان کردینا بھی بہت ستا سودا ہے۔

مگ متاع جان جاناں جان دینے پر بھی ستی ہے

🚱 اياما معدودات:

مینتی کے چندون میں، صرف ایک ماہ، ورنہ کی احکام الله تعالی نے جالیس روز تک دیتے میں، موی طید السلام کو علم دیا گیا کہ جالیس دن روزے رکیس تو تورات فی ۔ اس طرح احادیث سے بیٹابت ہے کدرسول الله صلی الله علیہ وسلم دین فائدہ عاصل کرنے والوں کے لئے چالیس روز مقرر فرمایا کرتے تھے، مگر روزہ میں اللہ تعالیٰ نے تخفیف فرمادی، صرف ایک مہیدہ جس کے بھی انتیس دن ہوتے ہیں بھی تعیں دن۔ مریض کو انتیس انجکشن لگوائے سے بھی وہی فائدہ ہوتا ہے جو تمیں انجکشن لگوائے سے ہوتا ہے، ایک انجکشن کم کر نے ہے مرض عود نہیں کر آتا، سو بھی تمیں کی بجائے انتیس دن برہی اکتفاء کر لیتے ہے۔ بلکہ تیسویں دن عمید ہوگئ تو روزہ رکھنا جائز ہی ندر ہا، کھانا چیافرض ہوگیا۔

اب سوچے! اس نیں کیا مشقت ہے؟ سال میں گیارہ ماہ پھٹی،صرف ایک ماہ پابندی، ماہ بھی بھی انتیس زن کا اور تواب پورتے میں دن کا۔

ک فمن کان منکم مویضا او علی سفر فعدة من ایام اخر: مرض اورسفر ش روزه چهوژ دینا جائز ہے بعد میں قضاء کرے۔

🐿 فعدة من ايامر اخر:

مرض اور سفرختم ہونے کے بعد قضاء روزے فوراً رکھنا ضروری نہیں جب جا ہیں رکھ سکتے ہیں۔

🗗 فعدة من ايامر اخر:

تفناءروز مسلسل ركهنا ضروري نبيس متفرق طور برجمي ركه سكته جير-

🐼 وعلى الذين يطيقونه فديه طعام مسكين:

اس کی تغییر میں مختلف اقوال ہیں بہر صورت مسئلہ یوں ہے کہ جو محف کسی مرض یا بر ها ہے کی وجہ سے روزہ کی قدرت نہ رکھتا ہواور آیندہ بھی تا حیات قدرت ہونے کی توقع نہ رہی ہووہ روزہ نہ رکھے اس کا فدید دے۔

- وان تصوموا خیر لکم ان کنتم تعلمون:
 دوزے نیاو آخرت کے بے بہافا کدے اوراس کے اجمعظیم کو موجا کرو۔
- 🕜 شهر دمضان الذي انزل فيه القران هدى للناس وبينت

من الهدى والفرقان:

ماہ رمضان اس لئے بھی بہت مبارک ومقدس ہے کہ اس میں قرآن ناز ل ہوا ہے جوسر چشمہ ہدایت ہے اور دنیا و آخرت کی ہر خیر و بہبود، صلاح وفلاح اور سکون و راحت کا ذریعہ ہے۔

🐠 يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر:

الله تعالی این بندول پر بهت مهربان ہے وہ اینے بندول کو بہت آسان احکام ویتا ہے مشقت میں نہیں والیا۔

ولتكبروا الله:

الله تعالیٰ کی عظمت و کبریائی بیان کرنے سے دلوں میں اس کا خوف اور محبت پیدا ہوتے ہیں جن سے احکام بڑعمل کرنا آسان ہوجاتا ہے۔

🕡 على ماهدبكمر:

الله تعالیٰ کی طرف سے ہدایت کی نعمت کوسوچنے سے اس کے ساتھ محبت بڑھتی ہے جس سے اس کی نافر مانی جھوٹ جاتی ہے اور اطاعت کی توفیق ملتی ہے۔

ولعلكم تشكرون:

الله تعالى كى نعتول كاشكراداء كرنے سے محبت ميں ترقى ہوتى ہے جس كى وجه

ے معصیت سے نفرت اورا طاعت کے جذبات ابجرتے ہیں۔

ان آیات کے بعد دوسری آیت می فرمایا:

﴿ وَكُلُواْ وَاشْرَبُواْ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَعْنُ مِنَ الْخَيْطِ الْآسُودِ مِنَ الْفَجْرِ صَ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى الْيُلِّ﴾ (٢-١٥٧)

لینی دمضان میں کھانے چنے کی پابندی صرف دن میں ہے، دات کو دمضان میں بھی چیٹی، کملی چھٹی، جو میا ہوکرو، خوب مزے اڑاؤ۔

روزه کی حکمت:

الله تعالى في روزه كى تحمت بدار شاوفر ماكى: ﴿ لَعَلَّكُمْ مُ تَتَّقُونَ ﴾

تم متنی بن جاء الله تعالی کی نافر مانعوں سے پاک وصاف موکر دنیا و آخرت دونوں میں عزت، راحت اور سکون کی زندگی پاؤ۔

روزه حصول تقوى كاقديم ترين نسخه:

روزہ اللہ تعالی ہے مجت پیدا کرنے ، اس کی نافرہانیاں چھڑانے اور ایس کے عذاب ہے اللہ علیہ کا میں میں اللہ میں اللہ میں اللہ میں میں میں قبل کھڑ کھٹے کہ تنقون کی (۲-۱۸۳)

ین روزے تم پرفرض کے مے چیے پہلی احتوں پرفرض کے مے شے تاکہ نافر مانی سے باز آ جاوء گناموں کے چیزانے کا برنسٹرکوئی نیانسٹیٹیں بلکہ بہت پرانا ہے، صدیوں کا آ دمودہ ورامل تی تحقیق نے لوگ ذرا ڈرتے ہیں۔ یاد موکا کہ بچھ مرصد پہلے دہنسلین ' بازار بین نی آئی تو ڈاکٹروں نے اس کی بہت تعریقیں کیس کہ بیددوا بالکل بے ضرر ہے اوراس بی استے متافع ہیں، استے فوائد ہیں گر الٹا فائدہ ساسے آیا کہ اس سے کی لوگوں کی موت واقع ہوگئ، جائے شفاء دینے کے نوگوں کے لئے پیغام موت بن کر آئی، اب وہی ڈاکٹر صاحبان ہیں، گلا چاڑ چواڑ کرلوگوں کو روک رہے ہیں۔''ارے بیددا خطرناک ہے، بڑی مہلک ہے۔ بچواس سے، دور بھا گواس سے "مویہ ہیں آن کل کی جدید تحقیقات!

ے ویدین ان من م جدید صفات، لوگوں کوکی چیز کی اہمیت جمانے اور اس پر مطمئن کرنے کے لئے کہتے ہیں کہ بیکو کی خیز نہیں، قدیم زمانے سے چلی آری ہے، پرانی چیز سے کسی کوخطرہ محسوں نہیں ہوتا، قدیم سے آنے والی اشیار دنیا کی مسلمات میں شار ہوتی ہیں۔

اس کے فرمایا روزہ میں محناہ چیزانے کی تأثیر، محناہوں سے نیچنے کا تیر بہدف علاج بہت قدیم ہے کوئی نیاعلاج نہیں جوابھی کسی نے دریافت کیا ہو۔

صديول كالمجرب نسخهز

روزه مدیول بلکہ بزارون سالوں کا محرب نسخہ ہے۔ جو چیز بھٹی قدیم ہواتی ہی مجرب ہوتی ہی مورق ہی ہواتی ہی مجرب ہوتی ہی محرب ہوتی ہی محرب ہوتی ہی مدر کی نیخہ ہیں مدر کی نیخہ ہی مدر کی نیخہ ہی مدر کی نیخہ ہی مدر کی نیخہ ہی افلاطون سے بھی قدیم ہے، جسمانی نسخوں اور دوا دُس کی تحقیقات تو انسان کرتے ہیں، برطبیب اپنی اپنی تحقیقات تو انسان کرتے ہیں، برطبیب اپنی اپنی تحقیقات کی روشی میں دھوں کی افادیت اور اہمیت کے دوے کرتا ہے کی سے میں موسلے کی افادیت اور اہمیت کے دوے کرتا ہے ایکن سے گاناہ چھڑا نے کا نسؤ کی تحقیم یا ذاکر کا تجویز کردہ نہیں، انسان کا قدیم عالم مال کی تحقیقات ناتما ماور دوے می کھو کھا، بینسونو خال کا نات کا بیان فرمودہ ہے، وہاں کا نات کا بیان فرمودہ ہے، وہاں کے ناخ اور شفا بخش ہونے کا دوگی کررہے ہیں، ان سے بردھ کرکی کا علم کا ل

﴿ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ١ ﴾ (١-٨١)

بینسخد الندتعالی کا بتایا ہوا ہے۔اس کے نافع ہونے میں کسی شک وشبه کی گنجائش نہیں، ونیا کے ہرانسان کے لئے سرایا شفاء ہے جو تخص حیاہے تجربہ کرکے وکھے لے، بس تج بہ شرط ہے، روزہ رکھ کر دیکھواور گناہ چھوڑنے کے قصد ہے رکھو، ہمت بیند کر کے رکھو، مچر دیکھو گناہ چھو نتے ہیں پانہیں؟ ہزار باسال ہے جس نسخہ کا تج بہ، وتا آ رہا ے،استعال کرنے والے شفایاب ہوتے آرہے ہیں وہ آپ کے حق میں کیسے بے اثر بوگا؟ اگر اثر نہیں ہوتا تو استعال کرنے والے ہی میں نقص ہے، نسخد کال ہے، مجرب ہے، بار بار کہدر ماہوں کہ گناہ چھوڑنے کی نیت سے بدنسخہ استعمال کر کے ویکھتے، یہ لازی شرط ہے،اس کے بغیر فائدہ نہیں ہوگا،اس نیت سے روز ہ رکھیں، بس آخری عشره تك ان شاء التدنولي "النجاة من النار" كا فيصله بوجائ كا،صرف نارآ خرت ہے ہی نہیں بلکہ ونیا کی جہنم ہے بھی ان شاءاللہ تعالی نجات یا جائیں گے۔ ﴿ آيَّامًا مَّعْدُودَاتِ ﴾

یعنی بینسخ اسمیر ہے چند دنوں میں ہی ابنا اثر دکھا دیتا ہے، آج کل ڈاکٹری علاج تو آپ لوگوں کومعلوم ہی ہے، شاید ہی کوئی مرض ہوجس کا ایک دو ماہ میں علاج ہوجاتا ہو ور نہ ڈاکٹروں ہے جس مرض کا بھی علاج شروع کروائیں سال بھرتو ضرور تھسیٹیں گے، ان کی دوائیں کئی ہاہ بعد یا سال بھراستعال کرنے کے بعد فائدہ دکھاتی ہیں بلکہ بعض دوائیں تو مدۃ العمر استعمال کرنا پرتی ہیں، دواءخود مرض بن کر گلے لگ جاتی ہے گرانندنق کی نے جہنم ہے بیچنے کا جونسخة انسير بندوں کوعطاء فرمایا ہے وہ نہ سال کا ہے نه جار ماه کا،صرف ایک ماه کاقلیل المیعا دنسخه ہے،مبھی تمیں دن بعد اور بھی آئیس دن بعد تمل شفایاب ہونے کی صانت ہے، یابندی سے مہینہ بھراستعال کریں اور معالج کی مدایت کے مطابق استعال کریں، جنم کی گہرائیوں سے نگل کر جنت کے محلات میں، حوروں کی آغوش میں پہنچ جائیں، ان کے کرم کے کیا کہنے! بیہ فائدہ تو عمر بھر

روزے رکھنے سے حاصل ،وتا جب بھی سوداستا تھا، گراییانہیں، مہریان مالک نے بندوں کے لئے صرف چندون کا نسخہ رکھا ہے: "ابگامًا مُعَدُّودُدات، لیمی گنتی کے چند دن بیل۔ اگر بین غفلت بیس گذار دیے تو پھر پچھتاوے کے سوا پچھ حاصل نہ ہوگا۔ ہوشیار مہو، یہ چندون بیں جوکرنا ہے، ان میں کرلو۔

ظَ عَيا وقت كير باته آتا نهين

جیسے کی شہر میں کسی مرض کا ماہر سپیشلسٹ آگر ڈیرہ لگائے اور اعلان کردے کہ فلال تاریخ ٹنگ یہبال ہوں جو مریض چاہ مجھ سے علاج کرائے، پھر ویکھے کیسی بل چل چچ جائے گی! آگر کوئی مریض ان ایام میں بھی سستی کرے گا تو تمام لوگ! سے لعن طعن کریں گے۔ ارے! تو تو اپنی جان کا دشمن ہے، ایسے سنہری موقع ہے بھی فائدہ نہیں اٹھا تا، پکڑ کراہے ڈاکٹر کے سامنے چش کردیں گے۔

ا تمتع من شميم عرار نجد فما عرار فعد عرار

نجد میں ایک خوشبودار بوئی ہے جس کو "عرار" کہتے ہیں جس کی خوشبواور مہک صرف دن دن میں رہتی ہے، رات میں نہیں ہوتی۔ جیسے ہمارے ہاں دن کا راجہ صرف دن میں خوشبو و یہ ہے۔ شاعر کہتا ہے کہ اس بوئی سے جو نفع اٹھانا چاہے، لطف اندوز ہونا چاہے وہ دن دن میں نفع اٹھانے، لطف اٹھائے، آ فاب غروب ہوتے ہی خوشبو ختم ہوجائے گی، بعد از وقت کی کو توجہ ہوئی تو ندامت اور حسرت کے سوا کچھ نہ یا گئا۔

عشرة اخيره كي ابميت:

الله تعالی فرمات میں گناہ بخشوانے کے سے چنددن میں گنتی کے،ان کی قدر کرو! ان گنتی نے دنوں میں بھی آخری عشرہ کو خاص اہمیت حاصل ہے، اے "المنجاۃ من الناد" فرمایا گیا ہے، اس میں اعتکاف کی مشر و نیت بھی اس "النجاۃ میں الناد" کی ایک دلیل ہے، پہلے دونوں عشروں میں جس نے گناہ چھوڑنے کی نبیت ہے روزے رکھے، گناہ چھوڑنے کی نبیت سے روز ب رکھے، گناہ چھوڑنے کی نبیت کا سامان کرلیا، اب اس قابل ہے کہ ان کے دربار یعنی مبحد میں آئر مستقل ڈروہ لگا لے، گناہوں کی نجاست وطل گئ، پاک صاف ہوگے، اب آؤ کہ ادرے دربار میں، ان کی رحمت و کھتے، عمر بھر کے گناہوں کی آلودگی ہیں دن میں معمول تی مستقت اور کڑائی سے زائل کردی، سالم سال کی گندگی ہیں روز میں دھل گئی، پاک صاف ہوگے، صرف پاک بی شہیں مالم سالم باللہ کی گندگی ہیں روز میں دھل گئی، پاک صاف ہوگے، صرف پاک بی شہیں دور بار کے قابل ہی بن گئے۔

اعتكاف عشق كالظهار:

یہاں ایک بات سوچ لیجئے، معتلف خاص طور پر اے سوچ کداعتکاف میں بینے کر بظاہرتو اس کا اعلان واظہار کررہا ہے کہ ساری دنیا ہے ہے گاشہ ہوکر، سب سے کر صرف مالک کا ہوگیا ہوں اس کی نافرمانی کا خیال تک دل سے نکال دیا ہے، بس اب تو ایک ہی در پکڑ لیا ہے، اس پر دھرن دے کر بیٹے گئے، لیکن ان تمام باتوں کے بیٹس اگر معتلف نے گناہ نہ چھوڑ ہے تو بتا ہے اس سے برا دنیا بازکون ہوگا؟ دھوکا بھی کس سے کررہا ہے؟ اللہ تعالی ہے! سوچۂ اللہ تعالی اس سے بیا وجھیں گے بانہیں؟

کے مردود! دنیا میں مجھے دھوکا دیتا رہا، دکو ہے پچھ تھے اور عمل پچھ تھا؟ اعتکاف بیٹے کر بظاہر بزرگ اور پارسا بن کر در پردہ ہماری نافر مانی کرتا رہا، بغاوت کرتا رہا؟ اللہ تعالیٰ یہ بوچے لیس تو معتلف کے پاس اس کا کیا جواب ہوگا؟ ان کے سامنے سرخرہ ہونے کی تو صرف ایک ہی صورت ہے کہ ان کی تافر مانی مچھوڑ کر، بغاوت مچھوڑ کر میجے معتی میں بندگی افتیار کی جائے۔ باتی جوصورت افتیار کریں گے دھوکا ہی دھوکا ہے، اپنے سے مجمی دھوکا، اللہ تعالیٰ سے بھی دھوکا، اللہ تعالیٰ بچائیں اس دھوکے سے، اس فریب سے۔

ايك غلط بمي كاازاله:

عام خیال بیہ کہ جس نے روزے رکھ لئے اس کی مغفرت ہوگئی، یہ خیال سیح خبیں بلکہ رمضان میں بعض لوگوں کی مغفرت ہوجاتی ہے بعض کی نہیں ہوتی، مغفرت حاصل کرنے کے مچھ نسخ میں، اگر انسان وہ نسخ استعال کرے تو مغفرت ہوجاتی ہے اور نسخ استعال نہ کرے تو مغفرت نہیں ہوتی۔

ای طرح ایک غلط منہی سے پھیلی ہوئی ہے کہ جس شخص نے لیلۃ القدر کو پالیاس کی مخرت ہوگئ، اس لئے ستائیس کی صبح کولوگ ایک دوسرے سے لوچھے رہتے ہیں کہ آپ کو کھھ بتا چلا؟ لیلۃ القدر آج تھی یانہیں؟ لوچھے ایسے ہیں جیسے سارے ہی جنید بغدادی ہیں تھے ہوئے ہوں، جمعے بھی ایک بارکی عورت نے ٹیلیفون پر بتایا کہ اس نے آخ رات لیلۃ القدر دیکھی ہے، اپنے خیال میں بہت بڑی ولیۃ اللہ گویا رابعہ بھر یہ نیٹیمی تھی، لیلۃ القدر دیکھی ہے، اپنے خیال میں بہت بڑی ولیۃ اللہ گویا رابعہ بھر یہ نیٹیمی تھی، لیلۃ القدر پا بھی کی تو اس کی قدر نہیں لیوچھے بھی رہتے ہیں، ایک دوسرے سے کرتے، گناہوں میں ویسے ہی گھرے رہے ہیں، سے دل سے تو بہیں کرتے، معلوم کرتے، گناہوں ہی والے اور گناہوں پراصرار جاری رکھنا بڑی محوم محروم کی بات ہے، ذرا سوچیں جو رات ہے، مخفرت اور نجات کی رات اسے بھی

ضا كع كردينا اوراس ميں اپني نجات كا سامان ندكرناكيسي بدختي ہے؟

اب ایک کلتہ کی بات بھی مجھ لیس کہ عام طور سے کیلۃ القدر کو ڈھونڈ نے، پانے کا شوق، کثرت سے جج وعرہ کرنے کا شوق، رسول الشعلی اللہ علیہ وسلم کے روضہ منورہ کی زیارت کا شوق، خواب میں رسول الته علیہ وسلم کی زیارت کا شوق، یہ چارول شوق دین داروں کی بہنست بے دینوں میں زیادہ پائے جاتے ہیں، تجربہ کر لیجئے جو جننا ہے وہ بن ہوگا اس میں یہ چارول شوق ای قدر زیادہ ہواں گے، خواب میں رسول الله صلی الته علیہ وسلم کی زیارت کے لئے آپ سے ذکر پو چھے گا، کابوں میں کھے ہوئے وظیفہ تلاش کرے گا، آئیس پورے اہتمام سے بوطے گا، ایب معلوم ہوتا ہے کوشق میں مرابی جارہا ہے، ایلیۃ القدر کی تلاش میں تو مست وسرشار اس ایک بی دفیفہ جیب رہا ہے: لیلیۃ القدر الیا تا القدر!

اس کی تفصیل تو ان شاء القد تعالی بعد میں بتاؤں گائی الحال اتناہی کہتا ہوں کہ آپ لوگ بھی تجربہ کر کے دیکے لیں، یا کسی سے بوچھ کر تحقیق کرلیں، حرمین شریفین میں جولوگ بہت شوق ہے جاتے ہیں ان میں بہت بزی تعداد ہے دین لوگوں کی ہوئی ہے، بعض عور تیں تو بالکل بے پردہ بلکہ نگی دہاں پہنی جاتی ہیں، دین دارلوگ وہاں استے نہیں جاتے میں فکر آخرت میں ڈو ہے ہوئے دین دارلوگ وہاں استے حالت ان سے مختلف ہوتی ہے، وہ اس تسم کے شوق اور آرزو کیں باندھنے کی بجائے حالت ان سے مختلف ہوتی ہے، وہ اس تسم کے شوق اور آرزو کیں باندھنے کی بجائے اپنی ساری آرزو کیں اپنی تمام ترقو تیں اس بولیا تند تعالیہ وہ ہو گا کے بعد جانا ہوتی ہو بات میں رسول القد صلی القد علیہ وہ کی خوا کے اس کی پوری توجہ اس کے بعد جانا ہو، اس شم کی غیر افقیاری باتوں میں برنے کی بجائے ان کی پوری توجہ اس پر مرکوز ہو، اس شم کی غیر افقیاری باتوں میں برنے کی بجائے ان کی پوری توجہ اس پر مرکوز رہتی ہے کہ ہم ہے کہیں رسول القد صلیہ وہ ہے ہیں، ان کا طم خی نظر ہر قیمت پر اللہ تعالی اور رہتی ہے کہ ہم ہے کہیں رسول القد صلیہ تعلیہ وہم کی نافر ہائی صادر شہو، وہ آپ صلی القد علیہ وہم کی نافر ہائی صادر شہو، وہ آپ صلی القد علیہ وہ اس کی مضا کو ہر چیز پر مقدم رکھتے ہیں، ان کا طمخ نظر ہر قیمت پر اللہ تعالی اور اللہ علیہ وہ اس تھی۔ کے ہم ہے کہیں رسول القد صلی القد علیہ وہم کی نافر ہر قیمت پر اللہ تعالی اور القد علیہ وہ اس تھی۔ کے ہم ہے کہیں رسول القد صلیہ وہیں، ان کا طمخ نظر ہر قیمت پر اللہ تعالی اور

اس کے حبیب صلی التدعلیہ وسلم کی رضا حاصل کرنا ہے، دین دارلوگوں کا یہی شوق ہوتا ہے، آنہیں ہی ایک دھن ہوتی ہے کہ ہمارامحبوب راضی ہوجائے۔

اویر جوغلط فہمی بتائی ہے اس کی وجہ ایک حدیث کا صحیح مطلب نہ سمجھا ہے، وہ مديث يه إ

''رسول التُدصلي التُدعليه وسلم نے ارشاد فرمايا كه رمضان كے يہلے دس ون رحمت کے ہیں، ج کے وال ون مغفرت کے ہیں اور آخری وال جہنم سے نحات کے ہیں۔ " (ابن فزیمہ، پہلی)

يبال شايد كسى كواشكال مواور ندبهي موتو الله تعالى كي رحمت اورانعام كي باتيس س كرىيا شكال موسكتا ہے كه يہ جوفر مايا كه "آخرى دى دن جہنم سے نجات كے بين " ووتو ضروری نہیں کہ وس بی دن ہوں، بھی نو ہوتے ہیں اور بھی دس۔اس کا جواب یہ ہے كەبدانلەتغالى كى رحمت بے كەرمضان كا آخرى عشروخوا دون كا ہويا دس دن كا، يعنى رمضان کا مہینہ خواہ تمیں دن کا ہو یا انتیس دن کاءان کی بارگاہ میں، ان کے دفتر میں پورے تیں دن ہی لکھے جاتے ہیں۔ کیا کہنے ان کی رحمت کے۔ رکھیں آپ انتیس روزے وہاں لکھ دیئے جاتے ہیں پورتے تیں، تواب آپ کو پورتے تیس کا ہی ملتا ہے۔ اس آخری عشرہ کے بارے میں فرمایا کہ رپیشرہ جہنم سے نجات کاعشرہ ہے۔

ا یک تو لوگ اس حدیث کا مطلب غلط سمجھ بیٹھے کہ گناہ چھوڑ نے جھٹڑانے کی کوئی ضرورت نہیں، بس جس نے روز ہے رکھ لئے اس کے سارے گناہ دھل گئے، جہنم سے نجات ہوگئی اے گناہ چھوڑنے کی ضرورت ہی کیا ہے؟

دوسرے عید کے دن جارے مولوی صاحبان جو بیان فرماتے ہیں تو سجان اللہ کیا کہنا! بیان فضائل کا اور انداز بیان ان حضرات کا، بیتو سونے برسہا گا ہوگیا، وہ حضرات عوام میں بیان فرماتے ہیں کہ عید کی رات جس نے عبادت میں گذار دی اس کے سارے گناہ معاف کردئے گئے اور جومسلمان عید کے اجتاع میں آ گئے تو وہ سارے ہی بخش دیئے گئے، کوئی ایک شخص بھی ایر انہیں جس کی بخشش نہ کردی گئی ہو،
بڑے دکھ سے کہنا پڑتا ہے کہ مید حفزات بشارت والی حدیثیں تو عوام میں بیان کرتے،
ہیں مگر قرآن وحدیث میں گنا ہوں پر جوسخت وعیدیں آئی ہیں وہ بیان نہیں کرتے،
اس کا نتیجہ میر سامنے آر ہاہے کہ عوام گنا ہوں پر دئیر ہوگئے ہیں، چنا نچہ ایک بشارتیں سن
لینے کے بعدان کے ول سے رہا سہا خوف بھی نگل جاتا ہے کہ جی بھرکے گناہ کرتے
رہوسال بعد عید کے اجتماع میں سب کچھ معاف ہوجائے گا۔

یادر کھئے! کسی آیت یا حدیث کو مجھنے کے لئے پورے قر آن اور ذخیر ہ حدیث پر نظرر کھنا ضروری ہے، یہ بات تو ہر مسلمان جانتا ہے کہ القد تعالی اور اس کے رسول صلی الله عليه وسلم كے ارشادات سارے كے سارے ہى داجب العمل بين، اس ميں كى كى مرضی نہیں چل عتی کہ قر آن وحدیث میں ہے جو یظاہر میٹھا پیٹھا لیگے و وتو لے لے اور یاتی سارے احکام نظرانداز کرد ہے، یہ جو میں کہتا رہتا ہوں کہ''جو بظاہر میٹھا میٹھا نظر آئے' بظاہر کا لفظ اس کئے کہتا ہول کہ حقیقت میں تو اللہ تعالی اور اس کے صبیب صلی الله عليه وسلم كابر برارشاد ميلها بى بيم كرجن ارشادات ميس كناه جهور في اور حيراف کی یا تمیں ہوں وہ بظاہر کڑوے لگتے ہیں اور جن میں بیہ با تمیں نہ ہوں وہ بظاہر میٹھے معلوم ہوتے ہیں، اللہ تعالی اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے سارے ارشادات سامنے رکھے جاکس توسمجھ میں آئے کہ اس حدیث کا صحیح مطلب کیا ہے؟ ایک ارشاد سجھنے کے لئے ضروری ہے کہ یرا قرآن اور بورا ذخیرہ حدیث سامنے رکھا جائے، ورندا بنی مرضی کا مطلب لے لیا جائے تو قرآن وحدیث کی نصوص ایک دوسرے ہے نگرا جائیں گی، گر آج کےمسلمان کو مہموثی سی بات سمجھ میں نہیں آتی، وہ القد تعالیٰ اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے تمام ارشادات کوچھوڑ کر چندمیشی میشی باتوں پر قانع ہوگیا ہے کہ جس نے روز ہے رکھ لئے اس کی مغفرت ہوگئی اورعید کی رات . ۔ ۱ ڑا سا حاگ لے اس کی مجھی مغفرت ہوگئی، کھرعید کی نماز کے لئے جو چلا گیا وہ تو بالکل بخشا بخشایا ہے، جنت اس پر واجب ہوگی، جان الند! مغفرت بزی سستی ہوگی!

گناه کاحمله:

میں ایک بات ہمیشہ کہا کرتا ہوں کہ گناہ کا پہلاحملہ اور اس کا پہلا وبال عقل پر پڑتا ہے۔ یہ بات یاد کرٹیں اور روزاند اسے ایک بارسوچ لیا کریں، سب لوگ وعاء کریں کہ یا اللہ! روزانہ کسی وقت بیٹھ کرہمیں پیر تقیقت سوچنے کی ہمت اور توفیق عطاء فرماوے کہ گناہ کا سب سے پہلا ارانسان ک عقل پر پڑتا ہے آپ و کھھ لیس کہ جو گناہ کرتا ہے اس میں عقل نہیں ہوتی ، اللہ تعالی کا ارشاد ہے:

﴿ نَسُوا اللَّهُ فَأَنْسَهُمْ أَنْفُسَهُمْ " (٥٩-١٩)

انہوں نے القدتعالی کو بھادیا تو انلہ تعالی نے ان کی عقل من کردی، وہ اپنے نفع ونقصان میں تمیر نہیں کر سکتے، اب دیکھے! اگر ان لوگوں میں ذرای بھی عقل ہوتی تو موق سوچتے کہ اگر عید کے دن سب کی مغفرت ہوئی تو جہنم میں کون جائے گا؟ چروہ کس کے لئے ہے؟ شاید آپ یہ کہدویں کہ یہ بیبودی، عیسائی اور ہندو سکتے جائیں گے اور دل میں خوق ہور ہے ہوں گے کہ چلئے اشکال کا جواب ہوگیا، یہ خیال سراسر غلط ہے اس کے کہ قرآن و صدیث کے ذخیروں میں جہنم سے نجات کے لئے ایمان کے ساتھ لئے کہ قرآن و صدیث میں جنح گرائی گئا ہے، علاوہ ازیں صدیث میں جاکہ بعض مومن بھی جہنم میں جائیں گے اور بعض مومن بھی جہنم میں جائیں گے اور بعض تو اپنے نکالے جائیں گے در شنق میں اگر روزے رکھ لینے اور عید پڑھ لینے سے سب مسلمانوں کی مغفرت ہوجائے تو پھر قرآن دھدیث کے ان ارشادات کا کیا مطلب ہے؟

احاديث متعلقه ترك كناه:

اگرمیری بات کا انتبار نبیس آر با تو چند صدیثین مزیدین کیجئے:

رسول اندهسلی اندعلیه وسلم نے فرمایا کہ جبرئیل علیه السلام نے بداعاء کی که یا التدا جس پر بورارمضان گذرگیا اوراس نے اپی مغفرت نہیں کروائی وہ تباہ ہو۔ جبرئیل علیه السلام نے بددعاء کی اور رسول التد صلی التدعلیه وسلم نے اس پر آمین کہی۔ (حاسم، این حبان)

اس سے معلوم ہوا کہ بہت سے لوگ ایسے کئی ہیں کہ پورا رمضان گذر جانے کے ماوجودان کی مغفرت نہیں ہوتی۔

رسول الشصلى القدعليه وسلم نے فره بيا كدرد: هجنبم سے بيجنے كے لئے و هال ہے باب! اگر كسى نے و هال كو پهاڑ والا تو جنبم نے نييں بيج گا۔ صى بد كرام رضى الله تعالى عنبم نے عرض كيا كه يا رسول القد! بدؤها أن پھنتى كيسے ہے؟ فرمايا جموث يا غيبت سے (طرانی في الاوسط مناصف)

حدیث کا مطلب بالکل واضح ہے کہ جولوگ مضان میں گناہ نہیں جھوڑتے روزہ انہیں جہنم سے نہیں بچائے گانہ ہی ان کی مغفرت ہوگی۔

سول النصلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ جوشخص روز و رکھ کر بھی جھوٹ اور جہات کے کامول سے باز نبیس آتا اللہ تعالی کواس کے بھوکا پیاس رہنے کی لوئی حاجت نبیس (بغاری، ابوداو، ترندی)

وہ دن بحر بھوکا بیاس مرتا رہے، روزہ سے جومقصد تھا یعنی مغفرت ونجات وہ مقصد حاصل نہیں ہوگا۔

رسول الشصلی التدعیدوسم کے زمانے میں دوعورتوں نے روز و رکھا، أنہیں سخت تکیف شروع ہوگی اور بیاس سے مرنے لگیس، رول الشصلی الشدعلید وسم کو اطلاع کی گئی تو آپ صلی التدعلید وسلم نے ان ت اعراض فرمایا اور پھی توجہ نہ دی، اس محتص نے دوبارہ حاضر ہوکر عرض کیایا رسول اللہ اللہ کی تسم وہ تو بالکل مر ربی ہیں۔ تو آپ صلی التدعلیہ وسلم نے انہیں بلوای، جب آئیس تو بیالے میں ربی ہیں۔ تو آپ صلی التدعلیہ وسلم نے انہیں بلوای، جب آئیس تو بیالے میں

أنبيس قے كرنے كا حكم فرمايا، جب دونوں نے قے كى تو بيالدخون، بيپ اور موشت سے مجر کیا، آب ملی الله علیه وسلم نے فرمایا ان دونوں نے الله تعالیٰ ک حلال كرده چيزول سے تو روزه زكھا محرحرام چيز (فيبت) سے افطار كيا، دونوں بیژه کرلوگوں کا گوشت کھاتی رہیں (فیبت میںمشغول رہیں)۔ (احمد وغیرہ بند نیہ مجول)

و کیمنے خیبت ہرونیا میں اللہ تعالیٰ کی طرف سے بیرآ فت آئی تو آخرت میں اس ع ناه يركباعذاب بوگا،خودسوچ ليحيّـ

@ رسول الله صلى الله عليه وسلم في صحابة كرام رضى الله تعالى عنهم سے يو چها كه تم مفلس کس کو سجعتے ہو؟ محابر کرام رضی الله عنهم نے عرض کیا کہ جس کے یاس پییہ اور مال ومتاع نہ ہو و ومفلس ہے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ میری امت کامفلس وہ ہے جو قیامت کے روز نماز ، زکو ۃ ، روز ہ (اور ہرتتم کی نیکیاں اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں) لے کر حاضر ہوگالیکن حالت یہ ہوگی کہ کسی کو گالی دی، کسی پر ناحق تهمت باندهی، کسی کا مال کھایا، کسی کا خون بہایا اور کسی کو مارا، الله تعالى اس كى نيكياں اٹھا اٹھا كران الل حقوق كو ديں ميے، جب نيكياں ختم ہوجائیں گی تو بقیدال حقوق کے گناہ اٹھا اٹھا کر اس کے سر لا د دیتے جائیں مے،اس کے بعداے جہنم میں مجینک دیاجائے گا۔ (ملم)

رسول الشملى الله عليه وسلم في ارشاوفر مايايد بيميرى امت كامقلس، لايا تو تقا نیکیوں کے انبار مرساری نیکیوں سے ہاتھ دھو بیٹھا، پھراس پربس نہیں، ساتھ گناہوں کے انبار مر پر لاد کرجہم رسید ہوگیا، یہ ہے گناہوں کی تحوست،معلوم ہوا کہ صرف روزے رکھنے ہے اور عید کی نماز بڑھنے سے نجات نہیں ہوگی بلکہ نیکیوں کے ساتھ ساتھ کناہوں سے بیخ کا اہتمام بھی ضروری ہے ورند نیکیوں کا انجام وبی ہوگا جو ابھی ىن چكے۔ الترغیب والتر ہیب میں روایت ہے کہ روزاندافطار کے وقت وس لا کھ سلمانوں کی نجات ہوتی ہے اور رمضان کی آخری رات میں جتنے لوگوں کی اب تک نجات ہوئی تھی ان کے مجموعہ کے برابرلوگوں کی نجات ہوتی ہے۔

سے جموعہ چہ کروڑ سے تھوڑا ساکم بنآ ہے، چلئے چھ کروڑ ہی لگا لیجئے! بدروایت کن

من کرمسلمان کی جرأت بڑھ جاتی ہے کہ نجات تو ہو ہی جائے گی گناہ خوب کرلوا اللہ

کے بندو! بدھدیث تو سبق دینے کے لئے ہے، بدتو ڈرنے کی بات ہے کہ جب پوری

دنیا سے صرف چھ کروڑ کی نجات ہوتی ہے تو باتی کہاں جائیں گے؟ گر آئ کل کا

مسلمان اس سے عبرت حاصل کرنے کی بچائے الٹا گناہوں پراور دلیر ہوجا تا ہے۔

مسلمان اس سے عبرت حاصل کرنے کی بچائے الٹا گناہوں پراور دلیر ہوجا تا ہے۔

ایک مولوی صاحب کو شیطان نے سبق پڑھایا کہ بدتو ایک رمضان کی بات

ہور بی ہے کہ اس میں چھ کروڑ بخشے جائیں گے، دوسر سے رمضان میں مزید چھ کروڑ پھر

تیسرے میں بھی مزید چھ کروڑ کی بخشش ہوگی، اس طریقے سے سب کی نجات

ہوجائے گی، دوسرے مولوی صاحب یاس میٹھے ہوئے تھے انہوں نے کہا:

"مولانا! يه بھی تو سوچنے کہ ایک سال میں پيدا کتنے ہوتے ہیں؟ آئ کل شرح پيدائش برسات کے مينڈکوں کی طرح ہے، اب سوچنے کہ ایک سال میں اتنے تو پيدا ہوتے ہیں اور نجات صرف چھ کروڑ کی ہوتی ہے، ید ڈرنے کی بات ہے یا خوش ہونے کی؟ بیتو خت ڈرنے کی بات ہے کہ معلوم نہیں ہمارا شمار کن لوگوں میں ہے، بے صدوصاب دنیا ہے اگر سالاند صرف چھ کروڑ جہنم ہے فی کر جنت میں چلے گئے تو ڈرنا چاہئے کہ معلوم نہیں کہ ہم ان چھ کروڑ میں ہیں یانہیں؟"

یہ جو حدیثیں میں نے سنائی ہیں یہ تو اس بارے میں حدیثوں کے بہت برے ذخیروں میں سے بہت تحوڑی کی جی ان کے علاوہ قرآن مجید کی آیات بھی بہت میں، کرانڈ تعالیٰ کی نافر مانی چھوڑے بغیر دنیا کی جہنم سے نجات ل سکتی ہے نہ آخرت

ک جہنم ہے، یہ فیصلہ قرآن مجیدیں بار بارکی جگدد ہرایا گیا ہے، مضمون بہت اسبا ہور ہا ہاس کئے صرف ایک جگدہے بڑھتا ہوں ، ارشاد ہے:

﴿ آلَاۤ إِنَّ ٱوۡلِيَآ اللّٰهِ لَا حَوُفْ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُونَ ۞ لَلَّهُمُ الْبُشُولَى فِي الْحَيْوةِ اللّٰهِمُ الْبُشُولَى فِي الْحَيْوةِ اللَّهِمُ الْبُشُولَى فِي الْحَيْوةِ اللَّهِمُ اللّٰهُمُ اللّٰهُ مُو اللّٰهِ مُ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۞ (١٠-١٢ تا ١٤)

بیسورہ یؤس کی آیات ہیں، سورہ اس لئے بتارہا ہوں کہ شاید کی کوشہہ ہورہا ہو کہ بیمعلوم نیس کہال سے قرآن لے آتا ہے، بیکوئی شیعد قونہیں کہ غاریس چھپے ہوئے قرآن میں سے بتاتا ہو؟ بیجوقرآن میں آپ لوگوں کے سامنے پڑھتا ہوں بید غار والاقرآن نیس، بیوبی قرآن ہے جس کو پڑھ پڑھکرآپ لڈو کھاتے ہیں۔ سنتے! فرمایا:

﴿ لَلَّا إِنَّ اَوْلِيَآءُ اللَّهِ لَا حَ ۚ فَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْرُ يَحُوَنُوْنَ ۞ الَّذِيْنَ امَنُواْ وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۞﴾ (١٠-١٦: ٦٢)

خبردار! کان کھول کر یہ بات من و، اس میں کوئی شک نہیں، یہ بات یقنی ہے کہ اللہ کے دوستوں کو دنیا وآخرت : می نہ کوئی خوف ہوتا ہے نہ وہ ممگین ہوتے ہیں۔ اللہ کے دوست کون ہوتے ہیں؟ ` میں ایمان ہوادر ساتھ ساتھ گناہوں ہے بھی بچتے ہوں، جو گناہوں سے نہیں پچتااس کا بیمان اس کوجہنم سے نہیں بچاسکا، اس کورمضان ہمی جبنم سے نہیں بچاسکا، اس کورمضان ہمی جبنم سے نہیں بچاسکا،

الله تعالى في قرآن مجيد كشروع بى ميس قرآن كه باره ميس بد فيعلد ساديا: ﴿ هُدُى لِلْمُتَقِينَ ۞﴾ (٢-٢)

قرآن مجیدے مدایت ان لوگوں کو ہوتی ہے جو گناہ چھوڑنا چاہتے ہیں اور جو مناہ نہیں چھوڑنا چاہتے ان کو قرآن سے کوئی ہدایت نہیں ہوتی۔ یا اللہ! ہم سب کو متقین کی فہرست میں داخل فرما، تقوئی عطاء فرما، گناہوں سے بیچنے کی توفیق اور ہمت عطاء فرما، اپنا ایسا خوف عطاء فرما جو گناہوں سے بچادے، اپنی ایسی محبت عطاء فرما جو گناہوں سے بچادے، اپنی اور اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کی ایسی محبت عطاء فرما کہ چھوٹے سے چھوٹے گناہ یک گناہ کے تصور سے بھی شرم آنے گئے۔

قرآن وحدیث مجھنے کے لئے بنیادی اصول:

اب ربی وہ حدیث جس میں ارشاد ہے کہ رمضان کا پہلاعشرہ رحمت ہے، دوسرا عشرہ مغفرت اور تیسراعشرہ جہنم سے نجات کا ہے، جس سے معلوم ہوتا ہے کہ سب کی مغفرت ہو جاتی ہے، اس کا صحیح مطلب سجھنے کے لئے پہلے ایک اصول سجھے لیجئے:

﴿القراان يفسر بعضه بعضه﴾

ای طرح:

﴿الاحاديث تفسر بعضها بعضها﴾

اسی طرح:

﴿الحديث يفسر القران

قر آن مجید کی بعض آیات دوسری بعض آیات کی تغییر کرتی ہیں، بعض احادیث دوسری بعض احادیث کی تغییر کرتی ہیں، اس طرح حدیث قر آن کی تغییر کرتی ہے۔

مدیث تو بری چیز ہے اسے قرآن مجید سے متعلق بھی پوری معلومات نہیں ہوتیں،
دمرے بالفرض اسے قرآن مجید پر پوراعبور حاصل ہوتو اس کا تو قطعاً علم نہ ہوگا کہ
فرآن مجید کی ایک ایک آیت اور رسول الله صلی الله علیہ وسلم کی ایک ایک حدیث سے
کتے احکام ثابت ہوتے میں اور تیسری بات سے کہ اکمد کرام رحم الله تعالیٰ نے اس
آیت یا حدیث کا کیا مطلب سمجھا؟ ان سب چیزوں کوسامنے رکھ کر ہی سمجے نتیجہ نکالا
ماسکا ہے ورندایک آیت یا حدیث کہیں سے من کی اور اپنے ذہمن سے مطلب سمجھنے
ماسکا ہے ورندایک آیت یا حدیث کہیں سے من کی اور اپنے ذہمن سے مطلب سمجھنے
کیکوشش شروع کردی تو گراہی کے سوا کچھ صاصل نہیں ہوگا۔

اب حدیث کا مطلب بھے کہ رمضان القد تعالی نے گنہ چھڑانے کا ایک مجرب نوعطاء فرمایا ہے، اگر رمضان کی قدر کی جائے اور اے نسخہ کے طور پر استعال کیا جائے تواس سے گناہ یقیمتا چھوٹ جاتے ہیں، مغفرت تو گناہ چھوڑنے سے ہوتی ہے، مرف روزے رکھ لینے سے نہیں ہوتی۔

رمضان میں گناہ حیمرانے کے دس نسخے:

اب سیجے کہ گناہ چیزانے کا اس نے کومو ٹر کسے بنایا جاسکتا ہے؟ کہنے کو تو ہے۔
ایک نی ہے: ''رمضان میں روزہ رکھنا'' مگر در حقیقت اس نینے کے دس اجزاء ہیں اور
ہرزءا پی جگہ مستقل نی ہے ، عموا ایس ہوجا تا ہے کہ جب میں نمبر وارکی چیز کا بیان
مروع کرتا ہوں تو آیک ہی نمبر پر کئی کئی ہمد گذر جاتے ہیں اور باقی نمبررہ جاتے ہیں،
اس لئے اب دو تین روز سے بیسلد شروع کیا ہے کہ جینے نمبر تفصیل سے بتانے کا
ادادہ ہووہ سب پہلے ہی گنا دوں تفصیل بعد میں بٹایا کروں اس لئے کہ تفصیل بٹاتے
ادادہ ہووہ سب پہلے ہی گنا دوں تفصیل بعد میں بٹایا کروں اس لئے کہ تفصیل بٹاتے
م آتی بات تو علم میں ہوگی کہ دی نمبر ہیں، شاید سوچنے سے یا کی عقل والے سے
کی میں بات تو علم میں ہوگی کہ دی نمبر ہیں، شاید سوچنے سے یا کی عقل والے سے
کی جی میں آ جائیں۔ اس لئے پہلے مختصراً دیں نیں:

🛈 مراقبه 🇨 صبر کی مشق 🎔 نماز 🕜 تلاوت قر آن 🙆 نقل محبت 🕈

کوشش اور دعاء ﴿ جسمانی ضعف ﴿ شیاطین کا مقید ہوجانا ﴿ موت کی یاد ﴿ عَلَىٰ ہِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ أَنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ مِنْ أَنْ اللَّامِ مِنْ اللَّهِ مِنْ

سیدت نمبراچی طرح یاد کرلیس اوران کا استحضار رکیس اس لئے کہ جسمانی امراض
کے جو شخ ہوتے ہیں ان سے صحت حاصل کرنے کی نیت متحضر ہویا نہ ہو بہر صورت
نخ استعال کرنے ہے جسمانی صحت حاصل ہو سکتی ہاور مقصد حاصل ہوسکتا ہے، گر
روحانی شخوں کا معاملہ اس سے مختلف ہے، فکر آخرت پیدا کرنے والے نشخ صرف
ای صورت میں مؤثر ہوتے ہیں جب آئیس اصلاح کی نیت سے استعال کیا جائے
اور طریقہ استعال بھی صحیح ہو، تو ان کا فائدہ ہوتا ہے، اگر ایے ہی اندھا دھند استعال
کرتے رہے تو روزے کا فرض تو اواء ہوجائے گا گر روزہ کا جو اصل مقصد ہے کہ گناہ
چھوٹ جائیں، جنم سے نجات ہو جائے، یہ مقصد بھی حاصل نہیں ہوگا، مقصد جب
حاصل ہوگا کہ نہ کورہ بالا دس نمبروں کو صحیح طریقے سے سمجھ کر ہر ایک کی نیت کر کے
حاصل ہوگا کہ نہ کورہ بالا دس نمبروں کو صحیح طریقے سے سمجھ کر ہر ایک کی نیت کر کے
انہیں استعال کیا جائے، اللہ توائی اپنی رصت سے ان سب نمبروں کی تفصیل اس

پېلانسخه"مراقبه"

روزہ تو رکھ لیا گرروزے میں جو مراقبہ ہے دہ اگر آپ نے نہیں کیا تو گناہ نہیں جو مراقبہ ہے دہ مار آپ نے نہیں کیا تو گناہ نہیں جیوٹیں گے، دہ مراقبہ کیا ہے؟ کوئی مشکل نہیں، بہت آسان ہے، بہت بی آسان، اس فقد رآسان ہے کہ اگر کوئی بتانے واللہ نہ ہوتو بھی ادفی سے ادفی عقل رکھنے واللہ خض خود بجھ لے، ایسی کھلی ہوئی بات ہے، وہ یہ کہ وہ لذت کی تمام چیزیں جو غیر رمضان میں جس حلال ہیں وہ رمضان میں حرام کر دی گئیں تو حرام ہو گئیں بلکدرمضان میں بھی مرام ہو گئیں، تو سوچے جو چیزیں بھد میشہ میں جس

لے حرام ہیں وہ انسان کیے کرسکتا ہے؟

کھانا، پینا اور میاں بیوی کے آپس کے تعلقات جیسی لذت کی چیزیں رمضان کی رات جیس طال جیں اور بقیہ گیارہ مہینوں جیں ون جی جیلی طال جیں بلکہ مستحسن جیں، ان پر تواب ملتا ہے بلکہ بعض طالت جیں فرض بھی ہو جاتی ہیں اور رمضان جیں انتا نے دن کے لئے انہیں حرام قرار دے دیا سوروزہ دار جی عقل سلیم ہے تو سوچ کا کہ کھانا چینا وغیرہ اللہ تعالی کی تعتیں جیں وہ تو ہمیشہ کے لئے طال اور ستحسن تھیں بلکہ کی وقت میں فرض بھی ہوجاتی ہیں، جب ان کوچھوڑ رہا ہوں اور اللہ تعالی کے تھی کی تعیل میں ان کے پاس نہیں پھٹا تو جمناہ کے کام جو ہمیشہ کے لئے حرام جیں ان کا ارتکاب کیوں کردن؟

ذرا این نفس سے خطاب کر کے بیرا کہا کریں کہ نالائق! اللہ تعالی کے لئے کھانا چھوڑ دیا، پیتا چھوڑ دیا، پیوی کے پاس جانے سے دک مجے طالانکہ یہ سب نعتیں ہیں اوران کے بارے میں اللہ تعالی کا تقم ہے: کلوا واشو ہوا۔ '' کماؤ، پی' آن روزہ رکھ کر جب ان طال اور پاکیزہ چیزوں کو بھی چھوڑ رہا ہے تو پھر فیبت، جموف وغیرہ جو بھیشہ کے لئے ترام ہیں ان کا ارتکاب کتی بڑی حافت ہے؟ اس کو ایک دومنٹ کے لئے روزانہ سوچ لیا کریں، مراقبہ کا میں مطلب نہیں کہ بتیاں گل کروو، او پر چادر لے لواور مینے کو روزانہ سوچ لیا کریں، مراقبہ کا میں مطلب نہیں کہ بتیاں گل کروو، او پر چادر لے لواور میں مراقبہ کی میں ہوتے، ہم تو بالکل آسان طریقہ بتاتے ہیں کہ مراجا دیے بیاں ایسے مراقبہ نہیں ہوتے، ہم تو بالکل آسان طریقہ بتاتے ہیں کہ کھڑے، لیٹے، بیٹے جس حال ہیں بھی ہیں بس ذرا دل کو متحضر کر کے تھوڑی کی ویر کے لئے سوچ لیں۔

یہ پہلے نسخے کا بیان ہوا۔

روسرانسخه مسرکی مشق":

رمفان میں اصلاح نفس کا دوسرانسخد ہے صبر ،صبر کی مشق کروائی جاتی ہے کہ اگر

کھانے پینے اور بیوی کے پاس جانے کے لئے دل للجائے تو صبر کرو! کیا ہی دل میں نقاطبا اضح کر ہماری خاطر صبر کرلو! دل للجانے پرکوئی مواخذہ نہیں، بیہ ہم نے معاف کر ویا، و کیمنے کتنا ہوا کرم ہے، کتنی ہوی رحت ہے۔

آپ دوزہ رسکھ ہوئے ہیں، کہیں سے کھانے کی خوشبو آئی، بہت عمدہ خوشبوہ خوشبوہ خوشبوہ خوشبوہ خوشبوہ خوشبوہ سے مست ہو کے ہیں، گلی از راہ ہمدردی آپ سے کیے کہ آپ خوشبو سے اسٹے مست ہو کئے ہیں، چلئے تھوڑا سا کھا لیجے، تو آپ کیا کہیں گے؟ یکی نا کہ ارے! یہ کیا کہدرہے ہو ہیں تو پائی کا ایک قطرہ کیدرہے ہو ہیں تو پائی کا ایک قطرہ پینے کوبھی تیار نہیں، وہ کتابی اصراد کرے کہ بھائی آپ کی طبیعت اتی لیارہ یہ ہوگا۔ یا فرض کیجے گھر میں میاں بیوی اکیلے ہیں اور کوئی تیرافض نہیں، وونوں پرشہوت کا غلبہہ، یہاں بھی طبیعت لیارہ ی ہے، گرکیا میاں بیوی ایک کردوزہ ہے، اللہ میاں بیوی ایک دومرے کے قریب جائیں گے؟ ہرگز نہیں! اس لئے کہ دونرہ ہے، اللہ میاں بیوی ایک کوروزہ ہے، اللہ میاں بیوی ایک موجائے گر اللہ تعالی کا تھم میں ہوجائے گر اللہ تعالی کا تھم نہیں تو را جاسکا بہرطالی مبرکریں گے۔

اعتکاف کی صورت میں صبر کی مزید مثق ہوتی ہے دنیا بھر سے تعلقات منقطع کر کے بس ایک مالک کے درداز نے بردھرنا مار کر بیٹھا ہوا ہے۔

> ۔ کھیر لول رخ کھیر لول ہر ما سواسے کھیر لول میں رہوں اور سامنے بس روئے جاناں نہ رہے

دیکھے روزے میں تتی بری تمرین ہے، اللہ تعالیٰ مسلسل ایک مہید مثل کروا
رہ ہیں۔ کھانے پینے کی ایک ایک چیز سامنے آ رہی ہے، مختلف لذتیں اپنی طرف
مینی رہی ہیں، دل چاہتا ہے، طبیعت للچارہی ہے مگر آپ صبر کئے بیٹھے ہیں، طبیعت
کے ماکل ہونے پر، دل کے للچانے پرکوئی گرفت نہیں، بیمعاف ہے، محر کھاؤ پومت، نے مائل ہونے سے، محر کھاؤ پومت، نے اِنی کا قطرہ اندر جائے اور نہ کسی شوری غذاء کا ذرہ حلق ہے اترے بس صبر سیجے!

104

طبیعت پر ضابطدر کھے! بینش کونگام دینے کے لئے،اسے قابویس لانے کے لئے مبر
کیمش کرائی جارتی ہے، جب مبر کی مشن ہوگی تو کسی بھی گناہ کے نقاضے کے وقت یہ مشق کرائی جارتی ہے، بہ باہر نظے، کوئی حسین صورت سامنے آگئ، ہا افتیاراس کی طرف دیکھنے کو دل چاہا تو جس نے دن بھر روزہ رکھا اور شدید خواہش کے باوجود کھانے پینے ہے مسلسل پورا دن مبر کیا اس کے لئے ایک منٹ صبر کر لیا اور گناہ سے دور رہنا کیا مشکل کام ہے؟ جس کے دل بیس گناہ کا تقاضا اٹھے وہ اس بات کو بار بارسوچ کیا مشکل کام ہے؟ جس کے دل بیس گناہ کا تقاضا اٹھے وہ اس بات کو بار بارسوچ کہ پورام ہیں بھوک بیاس برداشت کر کے جہاں اتنا طویل صبر کیا ہے وہاں ایک منٹ صبر کر کے نقس کو گناہوں سے مبر کر کے نقس کو گناہوں سے خواظت رہے گی۔

الله والے جب گناہ چھڑانے کے نشخ بتاتے ہیں اور تربیت فرماتے ہیں تو تربیت کے سلیلے میں کچھ وقت کے لئے خالص حلال چیزیں بھی چھڑوا ویے ہیں تاکہ صبر کی عادت بن جائے اورنفس کا مقابلہ کرتا آسان ہو جائے ، حرام سے بیچنے کے لئے کچھ وقت حلال چیز وں سے بھی صبر کرو۔

> ے لقمہ وتکتہ است کامل را حلال تونی کامل مخور می باش لال

الله والے اصلاح کی خاطر ایک تو بولنا بند کراتے ہیں دوسرے لقمہ، یعنی اچھی اچھی غذاؤں سے دور رکھتے ہیں، ذکر تو اچھی غذاؤں کا ہے مگر مقصد بیہ ہے کہ دنیا ہیں جتنی لذت حاصل کرنے کی چیزیں ہیں بیصرف کائل کے لئے حلال ہیں اور تو کائل نہیں البنداان سے تجھے مبر کرنا پڑے گا، شہیں کہ جو چیز چاہو لے لو، اگر ایسا کرو گے تو نفس تم پرمسلط ہوجائے گا، نفس حاکم بن جائے گاتم تحکوم بن جاؤ گے، پھر حلال کام کراتے کراتے ایک دن حرام بھی کرا دے گا، اس لئے کہ وہ جانتا ہے کہ حاکم تو میں ہوں، یہ میرائی میلے گا۔

ایک شخص کینے لگا کہ میری کی سے کشتی ہوئی، دونوں برابر ہی رہے، بھی میں نیچے دواو پر، بھی وہ او پر میں نیچے، سجان اللہ! بید سلمان گرنا ہی جانتا ہے، غالب آنا تو اس نے سیکھائی نہیں۔

اس کے اکابرنے بیان فرمایا کہ جب تکتم کال نہیں ہوجاتے اس وقت تک زیادہ کھاؤ بھی مت، زیادہ پولو بھی مت، دین کی باتیں بھی زیادہ مت کرو، حلال لذتوں کو حاصل کرنا صرف کامل کا کام ہے، اس کی تشخیص بیخ کامل ہی کرسکتا ہے، اس لئے کسی بیخ کامل سے اطلاع واتباع کا تعلق رکھنا لازم ہے۔

ایک صاحب مجھ سے شلیفون پر کہنے گئے کہ دار الاقاء میں فلال دین کام کے پندرہ ہزارروپ لگانا چاہتا ہوں، میں نے کہا اجازت بہیں، وہ میں نے اپنے لئے خصوص کرلیا ہے کہ میں لگاؤں گا، دو تین دن گذرے پھر ٹیلیفون آیا کہ رقم کے لئے کوئی اور اچھا سامعرف تنا دیجئے، جس کام سے آپ نے دوک دیا اس کا نام تو میں دوبارہ لول گانہیں، کہیں آپ جھے کان سے پاڑ کر چراگاہ ہی نہ بھیج دیں، جے مصالحہ لگ جاتا ہے وہ المحد للہ! تھیک ہوجاتا ہے، یہ بات انہوں نے اس لئے کہی کہ شاید مجھ سے بیم مقولہ دن کھا ہوگا:

"طالب علمے کہ چون وچرا مکند و درویشے کہ چون وچرا بکند ہر دورا نچراگاویبا پیفرستاد۔"

وہ طالب علم جودوران سبق استاذ کے سامنے کوئی اشکال پیش نہیں کرتا اے سبق

مجھ میں آئے نہ آئے ہی خاموش ہی بیشارہتا ہے، پچھ پوچھتا ہی نہیں اور وہ مرید جوشی کے سامنے چون وچا کرتا ہے، شخ نے ایک عم دیا کہ ایسا کرو گر وہ اس پراشکال چیش کرتا ہے تو ایسا طالب علم اور ایسا درویش دونوں گدھے ہیں، ان دونوں کو کان ہے پکڑ کرچا گاہ میں بھتے دیا جائے، یہ حضرت مجد دالف تانی رحمہ اللہ تعالی کا مقولہ ہے۔

پٹر کرچا گاہ میں بھتے دیا جائے، یہ حضرت مجد دالف تانی رحمہ اللہ تعالی کا مقولہ ہے۔
مقام پر بھتے جائے گو ورمہ اور مرغ مسلم اٹراتے دیکھ کر اس کی ہوں نہ کرنے لگو، جب اس مقام پر بھتے جائے ہوں گھاتے ہے، دال کھا کھا کر یہاں تک پہنچ ہیں، ہاضمہ ہے نہیں اور کھانے بیٹے گئے مرغ مسلم، کوئی ایک دو مینے کے بیچ کو تو رمہ کھلا نا شروع کر دے اور پوچھتے پر یہ دلیل مرغ مسلم، کوئی ایک دو مینے کے بیچ کوتو رمہ کھلا نا شروع کر دے اور پوچھتے پر یہ دلیل بیش کرے کہ ہم نے ایک بڑے پہلوان کو دیکھا تھا وہ تو رمہ کھا رہا تھا، معلوم ہوا یہ بیش کرے معدہ میں تو رمہ کھنم کرنے کہ معدہ میں تو رمہ کھنم کرنے کی صلاحیت تھی، دو میں تو رمہ کھنے کے بیش بیرصلاحیت کہاں سے آئی؟ وہ تو تو رمہ کھا کر

109

ایک بزرگ کا قصد ب کرنس نے ان سے انٹرے کھلانے کا مطالبہ کیا انہوں نے نفس کا مقابلہ کرنے اور مبرک عادت ڈالنے کے لئے طے کر رکھا تھا کہ اسے انڈے ٹیس کھلاؤں گا۔

ایک کام کی بات بتا دوں ، کوئی چیز آپ کی ضرورت کی ہے یا نہیں؟ اس کا معیار
کیا ہے؟ گھر بیٹھے بیٹھے جس چیز کی ضرورت محسوس ہو وہ تو ہے آپ کی ضرورت ، بعض
لوگ یہ کرتے ہیں کہ بازار میں نظے ، مختلف چیز ین نظر آئیں جی میں آگیا یہ بھی لے لوہ
یہ بھی لے لوہ یہ اس بات کی علامت ہے کہ یہ چیز ین ضرورت کی نہیں، بلکہ گھر بیٹھے
بیٹھے بھی بزو چیز ضرورت کی محسوس ہواس کے بارے میں بھی سوچ لیا کریں، وہ بھی
ضرورت کی ہوتی ہے بھی نہیں، بیٹھے بیٹھے بہت سی چیز وں کا خیال آ جاتا ہے جن میں
اکثر غیر ضروری ہوتی ہیں اور بازار جانے کے بعد جس کا خیال آ یا کہ یہ بھی لے لوہ وہ تو

یقینا غیرضروری ہے، بیعقل کی بات ہے اس کو یاد رکھیں۔

وہ بزرگ نفس کا مقابلہ کرتے رہے، کئی میپیچ نہیں کئی سال گذر تھے،نفس باریار انڈوں کا تقاضا کررہا ہے لیکن بیٹیس کھارہ کہ اگر آج اے انڈے کھلا دیے تو کل كى اور چزكامطالبكرك كارفة رفة كريدكناه كا تقاضا بمى كرے كا، جباے با چل گیا کہ میں ہمیشد غالب رہتا ہوں اور اے مغلوب کرتا ہوں پدیمبرے سامنے جھکا بى ربتا بيتو چلوگناه كا تقاضا بهي بيدا كردو. مان تو جائي كابي، نفس كاليك مطالبه يورا کرنے ہے اس کی ہمت بڑھ جائے گی، اس کی ہمت بیت کرتے کئی سال گذر مجلے نقاضا اتنا غالب آگیا که نماز میں، ذکر میں، تلاوت میں سروقت انڈوں کا خیال، سوچا کہ مقابلہ کرتے کرتے کئی سال گذر گئے ،سزا کے لئے اتنای کانی ہے چلو اب تو کھا ہی لو، ایک گاؤں میں انڈے کھانے مجئے، وہاں کوئی چوری ہوگئی تھی، یہ نو وارد عظم، لوگوں نے سمجھا کہ یہی چور ہے، پکز کرخوب پٹائی کی، اتنے میں ان کا کوئی معتقداً گیا اس نے کہاارے ظالموا بیتو ہمارے حضرت صاحب ہیں بیتو بڑے بزرگ ہیں، بڑے ولی اللہ ہیں، انہیں کیوں مارتے ہو؟ لوگوں ہے چیٹرا کر گھرلے گیا اور کھانا کھلایا، کھانا جب سامنے آیا تواس میں انڈے تھے، اب یہ بزرگ ایے نفس سے کہہ رے ہیں:

'' ڈنڈے کھا کرانڈے کھا! ارنے نئس ٹریر تیرے مقابلہ میں استے سال تو میں ہی غالب رہا، اب تو غالب آنے لگا تھا تو انجام دیکھ لے خبر دار! اب آ بندہ انڈے کا نام بھی زبان پر نہ لانا، آج تو ڈنڈے پڑے، آ بندہ پتا نہیں کہا آفت ٹونے ''

میرے رب کریم کی دیگیری دیکھئے جو بزرگ اس طریقے سے اپ نفس کا عامبدومراقبدکرتے رہتے ہیں اوراپ نفس پر ضابطدر کھنے کی کوشش کرتے رہتے ہیں، ان کالفس آگر بھی غالب آنے بھی گئے تو اللہ تعالی کی طرف سے یوں سبق ملاہے، بیہ

ہاللہ تعالی کی دھیری اوراس کی مدد۔

مقعمداس قصے سے بھی ہیں ہے کہ مبری تمرین اوراس کی عملی مثق گنا ہوں سے بچنے کا بحرب نسخہ ہے، اس مثق میں ریجی ہے کنفس کو جائز لذات سے روکا جائے ہے نہ ہوکداسے ہے مہارچھوڑ دیں، ہر طرف منہ مارتا کھرے۔

حضرت بوميرى رحمداللد تعالى فرمات بين:

النفس كالطفل ان تمهله شب على حب الرضاع وان تفطم ينفطم

کہ نفس کی مثال شرخوار بیجے کی ہے، پہلے زمانے میں عورتیں بیجوں کو اپنا دورھ پلاتی تعیس اب تو وہ قصہ ہی ختم ہو گیا۔

ایک مخض کوفون کیا، اس کا بیٹا بولا، پو تھا'' تمہارے اہا کہاں ہیں؟'' کہنے لگا ''میرے بھائی کو دودھ پلا رہے ہیں۔'' اب مورتوں کا کام مردوں نے سنجال لیا ہے، مجیب دقت آئیا۔

فرمایا کفس اس بچے کی طرح ہے جو سینے ہے مندلگا کروودھ پیتا ہے، جب دو
سال پورے ہوجاتے ہیں اور دودھ چیڑانے کا وقت آتا ہے تو بڑی مشکل پیش آتی
ہے، چونکداسے سینے ہے دودھ پینے کی عادت ہوتی ہے اور باہر کا دودھ پینے کی عادت
نہیں ہوتی یا وہ ہضم ہی نہیں ہوتا اس لئے بار بار مال کے سینے ہے لیٹا ہے، چیخا چلاتا
ہے، نہ فودسوتا ہے نہ مال باپ کوسونے دیتا ہے، روروکر پورے گھرانے کو پریشان کر
دیتا ہے، فرمایا کہ اس سے سبق حاصل کرو، مسلمان کو دنیا کی ہر بات سے سبق حاصل
کرنا چاہئے، چھوٹے بیچ کا دودھ چیٹراتے وقت آپ کومبر کرنا پڑے گا۔ وہ روئے،
چیخ چلائے، اسے دست آئیں، وہ بجار ہو جائے، خود بھی پریشان رہے سارے
گھرانے کو پریشان کر دے، بہرصورت آپ کومبر کرنا پڑے گا۔ اگر آپ نے مبر کیا تو
تین چاروروز کے بعد سارا قصرے ہوجائے، گا دواگر آپ نے مبر کیا تو

ہے، کر وراور بیار پڑگیا ہے، اے دست آنے گئے، یہ خود بھی نہیں سوتا ہمیں بھی نہیں سونے دیتا، چلنے پیتا رہے دودھ، اگر ایسا کیا تو جوان ہو کر بھی ماں کا دودھ نہیں چھوڑے گا۔ بالکل ای طرح نفس کو گناہوں سے چھڑانا مبر کے بغیر ممکن نہیں۔ یہ نفس چیخے چلائے، پھی بھی کرے آپ یہی کہتے جائیں کہ نالائق! تیرے ساتھ میرا مقابلہ ہے، کی قیست پر بھی گناہ نہ کرنے دول گا، اگر اس کے مقابلے میں ڈٹ محے تو بس دو چاردن میں نفس مغلوب ہوجائے گا اور اگر نفس کو ذرا ڈھیل دی کہ اب تو گناہ کرلے بعد میں تو ہے کہ نہیں ، دوگا، وہ تو گناہ میں بوجائے گا اور اگر نفس کو ذرا ڈھیل دی کہ اب تو گناہ کرلے بعد میں تو ہے کہ نہیں ، دوگا، وہ تو گناہ میں برھتاہی چلا جائے گا اور آپ گرئے ہی سے جائیں گے۔

ے نہ چت کر سکے نفس کے پہلواں کو تو یوں ہاتھ پاؤں بھی ڈھیلے نہ ڈالے کہ اس سے ہے کشی شخی عمر مجر کی

کہ بن سے ہے گ کی کر ہر کی مجھی وہ دبا لے مجھی تو دبا لے

آ خرت بنانا چاہتے ہیں تو نفس کے تقاضوں کو دبائیں، اگر اسے ایسے ہی بے لگام چھوڑ دیا کہ جو جی میں آئے کرتے چلے جاء پھر تو بینس غالب ہی رہے گا، مغلوب بھی نہیں ہوسکتا۔

الحمد لله! دوسرانسخ تفصيل سے بيان ہو گيا كداللہ تعالى روزه كے ذريعے اپنے مؤمن بندول كومبر كرنے كى مثل كروارہ ہيں۔

تيسرانسخه مناز":

رمضان میں عام دنوں کی بنسبت نماز کی مقدار زیادہ رکھی گئی، اس لئے کہ نماز سے گناہ چھوٹے ہیں، نماز سے گناہ کیوں کرچھوٹے ہیں؟ اسے اچھی طرح سمجھ لیجئے! یباں بہت سے لوگوں کو اشکال ہوگا کہ ہم تو مدت سے نماز پڑھ رہے ہیں مگر ہم سے تو گناہ چھوٹے نہیں، بے ثارلوگ ایسے نظر آئیں گے جونماز بہت پڑھتے ہیں، خاص کر کرا چی کے دنیاز بہت پڑھتے ہیں، خاص کر کرا چی کے بارے میں مشہور ہے کہ کرا چی والے بوے نمازی ہیں مگر جتنی نماز پڑھتے ہیں اس سے زیادہ جموٹ بکتے ہیں، بے شارلوگ ایسے ہیں کہ ان کی نماز ممناہ نہیں چھڑواتی اس لئے آج کا بیان سجھنے کی کوشش کریں، اللہ تعالیٰ دلوں میں اتارویں، سجھنے کی تو فیق عطاء فر مائیں۔

بات بیہ کہ جب ڈاکٹر کوئی نسخہ دیتا ہے تو ساتھ یہ ہدایات بھی دیتا ہے کہ اس نسخہ کو ستا ہے کہ اس نسخہ کو ستعمال کریں گے تو فا کدہ بوگا اور اگر اس کی ہدایات کے مطابق استعمال نہیں کریں گے تو فائدہ کی بجائے النا نقصان ہوجائے گا۔

اب سنے! نماز گناہ چیٹرانے کانسخہ ہے، بینسخد دینے والے کون ہیں؟

الله تعالى اوه فرمارے میں: ﴿إِنَّ الصَّلُوةَ مَنْهُى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَدِ * ﴾ (٢١-٤٠)

تَنْزَجَمَدُ: "نماز بحيالي ساور كناه سروك بي

دوسری جگه فرمایا:

﴿وَاسْتَعِيْنُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلْوَةِ * وَانَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اللَّا عَلَى الْخُشِعِيْنَ ۞ الَّذِيْنَ يَظُنُّونَ انَّهُمُ مُّلْقُوا رَبِّهِمُ وَانَّهُمُ الْخُشِعِيْنَ ۞ (١-١٠٥٠)

تُوَجِعَكَدَ أَنَ اور مددلومبر اور نماز سے اور بے شک وہ نماز دشوار ضرور ہے مگر جن کے قلوب میں خشوع ہوان پر کچھ بھی دشوار نہیں، خاصین وہ لوگ بیں کہ خیال رکھتے ہیں اس کا کہ وہ بے شک طنے والے ہیں اپنے رب سے اور اس بات کا بھی خیال رکھتے ہیں کہ وہ اپنے رب کی طرف والیس جانے والے ہیں۔'' پرنمازکوآسان اورمؤثر بنانے کانسخد ارشاد فرمایا کداس میں خشوع کی روح بیدا کریں، پر تحصیل خشوع کا نسخد ارشاد فرمایا کدموت اور اللہ تعالیٰ کے سامنے پیشی کا مراقبہ کیا کریں۔

لَّ لِلَّهُمَّا الَّذِيْنَ امَنُوا اسْتَعِيْنُوا بِالصَّبُرِ وَالصَّلُوةِ * إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّبِرِيْنَ ﴾ (٢-١٠٣)

تَنْ َ رَحْمَتُ وَ اللهِ الله تعالى صبر كرنے والوں كے ساتھ رہتے ہيں ـ''

اس میں مبرکوآسان کرنے کا بینسخدار شاد فر مایا کدصابرین کے ساتھ اللہ تعالیٰ کی معیت کا مراقبہ کیا کریں۔

﴿إِنَّ الصَّلُوةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ * وَلَذِكُرُ اللَّهِ ٱكْبَرُ * وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا نَصْنَعُوْنَ ۞ ﴾ (٢٩-٤٥)

تَنْزَيْحَكَ: "بِ شَك نماز بِ حيالَى اور ناشائسته كامول سے روك نوك كرق ربتى ربتى بين بين بين اور الله تعالى تمهار ب كامول كو جانتا ہے ."

اس میں نماز کومو کر بنانے کے دو نسخے ارشاد فرمائے ہیں:

- ا کیک بیک نماز میں زبان اور ارکان سے القد تعالی کی عظمت و کبریائی کا اعتراف واظہار کررہے ہیں، اس کوسوچا کریں۔
 - 🕐 دوسرایه کدانند تعانی جاری نماز اورسب اعمال کود کیھرہے ہیں۔

صرکا بیان تو ہو چکا اب نماز کا بیان چل رہا ہے، جس نے نسخہ عطاء فرمایا ہے ای سے یو چھنا پڑے گا کہ اس نسخ کو کیسے استعال کریں؟

نماز گناہوں سے کیوں کر روئق ہے؟ پہلی بات تو یہ ہے کہ نماز میں بھی مبرکی مشتقل مبرکا تھم دیا:

﴿ وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلْوةِ ١٥ (٢-١٥)

دین پر قائم رہنے ہیں مبر سے کام لو، گناہ کے ایک ایک تقاضے کے وقت مبر سے کام لو، جبل استفامت بن جاؤ، بیسوچو کہ میں اللہ تعالیٰ کا بندہ ہوں، اللہ تعالیٰ کا بندہ! اللہ تعالیٰ کا بندہ مجھی بھی نفس وشیطان کا بندہ نہیں بن سکتا، اللہ تعالیٰ کے بند ہے بن جاؤ، صبر سے کام لو۔

صبر کیے حاصل ہوگا؟ نماز میں اس کی عملی مثل کرائی جاتی ہے، وہ کیے؟ پہلی چیز تو اس میں وقت کی پابندی ہے، مردوں کے لئے تھم ہے کہ جماعت کی پابندی کرو، پہلے سے مسجد میں پہنچ کر تجبیرہ تو تھ سے شریک جماعت رہو، ظاہر ہے کہ یہ بڑے مبر وہمت کا کام ہے اس کے لئے نمازی کو بیداراور ہوشیار رہنا بڑےگا۔

خواتین کے لئے جماعت کی پابندی تو نہیں گرید پابندی تو ہے کہ جیسے بی اذان ہونورا نماز پڑھ لیں، جو خواتین نماز نہیں پڑھتیں ان کا تو کہنا ہی کیا، اور جو پڑھتی ہیں وہ سیجھتی ہیں کہ جماعت تو ہم پر واجب ہے نہیں، اطمینان سے پڑھ لیں گے، و لیے بی بیٹے می رہتی ہیں، اطمینان سے پڑھ لیں گے، و لیے بی بیٹے می از کا وقت بی گذر جاتا ہے، پوچھوتو تعجب ہے ہی بیل ار سے بعول ہی گئی، اور پڑھ بھی لی تو بہت دیر ہے، اتی دیر ہے کہ بھی تو معلوم ہی نہیں ہوتا کہ وقت ہے کہ اگر اس دوران موت آئی تو ؟ نہاز کا وقت نکلنے سے بہلے موت آئی تو ؟ دوسرے سوچنے کہ اگر اس دوران موت آئی تو ؟ دار چیز میں اتی دیر کیوں کی جائے ؟ دوسرے سوچنے کہ اگر اس دوران موت آئی تو ؟ اگر نماز کا وقت نکلنے سے پہلے موت آئی تو نماز تو اس کے ذمہ فرض نہیں رہی، گئاہ نہیں ہوا گریہ تو سوچیں کہ یہ تنی بڑی محرومی کی بات کرم ہے دفرض نہیں دبی، گناہ نہیں ہوا گر بیتو سوچیں کہ یہ تنی بڑی محرومی کی بات ہوئی آئی کہ دائشہ کے سامنے حاضر بھی نہ ہوئے؟ قاعدہ کے اعتبار سے تو آگر چہ اس پر بیش آئی کہ دائشہ کے سامنے حاضر بھی نہ ہوئے؟ قاعدہ کے اعتبار سے تو آگر چہ اس پر اس نماز کی گرفت نہیں ہوتی، بیتو ان کا کرم ہے، ان کی دست ہے، مگر بندے کی بات نماز کی گرفت نہیں ہوتی، بیتو ان کا کرم ہے، ان کی درست ہے، مگر بندے کی نالئقی دیکھیں کہ اور کی تو تری نماز کی گرفت نہیں ہوتی، بیتو ان کا کرم ہے، ان کی درست ہے، مگر بندے کی نالئقی دیکھیں کہ اور کی تو تری نماز کی گرفت نہیں کہ کی تا تری نماز کی گرفت نہیں کا الکنی دیکردی، زعر گی کی آخری نماز بھی

پڑھ ہی لی ہوتی!

اذان کی عظمت:

پھریہ بھی تو سوچیں کہ اللہ تعالی کا منادی پکارر ہا ہے، مرف بیاطلاع نہیں دے
رہا کہ وقت ہوگیا ہے بلکہ وہ اس کے ساتھ انفہ تعالیٰ کی کبریائی، اللہ تعالیٰ کی عظمت
شان، اللہ تعالیٰ کی جلالت شان، اللہ تعالیٰ کی تو حیداور اللہ تعالیٰ کے رسول صلی اللہ علیہ
وسلم کی رسالت کا اعلان کر رہا ہے، اور اس کے ساتھ بیاعلان بھی کہ فلاح اور کا میا بی
حاصل کر لو، کیسے کیسے دل ہلا دینے والے اعلان ہورہ ہیں اور سرعام لاؤڈ اسپیکروں
پر ہورہ ہیں چر بھی اگر دلوں پر اثر نہ جوتو سوچئے کہ بیدول کتے ہیں؟
الیسے ایلے اعلان کہ شیطان ان کو برداشت نہیں کرسکا۔

رسول التدسلی الله علیه وسلم نے فرمایا که جب اذان شروع ہوتی ہے تو شیطان پادتا ہوا بھا گما ہے پادتا ہوا۔ (منتق علی) اس وقت اس کی رتح آ ہت، آ ہت نہیں نگلی، بہت زور زور سے خارج ہوتی ہے، جیسے شیعہ کے گھروں میں شب برائت کے بنائے۔

شیطان تو القد تعالی کی عظمت ہے اتنا ڈرتا ہے، ان کا نام س کر مراجا رہا ہے، بھاگا جارہا ہے، تمرافسوں آج کل کے مسلمان کے دل پر اثر نہیں ہوتا، اس میں ڈرپیدا نہیں ہوتا۔

بات یہاں سے چلی تھی کہ اللہ تعالیٰ کی شان عظمت اور کبریائی کے لاؤڈ اسپیکروں پراعلان پراعلان ہورہے ہیں گرخوا تین پھر بھی بے فکر پیٹھی رہتی ہیں کہ پڑھ لیس گے، ہم پر کون می جماعت واجب ہے، اس لئے خوا تین پر لازم ہے کہ جیسے ہی اذان سنیں فوراسب کام چھوڑ کر پہلے نماز پڑھلیں، دوسرے کام بعد ہیں کریں۔ خوا تین کے لئے اذان کا ذکر اس لئے کرویا کہ بیاللہ تعالیٰ کی طرف ہے تعہد

ے، اس کوئ کر بھی تاخیر کرتا بہت بوی غفلت ہے، ویے مسئلہ بیہ ہے کہ اؤان سے پہلے بھی خواتین کے اوان سے پہلے بھی خواتین کے لئے نماز پر معنا جائز ہے بشر طیکہ نماز کا وقت ہو جانے کا لیتین ہو۔ ایک تو نماز بیں مبرکی علی مشق اس طرح کرائی جاتی ہے کہ اذان س کر مرد مجد بیل پینچیں اور خواتین مصلی پر، آیندہ اس کا اجتمام کریں۔

دوسرے بیسے بی نمازیش کھڑے ہوئے کھانا پینا، بولنا، چلنا، ہاتھ پاکس ہلانا ساری چیزیں حرام ہوگئیں، سوچنے اس میں مبرقی کا کتنا پڑاسیتی ہے کہ باہر کی ہر چیز نمازیش حرام کر دی گئی، اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں پینچ کر سب پکتے چھوڑ دو، جن لوگوں کو یو لئے کا مرض ہے، جن ہے ایک منٹ خاموث ہیں بیٹھا جاتا دہ بھی اس در ہاریش پہنچ کر سرایا خاموش ہیں، اتھم الحاکمین کا تھم ہے کہ اب صرف ہم سے بات کرو، ساری دنیا کو چھوڑ دو، کمی سے بات چیت نہ کرو، ہاتھ دغیرہ بھی نہ بلاؤ، سکون سے رہو۔

اب فور کریں کہ نسخہ اصلاح کی جتنی تجویزیں جس بتا دہا ہوں آج کا مسلمان بھلا
ان پھل بیرا ہے؟ نہیں! بلکہ ایک ایک کے خلاف کر دہا ہے، خودہی بتایئے کہ پھر نسخہ کا
اثر کیا ہوگا؟ مرد اذان من کر وقت پر مہر نہیں چئجے، خوا تین مصلی پر نہیں پہنچتیں،
دوسرے یہ کہ نماز جس حرکت کرنے، ہاتھ پاؤں ہلانے کا گویا دستور ہوگیا ہے، عجیب
بات ہے کہ لوگ دوسرے وقت جس ہاتھ اس قدر نہیں ہلاتے جس قدر نماز جس ہلاتے
ہیں اور خاص کر مولوی لوگ تو نماز اور ڈاڑمی سے کھیلنے کو لازم وطروم بجھے ہیں، جسے
ڈاڑھی ان کے لئے کوئی کھلونا ہے، جہاں نماز شروع کی بس ڈاڑھی سے آئیس کھیلنے کا
موقع مل گیا! جیسے بچھ تھے سے کھیلا ہے، کہیں سے بیدقعہ من لیا ہوگا کہ یہ ایک سحائی
موقع مل گیا! جیسے بی تھے تھے۔

رسول الندسلى الله عليه وللم في ويكما كه ايك فخص نماز من وارسى سي كميل ربا ب چونكدرسول الله صلى الله عليه وسلم كي زبان كامسلمان تما البذا صحابى موا اور سحابى اونى درجه كابى كيول ندمو بعد والول من بزب سے برا ولى الله بمى اس محابى كى كردكو بھی نہیں پہنچ سکتا بید حدیث من کرشاید آپ لوگ کہیں کد ڈاڑھی سے کھیلنا تو سحانی کی سنت ہے، ہم تو اس سنت بھل کر رہے ہیں بیہ میں منع کیوں کرتا ہے؟ لیکن رسول الشعالية وسلم کی سعید بھی من لیجنے! آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی سعید بھی من لیجنے! آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی سعید بھی من لیجنے! آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی سعید بھی من لیجنے! آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی سعید بھی من لیجنے! آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی سعید بھی من لیجنے! آپ سلی اللہ علیہ وسلم کی سعید بھی من اللہ علیہ وسلم کی اللہ علیہ وسلم کی سعید بھی من اللہ علیہ وسلم کی سعید بھی اللہ علیہ وسلم کی سعید وسلم کی سعید بھی من اللہ علیہ وسلم کی سعید بھی من اللہ علیہ وسلم کی سائلہ وسلم کی سائلہ وسلم کی سعید بھی من اللہ علیہ وسلم کی سائلہ وسلم کی سعید بھی من اللہ وسلم کی سائلہ وسلم کی سائلہ وسلم کی سعید بھی من اللہ وسلم کی سائلہ وسل

(لو خشع قلب هذا لخشعت جوارحه) (فتح الباري: ١٧٩/٢)

اگر اس کے دل میں خشوع ہوتا تو اللہ تعالیٰ کی طرف توجہ ہوتی، اس کا ہاتھ ڈاڑھی کی طرف بھی نہ جاتا، ہاتھوں میں بلکہ پورےجم میں سکون ہوتا۔

آپ ملی الله علیه وسلم نے سعبیہ فرما دی کہ نماز تو پڑھ رہا ہے مگر خشوع نہیں، ان صحابی رضی الله تعالی عند سے غلطی تو ہوئی مگر جب سعبیہ ہوگئ تو اس کے بعد کیا عجال کہ سمجھی ایہا کریں۔

نماز میں مبری تمرین اور عملی مثل کرائی جاتی ہے کدنہ ہاتھ بلیں، نہ پاؤں ہلیں، مگر یہاں کیا ہوتا ہے؟ ہاتھ بھی بل رہے ہیں، پاؤں بھی بل رہے ہیں بلکہ پوراجسم حرکت میں ہے نسخ کو مجھ طریقے سے استعال ہی نہیں کررے تو فائدہ کیا خاک ہوگا؟

نماز کی حقیقت:

نمازیم دوسری چیز الله تعالی کی عظمت کا استحضار ب، استحضار کیے ہے؟ ویکھے! دل میں الله تعالی کی عظمت اتار نے کے لئے نماز شروع بنی الله اکبر سے ہورہی ہے کہ الله تعالی بہت بڑے ہیں، اذان اورا قامت کی ابتداء بھی اس جملہ سے ہوتی ہے کہ الله تعالی بہت بڑے ہیں، الله تعالی بہت بڑے ہیں۔

(وَلَهُ الْكِبْرِيَآةُ ۞) (٢٥-٢٧)

کبریائی مرف الله تعالی کی ذات کے لئے ہان کے سواد نیا کا کوئی مخص اس قابل نہیں جس سے متعلق یہ کہنا جاسکے کہ یہ برا ہے، برائی تو مرف الله تعالی عی کے لئے ہے، اس لئے "الله اکبو" کے مغنی یہ کیا کریں کہ اللہ بہت برے ہیں۔ حسن نماز میں کو اس رور نرتو اللہ کی مقلے کی مرجع یا جہ کیسر آتے کی کر لئے

کے ہے، آل سے "المله اکبو" ہے کی بیریا اری ادالقد بہت ہوے ہیں۔
جب نماز میں کھڑے ہوئے تو اللہ کی عظمت کو سوچیں! جب بحبیرہ تحریم کے لئے
ہاتھ اٹھاتے ہیں تو ہاتھ اٹھانے کا مطلب ہی ہیہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی کبریائی ہمارے دل
میں اتن ہے کہ اللہ تعالیٰ کے سوا پوری و نیا اور پوری دنیا کے تمام تر تعلقات کو ہم نے
میں پشت مجینک دیا ہے، ہاتھ اٹھا کر سب کو بیچھے پھینک دیا، پھر ہاتھ باند ہنے کہ
بعد حمد وثناء کے ذریعے زبانی تعظیم ، بجالاتے ہیں، اس کے ساتھ ساتھ پوراجہم اللہ
تعالیٰ کے سامنے ظاہری و باطنی خشوع و خضوع کے ساتھ قالب بے جان کی طرح بلا
حس و حرکت کھڑا اپنے بھر و نیاز اور اللہ تعالیٰ کی عظمت کا اظہار کر دہا ہے، پھر دکوع
میں قیام ہے بھی زیادہ اللہ تعالیٰ کی عظمت اور اپنی تواضع واعمار کا اظہار ہے، پھر
میں تیام ہے بھی زیادہ اللہ تعالیٰ کی عظمت اور اپنی تواضع واعمار کا اظہار ہے، پھر
کورے میں اس سے بھی بڑھ کرعظمت کا اظہار ہے، پھر محدہ بھی ایک ٹیس بلکہ دوفرض
کے، یا اللہ! ہیں نے تیرے سامنے جیسے زبان سے تیری عظمت کا اقرار کیا و سے بی

نماز اوّل تا آخر الله تعالى كى مجت اورعظمت كا اظہار ہے، نمازى زبان سے يحى
الله تعالى كى عظمت كا اعتراف كرتا ہے اور على سے يحى، كى كى بغاوت اور حكم عدولى
سے دو كئے كے دو بى سبب ہوتے ہيں، ايك مجت، كہ محت كو يہ خدشہ لائل رہتا ہے
کہيں ميرا محبوب ناراض نہ ہو جائے، مجھ سے دو تھ نہ جائے، اسلئے نافر مانى سے بچتا
ہے۔دو مراسب عظمت ہے۔كى كى كبريائى اور ہيت دل ميں ہوتو نافر مانى كى جرائت خييں ہوتى، اس كى عظمت سے دبا رہتا ہے، يہ دو چيزيں ہيں جو انسان كو اطاعت پر مجبوركرتى اور نافر مانى سے دور ركمتى ہيں، چونكہ نماز ميں بيد دؤوں چيزيں بدرجه كمال پائى جوركرتى اور نافر مانى سے دور ركمتى ہيں، چونكہ نماز ميں بيد دؤوں چيزيں بدرجه كمال پائى سے دور كھتى ہيں، چونكہ نماز ميں بيد دؤوں چيزيں بدرجه كمال پائى سے دائى ہيں اس لئے نماز كى بي خاصيت مخمرى كہ دہ بندے كو اپنے ماكى كى نافر مانى سے

بچائے رکھتی ہے، بشرطیکہ نماز تھے معنی میں نماز ہو،خود کار (آٹو میک) نماز ندہو۔
رکوع وجدہ کے بعد قعدہ کا نمبر آتا ہے، اس کی حکمت بھی سجھ لیجے! نماز قولی،
بدنی اور مالی عبادات کا مجموعہ ہے، اس لئے قعدہ میں پہلے ان تینوں قتم کی عبادات اللہ
تعالیٰ کے ساتھ خاص کرتا ہے بھر یہ سوچنے کی بات ہے کہ احکم الحاکمین کے عالی دربار
میں جو پانچ دفت ہم حاضر ہوتے ہیں اس دربار تک رسائی کس کے ذریعہ ہوئی ؟ محن
اللہ علیہ وسلم کے ذریعے! بیآپ صلی اللہ علیہ وسلم کا پوری امت پراحسان تقیم
ہے، اس احسان شامی کی تعلیم کے لئے نماز میں بی تھم دیا حمیا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم
یر میں اور درود شریف پر حیس۔

هرنماز مل تیں:

﴿ السلام م ف ايها النبي ورحمة الله ويركاته ﴾ تم م يحمد دي يم هم مسكس أن المدرس صلاية ال

آ کے بیمی سوجے کہ ہم میں ہے کی نے براہ راست آپ ملی الله علیہ وسلم کو دیکھانیس، دنیا میں ہم بھی زیارت ہے مشرف نہیں ہوئے، یہ والت تو جنت میں جاکر نعیب ہوگی ان شاء اللہ تعالی، آپ ملی اللہ علیہ وسلم کو ہم نے دیکھانیں، بال آپ ملی اللہ علیہ وسلم کی اساطت ہے ہم تک پہنچا ہے، ای طرح محل برکرام رضی اللہ تعالی عنہم کی وساطت ہے ہم میں ہے کی تک پہنچا ہے، ای طرح محل کرام رضی اللہ تعالی عنہم بہم میں ہے کی نے نہیں دیکھا، ان ہے دین نے کرآ کے پوری امت تک تابعین نے پہنچایا، ان سے آپ تی تابعین میں محرات نے، تی تابعین میں ودمرے دعزات نے، آپ میں ایک کا در بعد سے کا اور آ کے قیامت تک چانا جائے گا، جو حضرات دین پہنچانے کا در بعد سے سب کا امت پراحمان ہے اس لئے آپ منی اللہ علیہ دیکم پرسمام ورصت بینچ کے بعد بیاتھیم دی گئی:

(السلام علينا وعلى عبادالله الصالحين)

ان عباد صالحین میں صحابر کرام رضی اللہ تعالی عنبم اجمعین سے لے کرآخر تک

کے تمام حضرات آ محیے، بیسب ہمارے محن بیں اللہ تعالیٰ ہمیں ان کے نقش قدم پر چلنے کی تو فیق عطاء فر مائیں۔

پانچوں وقت اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں حاضری ہوتی ہے اور ہر حاضری میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وکل کے حق میں اللہ صلی اللہ علیہ وکا حق میں اور دوسرے تمام وسائط کے حق میں رحمت وسلامتی کی دعاء ہوتی ہے، اصل مقصد تو شائی دربار کی حاضری ہے، اس کا تقاضا یہ ہے کہ ہمدتن ای کی طرف متوجہ رہے، غیر کا خیال گوشئہ قلب میں بھی نہ آئے پائے، کیکن چونکہ یہ ای کے عظم سے ہاس لئے یہ بھی در حقیقت ای کی طرف توجہ ہے۔

أيك الجم مسئله:

ایک بدی نے بداشکال میرے سامنے بھی دھرایا، میں نے کہا حدیث میں آتا میں ہے کہ رسول الدھ میں ایک بارجرہ مبارکہ کا پردہ مثاکر میں کے کہ رسول الدھ کی ایک بارجرہ مبارکہ کا پردہ مثاکر میں مشغول تھ، حضرت ابو بکر مضی اللہ تعالی عند اللہ ت کر رہے تھے، رسول الله صلی اللہ علیہ وسلم نے چند کھے بعد پر اویا اور صی برکرام منی اللہ تعالی عنهم کی نظروں سے پھراد جمل ہو سکتے، محابر منی اللہ تعالی عنهم فرمات بیر کہ جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے پردہ اٹھایا تھا تو ہاری

حالت الی ہوگئ تھی جو کہ بیان سے باہر ہے، سب لوگ بے خود ہو گئے اور قریب تھا کہ نماز تو ڈ ویتے، بیت تھے سے محت اور کیے عاشق! محبوب پر نظر پڑتے ہی حال سے بے حال ہو گئے اور نماز جیسے اہم فریضہ سے بھی توجہ ہٹ گئی، اگر رسول الشصلی الشعلیہ وسلم پردہ نہ گرا دیتے تو ان حضرات کی نماز ٹوٹ جاتی، بتا ہے رسول الشصلی الشعلیہ وسلم کی طرف متوجہ ہونے سے محابر کرام رضی اللہ تعالی عنہم کی نماز ٹوٹ گئی تھی یا نہیں؟ اس کی بجائے کوئی اور مخلوق ان کے سامنے آ جاتی تو ان کا اس طرف خیال تک نہوں؟ اس کی بجائے کوئی اور مخلوق ان کے سامنے آ جاتی تو ان کا اس طرف خیال تک نہوں؟ اس کی بجائے کوئی اور مخلوق ان کے سامنے آ جاتی تو ان کا اس طرف خیال تک

ان بدعتوں کوتوعشق کی ہوا بھی نہیں گئی، شاہ شہیدر حمد اللہ تعالیٰ کا مسئلہ بدعتوں کے لئے نہیں، اگر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا خیال آگیا اور وہ آپ کی طرف متوجہ ہو گئے تو وہ بے قابو ہو جا تیں گے، بینے خود ہو جائیں گے اور ان کی نماز ٹوٹ جائے گی، شاہ شہیدر حمد اللہ تعالیٰ سے عاشقوں کی بات کررہے ہیں اور یہ بیٹ اے اور قیاس کر کے واویل کررہے ہیں۔

بات چل ربی تمی الشد تعالی کی بارگاہ میں صاضری کی، آپ نے ان کی بارگاہ میں صاضری دی، آپ نے ان کی بارگاہ میں حاضری دی، راز و نیاز کی باتیں کیس اس و دران رسول الشعلی الشعلید وسلم کا تصوّر بھی آگیا، پھر صحابہ کرام رضی التد تعالی عنهم کا خیال بھی آگیا کہ ان حضرات کے واسطے سے ہم تک دین پہنچا، انہی کے واسطے سے اس در بار تک رسائی ملی اس لئے ان سے حق میں دعا و بھی کی:

﴿السلام عليك ابها النبي ورحمة الله وبركاته، السلام علينا وعلى عبادالله الصالحين﴾

اصل مقصود تو اتھم الی کمین کی بارگاہ میں حاضری تھی، درمیان میں رسول الله صلی الله علیه وسلم اور صحابه کرام رضی الله تعالی عنهم کا خیال آگیا، کوبیة صوّر بھی ربط کی بناء پر تھا، خود مقصود نہ تھا گرنمازی بھر بھی کلمہ شہادت کے ذریعہ تو حید کی تجدید کرتا ہے:

(اشهد ان لا اله الا الله واشهد ان محمدا عبده ورسوله)

کہ میں شہادت دیتا ہوں اللہ کے سواکوئی عبادت کے لائق نہیں، صرف ای کی بندگی کرتا ہوں، رسول اللہ سلی اللہ علیہ وکلم اللہ تعالی کے محبوب اور رسول ہیں، آپ صلی اللہ علیہ وکلم اللہ علیہ وکلم کی بندگی نہیں کرتا، مزید تاکید کے لئے ''عباد' کا اضافہ کیا کہ آپ صلی اللہ علیہ وکلم خود اللہ تعالی کے عبد ہیں، عبد کال، اس سے شرک کی جڑ کے گئی، آپ صلی اللہ علیہ وکلم بایں جلالت شان بایں کمال وہزرگ ہیں عبد ہی، اللہ تعالی کے بندے، ای کے عبادت گذار۔

پر کلمدشہادت میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا نام آگیا تو آپ پر درودشریف پڑھنے پر مجور ہوجاتا ہے، آخر میں دربارے رخصت ہوتے دفت آخری بار پھرائی عاجت براری کی درخواست پیش کر کے دوا تی سلام کہدکر رخصت ہوجاتا ہے۔

(السلام عليكم ورحمة الله)

الله تعالی کے لئے سلام کی دعاء جائز نہیں، اس لئے ملا مکہ اللہ واللہ کوسلام کہتا ہے۔
ونیا کا دستور ہے کہ کی یڑے جائم کے دربار میں پہنچ کر حمد وثناء اور درخواست
پیش کرنے کے بعد آخر میں رخصت ہوتے وقت پھر اپنا دعا وہرایا جاتا ہے اور
الطاف وقو جہات کی آخری درخواست کی جاتی ہے کہ حضور! ہم رخصت ہوتے ہیں
ہمارا خیال رہے، ہم پرحضور کی نظر رہے، بس اب ہم چلتے ہیں، پھر بھی بارگاہ عالی میں
حاضری نصیب ہو کہ نہ ہو، السلام علیم! اس طرح مسلمان بھی اللہ تعالی کی بارگاہ میں
حاضری نصیب ہو کہ نہ ہو، السلام علیم! اس طرح مسلمان بھی اللہ تعالی کی بارگاہ میں
کوئی مختمر اور جامع دعاء عرض کر کے رخصت ہونے لگتا ہے تو سلام دواع کہہ کر
رخصت ہوتا ہے۔

محرآج كل كے مسلمان نے تو اپنا سلام بى تهديل كرديا، رسول الله صلى الله عليه

و کلم نے تو آنے اور رخصت ہونے کے وقت سلام کی تعلیم فرمائی محر آپ سلی الله علیہ و کمر آپ سلی الله علیہ وسلم کے "عاشق" اس سلام پر رامنی نہیں، انہوں نے السلام علیم کی بجائے متباول سلام محمر الیا ہے" خدا حافظ "

الله کے احکام تو تمہیں منظور نہیں، ان کا سلام پیند نہیں پھر وہ حافظ کیے ہوگا؟
مسلمان نے مسنون سلام چھوڑ کر اپنا سلام گڑھ لیا پھر وہ بھی غلط، ''ضدا حافظ'' کی
بچائے'' خدا حافظ'' کہتے ہیں، الفاظ بی غلط اختیار کر نئے ہیں، من گھڑت اور غلط
سلام ہے کیا فائدہ؟ اسے چھوڑ کر سلام کے مسنون الفاظ اختیار کیجئے! ''السلام علیم'
اس ہیں شقت پگل کرنے کا اجر وثواب بھی ہے اور مسلمان بھائی کے لئے سلامتی کی
دعام بھی۔

چوتھانسخہ' تلاوت قرآن':

رمضان میں گناہ چیزانے اور محبت پیدا کرنے کے نسخوں کا بیان چل رہا تھا، دس نسخ بتائے متھے جن میں تیسرانمبرنماز کا تھا جس کا مفصل بیان ہو چکا، آگے سنے! چوتھا نسخہ تناوے قرآن ہے۔

قرآن میں گناہ حچٹرانے کے دس نسخے:

تلادت میں بھی تا ثیر ہے گناہ چیزانے کی، رمضان میں کثرت سے تلادت کی مسلمان ہیں کثرت سے تلادت کی مسلمان ہیں ہمازوں میں تلادت، تراوی میں تلاوت، بول بھی ہرعا می سے عامی مسلمان ماہ مبارک میں تلاوت میں گناہ چیزانے ماہ مبارک میں تلاوت میں گناہ چیزانے میں کہ دیتا ہوں کہ اس کے است استان استان استان استان استان استان استان استان میں کہدویتا ہوں کہ اس کے استان استان استان سنتے ہیں، میر بورش کی چیز کے بارے میں کہدویتا ہوں کہ اس کے استان استان استان استان استان استان کی استان کا اظہار ہے، وہ خود فرماتے ہیں اس کا اظہار ہے، وہ خود فرماتے ہیں اس کا اظہار ہے، وہ خود فرماتے ہیں اس کا اظہار ہے، وہ

﴿ وَمَا آوُتِينُتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۞ (١٧-٨٥)

کہ ہم نے تہمیں تعوزا ساعلم دیا ہے، ہمہیں اس تعوزے سے علم پر اترانا نہیں چاہئے۔ ہاں! تو تلاوت میں گناہ چھڑانے کے دی نئے ہیں، حقیقی علم تو صاحب کلام کو ہے کہ اس کے کلام میں کتنی تاثیر ہے، کتنے نئے ہیں؟ اپنے محدود علم کی بناہ پر کہدر ہا موں کہ دس نئے ہیں۔

ببهلانسخة كلام كالر":

پہلانٹ یہ کہ اللہ تعالی نے قرآن کی الاوت میں گناہ چیزانے کی خاصیت رکھی ہے، کوئی مسلمان اسے بچھ کر پڑھے یا بہ جانتا ہو یا نہ جانتا ہو، بہر کیف قلب پراس کا اڑمحسوں کرے گا، ول از خود مجت کی طرف کھنچا چلا جائے گا، قرآن جمید کی تاثیر کا تو ہوہ اس کی عقلت و ہیت ہے کہ آگر پہاڑوں پر بھی اسے اتارا جاتا تو وہ اس کی عقلت و ہیت سے جھک جاتے ، بھٹ بڑتے:

﴿ لُوْ أَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرُانَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَآيَتَهُ خَاشِعًا مُّتَصِدَّعًا مِّنْ حَشْيَةِ اللهِ ﴿ ﴾ (١٥-٢١)

تَشَوِّحَكَمَ: "اَكُر بِم اَسْ قر آن كوكس بِهارُ پر نازل كرتے تو تو اس كو ديكه آ كهاللہ كے خوف ہے دب جا تا اور ميث جا تا۔"

پہاڑوں میں ہی اس کا تحل نہیں، قرآن مجید کی اس تا ثیرکا دشمنان قرآن نے مجید کی اس تا ثیرکا دشمنان قرآن نے مجی اعتراف میں ہوئی بچوں کوقرآن سے دور رکھنے کی سرقو لرکوشش کرتے، انجیس ڈرائے کر خروار! جواسے من لے گااس پر جادہ کا سماا اور جو جائے گا، اس سے دور بھا گوا حضرت الو بکر رضی اللہ تعالی عنہ جرت کھ سے پہلے اپنے مکان کے محن میں تبجد برحتے جس میں قرآن مجید کی حلاوت کرتے اور کھ سے سے روتے ، اس دوران مشرکین کے دو تے ، اس دوران مشرکین کے دو تے ، اس دوران مشرکین کے جو جاتے ، آخر مشرکین نے جم

۔ ہوکر آپ کو قرآن مجید پڑھنے سے منع کردیا اور کہا کہ پڑھنا ہی ہے تو گھر کی کو تھڑی میں چیپ کر پڑھئے، آپ نے محن میں پڑھا تو ہمارے بیوی بچوں پراس جادو کا اثر ہو جائے گا:

﴿ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُواْ لَا تَسْمَعُواْ لِهِذَا الْفُرُانِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ۞ ﴾ (١٠-٢١)

تَذَرِيَهُمَدُ: ''اورگافريه كيتم بي كهاس قرآن كوسنوى مت اوراس كے نج ميں شور وغل مجاويا كروشايدتم عي غالب رہو''

کفارایک دوسرے سے کہتے کہ مسلمان قرآن پڑھیں تو تم زور زور سے چلانا شروع کر دو در نہ ور سے جلانا شروع کر دو در نہ قرآن کی آواز کان میں پڑجائے گی چر بچنا مشکل ہے، بہتے کا بہی ایک طریقہ ہے کہ زور دور سے چیخو چلاؤ کہ کان پڑی آواز سائی نہ دے، بہتے قرآن کا اگر، کیمانی جائل سے جائل مسلمان ہواس کے سامنے کی کتاب کی صحیح صاف عربی عبارت پڑھے پھر قرآن مجید پڑھ کر سنانے وہ فوراً بتا دے گا کہ بیقرآن مجید ہے، وہ کہارت پڑھے کہ قرآن کا عبارات کی تا میر سے کہا کہ میر قرآن کا عبارات کی سے کہا دونوں کام عربی ہیں، مسیح عربی، مگر قرآن کا اعباز اس کی تا میر سے کہا دونوں کام عربی ہیں، مسیح عربی، مگر قرآن کا اعباز اس کی تا میر سے۔

تقتیم ملک سے پہلے مغرلی بنجاب میں کھ بہت تھ، میں نے خود دیکھا کہ حضرت مولانا عطاء اللہ شاہ صاحب بغادی رحمہ اللہ تعالی جب وعظ کے لئے المینی پر تشریف لائے تو سکھ ہاتھ باندھ کر درخواست کرنے گئے کہ شاہ جی! پہلے قرآن سائمیں، تقریر بعد میں کریں، شاہ جی بٹھانے کی کوشش کرتے ہیں کہ بیٹھ جا وقرآن ساؤں گا، مضرور سناؤں گا مگر سکھ بیٹھنے کا نام نہیں لیتے، مصر ہیں کہ شاہ جی پہلے قرآن سائمیں۔

میلی بات میہ ہوئی کہ قرآن دلوں میں اترتا ہے اور اثر ڈالٹا ہے ، ربی میہ بات کہ آج کے مسلمان برقرآن کیوں اثر نہیں کرتا، اس کے دل میں کیوں نہیں اترتا؟ اس کا جواب آسان ہے، آج کے مسلمان نے گناہ کرکر کے اسپنے ول کوسٹے کرویا ہے، سیاہ کر ویا ہے، اس کا دل گناموں کی نحوست سے پھر سے بھی زیادہ بخت ہوگیا ہے، اس لئے اس پرقر آن کا اثر ظاہر نہیں ہوتا، اس پر مزید ہیا کہ آج کے مسلمان نے طے کر دکھا ہے کدول پرقر آن کا اثر نہیں آنے وے گا، اب اثر کہا خاک ہو؟

ایک قاعدہ بار بابتا چکا ہوں، آن پھرین لیجے اور پلے باندھ لیجے! وہ یہ کرآن وصدیث میں فکر آخرت پدا کرنے کے جتنے لینے بتائے گئے ہیں اگر کوئی آئیس اس نیت ہے استعال کرے کہ جھے نفع ہواور بید بھی پراٹر انداز ہوں تو اس پر بہت جلدائر ہوگا اور جوان شخوں کو خالی الذہمن ہوکر سے بینی نفع لینے کی نیت نہ ہوتو بھی فائدہ ہوگا اور اور ان شاء اللہ تعالی امراض سے شفایا ہو ہوگا گردیے، اور اگر کوئی مختص دل میں یہ اور ان کر کے بیٹھے کہ جھے ان شخوں سے اثر نہیں لینا، جھے ہدایت کا راستہ افتیاری نہیں کے کرنے بیٹھے کہ جھے ان شخوں سے اثر نہیں لینا، جھے ہدایت کا راستہ افتیاری نہیں کرنا، نہ بی جنت میں جانا ہے تو ایسے لوگوں کے لئے اللہ تعالی نے بھی یہ فیصلہ صادر کرنا ، نہ بی جنت میں جانا ہے تو ایسے لوگوں کے لئے اللہ تعالی نے بھی یہ فیصلہ صادر

﴿ إِنَّالُو مُكُمُّوهَا وَانْتُمْ لَهَا كُوهُونَ ١٨ (١١-٢٨)

اگر تھہیں ہدایت نہیں چاہئے جمہیں جنت کی رغبت ٹیں، ہمارے دیدار کی تڑپ نہیں تو زبردتی ہم تمہیں ہدایت نہیں دیں مے، اس تئم کے لوگوں پر قرآن کا کوئی اثر نہیں ہوتا۔

یہ بلی بات ہوئی کہ قرآن مجید کی تلاوت میں اڑے، کشش ہے۔

دوسرانسخد قرآن کے انوار':

دوسرانسخہ یہ ہے کہ قرآن مجید میں انوار میں، ایک محابی رضی اللہ تعالیٰ عنہ تبجد میں قرآن پڑھ رہے تھے، قریب ہی گھوڑا ہندھا ہوا تھاوہ ان کی آ واز سے بدکا، یہ جتنا پڑھتے ہیں گھوڑا انتا ہی بدکتا ہے، اچھلتا کو دتا ہے، یہ معاملہ ان کی تبجھ بیش نہ آیا، صبح میر قصہ رسول الشعلی القدعلیہ وسلم کی خدمت میں عرض کیا تو آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تنہاری علاوت میں سکینہ کا نزول تھا، انوار کی بارش تھی جس سے گھوڑا ڈرکر بدک رہا تھا۔ (جنن علہ)

صاحب بصيرت بزرگ كاواقعه:

ایک بزرگ گذرے ہیں وہ اصطلاحی عالم تو نہ تے گر عارف تے جقیقی عالم ہوتا ہی وہی ہے جو مالک کو پچپان لے، جس نے مالک کو نہ پچپانا وہ تو '' چار پائے بروکنا بے چند'' کا مصداق ہے، کسی چو پائے پر چند کتا ہیں لاوویں، علم کی روح اللہ تعالیٰ کی معرفت ہے، معرفت ہی مجت کا سرچشمہے۔

وہ بزرگ اصطلاقی عالم نہ تے یعنی عربی نہ پڑھی تھی، صرف عربی پڑھ لینے سے
کوئی عالم تو نہیں بن جاتا، ابوجہل بھی عربی بواتا تھا، الی فصیح عربی کہ آن کا بزے سے
بڑا عالم بھی نہ بول سے محرر ہا ابوجہل ہی، بھی اس کا لقب ہے جو قیامت تک رہے گا،
"ابوجہل" کے معنی ہیں جہالت کا باپ، بعنی اتنا بڑا جائل تھا کہ جہالت کا بھی باپ بن
گیا، صرف عربی لکھ پڑھ لینے سے کوئی عالم نہیں بن جاتا، عالم تو بندا ہے اللہ تعالیٰ کی
مجبت سے اور محبت کی نشانی کیا ہے؟ کہ محبوب کی نافر مانی چھوڑ دے، وہ بزرگ عربی
مجبت سے اور محبت کی نشانی کیا ہے؟ کہ محبوب کی نافر مانی چھوڑ دے، وہ بزرگ عربی
کوئی آیت تلاوت کی جاتی تو بلا تاکل بتادیتے کہ بیتر آن ہے، مدیث پڑھی جاتی تو
بھی فوراً بتادیتے کہ بیصدیث ہے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا کلام ہے، کوئی یونمی
عربی بڑھتا تو بتادیتے کہ بیصدیث ہے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا کلام ہے، کوئی یونمی
عربی بڑھتا تو بتادیتے کہ بیتر آن سے نہ صدیث بلکہ عام عربی ہے۔ لوگوں کواس پر

"آپ کو کیے پاچل جاتا ہے کہ بیقرآن ہے، بیصدیث ہے اور بیانہ قرآن ہے نمصدیث؟"

فرمايا

"جب کوئی مخض قرآن مجیدی حلاوت کرتا ہے تواس کے منہ ہے آ فاب جيبي شعاعيس پيوني نظرآتي جي اور جب حديث يزهتا بي تو ماڄاب كا نور لکا و کھائی ویتا ہے، بس میں فوراً بتا دیتا ہوں کہ بیقر آن ہے اور وہ حدیث، اور جب کوئی دوسرا کلام بر معتا ہے تو کسی چیز کا ظہور نہیں ہوتا اس لئے اس کا بھی فورا ادراک کرلیتا ہوں کہ بین قرآن ہے نہ حدیث' قرآن میں تو وہ انوار ہیں کہ انسان اگر قرآن کی مخالفت نہ کرے (مگوموافقت بھی نہ کرے) تو فورا اڑ دکھاتے ہیں، پھروہی بات سامنے آ جاتی ہے کہ قرآن کی خالفت تو كوئى مسلمان نبيس كرتا جراس كاكوئى اثر برمسلمان بركول ظابرنبيس بوتا؟ خود بی سوچنے کہ آج کےمسلمان نے جب طے بی کررکھا ہے کہ وہ گناہ کی قیت پر نبیں میموڑے کا تو برقرآن کی مخالفت ہوئی یا نہ ہوئی؟ کسی کی موافقت یا مخالفت کا امل معیاری ہے کہ اس کا علم مان ہے یانیس؟ اگر اس کا علم نبیں مان او اس کا یکا دشمن ہے،خواہ زبان ہے اس کی محبت کے ہزار دعوے کرے، چوہے میا نے۔ سوجب آج کے مسلمان نے طے بی کر رکھا ہے کہ وہ قرآن کی بات نہیں مانے گا، اس کی خالفت بربی : ن مرتو قرآن اس براثر انداز کیے ہو؟ اگر کوئی کے کہ میں نے مخالفت چھوڑ دی ہے، میں سچامحت ہوں تو اسے ذرا ہمارے پاس نے آئیں، تحرمامیٹر لكاكريتاكي مے كدواتعة قرآن كامحت بي ورشن؟ قرمامير بھي ايبا كدوسيند ميں بناد به گا، کوئی اینے خیال میں کتنا ہی . ۱۰ . زرگ بود، بیر کہلا تا ہو گر تھر مامیٹر لگا کر د کیھئے کہاس کی بیوی زادوں ہے بردہ کرتی ہے پانہیں؟ اگرنہیں کرتی توسمجھ لیس کرتر آ ن کا مخالف ہے، بزرگ کے بوے دعوے میں محرحرام آ مدنی والوں کی دعوت کھالیتا ہے تو دینداری کے تمام دعوے جمونے ہیں، بیقر مامیٹر نگاکر برخض کے بارے بیل بآسانی فیعلد کیا جاسکتا ہے کر آن کا موافق ہے یا مخالف؟ اس کا محب ہے یا اس کا دخمن؟ پرسول پنجاب سے ایک صاحب یہاں آ گئے اور پنجاب کے ایک مشہور پیر کا نام لے کر کہنے گئے:

''میں ان کا مرید ہوں، میرا بڑا میٹا بھی ان کا مرید ہے گر ہمیں بید د کھے کر بڑا دھچکا لگا کہ ہیرصاحب کا ایک جوان لڑ کا مرید کے گھر گیا تو مرید نی نے اس سے پردہ نہ کیا۔'' ایس سرمتھ سنت

ال پروه متعجب تتھے۔

میں نے کہا:

''اگر مزیر تحقیق کی جائے تو مریدنی خود پیرصاحب ہے بھی پردہ نہ کرتی ہوگ، جب بیرصاحب کے بیٹے سے پردہ کی حاجت نہیں تو بیرصاحب سے بردہ کی کیا ضرورت؟''

وه مجھے یو چھنے لگے:

'' یہ بات مجھے گھلنے تکی، اب میں ان پیرصاحب کو چھوڑ دوں تو جھے پر وہال تونہیں آئے گا؟''

میں نے کہا:

"تم ان کے چھوڑنے پر وہال ہے ڈر رہے ہو میں کہتا ہوں کداگر ایسے فاسق پیرکونہ چھوڑا تو وہال آئے گا، ہس پیرکوچھوڑ دو! ہاں لب ولہجہا حتیاط کا برقو، گستا فی ندکرو، بس تعلق قطع کرلو۔"

برخض کی چری، بزرگی کواس تقر مامیٹر سے پر کھ کر دیکھتے! فوراً پہا چل جائے گا کدواقعۃ بزرگ ہے یا بزرگی کے بھیس میں اشیرا؟ کیسی عقل ماری گئی کہ جوان اور کیوں کو پیروں سے پردہ نہیں، بیرزادوں سے کوئی جاب نہیں، زادوں کی آمد پر کوئی روک ٹوک نہیں، جن سے خطرہ ہے ان کو تو چن چن کرمشٹی کردیا کہ آزادی سے گھر میں آتے جاتے رہیں اور جن لوگوں سے کوئی زیادہ خطرہ لاحق نہیں ان کی آمد پر پوری یا بندی ۔ ارے پردہ نشینو! کیا ای کا نام پردہ ہے کبھی ہے پردہ ہوجانا کبھی روپوش ہوجانا دو باتیں ہوگئش ایک ہدکہ آن کی علامت ٹس اثر ہوتا ہے، دوسری ہدکہ اس ٹس انوار ہوتے ہیں۔

تيسرانسخة إرگاه مين حاضري":

چوتھانسخە" دىدارمجوب":

چوتھانسنے بید کدسی کے کلام کا پڑھنا مسللم کے دیدار کا ذراید ہوتا ہے بیس قرآن مجید کے بارے بیس ایک طویل دعاء کیا کرتا ہوں جس کی تفصیل وعظ "محقوق القرآن" میں ہے اس بیس ایک جملہ بیصی ہے:

" إالله ال قرآن كومير عليّ آئينه حال يار مناوع."

دنیا میں حقیقی دیدار تو ممکن نہیں محرقر آن مجیدان کے جمال کا آئیدہ، جواسے پڑھے گا، اس برعمل کرے گا اس کی آتھیں اس قائل ہو جائیں گی کہ آخرت میں محبوب کا دیدار کرسکیں، حقیقی دیدار تو آخرت ہی میں ہوگا محردنیا میں بھی کلام میں متعلم کے دیدار کی تاثیر پنہاں ہوتی ہے۔

زيب النساء كاقصه:

اریان میں ایک شنرادہ نے مطلع لگایا۔

ﷺ درابلق کے دیدہ نہ موجود "کسی نے چت کبراموتی مجھی نہیں دیکھا"

شاعر بھی یونی واہیات لوگ ہوتے ہیں، جو وائی جائی مندیں آئی نکال دی۔ درابلق میں بھلا کیا رکھا ہے؟ بس ایک بات دماغ میں آئی اور کہدؤائی گرشاعر کی اس حمافت میں بھی اللہ تعالی نے اپنے بندوں کے لئے ایک بہت براسبق رکھ دیا، اس نے مصراع تو کہددیا گراس زمانے کے بڑے بڑے شعراء نے ابناز ور لگالیا کی سے دوسرامصراع ند بن یایا تھک باوکر بیٹے گئے۔

اس وقت شنرادی زیب النساء مشہور شاعر وقیس، آج کل بھی عورتوں میں ازیب النساء "نام کا عام دستور ہے گر بدرہ نظی عورتوں نے اس نام کو بدنام کردیا۔ وہ تو واقعۃ زیب النساء تھیں۔ ایک بارآ ئینہ سائے رکھ کر سرمدگاری تھیں کہ سلائی ذرائی چہھگئی جس ہے آنوکا قطرہ آئے پر گراء آنوکا قطرہ یوں بھی صاف شفاف ہوتا ہے گھر شنرادی کی آنکھ کا قطرہ سیسرمہ سے ملا ہوا قطرہ آئے پر گرا تو دوسرا معراع تیار ہوگیا، شنرادی پولیس۔

ر اٹک بنان سرمہ آلود (انگرہ درا ابل ہے'' ''کسی حسینہ کی آگھ کا سرمے والا تطرہ درا ابل ہے''

اجما ہوا کہ سلائی آنکہ میں چہوگی جس نے مسلم الکردیا، شنرادی نے یہ معراع کل کراریانی شنراوے کوروانہ کردیا، وہ معراع پڑھ کر پھڑک اٹھا کہ بیشاع کون ہے؟ اس نے خط لکھا کہ میں اس یا کمال شاعر کی زیارت کے لئے آنا چاہتا ہوں، زیب النساء کا والد بیخط پڑھ کرفکر مند ہوا اور بٹی ہے کہا دجہیں سجمایا نہیں تھا کہ الی شعر بازی ند کیا کرو؟ اب بتاؤوه زیارت کے لئے آتا جا ہتا ہے، کیا کروگ؟"

آن کل کا حکران ہوتا تو اس کے وارے نیارے ہوجاتے ، کہتا جی ہاں! آ یے ضرور تشریف لا یے ، لڑی بھی بن فن کر تیار ہوجاتی کہ اچھا موقع ہے خوب نمائش ہوگی، شہرت ہوگی، اس ذہن کے حکران اور بھٹی میں بھلا کیا فرق ہے؟ والد کی پریٹانی دکھ کر زیب النساء نے انہیں یول تبلی دی،" آپ کو ایس تشویش کیول ہور ہی ہے؟ اس کا جواب بھی مجھے پرچھوڑ دیجے! اللہ نے مجھے حسن کی دولت دی ہے تو اس نے غیرت بھی دی ہے، شرم دحیاء کا جو ہر بھی دیا ہے، جواب میں خود کھتی ہوں۔" جواب میں خود کھتی ہوں۔" جواب میں خود کھتی ہوں۔" جواب کیا کھا؟ سنے۔

بلبل از گل بگذرد گر در چن بیند مرا بت پرتی کے کند گر برهمن بیند مرا در خن مخفی منم چون بوئے گل در برگ گل بر که دبین میل دارد در خن بیند مرا

لیتی میراحسن وہ ہے کہ ببل چمن میں مجھے دکھے لیو گل کوچھوڈ کر میری طرف لیک پڑے اور برہمن مجھے دکھے لیو بت پرتی بھول کر میرے سامنے تجدہ ریز ہوجائے، جمال کا توبیہ عالم ہے تکر میں پردہ نشین ہوں کسی نظر کی جھے تک رسائی نہیں اگر کوئی میرے دیدار کا مشاق ہوتو اس کا علاج میں خود بتائے دیتی ہوں۔

در خن مخنی منم چون بوئے گل در برگ گل بر که دیدن میل دارد در خن بیند مرا تَدَوَهَنَدَ: ''میں اپنے کلام میں اپنے پوشیدہ ہوں جیسے پھول کی بتیوں میں پھول کی خوشبو۔ بیتاں نظر آتی ہیں خوشبونظر نہیں آتی، میرے جمال کا مشاہدہ میرے کلام میں کرو''

شنرادی پردے کی ایسی پابند کداس نے اپناتخلص بھی ' دفخف' رکھا تھا، آج کل کی

بازاری مورتوں نے اس کے نام کی ٹی پلید کررکھی ہے جوزیب النساء نام رکھ کر ہر کوچہ رسوائی میں پھرتی ہیں، بازاروں میں گشت کرتی ہیں، کل قیامت کے روز زیب النساء ان کی وامن گیر موں گی!

وو کہتی ہیں۔

۔ در تحن مخفی منم چون بوئ کل در برگ کل بر که دیدن میل دارد در تحن بیند مرا تَرَجَهَدَدَ: دمیں اپنے کلام میں پوشیدہ ہوں جو میرے دیدار کا مشاق ہووہ میری آس چھوڑ دے، میرے کلام کو پڑھے ای میں میرا بھال ہے، میرا دیدار ہے۔''

دیکھنے زیب انساء کوئی فرشہ تو نہ تھیں انسانی تلوق تھیں جومر کرمٹی میں انسانی تعلق تھیں جومر کرمٹی میں انسانی کہ بیا اب ان کا کہیں نام ونشان بھی نہیں، وہ دعول کرتی ہیں کہ میراحسن و جمال میرے کلام
میں بنبال ہے، تو محبوب حقیقی کے جمال کا کیا کہنا؟ ان کے دیدار کی لذت ان کے
کلام سے حاصل کیجئے! حقیقی دیدار آخرت میں ہوگا وہ فرماتے ہیں دنیا میں کوئی آ تکھ
ہمارے دیدار کی سکت نہیں رکھتی۔ بال! دنیا میں تہہیں اس کا موقع دیا ہے کہ اپنی
آتکھوں کواس قائل بنالو کہ جنت میں بڑے کر ہمارا دیدار کرسکیں، دنیا میں رہے ہوئے
آتکھوں میں بیصلاحیت کیسے پیدا ہوگی؟ ان کا کلام پڑھنے سے، سننے سے، عمل پیرا
ہونے سے، دنیا میں حقیقی دیدار تو نہیں ہوسکا آگر ان کے کلام میں دیدار جمال کی لذت
ہونے سے، دنیا میں حقیقی دیدار تو نہیں ہوسکا آگر ان کے کلام میں دیدار جمال کی لذت
ہونے ہے، دنیا میں خوا جائے گا وہاں ان کے جمال کا جلوہ ہوگا، مجب کو جوش آ سے گا،
ہمال ان کا کلام پڑھا جائے گا وہاں ان کے جمال کا جلوہ ہوگا، مجب کو جوش آ سے گا،

یاد کر لیجے! کتنے نسخے ہو گئے؟ پہلانسخہ'' کلام کا اثر''، دوسرانسخہ''اس کے انوار''، تیسرانسخ''بارگاہ میں صاضری''، چوتھانسخہ''ان کا دیدار۔''

يانجوال نسخه "اسماع الكلام"

آ کے سننے پانچوال نسخہ ب''اساع الکلام۔'' جب مسلمان تلاوت کرتا ہے تو صرف یہی نہیں کہ قرآن پڑھ رہا ہے اور بس، بلکہ صاحب کلام کواس کا کلام سنا رہا ہے، دینا کے کی مصنف کا حال دیجے لیجے؛ اس کی تصنیف کیی اور گری ہوئی ہو، نہ کھنے کا سلقہ ہو نہ تجییر کی صلاحیت ہو، گرمصنف صاحب کوکوئی پڑھ کر سنات کہ لیجئے حضور! بیس آپ کی تصنیف آپ کو پڑھ کر سناتا ہول، وہ کتنا خوش ہوگا؟ جب عام انسان بھی اپنا کلام کی سے من کرخوش سے چولائیس ساتا اور سنانے والے کو انعام و الرام سے نواز تا ہے تو اللہ تعالی اپنا کلام جس بندے سے من رہے ہیں اس بندے کو کیے عروم رکھیں گے؟ حماوت کے ذریعے جتنا اللہ کا قرب بڑھے گا ای قدر گناہ جس بندے۔ چھوٹیس گے۔

چھٹانسخہ"لدت خطاب":

قرآن میں بندہ اپنا لک کوخطاب کرتا ہے اور مالک اپنے بندہ کو،جس سے محبت کوشیلتی ہے، پانچویں میں بنایا تھا کہ بندہ اللہ تھا بندہ اللہ تعالیٰ کو اللہ تعالیٰ کوخطاب کرتا ہے۔ بندہ اللہ تعالیٰ مے بہ کرچمٹی بات بیہ کہ اللہ تعالیٰ کوخطاب کرتا ہے۔ اللہ تعالیٰ سے بم کلام ہوتا ہے۔

الله تعالى في اسني بندول كوبار بار "بايها الذين امنوا" كلفظ سے خطاب فرمايا بيا "بايها الذين امنوا" كوئى معمولى لفظ بيس اس كے معنى بيس" اسمير سے عاشق!" جب عاشق كونور محبوب" المدر سے عاشق!" كيد دے تو مجرد كيمي اس عشق كو كيے شد له عاش بن جارد و وعشق كيے مجر كما ہے، الله كرے يد بنده عاش بن جارد و عشق كيے مجر كما ہے، الله كرے يد بنده عاش بن جارد و خطاب كا اثر يد بوتا ہے كہ جس سے خاطب ہوتا رہے، ايك

لذت خطاب كي أيك مثال:

لذت خطاب کے بارے میں حضرت مویٰ علیہ السلام کی مثال اکثر بتا تا ہی رہتا ہوں ، اللہ تعالٰی نے حضرت مویٰ علیہ السلام سے بوجھا:

﴿ وَمَا تِلُكَ بِيَمِيْنِكَ يَمُوسَى ١٧٠ - ١٧٠)

تَكْرُجَمَكُ: "اوراكموى إتيرك دائي باتحيى بيكياك؟"

الله تعالى كا بيسوال بحى محض لذت خطاب پر جنى ب، اس لئے كدالله تعالى كوتو معلوم بى تعاكد ہاتھ ميں كيا ہے ، محض لذت خطاب ولانے كے لئے ، بندے كواعز از وينے كے لئے ہو جمع كيا ہے ، محض لذت خطاب ولانے كے لئے ، بندے كواعز از خوش كرنے كے لئے ہو جمع كوئی شغیق باپ محض بچ كا ول خوش كرنے كے لئے محبت ميں اپ جمعتا ہے كہ بيٹا ہے كيا ہوتا ہے كہ بيٹا ہے كيا ہے؟ مالانكہ باپ ديكور ہا ہوتا ہے كہ بیٹا ہے كیا ہے؟ مالانكہ باپ ديكور ہا ہوتا ہے كہ بیٹا ہے كے اس كيا چيز ہے ليكن محض دل كلى كے لئے ہو جمتا ہے كہ بیٹا ہے كیا ہے؟ اولا تو الله تعالى كو دريافت كرنے كى حاجت ہى ندمى بھر دريافت قربايا بحى تو مختصر ساجملہ كافى تعامر الله تعالى نے وس الفاظ پر شمتل طویل خطاب فربايا، آخد الفاظ تو ظاہر ہيں، نواں لفظ " بيمن" كے ضمن ميں ہوار دروان حرف رابط مقدر۔

پھر جب اللہ تعالی نے بوچھا: وما تلك بيمينك يموسى" اورا موی! تيرے دائيں ہاتھ ميں بيكيا ہے؟" تواس كے جواب ميں محض اتنا كهددينا كافی تھا كه "المخى"" "المخى ہے" بھى كہنے كى ضرورت نہيں اس لئے كه اگر كى كے ہاتھ ميں كتاب ہواوراس سے بوچھا جائے كہ كيا ہے تو وہ جواب ميں كيم كا" كتاب " وہ يہ نہيں كے كا" كتاب ہے" سو بظاہر بلاغت كے مطابق موئ عليہ الم كامحض اتنا جواب كانی تھا" لاھی" كیكن انہوں نے تو بہت لمبی بات شروع كردى، عوض كیا: هى عصابی " يديرى لاھى ہے-" كیك كى بجائے چارلفظ استعال كئے، تين الفاظ تو ظاہر عصابی " يديو تا اللہ تا كے لاھى ہے ہے تا اللہ تا كے لاھى ہے ہے تا اللہ تا كے لاھى ہے منافع برتقریش و مایا بلكر آ كے لاھى كے منافع برتقریش و کردی، عوض كيا:

﴿ أَتُوكُّواْ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَى غَنَمِي ﴾ (١٨-١١)

یں اس اٹھی ہے بہت نے کام لیتا ہوں، اس پر فیک لگاتا ہوں، اس کے ذریعہ درختوں سے اپنی بریوں کے لئے ہے جمازتا ہوں، لذت خطاب میں مست ہور کہی بات شروع کے ری، محرجس میں عشق صادق ہوتا ہے وہ ہر حال میں محبوب کی رضا کو مقدم رکھتا ہے۔

ارید وصاله ویرید هجری فاترک ما ارید لما یوید التحدی فاترک ما ارید لما یوید آگریوب اس پرداخی سائے گا۔ عاشق اپنی تمام خواہشات، لذات اور جذبات سب پچھ محبوب کی رضا پر قربان کر ویتا سب

حاجيون كاعشق:

اس سے یہ بات بھیلیں کہ جولوگ جج کرنے جاتے ہیں اور وہاں جذبات محبت طاہر کرنے میں موسب رضائے محبوب کے خلاف ہیں۔

دو تین روز ہوئے ایک فخص نے ٹیلی فون پر کہا کہ میری بیوی جمعے پر مسلط ہور ہی ہے کہ جج پر لے چلیں، میں نے اس فخص سے کہا کہ اپنی بیوی سے کہیں کہ حوراوں کو پردہ کرنے کا کہا کرے، کہنے گئے کہ وہ خود عی پر دہ نہیں کرتی تو دوسروں کو کیا ہے گی، میں نے کہا کہ بس بیاس کی علامت ہے کہ بیاللہ تعالی کو دھوکا دینے جاری ہے، پردہ کرتی نہیں اور جج کے لئے مسلط ہورہی ہے،اس کے خیال میں اللہ تعالی دھوکے میں آجائے گا اور مان لے گا کہ بیر بوری عاشقہ ہے۔

لذت خطاب میں موئی علیہ السلام کی بات لمبی ہونے لگی تو درمیان میں خیال آیا کہ میں تو اپنے جذبات میں لمبی بات کر دہا ہوں کہیں ایسا نہ ہو کہ لبی بات کرنامحبوب کو ناگوار ہو، اس لئے آھے عرض کیا:

﴿ وَلِي فِيهَا مَارِبُ أُخُرِى ١٨-١٨)

اوراس لا طی میں میرے لئے اور میمی کی فائدے ہیں، اگر مزاج یار پر گراں نہ گذرے تو ابھی تقریر جاری رکھوں ورنہ چینیں بند کردوں، اگرچہ لمبی بات بھی بلا اجازت تھی لیکن جب مالک خود ہی بلوار ہا ہوتو پھر کہاں رک سکتے ہیں۔

ے کر طمع خواہد زمن سلطان دین خاک بر فرق قاعت بعد زین

ال تفعیل سے ثابت ہوا کہ اس موقع پر اللہ تعالی کا سوال پھر اس کے لئے طویل کلام اور حفرت موئی علیہ السلام کا ضرورت سے کی محنا زیادہ طویل کلام بلاغت کے خلاف نہیں، بلکہ یہ تو بلاغت کا بلند مقام ہے، اس لئے کہ مجوب کے ساتھ مکالمہ کا مختنی یہی ہے کہ لذت خطاب کی خاطر کلام زیادہ سے زیادہ طویل ہو۔

ساتوال نسخه مكتوب محبوب":

عقل اور تجربہ دونوں کے مطابق یہ قاعدہ ہے کہ جب انسان اپنے محبوب کا کمتوب دیکھتا ہے تو انسان اپنے محبوب کا کمتوب دیکھتا ہے تو دل میں محبت جوش مارتی ہے، اگر کسی کے پاس اس کے محبوب کا خطآ ہے تو اس پر نظر پڑتے ہی دل کی حرکت تیز ہوجاتی ہے، ای طرح اللہ تعالیٰ نے بندہ کو اپنی محبت دے کر بھیجا ہے جس نے اس تخم محبت کو صالح نہیں کیا، جب وہ محبوب بندہ کو اس کا محبوب کے ساتھ محبت کو صالح نہیں کیا، جب وہ محبوب

ى كتاب كوديكمتا به اس كى محت كوشة تى ب محت بره جاتى بـ ـ . آ مھوال نسخه (محترت ذكر ' :

قر آن خود ذکر ہے اورخود قر آن میں بار بار ذکر القد کی تاکید کی ہے، یہ قاعدہ ہے کہ جس چیز کا جتنا ذکر کیا جائے گا اس چیز کی محبت بڑھے گی خواہ وہ چیز اچھی ہوی بری، اس کی تفصیل کی بار بتا چکا ہوں اس لئے زیادہ تفصیل میں نہیں جا تا البستہ ایک تھوڑی سی تنبیہ کردوں۔۔

دنیا کے کاموں میں مشغول لوگوں کو وصیت:

جولوگ دنیا کے کاموں میں گئے ہوئے ہیں وہ دنیائے مردار کا ذکر زیادہ نہ کیا کریں، چتنی ضرورت ہے آئی ہی بات کریں مثلاً دکان پر گئے دہاں جس کام کی جتنی ضرورت ہے آئی ہی بات کریں اور جہاں نج میں فرصت ملے ذکر القد زبان پر جاری رکھیں اور جہاں وہ کام تم ہوگیا ایسے جھیں کہ گویا ہے ہی نہیں، بمارا کام تو بس اللہ کو یا کہ تا ہے۔

۔ وم رکا سمجھو اگر وم بھر بھی یہ ساغر رکا میرا دور زندگی ہے یہ جو دور جام ہے

ے ہمارا محفل ہے راتوں کو رونا یاد دلبر میں ہماری نیند ہے محو خیال یار ہو جانا

د نیا کے کامول میں مشغول ہوں تو کہا کریں،''دست بکار و دل بیار'' یعنی ہاتھ تو کام میں مصروف ہیں لیکن دل القد تعالیٰ کی طرف متوجہ ہے، و نیا کے دھندوں کا بلا مفرورت ذکر کریں محے تو دنیا کی محبت بڑھے گی اور القدکی محبت میں کی آئے گی لہذا بلا صفرورت یا تیں ندکیا کریں۔۔۔۔

نوال نسخهٔ ^{در} کثرت فکر'':

قرآن مجيديس وعوت فكربهت بى زياده بمثلاً يدكداللد تعالى كاحمانات، انعامات، کمالات، قدرت قاہرہ، عظمت اور بڑائی کوسو جا کریں موت کا بیان ہے کہ کسی روز مرنا ہے، مرنے سے پہلے زندگ کے حالات کے بارے میں فرمایا کہ برخض برلحہ الله كي نظريس ب،الله كي قدرت ونظر ب بابرنيس جاسكا، الله تعالى كوبر برجيز كاعلم ے،ای طرح مرنے کے بعد کے حالات کا بیان ہے کہ اللہ کے سامنے پیش ہونا ہے پھر حساب و کتاب ہوگا اس کے بعد جنت ملے گی یاجہنم، جنت وجہنم کا بیان بھی تفصیل کے ساتھ ہے کہ جنت میں الی الی نعتیں میں اور جہنم میں ایبا الیبا عذاب_ گذشتہ اقوام کا بیان ہے کہ نافر مان تو مول کا کیا انجام ہوا اور اللہ کی رضا کی فکر میں گے ہوئے اللہ کے بندوں کو کیساسکون اورکیسی راحت می۔الغرض دعوت فکر کی تفصیل تو بہت لمبی ہے میں تو مختفر مختصر بتار ہا ہوں ورنہ قر آن مجید کے مضامین میں مجھ مذبر وتفکر کیا جائے تو ہرآیت بلکہ ہر ہرلفظ مدایت کا سرچشمہ ہے،اللہ تعالیٰ کے ساتھ تعلق پیدا کرنے اور اس کی نافرمانیوں ہے بیچنے کا ایک منتقل نٹنے ہے، قرآن مجید کے مضامین میں تدبر وْتَكُرِكِيا كَرِينٍ، أَكْرَكِي كُوزِيادِه عَلَمْ نِينِ تَوَاتِنَا سَاتَكُلُر تُوسِ بِي كَرِيسَكِيَّةٍ مِن كه الله تعالى کے احماثات و کمالات کوسوچا کریں، یہ قاعدہ ہے کہ کسی کے احسانات و کمالات کو سوچنے سے اس کے ساتھ محبت بڑھتی ہے۔

مخبت کے اسباب:

دنیامی محبت کے اسباب پانچ میں:

🛈 مال 🎔 کمال 🕏 بَمَال 🏈 نوال 🙆 قرب

ان چیزوں سے مجت پیدا ہوتی ہے، حب مال کا یہ کرشمہ ہے کہ مالدار سے لوگوں کو مجت ہوتی ہے، خواہ اس کے مال سے کسی کا کچھ بھی فائدہ نہ ہو، ای طرح صاحب کمال ہے بھی محبت ہوتی ہے گرگناہ کا سب سے پہلا تملہ عقل پر ہوتا ہے، اس لئے آن کل کے لوگوں کو اتنا بھی نہیں معلوم کہ کمال کے کہتے ہیں؟ کوئی موت کے کنویں میں اتر نے لگے تو آئییں اس سے محبت ہو جاتی ہے حالا نکہ موت کے کنویں میں اتر نا کوئی کمال نہیں، سوچنا چاہئے کہ کسی کے موت کے کنویں میں موٹر سائیکل وغیرہ چلانے سے لوگوں کا کیا بنایا کیا بگڑا؟

دس کوڑے اور دس درہم:

ہارون الرشیدر حمد اللہ تعالیٰ کے پاس ایک شخص اپنا کمال دکھانے آیا، دس سوئیاں کسی شختے میں گائی کہ وہ ان دسوں کسی شختے میں گائی کہ وہ ان دسوں سوئیوں کے ناکوں میں سے پار ہوگئ، ہارون الرشید رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ اسے دس درہم و سے دوادر ساتھ ہی دس کوڑے بھی لگاؤ! ورہم تو اس لئے کہ سے مجھامید لے کرآیا ہے اور کوڑے اس لئے کہ اس نے اتن محنت ومشقت اور اتنا وقت ایک ایسے کا مرک یے بیعنے پر ضائع کیا جس کا تد دنیا ہیں کوئی فائدہ اور نہ ہی آخرت ہیں۔

کوئی چھٹیں گھنے سائکل چلائے تو لوگ اے فخر سے دیکھتے ہیں حالانکہ سوچنا چاہئے کہ اس کے چھٹیں گھنے سائکل چلانے سے نہ ہی ونیا کا کوئی فائدہ اور نہ ہی آ خرت کا، کسی احمق کے چھٹیں مھنے سائکل چلانے سے نہ ہی پاکستان کوکوئی ترقی ہوسکتی ہے اور نہ ہی جملہ آور دشن کی فوجیس بھاگ عتی ہیں، بس ایک بے فائدہ کام میں گے اس بر ناز کرتے رہتے ہیں۔

ایک بار ہمارے ایک بے تکلف پڑوی کے بال ایک فخص آیا جو بلیڈ کھا جاتا تھا،
اسے دیکھنے کے لئے ان کے گھر پرلوگ جمع ہو گئے، ان پڑوی نے مجھ سے بھی کہا کہ
ذرای دیر آپ بھی دیکھ لیس، میں نے جواب دیا کہ میرے اللہ نے جھے کام کے لئے
پیدا فرمایا ہے، الی خرافات دیکھنے کے لئے میں پیدا تی نہیں کیا گیا، پھر خیال آیا کہ

بلید کھانے والے احتی اور و کیھنے والوں مہنیغ کروں کہ ایک خرافات میں اپنا وقت کیوں ضائع کررہے ہو؟ اس لئے بس جلاگیا، میرے تنفیخ پر ووقت کے کا کہ حیسا بلید میں کھاتا ہوں وہ یہاں ملائیں، وہ خاص کا بلید ہے بوموڑ نے نے و فاص میں بلید میں اسے مند میں رکھ کر زبان کی عدد ہے گول کر کے اندر نگل لیتا ہوں، میں نے کہا چلئے میں نے تبایل کھا جاتے ہیں میکن بیاتو بنا ہے کہ اس کواس کی حات بیں میکن بیاتو بنا ہے کہ کہا ہے کہا کہا ہے کہا ہے کہا ہوں کہا ہے کہا ہوں کہا ہے ک

خرافات میں لگنے کی وجہ:

حب ونیادو چیزول کے مجموعہ کا نام ہے:

() دب مال (· حب جاهد

یددوں چیزی تمام نصول کام کرواتی ہیں، حب ال تو یہ کہ بیسہ ملا ہے اور حب جہ دیے کہ لوگ واہ واہ کریں مجے کہ دیکھو بلیڈ کھا گیا، موت کے کتویں میں اتر گیا، دی سوئیول کے ناکوں میں سے سوئی پار کردی، حب مال وحب جاہ بیددونوں چیزیں دنیا وآخرت کوتاہ کرنے والی ہیں۔

اصل كمال:

کمال تو ہیہ ہے کہ اللہ کو راضی کرکے و نیا وآخرت دونوں بنالوا محبت کے تمام اسباب یعنی مال، کمال، جمال، نوال اور قرب میہ تمام چیزیں اللہ تعالیٰ میں بدرجیماتم پائی جاتی ہیں۔

> مال: مال اتنازیادہ کے سارے خزانے ای کے قبضہ میں ہیں۔ کمال: اللہ تعالیٰ کا کمال کسی پر تخفی نہیں۔

جمال: جوترم جمالوں کا پیدا کرنے والہ ہے، خوداس کے جمال کا کیاعالم ہوگا؟ نوال: (احسان) اتنا تغیم کدرب اعالیون ہے۔

قرب: قرب الناكدانسان كي شدرك يهي زياده قريب بين م

قریش یتمام با تیز، آجتی میں انسان ان کوسوجتار ہے تو اللہ تعالی ہے محبت بردھتی ہے، جب ایک محتوق میں برسے میں بیسوچ جائے کہ وہ کتا برا مالدار ہے، کیسا باکمال ہے، بہت نوبصور ہے ہی ہے، اس سے میر افلال رشتہ ہے، اس کے مجھ پر احسان ہے میں، وہ میرا ووست ہے، اسے جمہ سے کسی محبت ہے، سوجب ایک مخلوق کے بارے میں ان باتوں کے سوچنے ہے، وہتی ہے تی ہے تو خالتی جوان سب چیزوں کے بارے میں ان باتوں کے سوچنے ہے، وہتی ہے تی ہے۔ کہ کا پیدا کرنے والا ہے اس کے ساتھ محبت کے سینیں، وکی ؟

دسوال نسخه ^{دو} كثرت دعاءً :

قر آن مجید میں دعائیں بستہ کش مت ستہ ہیں،ان دعاول میں بیفا کدے ہیں:

الد تعالی نے ان دعاوں میں دنیا و خرت دونوں کی فلاح و بہود، برقتم کی خیر
اور بھلائی مائلنے کی تعلیم و ترغیب دی ہے اسر دعاؤل کو قبول کرنے کا وعدہ قرمالا

- 🕜 دعاء مانگ ہے مرض عجب سے تفاقت رہتی ہے، اس کے کد دعاء میں اپنے مجز اور اللہ تعالی کی عزیت پر نظر رہتی ہے۔
- ت دعاء ما تکتے سے القد تعالی ک مجت میں ترقی ہوتی ہے جو ہر قتم کی نافر مانیوں سے میتح اور دنیا و آخرت کی راحت و سکوان ک کلید ہے۔

رمضان میں گناد چنرانے کے دی شنخ بنائے تھے جن میں چوتھانسخد'' تلاوت قرآن'' بتایا تھا، بجر بتایا تھا کہ قرآن میں دی شنخ میں جن کا بیان پورا ہوگیا، اب رمضان کے باتی شنوں میں سے یا نجویں شنخ کا بیان شروع ہوتا ہے۔

رمضان مين يانچوال نسخه دنقل محبت":

بات يهال سے چلى تقى كەرمضان ميں گناه چيزانے كے نسخ بيں، چار نسخ تو تفصيل سے بيان ہو چكے، اب سنے پانچوال نسخ، دو ہے' انقل محبت''

رمضان کی آ مدآ مد ہے، اللہ تعالیٰ کے بندوں کو اس کا انظار ہے، اس کی خوثی ہے،اس کے لئے اشتیاق و بے تابی ہے کہ رمضان آ ئے تو ما لک کوراضی کرلیں۔اب سوچناید ہے کدرمضان کی آ مدیر مالک کو کیسے خوش کریں؟ ان کی رضا کیسے حاصل ہو؟ صرف رمضان کے آئے ہے ہی تو اس کی برکتیں نہیں مل جائیں گی ، رمضان تو سب پر آتا ہے، فساق، فجار، كفارسب رمضان گذارتے بیں تو كياسب كى بخشش بوجائے گی؟ ہرگزنہیں! اس کے لئے تو پچھ کرنا بڑے گا،سو پیمبت کا مہینہ ہے اس میں مسلمان محبت كي فقل اتارتا ب، عشق كا مظاهره كرتا ب، نقل كوالله تعالى قبول فرما ليت ہیں،اس میں اثر ڈال دیتے ہیں، دیکھئے! دنیا میں کسی انسان سے عبت پیدا کرنا جاہیں تو اے کیں: بعانی ا مجعے آپ سے مبت ہے، آپ سے بری محبت ہے اوہ آپ کی طرف ماُئل ہوگا اور واقعة محبت پيدا ہوجائے گی۔ دوسرا طريقه په ہے كہ يول كہيں كه آپ کو جھے سے مجت ہے، اگراہ محبت نہ بھی تھی تو آپ کے کہنے سے ہوجائے گی، الله تعالی کو ہماری کیفیت معلوم ہے کہ انہیں ہم سے محبت نہیں، ان کے دعوے خام ہیں، محبت کے بغیران کی نجات مشکل ہے، اس طرح بیجنم کا ایدهن بنیں مے، ان كرحم وكرم كوجوش آيا كه بندول كوجنم سے بجايا جائے، كس طرح بجايا جائے؟ كه محبت كالتخم ان كے دلول ميں بويا جائے ، محبت آگئي تو ہم تے تعلق جر جائے گا، شيطان ہے نکا جائیں گے،جہنم ہےمحفوظ رہیں گے،سواس رحمت کے بتیجے میں بندوں کو رمضان کی نعمت سے نواز ا جوعش و محبت کا مظہر ہے، مظہر کیے؟ صبح صادق سے غروب آ فآب تک بھوکے بیاہے بھررہے ہیں، راتوں کوٹراوی کے لئے صف بسة کھڑے یں، بیمبت کی نقل ہے کہ یا اللہ! تیری خاطر، تیری عبت میں بیسب پچھ کردہے ہیں، الن کی رحمت کو بھی جوش آئے گا اور محبت کا بدلہ دیں مے یعنی جہنم سے نجات اور جنت کی نعتیں _

790

ہاں محبت کا بیامول نہ بھولیئے کہ اس کی نقل اتارینے کے لئے بھی صرف زمانی دعویٰ کافی نہیں ہوتا محبوب کی صورت اختیار کرنی برتی ہے، اس کا کہنا ماننا برتا ہے، کھے کے بغیر صرف دعویٰ تو فریب ہی ہے، عبت کی تعوزی ک نقل آپ اتارلیں، آ مے اے اصل وہ بنادیں مے بقل اتارنے سے تچی محبت دل میں اتر جائے گی اور محبوب کی نافر مانی چھوٹنا شروع ہوجائے گی، بس محیت والوں کی صورت بنالیجئے، ان کی نقل اتارنا شروع کردیجئے ، بیدعاء بھی کرتے رہنے۔

> ے ترے محبوب کی یا رب شاہت لے کے آیا ہوں حقیقت اس کو تو کردے میں صورت لے کے آیا ہوں

يا الله! تير يحبوب كى صورت تو اختيار كرلى ب، تير يحبوب كى صورت كيح محبوب سب،اس صورت كطفيل بميس بحي اينامحبوب بناسيا بمجبوب كي صورت اختمار كرلينے سے بھى بہت كچھ ہاتھ آتا ہے، أنيس تودينے كے لئے بهانه جاہئے۔

حضرت موی علیہ السلام کے مقابلہ میں جب حادو کر آئے تو انہوں نے ابی رسال اور چیزیاں پھینکیں جو جادو کے اثر سے سانیوں کی صورت میں نظر آنے لگیں، حضرت موی علیدالسلام نے عصا بھینکا تو وہ اور دھا بن کیا اور جادوگروں کی رسیوں اور چیز یول کے جوسانپ بن مجئے تھے ان سب کونگل عمیا، وہ جادوگر ایمان لے آئے، ایمان بھی کتنا یکا،ایک ہی لمحہ میں فوراُ و ہیں کے وہیں اتنا یکا ایمان کہ فرعون نے کہا کہ من تمبارے باتھ یا ول کاف دول گا،سولی برچ طادوں گا، تمبین خم کردوں گا تو وہ جواب من كيت بن: ﴿ فَاقْضِ مَا آنْتَ قَاضٍ ﴿ إِنَّمَا تَقْضِى هٰذِهِ الْحَيْوةَ الدُّنْيَا ۞﴾ ﴿ فَاقْضِ مَا آنْتَ قَاضٍ ﴿ النَّمَا تَقْضِى هٰذِهِ الْحَيْوةَ الدُّنْيَا ۞

جو چاہے کرلے، ایسابھی تو ہوسکنا تھا کہ جناب ہم ہے کیا تصور ہوگیا، فدا کرات
کر لیجنے، موی علیہ السلام ہے کہتے کہ آپ فرعون سے پچھ بات کریں، فدا کرات
کریں، بچھنے تمجھانے کی بات کریں پھریہ ہے کہ نکھر دین نکھر ولی دین چونہیں
مانتے تو تم اپنے دین پر رہوہمیں ہمارے دین پر چھوڑ دو، فرعون صاحب کیا ہوگیا، اگر
ہم انیان لے آئے چلو بخش دو، چھوڑ دو، زی سے بات کر سکتے تھے، خوشا مدکر سکتے تھے
تھے، خوشا مدکر سکتے تھے گر وہ تو فرعون کو اور چڑارے ہیں:

﴿ فَاقُصْ مَاۤ آنْتَ قَاصَ ۗ إِنَّمَا تَقْضِىٰ هٰذِهِ الْحَيْوةَ الدُّنْيَا ۞﴾ ایک لمحد میں ایس ہمت کہ جو جاہے کرنے زیادہ سے زیادہ کیا کرلے گا کہی کہ ونیا کی زندگی ختم کردے گا، کردے سجان اللہ! اور کیا جاہئے وطن پہنچ جائم ہے، اللہ تعالی نے ان کے قلوب میں شوق وطن آخرت اورا بنی محبت آئی پیدا فر مادی کہ ان کے نزدیک دنیا کی قدر وقیت مچھر کے برجتنی بھی ندرہی ان برتو اللہ کی برجت ہوئی، ادهر فرعون نے تو حضرت موی عدیہ السلام کو گود میں بالا، جوانی تک حضرت مویٰ علیہ البلام فرعون کے پاس رہے، موی علیہ السلام کی صحبت میں فرعون نے کتنی مدت گذاری مگر اس بر کوئی اثر نہ ہوا اور ہے دوگر ایک لمحہ میں کہاں ہے کہاں پہنچ گئے۔ مفسرین رحمهم القد تعالی اس کی وجہ یہ لکھتے ہیں کہ جادوگر حضرت موک علیہ السلام کے لباس میں آئے تھے، اس زمانے میں بید ستور تھا کہ مقابلہ کے وقت دونو فریق ایک جیے اب میں ہوں اس لئے جادوگر حضرت موی علیہ السلام جیسا لباس بہن کرآئے امقد تعالی کو اینے محبوب کی شاہت بسند آگئی، ان کی رحت کومحبوب کی نقل اتار نے والول پر جوش آگیا اور ای لمحدا بمان میں ایسے کمال سے نوازا کہ وہ بے دھؤک بکار اٹھےاور فرعون جیسے جابر و خلالم بادشاہ کوتحدی (چینج) کردی[۔] ﴿ فَافْسِ مَا آنْتَ قَاضِ ﴿ إِنَّمَا تَقْضِیْ هٰذِهِ الْحَیْوةَ الدُّنْیَا ﴾ الله تعالی نے کہاں بہنچا دیا، یہ مجت کی نقل کے کرشے ہیں۔ بعض کتابوں میں ایک قصد کھا ہوا ہے کہ جب الله تعالی نے فرعون کوم لکر کے مندر میں غرق کردیا تو کافروں میں سے ایک خفس نے گیا جو استہزاء کے لئے حضرت موئی علیہ السلام کی نقل اتارا کرتا تھا، حضرت موئی علیہ السلام کی زبان میں لکنت تھی زبان صاف نہیں تھی تو وہ فداق اڑا تا تھا، حضرت موئی علیہ السلام نے الله تعالی سے عرض کیا کہ یا اللہ! بیتو میرا سب سے براوشن ہے، بیتو جھے ساستہزاء کے طور پر میری نقل اتارتا تھا اس کوتو سب سے بہلغ فرق کرنا تھا اسے کیسے چھوٹو دیا؟ الله تعالی کی طرف سے جواب الله! "موک بیتے تھوٹو دیا؟ الله تعالی کی طرف سے جواب میل اس کوتو سب سے بہلغ فرق کرنا تھا اسے کیسے چھوٹو دیا؟ الله تعالی کی طرف سے جواب کردوں۔" الله تعالی کی رحمت کو جوش آگریا آگر والی سے اتارے اسے میں کیسے فرق میں الله تعالی نیس اتارتا تھا، میں الله تعالی کی تحمت میں الله عالی کی تحمت میں گئیسی رحمت ہوگی۔ وہ تو عدادت کی وجہ سے ایسا کرتا تھا تو جو الله کے حبیب صلی الله عالیہ وہ کم کی نقل محبت سے اتارے اس پر الله تعالی کی کیسی رحمت ہوگی۔

رمضان میں مرغوب چیزوں کوچھوڑ دینا، چند گھنے ان صصر کرلینا اہل محبت کی نقل ہے، عشقوں کی جنگاری دل میں نقل ہے، ای صورت کے طفیل عشق کی چنگاری دل میں پڑتی ہے اور شعلہ بن کر ہر ما سوا کو بعسم کردیتی ہے، عاشق اینے معشوکی کے سواہر چیز کو محول جاتا ہے۔

حفزت بومیری رحمه القد تعالی فرماتے ہیں میں سونے کے لئے بستر پر لیٹا تو محبوب کا خیال آگیا، خیال کیا آیا؟ سینے میں آگ کی لگ گئی، اس نے نینداڑاوی، ایسا بے چین و بے کل کردیا کہ اب نہ لیٹا جاتا ہے نہ بیضا جاتا ہے۔

شروع میں تو نقل بنا بنا کرمجت پیدا کرنی پڑتی ہے، اس کے بعد بجل کے تار کی مانند چے جاتی ہے، پھرعاش بیچھا چھڑا نا بھی جاہے تو نہیں چھوڑتی، بس ایک بارنقل

ا تاركرو كم اليحيّا!

۔ خواب را مجذار امشب اے پسر کی شے در کوئے بے خوابان گذر ایک دات کے لئے نیندکو خیر باد کہددہ بیدات بے خوابوں کی کھی میں گذاردو، بس اتنا کرکے دکھیدلو، کچر بیہ بے خوابی ایسی دامن گیر ہوجائے گی کہ پیچیا چھڑانا مشکل ہموجائے گا۔

حضرت كنگوي رحمه الله تعالى كاقصه:

حفرت محنگونی رحمہ اللہ تعالی جب حضرت حاجی صاحب رحمہ اللہ تعالی کی ضدمت میں بیعت کے لئے حاضر ہوئے تو عرض کیا کہ جھے ہے اذکار واشغال نہیں ہوئیت تو عرض کیا کہ جھے ہے اذکار واشغال نہیں ہوئیت تو عرض کیا کہ جھے ہے اذکار واشغال کی فرصت بی نہیں ال سکے گی، یہ حضرات صیاد ہوتے ہیں، پھانسے کے ماہر، فرمایا کہ ذکر کرنے کا طریقہ سکھے لیجئے، اس میں کیا حرج ہے بھی موقع مل جائے تو کر لیا کریں وہ نہیں۔ خادم کو اشارہ فرمادیا کہ ان کا بستر میرے قریب بی الک دو اس نے گا بہتر میرے قریب بی الک دو اس نے گاد با تنور کے قریب، بھالک کو فیند کسے آئے؟

۔ جس قلب کی آ ہوں نے دل پھونک دیئے لاکھوں ا اس قلب میں یا اللہ! کیا آگ بجری ہوگی

اب بستر پر کروٹوں پر کروٹیس بدل رہے ہیں، نیند بھلا کہاں آئے؟ بڑے میاں نے نہ جانے کیا پھوئک دیا؟

حضرت گنگوی رحمدالله تعالی کو نیندنبیس آربی، سوچا چلوآج رات تو پچر کرلیس، دل میں ایک دردسا اٹھا، اب تو جال میں پیش گئے، نکلنا کہاں نصیب ہو؟ کمبل ند چھوڑنے کا قصدتوسن ہی رکھا ہوگا، بہت مشہور ہے۔

حضرت گنگونی رحمداللہ تعالی اس رات اٹھ کرنوافل اور ذکر میں مشخول ہو گئے، پھر تو زندگی بحربیہ مشغلہ بن عمیا، بس ایک رات بے خوابوں کے کو بے میں گذار دی اب عربح رکے لئے بے خواب بن مجئے۔

بال! و تقل اتار نے ہے ہی بہت کھیل جاتا ہے، ساحران قرمون کا قصد بار با

من کیے ہیں، ذرااس بین فور کریں، حضرت موئی علیہ السلام فرمون کے لی بیل اس کی

مود بیل لیے بڑھے، فرمون موئی علیہ السلام کی طبعید وقطرت کو، ان کی صدافت کو

خوب بھتا تھا، اسے یعین کال تھا کہ آپ سے نی ہیں مگر دیکھتے ہدایت نہ ہوئی۔ اس

کے بھس جو جادو کر مقابلہ میں آئے وہ ہدایت پا کئے اور اپنی فلطی کا احتراف کرکے

زمین پر مجدہ ریز ہو گئے، ماجرا کیاہے؟ جس نے سالہا سال موئی علیہ السلام کو ویکھا ،

بلکہ اپنے ہاتھوں میں پال بوس کر بڑا کیا وہ محروم، اور جو ایک دن کے لئے آئے وہ

کامیاب و مرفراذ ہو گئے، اس کی وجہ یہ تھی کہ جادو گرموئی علیہ السلام کی صورت بنا کر

آئے تھے، ان جیسالباس بہن کرآئے تھے، بن نقل محبت نے جی ان کا بیڑا پار کردیا،

اللہ تعالی کی محبت نے دیکھیری کی، محبت کی چاٹ لگ گئی، ایمان کی طاوت نصیب

ہوئی، بھرتو یہ کیفیت ہوئی کہ فرعون کو بھی دو در دو کھڑے ہوگر کھے ہوگر کھے جن سایا اور موت

ہوئی، بھرتو یہ کیفیت بیدا کرنے میں بڑاد خل ہے۔

۔ ترے محبوب کی یا رب شاہت لے کے آیا ہوں حقیقت اس کونو کردے ہیں صورت لے کے آیا ہوں رمضان کے اعمال نقل محبت ہیں، دن مجر مجوکے پیلے دہے، دات کو نیند کا غلب ہے، اونگھ رہا ہے مگر تر اور کو نہیں چھوڑتا، بیرسپ محبت کی نقل اتاری جارہی ہے، اس کا

لازی اثر یہ ہوگا کہ گزناہ چھوٹیس کے بمجوب کی حقیقی محبت ول میں جاگزیں ہوگی ، اس کی **آ** نافر مانی کا خیال دل سے نکل جائے گا۔

چھٹانسخہ' کوشش اور دعاء'':

کوشش اور دعاء، ان دونوں کا باہم خاص ربط ہے، اس لئے دونوں سے مجمومہ کو ایک نمبر شار کیا گیا۔

أيك اشكال:

یباں پھر وہی اشکال عود کرآتا ہے کہ مہینہ بھر روزے رکھنے اور تراوی پڑھنے
کے باوجود مسلمان کے گناہ کیوں نہیں چھوٹے؟ اسے تو اس دوران بزرگ بن جانا
چاہئے، اس کا جواب بار ہا دے چکا بھرل کہ بینے خاس مریض کے لئے ہے جوصحت کا
طالب ہو، مرض سے شفا باب ہونا چاہتا ہو۔ آن کے مسلمان نے یہ طے کر رکھا ہے کہ
وہ روزے رکھے گا، تراوی پڑھے گا گر بیسب پچھ کرنے کے باوجودگن وایک بھی نہیں
چھوڑے گا، روزے کی حالت میں بھی گناہ کرتا ہی رہتا ہے، ایسے مسلمان کورتی بحر
فائدہ نہیں بنتے گا۔

محبت کی علامت بتا چکا ہوں کہ گناہ مچوٹ جائیں، گناہ چھوٹے سے جہنم سے نجات اور جنت کی نعمتوں کا فیصلہ ہوگا، جو محض جہنم کو گلے لگائے بیضا ہواس سے چھٹکارا جا بہتا ہی نہ ہوتواس کا کس کے باس کیا علاج؟

ہاں! جومسلمان کہتا ہے میں جہنم سے ڈرتا ہوں، گناہ چھوڑ نا چاہتا ہوں، بالخصوص رمضان میں اپنے آپ کو گناہوں سے پاک کرنا چاہتا ہوں گر گناہ چھو منے نہیں، ایسے لوگوں کو ہمت ہارنے کی بجائے دوکام کرنے چاہئیں، کہلی چیز ہے کوشش۔

کوشش کے بغیر دنیا کا کوئی ذراسا کام بھی نہیں ہوتا،کوئی پتا بھی نہیں بلتا تو عمر بحر کے گناہ بغیر کوشش کے صرف تمنا کرنے ۔ یو نہیں چھوٹ سکتے ، سوپہلی چیز کوشش ہے۔دوسر نے نمبر براس دعاء کا اہتمام:

"يا الله! من عمناه جهور نا جابها بول، تيرا بنده بننا جابها بول مرنفس و

شیطان میری راه میں رکاوٹ ہیں، یہ مجھے جہنم میں دھکیلنا جاہتے ہیں، تو بی میری دشکیری فرما، مجھے گناموں سے بچا، نفس وشیطان کی دست برد سے مجھے چیزا،''

كوشش بهى جارى ركع كاتو الله تعالى كى مدد في جائ كى، دعاء بي الريدا موكا، بیدو کام کرکے دیکھیں مناہ فورا چھوٹے شروع ہوجائیں گے، بال! ایک دو دن بیکام كركے بيفرند جائيں بلكه مبينه بحراض سے مشى جارى ركھنا ہے، دعاوى يابندى ترك ند كرير، آخر عر مركيميل كچيل اوركندگي ايك دودن مين تو صاف نييس موسكق، صفاكي کے لئے مہینہ جاہے، بدنصاب (کورس) ہے جومریض کو تمل طور پر استعال کرنالازم ہے۔ جیسے ڈاکٹر سے بوجھتے ہیں کہ اس مرض کے علاج کا نصاب (کورس) کتا ہے؟ وہ بتاتا ہے مہینہ یا دومہینے یا سال، مریض یا بندی سے ڈاکٹر کی ہدایت برعمل کرتا ہے، رمضان شروع ہوتے ہی اللہ تعالیٰ کی محبت روحانی مریضوں برمتوجہ ہوگئ کو یا آئیس مبيتال من داخله مل كيا، علاج شروع موكيا جومبينه بحرجاري رب كا_اب جومبيتال میں داخلہ ہی ند الے یا لے کر درمیان میں کسی وقت بھاگ جائے اسے قطعاً کوئی فائدہ نہیں ہوگا، علاج شروع ہونے کے بعد کچھ دریسے دواء کا اثر محسوں ہوتا ہے، یوں تو جس دواء میں اللہ تعالی نے شفاء رکی ہاس کی پہلی خوراک میں بی اثر موتا ہے بلکہ ایک قطرے ش بھی اثر ہوتا ہے مگر بدائر ظاہر نیس ہوتا ، محسوب نیس ہوتا ، اس کا اصاب چندون تک دواء استعال کرنے کے بعد بی موتا ہے، کوئی گنمگار جیسے بی تادم موکر اللہ تعالی کی طرف متوجہ ہوا، گناہ چھوڑنے کی کوشش شروع کی اس کا علاج شروع ہوگیا، صحت پاب ہونا شروع ہو کیا مگر اس کا اثر چند دن بعد معلوم ہوگا۔

مناه چیزانے کے اس نسخے کے دو جزء ہیں:

کوشش اور دعاء۔ دونوں کا استعال شروع کردیں دیں دن بعد خاطر خواہ فاکدہ خسوس کریں گے، دل میں ممناہوں سے نفرت پیدا ہوجائے گی اور گناہ کچر کچر چھو شتے محسوس ہونے لگیس مے، اس کے بعد مزید دس دن تک پابندی کرنے سے مغفرت ہوجائیں گے، یہ ہے "النجاة ہوجائیں گے، یہ ہے"النجاة من الندو" کا عشره، اس میں جہنم سے رہائی کا پردائیل جائے گا، کوئی ہو چھے کہ بخشش تو ہیں دن بعد بی ہوئی تمی تو اس کا کیا مطلب کہ کائل نجات آخری عشرے میں ہوگی؟

جواب بیہ کہ نجات کے کی درج ہیں، ادنی درج کی نجات تو ہیں دن بعد ہوگی، دو چارخوط دینے کے بعد نکال دیا جائے گا اور اعلی درج کی نجات جس میں امیم میں ہوا بھی ندیکے، دور ہی دور سے نجات ہوجائے یہ مہینہ ہم کوشش کے بعد ملتی ہے۔ ادنی درج کی نجات ہیں دن بعد ہی ال جاتی ہے، اس کے بعد اگر مسلمان کوشش میں فرق نہیں آنے دیتا، کوشش اور دعاء کا سلسلہ جاری رکھتا ہے، گناہ چھوڑتا چلا جاتا ہے تو ایک مہینہ بعد کال درجہ کی نجات نصیب ہوگی۔

يس يول وعاء كيا كرنا مون:

" یااللہ! مجھے جہم کی آگ ہے! تی دور رکھ، اتی دور کہ بالکل ہا ہی نہ چلے کہ جہم کیا ہے اور کہاں ہے؟"

قرآن مجید میں ایک جگدالل جنت اور الل جنم کا آپس میں مکالمہ ندکور ہے، دونوں فریق آپس میں محفظو کریں گے، میں طاوت کرتے ہوئے جب ان آنوں پر بہنچا ہول تو ساتھ ساتھ بیدعا مکر لیتا ہون:

''یا اللہ مجھے جہنم ہے دور رکھئے! بہت دور، ہم میں الل جہنم ہے مکالمہ . کرنے کی ہمت نہیں، بیتو ہوے دل گردے والے جنتی ہوں کے جو جنت میں بیٹے کر جہنم کا نظارہ کریں گے، الل جہنم ہے گفتگو کریں گے، ہمارا بیر حصارتہیں، ہم دور ہی ٹھیک ہیں۔'' سیاتو ال نسخہ'' جسمانی ضعف'':

ر برائی سے انجامناہ چیزانے کے جینسنوں کا ذکر ہوچیکا۔ ساتواں نوے استعقیہ''

روزہ رکھنے سے روزہ دار کوضعف محسوں ہوتا ہے، طبیعت میں اضحطال آ جاتا ہے، میشون و استحطال آ جاتا ہے، میشون و استحطال ہمی گناہ چیٹرانے کا ایک مستقل نی ہے، کمزوری پیدا ہونے سے نئس کی شوخی تتم ہوجاتی ہے، نافرمانی کا جذبہ سرد پرنجا تا ہے، بالخصوص گرم علاقوں میں اور ہون و رکھنا تو برا مجاہدہ ہے، اس سے بدن میں کمزوری اور جذبات میں پڑمردگی آ جاتی ہے جو گناہ چیٹرانے کا علاج اور نشس شریر کیلئے لگام ہے۔ جذبات میں پڑمردگی آ جاتی ہے جو گناہ چیٹرانے کا علاج اور نسس کی آمس حکمت ۔ چونکہ نئس کی قوت کو تو ڑ نا ہے اس لئے افطار کے بعد بھی زیادہ کھانے پینے سے احر از کرنا چاہئے، پیپ بھر کر کھالیا تو نفس میں قوت آ ہے گی اس طرح روزے کی حکمت فوت ہوجائے گی، بیان حصرات کی رائے ہے، محتقین فرماتے ہیں ایسے پر بیز کی کوئی حاجت نہیں، جب اللہ تعالی کھانے پینے ہے دوک دیں تو رک جا داور جب کھانے کے حاجت نہیں، جب اللہ تعالی کھانے پینے ہے دوک دیں تو رک جا داور جب کھانے کے حاجت نہیں، جب اللہ تعالی کھانے پینے ہے دوک دیں تو رک جا داور جب کھانے کے خوب کھاؤ پیؤ۔

ے چون طمع خواہد زمن سطان دین خاک بر فرق تناصت بعد زین سر میں میں در اس

مالک تو کے کھاؤ ہو گھر بندہ نخرے کرے، یہ بات شان بندگ کے خلاف ہے، اگریہ بات کس درج میں مطلوب ہوتی تو اللہ تعالی بندوں کو ضروراس کا عظم دیتے، آخریہ عکمت اللہ تعالی سے تو اوجھل نہتی؟ انہوں نے بندوں کو اس کا مکلف کیوں نہ کیا؟ جب اللہ تعالی نے ہمیں اس کا پابند نہ کیا بلکہ اس کے برعکس فرمایا:

﴿كُلُوا وَاشْرَبُوا﴾

کہ کھا کا پولو ہمارے لئے اپنی طرف ہاں تئم کی حکمت ومسلحت گھڑنے کا کوئی جواز نہیں، حکمت ومسلحت وہ قابل قبول ہے جو حدود شرع کے اندر رہ کر سمجی جائے، جس حکمت کا شریعت میں کوئی اشارہ نہ ملتا ہو وہ قابل قبول نہیں، بس صاف ساف بات یہ ہے کہ طلوع منج صادق سے خروب آفناب تک کھانا پینا چھوڑ دو مگر جیسے

آ فهاب غروب مو:

﴿ كُلُوا وَاشْرَبُوا ﴾

خوب کھا وَ پیؤیر بیجی نہیں کہ ذرا سا کھائی کر ہاتھ کھینج لو، خوب کھا وَ! خوب ہیو! حتی کہ صبح کا سفید تا گا ظاہر ہو، گراس کا یہ مطلب بھی نہیں کہ بے تحاشا کھاتے چلے جاو، جس سے بدہضمی ہواور قے آنے گئے، ہرکام میں اعتدال مطلوب ہے، کھ وَ بھی اس حد تک جے بسہولت ہضم کر سکو جو بیاری کی بجائے صحت کا ذرایعہ ہے، نہ بہت زیادہ کھاؤنہ بہت کم۔

اب یہ اشکال ہوگا کہ اس طرح جب کھانے پینے کی چھوٹ ہوگئی تو روزے کی مسلحت کیے پوری ہو؟ اس کا ایک جواب تو یہ ہے کہ جومسلحت اور حکست انسان ہجت کے ضروری ہے کہ وہ حکمت و حکمت و مسلحت آئی، علم کواس کے تابع کردیا جائے۔ اس سے قلب موضوع لازم آئے گا۔ مسلحت آئی، علم کواس کے تابع کردیا جائے۔ اس سے قلب موضوع لازم آئے گا۔ انشد تعالی ادران کے رسول صلی القد علیہ وسلم کا حکم تو اتنا ہے کہ غروب تک کھانے پینے سند تھا کہ دون سے اس کے ساتھ یہ بات بھی اختراع کر لی کہ دن سے سل کھانا پینا چھوڑنے کے ساتھ ساتھ رات میں بھی کم کھاؤ ہیو ورنہ روزے کی حکمت علی اور کر نش نہ ہوسکے گا۔

ال حکمت برعمل کر کے ہم اللہ تعالی اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے بتائے ہوئے قطعی تھم کو کیسے تبدیل کر دیں؟ وہ تو غروب کے بعد کھانے پینے کی تعلی چھوٹ دے رہے ہیں، آپ اس سے منع کر رہے ہیں، یہ ایک بات ہوئی۔ دوسری بات یہ کہ کدروزے کی افادیت، اس کی تا شیرخودرسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بیان فرما دی۔ ارشاوفرما لا:

''جس کوشادی کرنے کی استطاعت نہ ہووہ روزے رکھے۔'' (شنق علیہ) روزے میں بیاثر ہے کہ وہ اس کی قوت شہویہ کو کمزور کر دے گا،نفس کو فصی کر وے گا۔ (اس نسخہ یر اشکال و جواب "جواہر الرشید" جلد م جوہرہ نمبراے میں ہے، جامع) المراس مصلحت کا حصول اس بات برموقوف ہوتا کہ دن میں روزے رکھنے کے ساتھ ساتھ رات میں بھی تم کھائیں اور بھو کے بی رہیں تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ضروراسے بیان فرما دیتے۔ جب نفس پر قابو پانے اور اسے رام کرنے کا نسخہ ہی بیان فرما رہے ہیں تو یہ اہم بزء کیے چپوڑ دیا کہ صرف دن کا روزہ رکھیں، رات کو کھانے پینے کی تعلی چھوٹ ہے؟ روزے کے جوفوائد ہیں،اس میں جو تکستیں ہیں، جو سحیں ہیں وہ سب روزہ رکھنے سے حاصل ہو جائیں گی خواہ رات کو پہیٹ مجرکر ہی کھانا کھائیں، بلکہ مقویات ،مشرویات اور ہرطرح کی نعتیں استعال کرتے رہی اس ہے حصول مقصد میں کوئی فرق نہیں بڑے گا، ہر حکمت روز ہ رکھنے میں ہی بنبال ہے۔ الله تعالى كركس يحم كى حكمت مجمد ميس آئے ندآئ بس بندے كاكام ب آئلميس بند كر كے تسليم كر اينا يحيم فاكثر ہے بھى نى بى اے آتے ہيں اس كى حكست تونيس یو جہتے۔ وہ اینے ننخول کی حکمت اوران کی اہمیت وافادیت خود بجھتے ہیں، مریض کوان باتوں سے کیا واسط؟ الله تعالی بھی اسے احکام کی حکمت وصلحت خوب جانے ہیں۔ بھلاجس نے پیدا کیا وہ بھی نہ جانے ، کیا میکن ہے؟

(الا يعلم من خلق) (١٧ - ١٤)

نفس کا خالق وہی، نفس کی خواہشات کا خالق بھی وہی ، کھانے پینے پراثر مرتب
کرنے والا بھی وہی۔ جب انہوں نے فرما دیا تو ہمارے لئے چون وچرا کی مخبائش
نہیں، رات کو کسی محمول کے بغیر پیٹ بھر کر کھانے پینے سے بھی روزہ کی حکمت
حاصل ہوجاتی ہے اور قوت شہویہ کمزور پڑجاتی ہے۔ چلئے آخر میں اس کی حکمت بھی
سمجھا دیتا ہوں وہ یہ کہ تجربہ کی بات ہے کہ کھانے پینے کے اوقات بدلنے ہے بھی
طبیعت میں ضعف واضحال پیدا ہوتا ہے، جب مبح صادق سے مغرب تک پوراوقت
مسلسل بغیر کھائے پیئے آپ نے گذاردیا اور جن اوقات میں کھانے پینے کا معمول تھا

دہ اوقات بھوک میں گذار دیئے تو ضعف ونقابت اس کا لازی نتیجہ ہوگا، تجربہ کر کے دیکھ لیجئے۔

رمضان سے پہلے اپن قوت کا اثدازہ کرلیں، اس کے بعد رمضان مجرمقویات استعال کرتے رہیں، طاقت کے انجلشن بھی لگواتے رہیں، دٹامن بھی خوب استعال کریں مگر روزے پورے کرنے کے بعد قوت میں کی محسوں کریں مے، شرعاً، عقلاً، تجربہ نہ ہم پہلو سے یہ بات ثابت ہوگئ کہ تھم کے مطابق عمل کرنے سے مطلوبہ مصلحت اور حکمت ازخود عاصل ہوجاتی ہے۔

آ مهوال نسخه "شياطين كامقيد موجانا":

الحمدلله! عمناه چھڑانے کے سات نسخ تکمل ہو گئے۔اب سننے آٹھوال نسخہ وہ ہے" رمضان میں شیاطین کا مقید ہوجانا۔"

انسان کوشرارت اور سرکشی برآ ماده کرنے والی چیزیں دو ہیں:

نفس اور شیطان، شیطان سے حفاظت کے لئے اللہ تعالیٰ نے اپنے بندوں کی ایوں دھیری فرمانی کر رمضان میں اسے قید کردیا۔ اس برکسی کواشکال ہوسکتا ہے کہ اگر شیاطین قید میں ہیں تو رمضان میں لوگ گناہ کیوں کرتے رہتے ہیں؟ اس دوران تو سب کو کی جواب ہیں:
سب کو کی سیح مسلمان بن جانا جا ہے ۔ اس کے کی جواب ہیں:

ایک قویہ کہ بڑے شیاطین مقید ہوتے ہیں، ان کے کارندے کام کرتے رہتے یں۔

دوسرا جواب بیہ بہ کہ گمناہ کرانے کے لئے صرف شیطان ہی اکیلائیس انسان کا اپنانفس بھی تو ہے، بتایئے شیطان کو کس نے گمراہ کیا تھا؟ اگر شیطان کے لئے دوسرا شیطان ضروری ہے جس نے اسے گمراہ کیا تو اس دوسرے شیطان کے لئے بھی تیسرے شیطان کا وجود ضروری ہے، پھر تیسرے شیطان کے لئے چوتھا شیطان ضروری ہوا، اس طرح تسلسل لازم آئے گا جور کنے کا نام ندلے گا، حقیقت بیہ کہ بڑے شیطان تو نفس ہے جس نے البلس کو بڑے شیطان تو نفس ہے جس نے البلس کو بھی گراہ کیا، شیاطین اس مہینے میں مقید ہو جاتے ہیں مگر سب سے بڑا شیطان لینی نفس تو انسان کے اندر موجودر ہتا ہے، وہ اپنا عل جاری رکھتا ہے۔

تیسرا جواب ہے ہے کہ گیارہ ماہ تک شیطان کا انسان پرتسلط رہا وہ اپنا زہر سلسل چھوڑتا رہا، گیارہ ماہ تک ڈستارہا۔ اب ایک ماہ میں گیارہ ماہ کا زہر کیسے ٹم ہوگا؟ وہ تو ختم ہوتے ہوتے ہی ٹتم ہوگا۔ سوبارہویں مہینے میں گوشیطان قید ہوجاتا ہے مگر اس کا چھوڑا ہواز ہرا پنااڑ دکھاتارہتا ہے۔

چوتھا جواب ہیہ ہے کہ شیطان اور اس کے حواری جنات رمضان میں مقید ہوجاتے ہیں گرانہوں نے انسانوں میں سے کی شیطان تیار کر لئے ہوتے ہیں، یہ انسانی شکل کے شیطان اپنا کام جاری رکھتے ہیں اور اصل شیطانوں سے بھی کہیں بڑھ کر کام کر جاتے ہیں۔ پورے گھر بیں بے چارہ ایک فرد مسلمان بنتا چاہتا ہے، گناہوں سے اپنا وامن بچاتا چاہتا ہے گرشیطانوں میں گھرا ہوا ہے۔ یوی، والدین، گمرا ہوا ہے۔ یوی، والدین، فالدین، اور مختلف 'زاد' بہکانے ہر شیطانوں میں گھرا ہوا ہے۔ یوی، والدین، خالدزاد' زادیوں' کو بہکانے میں شیاطین سے بھی بڑا کروار اواء کرتے ہیں۔ اس بے خالدزاد' زادیوں' کو بہکانے میں شیاطین سے بھی بڑا کروار اواء کرتے ہیں۔ اس بے چارے کی محمل سے حاجت سب سے وابستہ ہیں، کسی کر دھتے کا پاس ہے، کسی سے طبح ہوئے ہیں۔ کہیں جانے اور راہ راست سے ہٹانے ہا کہ سب معروف ہیں، سرو زگوششیں کر رہے ہیں، کہیں جارے ہا تھ سے نگل نہ جائے۔ بڑا شیطان تو قید ہے مگر اپنے گھر میں شیاطین کا یہ پورا جھا تو کھلا ہوا ہے اور پوری آزادی سے معروف عمل ہے، ان شیاطین سے تو مفرنہیں، ان سے مقابلہ کے بوری آزادی سے معروف عمل ہے، ان شیاطین سے تو مفرنہیں، ان سے مقابلہ کے بوری آزادی سے معروف عمل ہے، ان شیاطین سے تو مفرنہیں، ان سے مقابلہ کے بوری آزادی سے معروف عمل ہے، ان شیاطین سے تو مفرنہیں، ان سے مقابلہ کے بوری آزادی سے معروف عمل ہے، ان شیاطین سے تو مفرنہیں، ان سے مقابلہ کے بوری آزادی سے معروف عمل ہے، ان شیاطین سے تو مفرنہیں، ان سے مقابلہ کے بوری آزادی سے معروف عمل کے بھرٹ نگان مکن نہیں۔

كان كمول كرسن ليجيز مديث من جوآ خرى عشره كو: النجاة من الناد فرمايا

عمیا ہے یہ ہر مخص کے لئے نہیں کہ کوئی گناہ چھوڑے یا نہ چھوڑے بہرکیف اس کی مغفرت اور نجات کا فیصلہ ہو جائے ، نجات تو گناہ چھوڑنے سے ہی ہوگی۔

رمضان میں ممناہ چیزانے کے بہت ہے نیخ جیں، جوان کو استعمال کرے گا اس کے گناہ لاز ما چھوٹ جائیں مے اور جہنم سے نجات ہو جائے گی۔ بیاللہ تعالیٰ کا اور رسول صلی اللہ علیہ وسلم کا قطعی فیصلہ ہے کہ نجات کا مدار ترک مشکرات ہے۔

یااللہ! ہماری زندگیوں کو ہرتئم کے منکرات وفواحش سے پاک وصاف فرماد ہے، اپنی محبت عطاء فرماہ اپناتعلق عطاء فرما اور گناہوں سے نیچنے کے جومؤ ثر نسخے ہیں انہیں • استعمال کرنے کی توثیق عطاء فرما اور ان کے سٹ ٹرات عطاء فرما۔

نوال نسخه موت کی یاد":

اب سنتے رمضان میں گناہ چھڑانے کا نوان نسخہ اس بات کو سوچیں کہ جس طرح آپ کے بہت سے اعزہ اقارب واحباب جو گذشتہ رمضان میں آپ کے ساتھ سخے اس رمضان میں نہیں ہیں ای طرح ہوسکتا ہے ہمارا بھی بیآ خری رمضان ہو۔ جب موت کو یاد کریں گے تو خطات جاتی رہے گی، ونیا ہے دل ٹوٹے گا، آخرت سے جب موت کو یاد کریں گے کو خطات جاتی رہے گی، ونیا ہے دل ٹوٹے گا، آخرت سے بڑے گا اور گناہ چھوٹے لکیس کے کیونکہ عام طور پر انسان اپنے نفس کی لذت کے لئے گناہ کرتا ہے جب بیہ بات سامنے رہے گی کہ گناہ کے جیتے اسباب ہیں موت آکر سب کی بڑ کاف دے گی ہر چیز دھری کی دھری رہ جائے گی تو انسان گناہ سے باز سب کی بڑ کاف دے گی ہر چیز دھری کی دھری رہ جائے گی تو انسان گناہ سے باز

ر موت کو یاد کرنے سے گناہ کس طرح چھوٹے ہیں اس کی مزید تفصیل حضرت اقدس رحمہ اللہ تعالیٰ کے وعظ "مراقبہ موت" میں پڑھیں۔ جامع)

دسوال نسخه ^{«عقل}ی تربیت":

رمضان میں ممناہ چیزانے کے جونو ننے بتائے تھے، یونو ننے عملی تربیت ہے

متعلق سے، آخر میں بدوروال آخو علی تربیت ہے متعلق ہے۔ ہرگناہ کا سرچشد دماغ
کا ختاس ہے، دل ودماغ کی اصلاح کے بغیر گناہ چھوٹنا ممکن نہیں، عقل کی اصلاح
ہوئی، دماغ درست ہوگیا تو اعمال کی اصلاح از خود ہوجائے گ۔ ماہ مبارک ہیں عقل
تربیت کیا ہے؟ ذرا سوچے! ون مجر کھانا چینا، یوی ہے ہم بستر ہونا سب ترام مگر رات
ہوتے ہی بیسب جائز! سوچے ایسا کیوں ہے؟ غروب سے ایک کھ پہلے جو کام حرام
ہوتے ہی بیسب جائز! سوچے ایسا کیوں ہے؟ غروب سے ایک کھ پہلے جو کام حرام
میں بین بیسب جائز! سوچے ایسا کیوں ہے؟ غروب سے ایک کھ پہلے جو کام حرام
میں بین بیسے ہوتے ہی جائز بین گئے، چند لمحے ویشتر
کھانا چینا حرام تھا مگر اب کھانے پینے میں تاخیر کریں کے تو میناہ گار ہوں گے، بید بات
مقل ودائش کے سرا سر خلاف معلوم ہوتی ہے، ای طرح آئیس یا تمیں رمضان تیک
دورہ رکھنا، کھانے پینے سے رکے دہنا فرض تھا مگر دوسرے ہی ون عید کو کھانا چینا فرض
ہوگیا، اب روزہ رکھیں گو پکڑ ہوگی، کل جو بات موجب اجروثواب تھی آج وہی کام
موجب عذاب ہے، آخر ہے کیا اجراہے؟

سب عقلی تربیت ہورہ ہے، بات بجھ میں آئے یا ندآئے ،عقل تعلیم کرے یا نہ کرے گا نہ ان کرے گا نہ ہوں و چرا کی مخبائش نہیں، مالک کے ہم میں متحمہ سنتے مالک کے ہم قد ہے کہ میں مالٹ کرنا بندے کا کام نہیں، اس کا کام تو ہہے کہ تھم سنتے ہیں کہددے میرے آتا! تیرے تھم پردل وجان سے رامنی ہوں، تیری رضا پراپی رضا کو قربان کرتا ہوں، تیری مصلحت پراپی مصلحت کو قربان کرتا ہوں، میں تو بندہ تھم ہوں، تیرے تھم سے سرتانی کی کیا بجال؟

یا اللہ! تو ہماری عقلوں کی الی تربیت فرما دے، ذہنوں کی الی اصلاح فرما دے، ذہنوں کی الی اصلاح فرما دے، ذہنوں کی الی اصلاح فرما دے، ذاویہ نظر کوالیا سیدھا بنا دے کہ جمہ تن تیرے تھم کی طرف متوجہ رہیں۔ یا اللہ اللہ علی جملی الی تربیت فرما دے، اپنی مرضی کے مطابق الیے کیا ہے مسلمان بنا کے تیرے برتھم کے سامنے سرگوں ہو جائیں، کی تھم کی تھیل میں ایس وہیش نہ کرس۔

روزے رکھنے سے ماہ مبارک کی برکت ہے آگر اصلاح عقل کی یہ دولت ل جائے تو بڑے سے بڑے گناہ بھی چھوٹ جائیں۔ جب انسان کی عقلی تربیت نہیں · ہوتی، اپنی عقل نارسا کو غلط طور پر استعمال کرتا ہے تو ہر گناہ کا راستہ کھل جاتا ہے بلکہ بعض اوقات کفرتک نوبت پہنچ جاتی ہے، بیعثل کا بندہ سوچتا ہے کہ جھے جیسی عقل، مجھ جیسانہم کی کونصیب نہیں، کسی کے سامنے جھکنا اپنی ہتک مجمتا ہے، اس سے کبروعب کا دروازہ کھاتا ہے اور یمی جڑ ہے تمام روحانی امراض کی، عجب اور کبر میں فرق ہے، عجب كا مطلب ببس اين آپ كو براسمهما اوراس بنداريس رمنا كهيس بي سب کچھ موں۔بس اپنے آپ بی پرنظررہ۔اور کبر کے معنی بیں خود کو بڑا بچھنے کے ساتھ ساتھ دوسروں کو حقیر وذلیل سجھنا، اینے آپ کو عقل کل اور دوسروں کو بے وقوف اور تکھٹو تعة ركرنا۔ جب ذبن من بدخناس آتا ہے تو الله تعالى كے احكام من بمي حكمتيں تلاش كرنا شروع كرديتا ہے، جس تھم ميں مكست ومسلحت اس كى محدود اور كوتا وعقل میں نہیں آتی اس بھم کا افار کر دیتا ہے، اس طرح متاع ایمان سے ہاتھ دھو بیشتا ہے۔ بعض لوگ سوال كرتے بيں كه فلال مسئلے ميں كيا حكمت بيانے کی بجائے ریے کہہ دیتا ہوں کہ ہمارے ہیتال میں داخلہ کیجیے! حیالیس دن یہاں خاموش یڑے رہنے، اس کے بعد ان شاہ اللہ تعالی سم مسلہ کی حکمت یو چینے کی ضرورت بی پیش ندآئے گی۔

دینی مسائل بے شار ہیں، ان میں پوشیدہ حکمتیں بھی لا تعداد ہیں، کس کس مسئلے کی حکمت دریافت کریں گے؟ اگر لاکھوں حکمتوں میں سے دو چار آپ کے علم میں آئیں گی بھی کیسے؟ بھلا ایک چھوٹی کی پیالی میں سندر کیسے سا سکے گا؟ اللہ تعالی کی عظیم ذات! اس کے عظیم ادکام! ان میں پنہاں لا تعداد حکمتیں! کس عام انسان کی کیا مجال کر آئییں سمجے؟ پہاڑوں نے بھی ان کا بوجھ سہار نے سے انکار کردیا، آپ کی چھوٹی می عقل میں ہے حکمتیں کیسے سائیں گی؟ اصل سہار نے سے انکار کردیا، آپ کی چھوٹی می عقل میں ہے حکمتیں کیسے سائیں گی؟ اصل

علاج یہ ہے کہ محکمتوں کے چیچے پڑنے کی بجائے صاحب محم کی محبت دل میں پیدا کی جیا؛ الیک محبت پیدا کی جیا، مسلحتیں اور بیٹ کہ محکمت ہو چیٹا، مسلحتیں دریافت کرنا دوست کا کام نہیں یددشن کا کام ہے، پھروہ دشن کے دل میں اپنے راز ڈالیس کے کیوں؟ دشن ہزار زور لگالے یہ دولت اے نہیں بل سکتی، دل میں ان کی عظمت پیدا کر کے، آٹھیں بندکر کے تھم پر چل پڑیں پھر دیکھیں محتسیں وہ خود التا اکتاء کریں گئر کی محتسیں وہ خود القاء کریں گئر کی محتسیں کا شروع ہو جائیں گئر کے۔

اس کوایک مثال سے بجد لیں! کوئی شخص حکومت کے راز دریافت کرتا چاہتا ہے اگر حکومت کو پتا جل گیا تو وہ اسے پکڑ کر سرزائے موت بی دے گی، یوں بی سامنے جا کر یہ بات دریافت کرتے تو پاگل کہ کر پاگل خانہ بیج دیں گے اور چھپ کر دریافت کرتے تو جاسوی کے الزام جس پکڑا جائے گا جس کی سرزا موت ہے، داز دال بنے کا تو ایک بی طریقہ ہے کہ اس طرح دریافت کرنے کی بجائے حاکم اعلیٰ سے ربط پیدا کرے، اس کا وفا دار بن کراسے اعتباد جل لے جب وہ حاکم تم تمام پوٹیدہ وراز از خوداس کرے، اس کا وفا دار بن کراسے اعتباد جل لے جب وہ حاکم تم تمام پوٹیدہ وراز از خوداس کے سامنے خابر کردے گا۔ دین کے احکام جس کیدا کیجے، پھر نہ کوئی البحین باتی عمل کیجے، آخم الحاکمین کی مجب وظمیت قلب جس پیدا کیجے، پھر نہ کوئی البحین باتی رہے گی، نہ بی حکمت تلاش کرنے کی فکر رہے گی۔ قلب جس ایسا انشراح پیدا کر دیں گے کہ ہر البحین کا حل از خود بجھ جس آتا چلا جائے گا، حکمتوں کے پیچے نہ پڑتا اور بلا حجوں وجے اتھری کی علامت ہے۔

ہاں تو عقل کی سیح تربیت نہ ہونے سے بیامراض جنم لیتے ہیں اور رمضان میں عقل ووماغ کی بہترین تربیت ہوتی ہے۔

 روحانی جیتال میں واخلہ کی تو فیق نہیں طنی وہ اعتمال پرنہیں رہتا، افراط کا شکار ہوتا ہے

یا تفریط کا اور دونوں رائے جہنم کی طرف جاتے ہیں، جنت کا راستہ تو ایک ہی ہے وہ

ہے صراط مستقیم، راہ اعتمال! مسائل میں تحکمتیں وریافت کرنا عقل میں افراط کی
علامت ہے، جو تحف دوسروں کے عیوب تلاش کرتا ہے، بات بات میں دوسروں پر
شخصد اوران کی عیب جوئی کرتا ہے، بجھلو سے بھی افراط کا مریض ہے، اس کے دہاغ میں
بخب ہے، پندار ہے جس کی وجہ سے دوسروں کو فاطر میں نہیں لاتا اپنے آپ کو ہی بر
بات میں معیار جی مجھتا ہے، بیر مرض آج کل عام ہے۔ جھونپر ایوں والے، لنگو ٹیوں
بات میں معیار جی مجھتا ہے، یہ مرض آج کل عام ہے۔ جھونپر ایوں والے، لنگو ٹیوں
بات میں معیار تی مجھتا ہے، یہ مرض آج کل عام ہے۔ جھونپر ایوں والے، لنگو ٹیوں
بات میں معیار تی مجھتا ہے، یہ مرض آج کل عام ہے۔ جھونپر ایوں والے، لنگو ٹیوں
بات میں معیار تی مجھتا ہے، یہ مرض آج کل عام ہے۔ جھونپر ایوں والے، لنگو ٹیوں
بات میں معیار تی مجھتا ہے، یہ مرض آج کل عام ہے۔ جھونپر ایوں والے، کنگو ٹیوں
بات میں معیار تی مجھتا ہے، یہ مرض آج کل عام ہے۔ جھونپر ایوں والی التو ای سیاست
بات میں معیار تی مجھتا ہے، یہ مرض آج کی عام نے کا دانشور اور نا امور حکمران ہی نہ آئے کو یا دنیا کا سب سے بردا سیاست دان، چوٹی کا دانشور اور نا مور حکمران ہی نہ آئے کو یا دنیا کا سب سے بردا سیاست دان، چوٹی کا دانشور اور نا مور حکمران ہی

 شکر بچالاتا، فقر وفاقہ برمبر کا مظاہرہ کرتا۔ ایک طرف عقل ودانش اور ساست کے ات بلند بانگ دعوے، دوسری طرف حمالت اور کم عقلی کا بدمظاہرہ _معلوم ہواعقل ہے ہی نہیں ۔عقل تو وہ ہے جواللہ تعالیٰ کی معرفت کا راستہ دکھائے ، بندے کو بندگی اور شکر کا درس دے، نہ مید کہ ناشکری پر اکسا کر بندے کو اسپتے مالک سے کاٹ دے۔اللہ تعالى برمسلمان كوعقل سليم عطاء فرمائيں_

برمسلمان برفرض ہے کہ اللہ تعالی نے گناہ جپوڑنے کے جو نسخے عطاء فرمائے ہیں آئہیں استعال کر کے متقی بن جائے ، ہرفتم کے ظاہری و بالمنی گناہوں ہے تو یہ کر کے کیے اور سیچ مسلمان بن جائیں عمر اس کے برنکس ہویدرہاہے کہ رمضان میں دوسرے زماندہ بھی زیادہ گناہ کرتے ہیں اور پھر بڑا عذاب بیکدان گناہوں کو بہت برى عبادات اوراجر والواب كے كام بجھتے ہيں، ان منكرات و بدعات كى تفعيل وعظ "بدعات رمضان" میں ہے اللہ تعالی سب مسلمانوں کورمضان میں متق ینے کے نسخے استعال کرنے کی توفیق عطاء فرمائی اوراپی رحت ہے سب کواپی مرضی کے مطابق متقی بنادیں۔

الله تعالی کی جن تھلی نافرمانیوں اور علانیہ بغاوتوں کی وجہ ہے مسلمان دنیا و آ خرت کی جہنم میں جل رہے ہیں ان کی تفصیل وعظ"اللہ کے باغی مسلمان" میں و کھے، اس سے بہت فائدہ ہور ہا ہے بے شار باغیوں نے توب کر لی ہے اس لئے اس کی زیادہ سے زیادہ اشاعت کریں،اللہ تعالیٰ سب باغی مسلمانوں کوانی رمت سے سیحے مسلمان بنادیں۔

رمضان میں دو بہت بڑے گناہ:

لوگ رمضان میں گناہ چھوڑنے حیشروانے کی کوشش کی بحائے اور زبادہ گناہ كرتے ہيں مثلاً روزه كشائى كى رسم، افطار پارٹى كى رسم، عيد كے دن سويال يكانے كا التزام اورا كيك دوسرے كے كھرول ميں پہنچانے كى رسم وغيره ان رسوم ميں كئى خرايبال جيں اس لئے ناجائز بيں، ان سے بھى بڑھ كررمضان ميں ووگناه تو بہت ہى بڑے كئے جاتے جيں جن ميں عوام وخواص سب ہى جتلا بيں:

- 🚺 قاری اور سامع کواجرت وینایه
- 🗗 ختم قرآن کے موقع پرمٹھائی تقسیم کرنا۔

اب دونوں ناجائز رسموں کے مفاسد اور خرابیاں سفتے:

🗗 قارى اورسامع كواجرت وينا:

رمضان میں ختم تراوی کے موقع پرلوگ فدمت کے نام سے نقد رقم یا کپڑے وغیرہ دینے ہیں لیکن یہ درحقیقت معاوضہ علی ہے اور اجرت طے کرنے کی بنسبت زیادہ فتن ہے، اس لئے کہ اس میں دوگناہ ہیں، ایک قرآن سنانے پراجرت کا گناہ اور دوسراجہالت اجرت کا گناہ۔

بعض لوگ کہتے ہیں کہ قاری اور سامع بھی لڈکام کرتے ہیں اور ہم بھی لڈان کی خدمت کرتے ہیں اور ہم بھی لڈان کی خدمت کرتے ہیں معاوضہ مقعود نہیں، ایسے حیلہ بازوں کی نیت معلوم کرنے کے لئے حضرات فقہاء حمہ اللہ تعالیٰ نے بیا متحان رکھا ہے کہ اگر قاری اور سامع کو پچھ بھی نہ سلے تو وہ آیندہ بھی اس مجد میں خدمت کے لئے آ مادہ ہوتے ہیں یا نہیں؟ اور اہل مجد کا امتحان میہ ہے کہ اگر بیقاری اور سامع ان کی مجد میں نہ آئیں تو بھی بیلوگ ان کی خدمت کرتے ہیں یا نہیں؟ اب دور حاضر کے لوگوں کو اس سوٹی پر لا ہے، قاری کی خدمت کرتے ہیں یا نہیں؟ اب دور حاضر کے لوگوں کو اس سوٹی پر لا ہے، قاری اور سامع کو اگر کسی مجد سے پچھ نہیں کریں گے اور اہل مجد کا بید حال ہے کہ جس قاری یا سامع نے ان کی مجد میں کام نہیں کیا وہ خواہ کتنا ہی محتاج ہوان کو اس کی زبوں حالی پر قطعاً کوئی رحم نہیں آتا، اس سے ثابت خواہ کہ تا ہی تا ہ اس سے ثابت ہوا کہ ہوا کہ جو نے ہیں جھو نے ہیں لہذا اس

طرح سننے اور سنانے والے سب تخت گنگار اور فاس میں، اور ایسے قاری کی امامت حروہ تحری ہے۔

فرائیف بن فات کی امات کا پیتم ہے کہ آگر صالح امام میسر نہ ہویا فات امام کو رائیف بیل فات امام کو ہٹانے کی قدرت نہ ہوتو اس کی افقداء بیس نماز پڑھ کی جائز کسے جائز اس کی افقداء جائز نہیں، آگر صالح نہیں محرز دات کی کتھم میہ ہے کہ کسی حافظ نہ لیے تو چوٹی موروں ہے تروائ پڑھ کی جائیں، آگر محلّہ کی مجد بیل ایسا حافظ تراوئ پڑھائے تو فرض مجد بیل جماعت کے ساتھ اداء کرکے تروی کا لگ مکان بیل مردھیں ۔

بالفرض کی قاری کامقعود معاوضہ نہ ہوتو بھی لین دین کے عرف کی وجہ اس کی تو تع ہوگی اور کچھ نہ طنے پر افسوں ہوگا، بیاشراف نفس ہے جو حرام ہے۔ اگر کسی قاری کو اشراف نفس سے بھی پاک تصور کرلیا جائے تو بھی اس لین دین میں عام مروج نعل حرام سے مشابہت اور اس کی تلیید ہوتی ہے علاوہ ازیں دینی فیرت کے بھی خلاف ہے، اس لئے بہر کیف اس سے کلی اجتناب واجب ہے۔

ختم قرآن کے موقع پرمٹھائی تقسیم کرنا:

مضائی تقتیم کرنے کی مروج رہم میں کی قبائے ہیں مثلاً:

- اسے مستقل ثواب سمجھا جاتا ہے جو دین پر زیادتی ہونے کی وجہ سے برعت
 ۔۔۔
- اس کا ایسا النزام کیا جاتا ہے کہ کی حال میں بھی اس رسم کوتر کے نہیں کیا جاتا،
 النزام کی وجہ سے تو مستحب کا م بھی واجب الترک ہوجاتا ہے چہ جائیکہ جس کا استخباب بی ثابت ندہو۔
 بی ثابت ندہو۔
- وقف کی رقم ہے اس رِصرف کرنا ناجا زئے، اس لئے کہ بیٹری معدادف مجد

ے نہیں۔ لبذا منتظمہ برشرعاً اس قم کا منیان واجب ہوگا۔

بلا ضرورت شرعیه چنده کرنا ناجائز ہے، اس میں دین اور قرآن مجید کی تحقیر و
 تذکیل ہے۔

چندہ میں اگر خطاب خاص کیا گیا یا ایک مجل میں خطاب عام کیا گیا کہ جس میں چندہ دہندگان کی رضا اور میں چندہ دہندگان کی رضا اور میں چندہ دہندگان کی رضا اور طیب خاطر متیقن نہیں بلک خل غالب ہیہ کہ مروت اور غلبہ حیاء کی وجہ سے رقم دی ہوگی، لہذا اس رقم سے خرید کردہ مشائی طال نہ ہوگی، رسول الشصلی اللہ علیہ وسلم نے فریا،:

﴿ لا يحل مال امرئ مسلم الا بطيب نفسه ﴾ (مسند احمد)

کوما الی تقریبات کے چندہ میں بینک اور انشورس وغیرہ جیسی حرام آ مدنی
 والے بڑھ چرھ کر حصد لیتے ہیں، جس کی دوہ جہیں ہیں:

🕕 حرام خورول کے پاس بیسہ زیادہ موتا ہے۔

یہ لوگ مساجد میں اور ختم قرآن جیسے مواقع میں شیرینی وغیرہ تقییم کرنے پر رقم
 رقا کرعوام کو بیفریب دیتا چاہجے ہیں کہ ان کی آ مدنی حلال ہے اگر حرام ہوتی تو اہل مساجد کیوں قبول کرتے۔

قبائح ندکورہ نہ بھی ہوں تو بھی اس میں ایک بہت بڑی قباحت یہ ہے کہ اس
 ناجائز رسم اور بدعت شنیعہ کی تأمید ہوتی ہے اس لئے بہر حال ناجائز اور واجب الرک ہے۔

حفرت تھیم الامة رحمہ الله تعالی نے ایک سوسال پہلے ۲۱ شعبان ۱۳۱۹ھ یں دعظ المشہر رمضان میں اس پر بہت خت تر وید فرمائی ہے اور فرمایا کہ اس بری رسم کو ختم کرنے تکے لئے اگر عوام وخواص پوری کوشش کریں تو بھی پچاس سال سے پہلے نہیں ہو کتی ۔ حضرت رحمہ اللہ تعالی کے وعظ میں تو عوام اور علاء بہت ہوا کرتے تھے، عوام

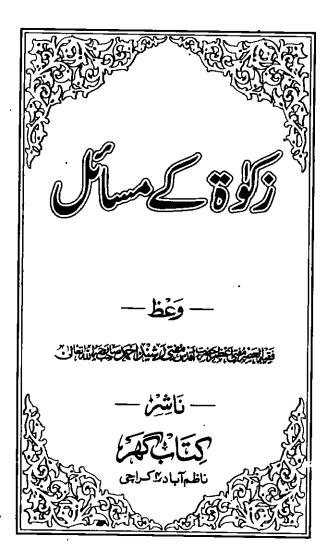
اورعلاء کے استے بڑے جُمع بی فر بایا کہ اگر سب ل کر کوشش کریں تو بھی اس فیج رسم کو مثانے بیس آ دھی صدی گر ر جانے کے مثانے بیس آ دھی صدی گر ر جانے کے بعد بھی بیتا جائز رسم ختم ہونے کی بجائے اور زیادہ ترتی کرگئی ہے اور روز بروز مزید ترتی کردی ہے بلکہ اور تی بیرا کی جاری بین اس کی وجہ بیہ ہے کہ موام وخواص کردی ہے بلکہ اس کی وجہ بیہ ہے کہ موام وخواص میں اللہ تعالیٰ کی تافر مانیاں چھوڑ دانے کی طرف توجہ نیس، فکر ہی نہیں بلکہ اس کمیرہ گراہ کو تو گراہ کروئی میں بلکہ اس کمیرہ گراہ کو تو گراہ کروئی اس کمیرہ گراہ کروئی اس کمیرہ گراہ کروئی اور زیادہ سے زیادہ روان و دے رہے ہیں۔

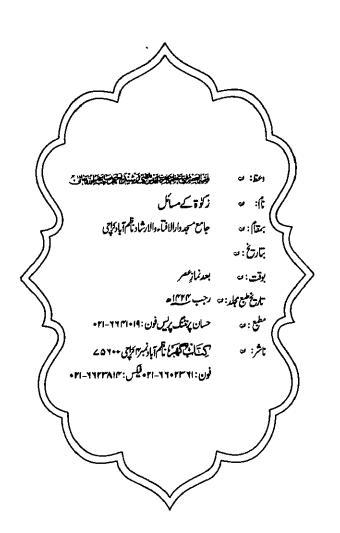
رمضان کے مبارک مینے کو اللہ تعالی کی الی علانیہ نافر مانیوں، محرات اور بدعات سے پاک کرنے کی برخمکن کوشش کرتا برمسلمان پر بالخصوص علماء پر فرض ہے، اس فرض کے اواء کرنے میں مخفلت کرنے والا برابر کا مجرم تغیرے گا، آخرت میں جواب دہ ہوگا اور عذاب میں برابر کا شریف۔ اللہ تعالیٰ سب مسلمانوں کو صراط متعقیم کی بدایت عطاء فرمائیں۔

دمغمان المبادك على مروجه بدعات ومحكرات كي تنعيل وعظ" بدعات دمغمان" ميں پڑھئے۔(باح)

وصل اللهم وبارك وسلم على عبدك ورسولك محمد وعلى اله وصحبه اجمعين. والحمد لله رب العلمين.







وعظ

زكوة كےمسائل

(شعبان ۲۱۱۱ه)

الحمد لله نحمده ونستعینه ونستغفره ونؤمن به ونتوکل علیه ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سیأت اعمالنا من یهده الله فلا مضل له ومن یضلله فلا هادی له ونشهد آن لا آله الا الله وحده لا شریك له ونشهد آن محمدا عبده ورسوله، صلی الله تعالی علیه وعلی آله وصحبه اجمعین.

اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم، بسم الله الرحمن الرحيم.

﴿ وَلَيْسَ الْبِرَّ بَأَنُ تَأْتُوا الْمُيُونَ مِنْ ظُهُوْدِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اللَّهُ لَكَكُمْ اللَّهُ لَعَلَّكُمْ اللَّهُ لَعَلَّكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَّكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَكُونَ لَكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعُلِيكُمْ لَعْلَيْكُمْ لَهُ لَعَلَيْكُمْ لَكُونُ لَكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَكُونَ لَكُونَ لَكُمُ لَعَلَيْكُمْ لَكُونَا لِكُلِيكُمْ لَكُونَ لَكُمْ لَكُونَا لِلللّهُ لَعَلَيْكُمُ لَكُونُ لَكُونَ لَكُونَا لِكُلِيكُمْ لَكُونُ لَكُونَا لِكُلِيكُمْ لَكُونَا لِكُلِيكُونَ لَكُونَا لِكُلْكُونَ لَكُونَا لِلللّهُ لَعَلَيْكُمْ لِعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَكُونَا لِعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَيْكُمْ لْلِعُلْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَاكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعَلَيْكُمْ لَعَلِيكُمْ لَعْلِيكُمُ لَعَلَيْكُمْ لَعْلَاكُمُ لَعَلِيكُمْ لَعْلِكُمْ لَعَلِيكُمْ لَع

شان مزول کے اعتبار سے تو اس آیت کا مطلب صرف اتنا ہے کہ گھروں میں د بواروں پر سے مچلانگ کرمت جاؤ، دروازوں سے جایا کرو۔ بیر آیت کس موقع پر نازل ہوئی؟ کیوں نازل ہوئی؟ اس وقت یہ تفصیل بتانا مقسود نہیں، اس آیت کے پر صفے سے یہ مقصد ہے کہ اس میں جو ہدایت کی گئی کہ گھروں میں دروازوں سے جایا کرو دیواروں پر چڑھ کرکود کرمت جایا کرو اس سے ایک کلیہ یعنی قانون اور اصول بچھ میں آیا کہ ہرکام سلقے سے کرنا چاہئے، وہ کام کرنے کا جو طریقہ ہے اس طریقے کے مطابق کیا جائے، ونیا کے کام بھی جیسے ان کا طریقہ ہو ویسے کرنے چاہئیں اور دین کے کام او بین بین ان کے مطابق کیا کرو۔ دنیا کے کاموں میں میچ طریقے انشداوراس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم نے بتا ہے ہیں ان کے مطابق کیا کرو۔ دنیا کے کاموں میں میچ طریقے سے ہٹ کراگر دوسر طریقے افتیار کریں گو وہ کام سدھریں شخیص گڑیں گے سے ہٹ کراگر دوسر طریقے افتیار کریں گو وہ کام سدھریں شخیص گڑیں گے نفیع کی بجائے انشا عذاب ہوگا، اللہ کی نفیع کی بجائے النا عذاب ہوگا، اللہ کی رضا حاصل ہونے کی بجائے فضیب نازل ہوگا اور جنت کی بجائے النا عذاب ہوگا، اللہ کی رضا حاصل ہونے کی بجائے فضیب نازل ہوگا اور جنت کی بجائے النا عذاب ہوگا، اللہ کی مضاب نازل ہوگا اور جنت کی بجائے النا عذاب ہوگا، اللہ کی تمام کام میچ طریقے ہوئے کیا کریں۔

آج کل مسلمانوں کی حالت یہ ہے کہ اولاً تو دہ دین کے احکام پر عمل کرتے ہی نہیں، دوسرے احکام کی بات تو الگ جو بنیادی پانچ ارکان ہیں ان پر بھی عمل نہیں کر رہے۔ کلمہ کے مقتصنی پر عمل کرنا تو دور کی بات ہے کلمہ ہی سیح نہیں، نماز نہیں پڑھتے، زکو ہ نہیں دیتے، روز نے نہیں رکھتے، جن پر ج فرض ہے وہ ج نہیں کرتے، فرائعن ادا نہیں کررہے۔

اركان اسلام كى ترتيب:

یہ بات یاد رکھیں کہ ارکان اسلام جب بیان کے جائیں تو ان میں ترحیب یوں رکھا کریں نماز، زکو ق، روزہ، جج۔ عام طور پر یوں کینے کا دستور ہوگیا ہے نماز، روزہ، جج، زکو ق، بیعت کے سلسلے میں بھی اوپر سے جیسے بات چلی آ رہی ہے میں بھی پہلے گئ سالوں تک بوقت بیعت یونی کہلوا تا رہا: "نماز پڑھوں گا، روزے رکھوں گا، ج فرض، ہوا تو اداء کروں گا، زکو قفرض ہوئی تو اداء کروں گائ رسول الله صلی الله علیہ وہلم نے بیہ ترتیب بیان فرمائی ہے: نماز، زکو قا، روزہ، جج، بیرترتیب انفا قانبیں بلکہ اس ترتیب میں کی تحکمتیں ہیں کی مصلحتیں ہیں۔

① ترتیب درجات عشق:

یدارکان اسلام عشق کے درجات ہیں، جب انسان کوکی سے عشق ہوتا ہے تو وہ اس کی باتمی کرتا ہے، اس کی تعریف کرتا ہے، قول اور عمل سے اس سے مجبت اور اس کی عظمت فلاہر کرتا ہے، بیعشق کا پہلا درجہ ہے نماز اس کا مظہر ہے۔

پر عشق میں اور ترقی ہورتی ہے تو محبوب کورامنی کرنے کے لئے پکھ مال وغیرہ خرج کیا جاتا ہے، اسے ہدایا و تعالف پیش کئے جاتے ہیں، اس کی اور اس کے دوستوں کی دھوت وغیرہ کی جاتے ہیں، اس کی اور اس کے دوستوں کی دھوت وغیرہ کی جاتے ہیں۔ اس طریق افتیار کئے جاتے ہیں۔ اس طرح ساکین کو تو قد دے کر محبوب حقیق کی رضا حاصل کی جاتی ہے، مساکین اللہ تعالیٰ کے دوست ہیں، علاوہ ازیں مساکین کو جو پکھ دیا جاتا ہے وہ کو یااللہ تعالیٰ کے دوست ہیں، علاوہ ازیں مساکین کو جو پکھ دیا جاتا ہے وہ کو یااللہ تعالیٰ می کو دیا جاتا ہے۔ اس کے زکو ق عش کے دوسرے درجہ کا مظہر ہے۔ پھراس کے بعد وہ درجہ آتا ہے کہ عاشق محبوب کے عشق میں اپنی لذات بحول جاتا ہے، دنیا میں الذ قبلد ات تین چزیں ہیں، اکل وشرب، نوم اور جماع، مجت کے جاتا ہے، دنیا میں الذ قبلد ات تین چزیں ہیں، اکل وشرب، نوم اور جماع، مجت کے جاتا ہے، دنیا میں الذات کو ترک کردینے ہے کو یاانسان نے اس درجہ بیشت کو سے کرلیا۔

اس کے بعد عشق اس درجے تک پہنٹے جاتا ہے کہ انسان جنون عشق میں اسپنے ہوش کھو بیٹستا ہے، اسے بالکل فکرنہیں رہتی کہ اس کا حلیہ کیسا ہے، اس کی حرکوں کود کھ کرلوگ کیا کہیں گے، بس وہ تو ویوانہ وار بھی محبوب کی گل کے چکر لگا تا ہے، بھی نعر ؤ مستانہ لگا کر بے ہوش ہوجاتا ہے۔عشق کے اس درجہ کا مظہر تج ہے۔ جج محبت الہیکا بہت بلند مقام ہے، اس کے بعد صرف محبوب کواپنی جان کا نذرانہ چیش کرنے کا مقام رہ جاتا ہے، محبوب کے دشمنول پر جھیٹنا، ان کی گردنیس اڑا نا اور اس کے مقصد کے لئے اپنی جان کی بازی لگا دینا۔

🗗 ترتیب فرضیت:

ان ارکان کی فرضیت کی ترتیب بھی ای طرح ہے، پہلے نماز فرض ہوئی، اس کے بعد ز کوق ، پھر روزہ ، پھر نج نماز ہجرت سے پہلے شب معراج میں فرض ہوئی ، ز کوق ہجرت کے بعد سن دو ہجری میں ، روزہ بھی اسی سن دو ہجری میں فرض ہوا مگر ز کوق کے بعد اور جج سن چھ یا نو ہجری میں فرض ہوا۔

🕝 ترتیب زمانی:

ترتیب زمانی کا اعتبار صرف روزہ اور جج میں ہوسکتا ہے، اس لئے کہ نماز تو روزانہ کا فرض ہے اورز کو قاکا کسی خاص زمانے سے کوئی تعلق نہیں بلکہ صاحب نصاب ہونے کے بعد جب چاہے وے دے، باقی رہے روزہ اور جج سوان میں ترتیب زمانی اس طرح ہے کہ جج کا زمانہ رمضان کے بعد ہے رمضان کامہینہ گزرنے کے بعد جج کا احرام باندھ سکتے ہیں، شوال سے قبل احرام باندھنا کروہ تحریمی ہے۔

🕜 ترتیب ذکری:

حدیث میں ان ارکان کا ذکر بھی ای تر تیب ہے ہے:

﴿عن ابن عمر رضى الله تعالى عنهما وعنهم عن النبى صلى الله عليه وسلم قال بنى الاسلام على خمس على ان يوحد الله واقام الصلوة وايتاء الزكوة وصيام

رمضان والحج. فقال رجل الحج وصيام رمضان قال لا صيام رمضان والحج هكذا سمعته من رسول الله صلى الله عليه وسلم ﴾ (صحيح مسلم)

اس سے ثابت ہوا کہ بعض روایات میں جوسوم رمضان سے پہلے ج کا ذکر ہے وہ روایت ہالمنی ہے یاکسی راوی کا مہو ہے۔اس حدیث میں ضیام رمضان کی تقدیم کا ثبوت رسول الند صلی اللہ علیہ وسلم سے صراحة ہے اور ترتیب درجات عشق، ترتیب فرضیت وترتیب زمانی کے مطابق بھی یہی ہے۔

قرآن اور حدیث میں جہاں کہیں نماز کا ذکر آتا ہے اس کے ساتھ ساتھ متصل زکوۃ کا ذکر آتا ہے اس کے ساتھ ساتھ متصل زکوۃ کا ذکر آتا ہے ، روزے کا بیان الگ ہے جم کا بیان الگ ہے جہاں وو حکموں کا ایک ساتھ بیان ہے تو وہ قرآن میں جگہ جگہ اور کی جگہ صدیث میں نماز زکوۃ ، نماز زکوۃ ، نماز زکوۃ ، نماز زکوۃ ، اس لئے دونوں کو' قریفتان' کہا جاتا ہے ، قریفتان کے معنی ہیں' دو ساتھ نہیں میدسم کب ہے پر گئی کہ نماز دونوں شریعت میں ساتھ ساتھ ہیں گر معلوم نہیں بیدسم کب ہے پر گئی کہ نماز دونوہ کہتے ہیں ، فلال نماز روزے کا پابند ہے اور نماز روزہ کرنا چاہئے ، غرض لوگوں کی زبان پرنماز روزہ ساتھ ساتھ آتا ہے حالا تکہ قرآن اور صدیث میں تو نماز اور زکوۃ کی ذبان پرنماز مورد ہے۔

اركان اسلام اورلوگول كى غفلت:

مسلمانوں کا حال بتا رہا ہوں کہ اولا تو ان ارکان خسہ کو اداء ہی نہیں کرتے اور اگر اداء کرتے ہیں، خشوع نہیں، اگر اداء کرتے ہیں، خشوع نہیں، خضوع نہیں، خضوع نہیں، خضوع نہیں، خضوع نہیں، سکون نہیں میہ بات تو رہی الگ، ان کے آ داب ظاہرہ کی بات بھی الگ رہی، فرائض اور واجبات بھی اداء نہیں کرتے، میرے خیال میں اکثر نہیں تو آ دھے نمازی تو ایسے ہی ہوتے ہوں کے کہ جن کی نمازیں سرے سے ہوتی ہی نہیں، جھے بتا

یوں چلنا رہتا ہے کہ ٹیلیفوں پر ایک دونہیں بہت سے لوگ نماز کے مسائل پوچھتے ہیں کہ رہے کیسے ہے؟

رئيسة القوم:

اس پر ایک قصہ بھی من لیس، ایک بارجؒ کے موقع پر مزدافہ میں میرے قریب ایک خاندان بیٹیا ہوا تھا، معلوم ہوا کہ پنجاب سے تعلق ہے کرا چی میں رہتے ہیں انہوں نے بتایا کہ وہ کئی کارخانوں کے مالک ہیں۔جس کے دل میں جس چیز کی محبت ہوتی ہے وہ جہاں بھی بیٹیمتا ہے ذکر لیلیٰ چھیڑ دیتا ہے۔

ظ جہاں بھی بیٹے ہیں ذکر انہی کا چھیڑ دیے ہیں

کوئی مولی کا ذکر چیٹرے کوئی کیلی کا۔ بدلوگ میرے باس ہی بیٹے ہوئے تھے انہوں نے مجھ سے کچھ مسائل ہو چھنے شروع کر دیئے۔ میں نے سوحا کہ چلئے شایدای طرح انہیں کچھ ہدایت ہوجائے اس لئے میں بھی متوجہ ہوگیا، مسائل بتا تا رہا، ایسے لگ رہا تھا کہ سب میرے عاشق ہو گئے، انوبی ہو گئے، ساری دات ایسے ہی گزرگی، میں نے سوچا کہ ایک مسکلہ یو چھنے کا ثواب ایک ہزار رکعت نقل پڑھنے سے زیادہ ہے، مجھے بتانے کا تو اور بھی زیادہ تواب مل رہا ہے، بیتو جمیں افضل ترین عبادت مل گئی، مز دنفہ میں تھم ہے کہ زیادہ ہے زیادہ عبادت کرو، اللہ کا ذکر کرونو میں نے سوجیا انصل ذ كرمل كيا ہے، ان نوگوں كو بدايت ہوجائے كى اوركيا جائے۔سارى رات اى طرح گزر کئی کسی طرف ہے مبح کی اذان کی آ واز آئی تو مجھ ہے کہنے گئے کہ نماز بردھائیں، میں نے کہا ابھی وقت نہیں ہوا۔ آپ لوگ بھی یاد رکھیں! مزدلفہ میں معلم منح صادق ہے پہلے ہی اذانیں دلوا کرلوگوں کونماز پر هوادیتے ہیں۔ کسی کی نماز ہویا نہ ہو کسی کا حج ہو یا نہ ہوائیں اپنا کام آسان کرتا ہوتا ہے کہ جلدی جلدی پہنچاؤ۔ وہ لوگ <u>کہنے گ</u>ے کہ نماز يرهماكي ميس في بتايا الجحى وقت نبيس بواجب وقت بوجائ كاتو ميس بتادول كا، ميرے ياس تو دنيا بھر كے حسابات رہتے ہيں، جہاں كا بھي جا ہيں چند منث ميں بتا سکتا ہوں کہ وقت ہوا یانہیں۔ جب میں نے کہا کہ ابھی وقت نہیں ہوا تو وہ ذرا میٹھ من محرك دوسرى طرف سے كى معلم نے اذان دلوادى توان مى سے ايك كہتا ہے:

''او کیوں جا گھراں مارن ڈیا؟'' دوس محور میں میں میں ہو

''وہ کیول چینیں مارر ہاہے؟۔''

بندرول کی طرح چیننے چلانے کی آواز کو' چانگرال' کہتے ہیں، ایسے واہیات لوگ کداذان کی آواز کواس سے تشبید دے رہے ہیں، پھر کسی مؤذن کی آواز می تو پھر و پسے ہی کہنے لگا:

"او كيول جا تكرال مارن ديا؟_"

اصرارشروع کر دیا کہ نماز پڑھائیں، ہیں نے پھرایک دو بارکہا کہ آخر مجھے بھی تو نماز پڑھنی ہے جب وقت ہوجائے گا تو پڑھا دوں گا اپنی نماز بر بادمت کریں انتظار کر لیں۔ بردی مشکل سے انہوں نے دو تین منٹ صبر کیا تو ایک عورت بولی:

'' گناای تال معاف کراؤن آئے آں انا وج اے دی سٹی اے وی ماف ہوجاؤ گا، چلو پڑھونماج تے چلئے''

تَتَوَجَعَتَدُ: ''گناہ بی تو معاف کردانے آئے ہیں، سارے گناہ معاف ہوجائیں گے بینماز کا گناہ بھی ساتھ ہی معاف ہوجائے گا، نماز پڑھواور چلو''

معلوم ہوتا ہے کہ وہ عورت رئیسۃ القوم تھی اس نے جیسے بی کہا سب اٹھ گئے،
رات بھر کاعشق ہر کرنگل گیا، رئیسۃ القوم بلکہ فقیہۃ القوم فر مارہی ہیں کہ یہاں گناہ بی
تو معاف کروائے آئے ہیں، اگر میہ ایک نماز نہیں ہوئی تو کوئی بات نہیں میہ گناہ بھی
ساتھ ہی معاف ہوجائے گا چلو پڑھونماز۔ بیتو جائے ہی اس نیت سے ہیں کہ گناہ
معاف کروائے آئے ہیں اس لئے یہاں خوب خوب گناہ کروکیونکہ حج کرنے سے تو
سارے گناہ معاف ہوہی جائیں گے۔ بیعا بی لوگ وہاں جا کرصرف شیطان کی بات
سارے گناہ معاف ہوہی جائیں مانے۔

آج زکوۃ کا بیان کرنا ہے بیتفعیل ای کی تمہیدتی ۔ زکوۃ کے بارے میں بھی لوگوں کے طالت یہی بین، جولوگ زکوۃ نہیں دیے ان کا حال نہیں بتارہا، زکوۃ کے فواکد اور ترک پر دعید بن نہیں بتارہا، جولوگ زکوۃ دیے ہیں وہ کیے دیے ہیں بہ بتانا چاہتا ہوں، ان کا حال بھی بھی ہے کہ ہویا نہ ہو کہتے ہیں، ہی ،وگی ا بی بی تمیزہ کی طرح، جیسے اس کا وضوء بھی نمیان ٹوٹنا تھا، بے وضوء بی نماز پڑھتی یہتی تھی اور کہتی تھی نماز ہوگئی، ایسے بی ہے گئی گویا کہ قبول کرنا بھی انہی کے اختیار میں ہے، نماز ہوگئی، ایسے بی ہے گئی گویا کہ قبول کرنا بھی انہی کے اختیار میں ہے، انہوں نے دے دی اور ہوگئی۔ زکوۃ کے بارے میں جو سائل بتاؤں گا اللہ تعالیٰ

تفصیل سے اور کمل طور پر بیان کرنے کی تو فیق عطاء فرما دیں، کوئی بات رہ نہ جائے اور سننے دالوں کو بیجھنے اور سیج طور برعمل کرنے کی تو فیق عطاء فرمائیں۔

نصاب زكوة:

میلی بات بد کرز کو قرض مونے کا نصاب کیا ہے، لوگ اس میں بہت غلطیاں کرتے ہیں، بنیادی غلطی بیہ ہے کہ دین کاعلم حاصل کرتے نہیں اور اگر کرتے ہیں تو براہ راست کچھ کتابیں بڑھ لیتے ہیں، کی عالم کی طرف رجوع نہیں کرتے۔مسائل بتانے کے لئے کوئی چھوٹا موٹا عالم کافی نہیں، برا عالم ہوتا جاہے،مفتی ہوتا جاہے، مفتی کے بارے میں ایک لطیفہ بھی من لیجئے، چندمہینوں میں ایسے ایسے لوگوں کے ساتھ مفتی کا لفظ سننے میں آیا کہ بہت تعجب ہوتا ہے، بہت تعجب، مسائل یو چھنے والے كتبة بين فلان مفتى! ش كهتا مون ارك! الصفتى كس في بناويا؟ تو كبته بين نيس نہیں! وہ مفتی ہیں، میں نے کہا وہ کہیں کی دارالافقاء میں چیز ای ہوگا، آپ نے اسے مفتی مجھ لیا ایے کرتے کرتے خود یہال کا قصہ پی آگیا، کی نے ٹیلیفول پر مجھ سے كمامفتى خالدصاحب، يس ن كماالله ك بندوا ومفتى كييم مو كي كيت بين بيس نيس، وه مفتى بي اوه ريح بي مارے ياس، افاءكى بوا بحى نيس كى، كيف كااراده بی نبیں ، ایک تو ہے تا کدارادہ ہو مھی مفتی بنے کا ان کا تو ارادہ می نبیں ، ہرایک و تعور ا بی ہرفن سکھایا جاتا ہے، ویسے بہت صالح نوجوان ہیں، اللہ تعالی نے اپنی رحمت سے بهت صلاحتین عطاء فرمانی مین، الله تعالی قبول فرمائین اور ترقی عطاء فرمائین _ بیتموزای ضروری ہے کہ جے بھی دارالافاء میں دیکھیں ای کومفتی کہنا شروع کر دیں پھر تو ہیہ مارے مؤذن صاحب بحی مفتی ہوئے مفتی مصطفیٰ صاحب مؤذن وامت برکاتم العاليد أيك اورلطيف سنت إكس نے كباك يبال دارالافاء كے مامنے سے بكري كزر جائے تو لوگ اے بھی مفتی کہتے ہیں ننیمت ہے بحری کہا گدھانہیں کہا، وہ بھی مفتی، وہ بھی مفتی، وہ بھی مفتی، سارے بی مفتی ہو گئے، مسئلہ پوچیس کی معتبر عالم سے اور معتبر ہے یانہیں، کہنے کوتو ہر مولوی کہد دے گا کہ میں بہت معتبر ہوں، مسئلہ ہر عالم سے نہ پوچیس، جو ہڑے بڑے وارالافقاء ہیں ان کے رئیس سے مسئلہ پوچھا کریں اور ان سے معین کروالیس کہ آپ کمی نہ ہوں تو میں کس کس سے مسئلہ پوچھ لیا کروں۔

ڈاکٹروں کو ڈاکٹر جانتے ہیں کہ ملک میں معتبر منتعد ڈاکٹر کون کون سے ہیں، جس طرح بڑا ڈاکٹر اپنے ماتحت ڈاکٹروں کو جانتا ہے ای طرح بڑے مفتیوں سے پوچمیں کہ پہال کون کون مفتی ہیں، اگر آپ نہیں طے تو پھر ہم کس سے مسئلہ پوچمیں۔ علم حاصل کرنے کی بہت اہمیت ہے جب تک علم سجے نہیں ہوگا تو عمل کیسے کریں ہے؟ صحیح عمل

صححظم پرموتوفے: ﴿ فَاعْلَمُ أَنَّهُ لَاۤ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرُ لِذَكْبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَٰكِ * وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمُ وَمَغُولُكُمْ ۞﴾

4...

فاعلسد ، پہلے علم حاصل سیجتے!علم ہوگا توعمل ہوگا،علم نہیں توعمل نہیں ہوسکیا اور اگر ہوا توغلا ہوگا وی جسے نماز بڑھی بھی تھر ہوئی نہیں۔

ز کو ق کا نصاب کتابوں میں دیکھ لینا کافی نہیں، سائل کی سب سے بری محتبر مستد کتاب کون سے جبہتی زیور ہیں آگر آپ نے ز کو ق کا نصاب ہزار اور کیے لیا تو بھی جب ہے جب کے کہا تھا کہ سے پر حیس مح نہیں ہم حیس مح نہیں اس وقت تک بھی بھی محصح ز کو ق نہیں دے سکتے ، کس سے پر حیس، شاگر دبنیں، کس استاذ سے پر حیس یا کس عالم مفتی سے پوچیں، مفتی وہی جو میں نے بتایا اس سے پوچھا کریں۔ برجی کا نصاب ہے سات تو لداور چاندی کا نصاب ساڑھے باون تولد اس سے لوگ یہ بیجھتے ہیں کہ جس کے پاس ساڑھے سات تولداور سازھے سات تولداور سات ہوگ یہ بیجھتے ہیں کہ جس کے پاس ساڑھے سات تولداور سازھے سات تولداور سائرھے سات تولداور سے ساڑھے اور کو ق فرض نہیں آپ لوگ بھی ایسے ی

سیجھتے ہوں گے نا ماشاءاللہ! ساڑھے سات تولہ سونا ہوگا تو زکو قرض ہوگی اوراگر اس سے تعوز اسا کم ہوا تو نہیں۔ای طرح چاندی کا نصاب تیجھتے ہیں ساڑھے باون تولے، اگر باون تولے ہے یا سواباون ہے تو کہتے ہیں زکو قرض نہیں۔ سنے اللہ تعالیٰ تیجھنے کی توفیق عطاء فرمائیں ،سونے کا نصاب ساڑھے باون تولے اس صورت میں ہے کہ صرف سونا ہو۔ای طرح چاندی کا نصاب ساڑھے باون تولے اس صورت میں ہے کے صرف جاندی ہو۔

اموال زكوة:

پہلے میں بھھ لیس کداموال زکو ہ کتنے ہیں، جن مالوں پر زکو ہ فرض ہوتی ہے وہ جار ہیں:

- 🛈 سونا۔
- 🕝 جاندی۔
- اُل تجارت، مال تجارت براس چزکو کہتے ہیں جو بیچنے کی نیت سے خریدی ہو،
 کہیں زیان وغیرہ خرید لی اس نیت سے کہ اسے نیچیں گے اور بیچنے کی نیت قائم بھی ہو
 تو وہ مال تجارت ہے۔ اگر شروع میں بیچنے کی نیت سے نہیں خریدی، ملک میں آئے
 کے بعد نیت ہوگئی کہ بیچیں گے تو اس پر زکو قائیں۔ ایسے بی اگر بیچنے کی نیت سے
 خریدی اور بعد میں بیارادہ ہوگیا کہ نہیں بیچیں گے تو بھی زکو قائیں، مال تجارت میں
 زکو قاده شولوں سے ہے:
 - 🕕 یج کی نیت سے خریدی ہو۔
 - 🕑 يىخى كەنىت قائم بىمى رىپ ـ

دونوں باتیں میں یادونوں میں سے ایک نہیں تواس پرز کو ہنیس موگی۔

🗨 اموال زكوة من سے چوتن چر نقترى ب، نقتى كا مطلب ينبس كدروبيا آپ

کے ہاتھ میں ہو بلکہ بیمطلب ہے کہ وہ کسی چیز کی صورت میں نہ ہو، جے آپ لوگ "دیش" کہتے ہیں وہ مراد ہے،خواہ وہ بینک میں ہو،خواہ کی تجارت میں لگا ہوا ہو،خواہ آپ کے گھر میں ہو،خواہ کسی کے پاس امانت ہو،خواہ کسی برقرض ہو۔

یہ جارچزیں ہوگئی، اب یہ جو کتاب میں لکھا ہوا ہے کہ ساڑھے سات تولے سونے برز کو ق فرص ہے، بیسونے کا نصاب ہے،اس کا مطلب بیہ ہے کدان جاروں چیزوں میں سے صرف سونا ہواور کچے بھی نہیں، چاندی بھی نہیں، مال تجارت بھی نہیں اور نقدی بھی نہیں، ایک پیما بھی نہیں جے"ٹیڈی پیما" کہتے ہیں، ایک ٹیڈی پیما بھی نہیں، کچھ بھی نہیں صرف سونا ہے تو اس کا نصاب ہے ساڑھے سات تو لے، اگر باتی تمن چزوں میں ہے کوئی چزسونے کے ساتھ ل گئی تو پھراس کے وزن کا اعتبار نہیں رہتا بلکہ ان سب چزوں کی قیت لگائیں ہے، اگر سب کی قیت کا مجموعہ ساڑھے باون تولے جاندی کی قیت کے برابر ہوگیا تو زکو ۃ فرض ہوجائے گی،سمجھ میں آ رہی ہے بات؟ لہذا سونا اگر ایک ملی گرام بھی ہواور اس کے ساتھ فقدی بھی ہے یا تھوڑی می جاندی بھی ہے یا مال تجارت ہے غرض کوئی بھی چیز ملانے سے مجموعہ ساڑھے باون تولے جاندی کی قیمت کے برابر ہوجائے تو زکؤہ فرض ہے۔اس صورت میں سونا تو و کیمنے میں تو تھوڑا سا ہے مگر زکوۃ فرض ہوجاتی ہے۔ یہی تفصیل جاندی میں ہے جاندی کا نصاب جو ساڑھے باون تولے بتایا جاتا ہے وہ اس صورت میں ہے جب کداموال زکؤہ میں سے کوئی چربھی ندہوصرف جا ندی ہو،سونے کا ذرہ بھی نہ ہو، مال تجارت کچھ بھی نہ ہو، نقدی میں ہے ایک یائی بھی نہ ہو صرف جاندی ہو تو ساڑھے باون تولے جاندی پرز کو ة فرض ہوگی اور اگر اس کے ساتھ سونے کا ذرہ ہو یا مال تجارت میں سے تھوڑا سا ہو یا نقدی ایک پیسا ہی کیوں نہ ہواس صورت میں وزن کا اعتبار نہیں قیت کا اعتبار ہے۔ دو چیزوں کا مجموعہ یا تین چیزوں کا مجموعہ یا حاروں کا مجموعہ ساڑھے باون تولے جاندی کی قیت کے برابر ہوجائے تو زکو ہ فرض ہوجائے گی۔ میراخیال کے کہ آج کل کوئی انسان ایسا تو ہوتا بی نہیں کہ جس کے پاس پیسا نہ ہو پیسا تو ہوتا بی ہے لہٰ داوزن کا اعتبار نہیں رہے گا، ان کی قیت کا حساب لگایا جائے گا، قیمت خرید نہیں بلکہ زکو قو فرض ہونے کا جو دن ہے اس دن بازار میں جو قیمت ہو وہ قیمت لگائیں گے۔ اگر کسی پر قرض ہوتو تمام اموال زکو ق کے مجموعے کی قیمت لگا کر اس میں سے قرض منعا کر دیں اس کے بعد اگر ساڑھے باون تو لے جاندی کے برابر ہوتو زکو ق فرض ہوگی ورنہ نہیں۔ بینصاب زکو ق دینے والوں کے لئے ہے۔

مصرف زكوة:

دوسرا نصاب ہے ان لوگوں کا جنہیں زلوۃ نہیں دی جاسکتی، اسے زلوۃ کا معرف کہتے ہیں۔ اس کا نصاب بیہ ہے کہ پائی چیزوں کا مجموعہ ساڑھے باون تولے معرف کہتے ہیں۔ اس کا نصاب بیہ ہے کہ پائی چیزوں کا مجموعہ ساڑھے وار جیزیں بتائی میں سونا، چاندی، تعیس، لینے والوں کے لئے تو چار چیزیں ہیں، چارتو وہی جو پہلے بتائی ہیں سونا، چاندی، مال تجارت، نقدی اور اس دوسرے نصاب میں پانچویں چیز ہے ضرورت سے زیادہ سامان، اس کی قیست بھی لگائیں گے۔ کس کے پاس بیپانچوں چیزیں ہوں، چار ہوں، سامان، اس کی قیست بھی لگائیں گے۔ کس کے پاس بیپانچوں چیزیں ہوں، چار ہوں، سامان، اس کی قیست کے برابر معرباد نو وہ زکوۃ نہیں لے سکن، اسے زکوۃ دے دی تو اداء نہیں ہوگ خوب یاو مرکوں۔

ضرورت سے زائد سامان کی تفصیل بھی بجھ لیس کہ ضرورت سے کہتے ہیں ورنہ لوگ تو یکی کہیں ہے گئے ہیں ورنہ لوگ تو یکی کہیں گئے اند کہاں؟ کسی تحدید کا کہاں؟ کسی کے پاس قارون کا خزانہ ہو گمر جب اس سے بوچھیں تو وہ یکی کہے گا کہ اور آ جائے اور آ جائے ، انجی تو میری ضرورت بوری نہیں ہوئی، بیرحال ہوگوں کی ہوں

کا۔ ایک بزرگ کے پاس کوئی بہت بڑا مالدار آیا اور پچھنذرانہ پیش کیا تو انہوں نے فرمایا کہ آپ کی پچھ ضرورتیں باتی ہیں یاسب پوری ہوگئیں؟ اس نے کہانہیں حضرت بہت موروثیں ہیں تو فرمایا: بچہ اللہ تعالیٰ میری تو ایک ضرورت بھی باتی نہیں اور تمہاری بہت می ضرورتیں باتی ہیں، تم زیادہ محتاج ہواس لئے لیے جاؤ۔ آج کل کے مسلمان کی ضرورتیں کہاں پوری ہوتی ہیں، وہ تب وہ تو ہوتی ہی نہیں، جتنا بڑا سرمایہ دار بنمآ جاتا ہے ضرورتیں براحتی جاتی ہیں، وہ بہت مسکمین نظر آتا ہے۔

ضرورت کے معنی:

سنتے! ایک مثال سے ضرورت کا انداز ہ لگائیں ، کھانے کی ضرورت کیا ہوتی ہے؟ کمانا کتا کافی ہے، فدید میں یا کفارے میں ایک ایک مسکین کو کتنا کمانا کھلانا واجب ہے، اگر کفارے میں سکین کو گیہوں کی روٹی کھائیں تو دو وقت کھلانا کافی ہے، تين وفت كلانا ضروري نبيس اوررو في كے ساتھ اندا بھي نبيس، چائے بھي نبيس، پھل بھي نہیں، قورمہ بھی نہیں، کباب بھی نہیں، کوفتے بھی نہیں، کمفن بھی نہیں، مرف دو وقت کی روٹی جس سے پیٹ بھر لے، اگر روٹی کیبوں کی ہے تو سالن ضروری نہیں، وہ ویسے ہی حلق سے اترنی جائے جمعی تجربہ کر کے دیکھ لیں کہ آپ کاحلق اللہ کی مرضی کےمطابق ہے یانہیں؟ گیہوں کی روثی بغیرسالن کے حلق سے اتر جائے تو حلق ٹھیک ب، تندرست ہے، اور اگر بغیر سالن کے لقمہ نہیں اتر تا تو بیطق مریض ہے اس کا کچھ علاج كرنا چاہئے۔ يدجويس في جايا كم كفارے يس كيبوں كى روفى كافى ب،سالن کی ضرورت نہیں ، اس کا مطلب بیند لے لیں کد کفارے میں مسکین کوسو کھی روثی ہی پکڑا دیں، سالن نہ کھلائیں، مساکین کوتو خوب خوب کھلائیں خوب خوب، یہ بتانے ے مقصد بہ ہے کہ اللہ تعالی نے کفارے میں سکین کو جو کھلانے کے لئے فرمایا اس ے ثابت ہوا کہ گیبوں کی روفی ہوتو بغیرسالن کے ضرورت پوری ہوجاتی ہے۔ مین كركبيل ابيانه بجوليل كه كفاره ويناتو بزا آسان موهميا بس سوكمي روثي مسكين كوكهلا دي مے، اس لئے خوب روزے توڑو۔ جب دینے کی بات ہوتو خوب دل کھول کر دما كري اگر الله تعالى نے وسعت عطاء فرمائى ہے تو آپ پر جننا فرض واجب ہے اس ہے گئی گنازیادہ دیا کریں تواب علی ہے گا کوئی گناہ تونہیں ہوگا۔

يينے كے لئے كيروں كے تمن جوڑے مرورت ميں دافل ہيں، وہ تمن اس طرح كدايك كام كاح ك وقت مل يبنغ كابرانا جوزاء ودمرا جوزا عام حالات ش بہنے کا، تیسرا جوڑا جعداورعیدین میں بہنے کا، بداید جوڑا کئی سال ملے گا۔ اس تم کے تمن جوڑے جس کے باس مول اس کے باس اباس بقدر ضرورت موجود ہے۔ باتی چزوں کی تفصیل کواس برقیاس کر کے خوداندازہ کرلیں۔

مية ميان موكياس كاكركون سه لوك ايسه بين جنمين زكوة نيس دي جاستي، ایک بار گھر بتا دوں کہ جس کے یاس ان یانچوں کا مجموعہ یاان میں سے چھوکا مجموعہ ساڑھے باون تولے جائدی کی قیت کے برابر ہوگا اے زکوۃ نہیں دی جاسکتی۔البتہ اگراس مخض کے ذمہ کچے قرض ہوتو قرض کی رقم کو مجموعے کی قیت ہے منعا کریں ے، اس کے بعد اگر ساڑھے بادن تولے جاعل کی قیت کے برابر موتو نولو ہنیں <u> استدم </u>

ئى وى كے مالك كوز كو ة دينا:

ایک بات خاص طور برسجولیں که نی وی جس کے کمر میں ہوگا اے تو یقیناً زکوۃ نہیں دی جاسکتی، ٹی دی تو بہت فیتی ہوتا ہاور ہے بیضرورت سے زائد، مرف میں نہیں کہ ضرورت سے زائد ہے بلکہ برتو عذاب ہے عذاب، ضرورت سے زائد تو کیا کہنا بیتو ہے، ی عذاب کی چیز، جس کے گھر میں بھی ہواہے زکو ہنیں دی جا کتی، اگر ریں کے تو اداونیں ہوگی اور آپ کی دی ہوئی زکوۃ ے وہ جو کچھ بھی کھاتے سے گا، قوت حاصل کرے گا اور پھرٹی وی دیکھے گا تو اس کناہ میں آپ بھی برابر کے شریک ہول کے، بھوکا مرے دو چارروز تو خود بی ٹی وی کو گھر سے نکا لے گا، اگر وہ مقروض ہو دس باره بزار کا اور فی وی ہے تین بزار کا اور دوسری کوئی چیز نمیس تو اگرچہ ز کو ہ اواء تو موجائے گی مگرایسے فاسق، فاجر، مجاہر، باغی کوز کو ۃ دیں گے تو اس سے اسے جو پھر بھی قوت حاصل ہوگی وہ اے گناہوں میں اللہ کی بغاوت میں خرج کرے گا، اس لئے ا ہے بھی زکو ہ نہیں دینی جا ہے۔ زکو ہ سچھ دیکھ بھال کر کسی ایسے مخص کو دیں کہ جب وہ کھائے، پیے، بہنے تو اس قوت کو اللہ کی اطاعت وعبادت میں خرچ کرے ایسے لوگول کوز کو ة دی جائے۔

ما تکنے دالے کوز کو ق دینا:

ما تکنے والے کوز کوۃ دینا جائز نہیں۔اگر ما تکنے والاستحق ہی نہیں پھر تو ممناہ بھی موا، زکوۃ بھی ادامین موئی اور اگر وہ مستحق تو ہے (بیہ بات خوب یا در محص کہ ان شرائط کے مطابق ستحق ہوجو میں نے بتائی ہیں) مگراینے لئے مانکتا ہے، اگر کسی دینی کام ك لئ اجما كى دين خدمات ك لئ ماسك تو وه اور بات ب،كوئى حض خوداي لئے ماتکنا موقو اسے وینا جائز نہیں۔ رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا که ماتکنے دالے پر قیامت کے دن ایک کھلا عذاب ہوگا، بہت کھلا عذاب، وہ یہ کہ قیامت کے دن اے الی حالت میں لایا جائے گا کہ اس کے چیرے یر ذرا سابھی گوشت نہیں موگا_ (منن طي) مرف بديال مول كى دعفرات محدثين رحمم اللدتعالى في اس كى وجہ یہ بیان فرمائی ہے کہ چیرہ بہت معزز عضو ہے،اللہ تعالیٰ نے یہ چیرہ اس لئے بنایا تھا كمرف الله كمامن بحك، الله كى طرف يه چرومتوجد باور الله بى كسامن یہ ہاتھ تھلی، غیرے سامنے نہ تھلی، غیرے سامنے س نہ جھکے، غیرے سامنے اس چرے کی رونق کو جاہ ند کیا جائے۔ اس نے اللہ تعالی کے اس اعراز کی ناشکری کی، ناقدری کی، غیر کے سامنے اپنے چیرے کو ذلیل کرتا رہااس کا عذاب یہ ہوگا کہ جشر میں پوری مخلوق و کیھے، سب کے سامنے اللہ تعالیٰ اسے یوں ذلیل فرمائیں گے کہ سب لوگ و کیھیں اس کے چیرے پر دفق نہیں، رونق تو گوشت سے ہوتی ہے تا، ہڈیوں سے تو رونق نہیں ہوتی، ان سے تو نفرت پیدا ہوتی ہے، اس نے دنیا میں اپنے چیرے کی آب اور عزت کو تباہ کریں کی آب اور عزت کو تباہ کریں گے، گوشت نہیں ہوگا صرف بڈیاں ہوں گی۔ اور فرمایا:

﴿ واذا سألت فاسأل الله واذا استعنت فاستعن بالله ﴾

(احمدو تومذي)

غیر کے سامنے ہاتھ نہ پھیلاء اللہ کافی ہے۔

سؤال سےممانعت:

ایک حدیث میں ہے کہ ایک خض رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں سوال کے لئے آیا، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس سے دریافت فرمایا کہ تیرے گھر میں کوئی چیز ہے؟ اس نے عرض کیا کہ ہاں! ایک ٹاٹ ہے ای کا پچھ حصہ ہم اوڑ سے میں اور پچھ حصہ بچھاتے میں اور ایک بیالہ ہے جس میں ہم پائی پینے میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا یہ دونوں چیزیں میرے پاس لاؤ! وہ لے آیا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ان دونوں چیزوں کو اپنے ہاتھ میں لے کر فرمایا: ان دونوں کوکون خریدےگا؟ ایک محض نے کہا کہ میں ایک درہم میں لیتا ہوں۔ پھر آپ سلی اللہ علیہ وسلم نے دویا تین بار فرمایا کہ ایک درہم سے زیادہ کون دےگا؟ تو ایک محض نے کہا

کہ میں دو درہم میں لیتا ہوں۔ آپ صلی القد علیہ وسلم نے بید دونوں چیزیں اے دے دیں ادراس سے دو درہم سے کھانا خرید کر دیں ادراس سے دو درہم لے کمراس سائل کو دے کر فر مایا: ایک درہم سے کھانا خرید کر اپنے قطر والوں کو دو اور دوسرے درہم سے کلہاڑی خرید کر میر سے پاس لاؤ! وہ لے آیا تو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے ہاتھ مبارک ہے اس میں وسلہ ڈال کر فر مایا: جا اس سے لکڑیاں کا ث کر بیجنے ہند رہ دن نہ دو کھوں۔ وہ محض لکڑیاں کا ث کر بیجنے کہ خدمت میں حاضر ہوا اور اس دوران اس نے دس درہم کمائے، ان میں سے بعض سے کپڑے خریدے اور بعض سے کھانا، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا: بیاس سے بہتر ہے کہ بروز قیامت تو ایس صالت میں آئے کہ علیہ وسلم نے فر مایا: بیاس سے بہتر ہے کہ بروز قیامت تو ایس صالت میں آئے کہ موال تیرے چرے میں گڑھا ہو۔ (ابوداؤددائن ابد)

ہوسکتا ہے کسی کو پیرخیال ہوکہ قرآن مجید میں ہے:

﴿ وَأَمَّا السَّابِلَ فَلاَ تَنْهُرُ ١٠-١٠)

ای طریقے ہے صدقات کے مصارف میں بھی سائلین کا ذکر آتا ہے کہ اللہ کے بندے سائلین کا ذکر آتا ہے کہ اللہ کے بندے سائلین کو دیتے ہیں، ای طرح بعض احادیث میں بھی ہے آتا ہے کہ وال کرنے والا خواہ کوئی گھوڑے پر سوار ہو کر آئے تو بھی اس کا حق بنم آ ہے اسے دو واپس مت لوٹاؤ، الی حدیثیں ہیں، ان کے بارے میں خوب سمجھ لیس کہ قرآن و حدیث کا مطلب کی عالم ہے یو جھا کریں:

و الرَّحْمَٰنُ فَسْنَلُ بِهِ خَبِيْرًا ١٥٠ (٥٠-٥١)

قرآن و صدیث کے ترکیے اُگر خود دیکھ کر بھنے کی کوشش کریں گے تو گمراہ ہوجائیں گے ان کا مطلب علماء سے پوچھا کریں، رحمٰن کی شان کسی باخبر سے پوچھا کریں۔ قانون کی کتابیں خود دیکھ کرکوئی مختص بھی وکیل یا جج نہیں بن سکتا، ڈاکٹری کی کتابیں دیکھ کر پڑھ کرکوئی بھی ڈاکٹر نہیں بن سکتا اگر بن گیا تو اس کے علاج سے ایک تندرست ہوگا اور سوکو مارے گا۔ قرآن مجید کی آیات اور اصادیث کا مطلب کی عالم

ے پوچیس، الله تعالی کے کلام اور اس کے رسول الله سلی الله علیه وسلم کے کلام کو سجھنے والوں بیس سب سے اول حضرات صحابہ کرام رضی الله تعالیٰ عنبم ہیں بید حضرات قرآن و صدیث کی تغییر ہیں، پھران کے بعد قرآن مجید کی آیات، احادیث اور اقوال وافعال صحابہ کوسا منے رکھ کر دین کو قانون کی شکل دینے والے ائمہ اربعہ رحم الله تعالیٰ ہیں انہوں نے دین کو قانون کی شکل دینے والے ائمہ اربعہ رحم الله تعالیٰ ہیں انہوں نے دین کو قانون کی شکل دینے کوئی دیموں، کی نے کوئی حدیث دیکھی تو وہ ادھر کو چل پڑا۔

جہالت کے کرشے:

سجھنے والے تو ماشاء اللہ! بڑے جیب عجیب لوگ ہیں اور اس صفت کمال میں اکثر غیر مقلدسب سے آھے ہیں ان کا حال بیہ۔

۔ الف کو کیل جانیں سب بے جارے » مگر دعویٰ ہے سب کا اجتمادی

ایک لطیفہ من لیجے! میں جو لطائف بتایا کرتا ہوں ان میں تنبیبات بھی ہوتی
ہیں، خور سے سنے ایک بڑا عجیب لطیفہ، چندروز پہلے ایک بڑی نے اپنا نام بتایا کھما کلہ
میں نے کہا وہ کیا ہوتا ہے، یہ کیا بلا ہے؟ کہنے گئیں میری ای نے رکھا ہے، میں نے کہا
اپنی ای سے بوچھ کر بتائیں، ای سے بوچھا تو انہوں نے کہا کہ جھے بھی ٹہیں بتا، بس
کی نے بتا دیا تھا تو میں نے بہی نام رکھ دیا۔ ایک اور بڑی نے اپنا نام بتایا کھما کلہ،
میں نے کہا ارب یہ کیا مصیبت ہے بھی تو بتا چلے تو معلوم ہوا کہ قرآن مجید میں دوجگہ
میں نے کہا ارب یہ کیا مصیبت ہے بھی تو بتا جو اور سورت نمبر سولہ آیت نمبر اثر تالیس
دونوں جگہ اس انعظ کے معنی ہیں' بائیں جانب' بتا ہے بیام رکھنے کا کیا مطلب ہوا پھر
اسے لڑی بنانے کے لئے'' محما کلہ'' کر دیا بھر اور زیادہ فیشن کے لئے'' محما کلہ'' کر دیا ،

نے بچھ سے پوچھا کہ ایک اور یہ انہ ہوریہ انہ ہے یہ کیا ہے؟ میں نے کہا کہ اس کے معنی تو پچھ بھی نیس بنے ہے کہ وہ اور کہ کہتی ہے کہ اس کے میں زینت کا سمان سے میں نیس بنے کہا کہ یہ تو کہا گہتی ہے قر آن مجید میں آشویں پارے میں ہمن میں یہ تھوی پارے میں ہندے! یہ واوالگ ہے، ریش الگ ہے، الف الگ ہے، ڈاڑھی کواکی گئے ریش کہا جاتا ہے کہ واڑھی مرد کے لئے زینت ہے۔ میں نے ان سے کہا کہ اس لوک سے جاتا ہے کہ واڑھی مرد کے لئے زینت ہے۔ میں نے ان سے کہا کہ اس لوک سے کہیں کہ نام تو رکھ لیا ''وریش'' اس لئے شادی کی واڑھی والے مرد سے کریں۔ ایسے اسے نام لوگ رکھ لینے ہیں بور تجھے بغیر بر وہ نام رکھ دیا، خاص طور پرلوکی کا نام تو جود کھنے ایسے نام لوگ رکھ نے بھی ہوں خواہ وہ ابلیس بی کیوں نہ ہو، ابلیس چونکہ مشہور میں بہت اچھا گئے معنی کچھ بھی ہوں خواہ وہ ابلیس بی کیوں نہ ہو، ابلیس چونکہ مشہور ہیاس کئے یہ نام نیس رکھے ، اگر مشہور نہ ہوتا تو بہت سے لوگ اپنی بیٹیوں کا نام ابلیس رکھ لیکتے۔

بات بدہور ہی تھی کہ قرآن وصدیث کا مطلب علاء سے پوچھا کریں قرآن بیں جو تھم ہے کہ سائل کو حالی ہاتھ نہ او تا کا کہ سائل کو حالی ہاتھ نہ او تا کا کہ دو اس کا مطلب بی علاء سے پوچھوقرآن مجید اور احادیث کا مطلب بی جھنے والے قانون کے سانچ بیں وُھالنے والے حضرات فقہاء کرام جمہم اللہ تعالی بیں، سنے! فقہاء کیا کھتے ہیں، فقہ کی کتب بیں صاف صاف کھا ہوا ہے کہ جم فخص کے باس ایک دن کا تھانا ھی تیہ موجود ہو یا حکماً موجود ہواس کے لئے سوال کرنا حرام ہے اور جواسے دے گا وہ بھی حرام کام کررہا ہے، دینے والا برابر کا مجرم ہے۔ ایک دن کا کھانا ھی تیہ موجود ہے یا کھانے کے لئے بیے ہیں خرید کر کھا سکتا ہے، اس سے بھی کھانا ھی تیہ موجود ہے یا کھانے کے لئے بیے جی خرید کر کھا سکتا ہے، اس سے بھی بردھ کر یہ کہ ھوجود نہ ہو حکماً موجود ہو، حکماً کا مطلب بید کہ کما سکتا ہو، کمانے کی

قوت بھی ہواور موقع بھی ہو پھر کھانے کے لئے گھر میں ایک دانہ بھی موجود نہ ہوتو حکماً موجود ہے کیونکہ کما سکتا ہے ایسے شخص کو دینا حرام ہے دینے والا حرام کام کا مرتکب ہوگا، جس کا سوال کرنا حرام اسے دینا بھی حرام دنوں برابر کے مجرم۔

رض کا راست کس باخبر نے پوچھے کہ معتبر عالم ہے جس کے دل میں خود حب مال نہ ہوا لیے کسی عالم ہے جس کے دل میں خود حب مال نہ ہوا لیے کسی عالم ہے ہو چھے کہ ہمیں کوئی زکوۃ لینے والانہیں مل رہا کے دیں؟ وہ آپ کو ہزاروں بتا دے گا، ایک دونیا میں موجود میں جنہیں زکوۃ دی جاسکتی ہے۔ لوگ یہ جھتے میں کہ گھر بیٹھے کوئی آکر لے جائے، انہیں جھان میں کرنے کی زحمت نہ اٹھائی پڑے، بیٹھے رمیں آ رام سے اورلوگ گھر پر آکر مانگیں گے ہ اعزاز بھی ہوگا سجان انڈ! کوئی ادھرے آ رہا ہے کوئی اور سے آرہا ہے کوئی ادھرے آرہا ہے کوئی ادھرے آرہا ہے کوئی ادھرے ایک کوئیال

كردية ادهر دوسر يكو دية لوكول كا ايك جوم بادريد بزى شان سابني ميدهى جمّار ہاہے اسے پیرخیال نہیں آتا کہ زکوۃ قبول بھی مور ہی ہے یانہیں، وہی حال اس کا ہے جو چرم قربانی کا کیا ہوا ہے، گائے خریدنے تو جائیں مے جار پانچ سات آوی استے لوگ جاتے ہیں خریدنے کے لئے شایداس میں بی حکست بھی ہوکہ اگر سات شریک میں تو ہرایک کو بیضال ہوتا ہے کہیں مہنگی نہ خریدلیس ایک خطرو توبیاور دوسرا خطرہ بید كه كبيل دو جاريبيهم سے زيادہ ندلے ليں،ستى خريد كرجميں زيادہ قيت ند بتا دیں، تیسرا خطرہ یہ کہیں گائے بھاگ نہ جائے اگر خریدنے کے بعد گائے بھاگ کی تو پھراورخريدني يزے كى اور چوتى بات يدكه شوق بوتا بے كوشت كھاكي مے كوشت، اس شوق میں سب جاتے ہیں، ان وجوہ سے قربانی کی گائے خریدنے تو حاتے ہیں اشنے سارے لوگ، دوکا نیس کارو بار اور تنجارت سارا کچھے چھوڑ کر گائے خریدنے جاتے ہیں پھر پیلنفی لوگ کہتے ہیں کہ جلدی خریدلوجیے جیسے دنت قریب آتا جائے گا قیمتیں ہوھتی جائیں گی اس لئے دس بندرہ دن پیلے ہی خرید کر گھر لا کر جو باندھتے ہیں تو اس کا کھلا تا پلانا، گرانی کرنا اور گویر وغیرہ اس کے نیچے سے بٹانا اور اگر بحرا ہے تو ساری ساری رات وہ چیختا ہے، ہفتہ عشر و پہلے ساری تکلیفیں برداشت کرتے ہیں نا؟ اور ربھی کہ کوئی بکرے کو اٹھا کر نہ لے جائے تو اس کی تگرانی الگ سے اور گائے کے دانت و کیمنے میں کتنی محنت کرتے ہیں۔ ایک بات یادرکھیں اس کام کے لیے مستقل کمپنیاں کھلی ہوئی ہیں کہ اصل دانت نکال کر بڑے بڑے معنوی دانت لگا رہے ہیں، حصوفے دانت والے حانور کے اصل دانت نکال کر بوے دانت اس کے منہ میں ا پیے فٹ کر دیتے ہیں جیسے ڈ بنٹل سرجن کرتا ہے۔ جانورخریدنے کے لئے اتن مختیں کرتے ہیں اور جانور ذبح ہونے اور گوشت تقییم کرنے کے وقت بھی بڑے مستعد رہتے ہیں پھر جہاں یہ بات ہو کہ کھال کے دیں، کیونکہ شرعی مصرف براس کا لگانا ضروری ہے، تو بینیں سوچے کہ جو لینے آتا ہے وہ مصرف ہے یانبیں کہاں لگائے گا، سیکھال اٹھا کرسی جگہ پرنبیں پہنچا سکتے ، بس جو بھی لینے بھی جائے اسے تھا دیتے ہیں،
پوری گائے لے آتے ہیں مگر کھال اٹھا کرسی جگہ جگہ پہنچانا مشکل، یہ کام بہت مشکل
ہے۔معلوم ہوا کہ گوشت کی جو ہوں ہے نا وہ سارے کام آسان کر دیتی ہے، آگ کھال کی مصح شرق مصرف پر لگانا اسے بہت مشکل لگتا ہے، کی کی ون کی گئی گھنے جانور کی خریداری پر لگانا آسان ہے۔ ایک شخص نے یہاں فون پر کہا کہ ہمارے ہاں قربانی کی ایک کھال رکھی ہوئی ہے وارالا قاء کو دینا چاہتے ہیں کوئی آ دمی بھیج دیں۔ میں نے کہا تھوڑی دیر کے لئے آپ خود بی آ دمی بن جائیں کھال یہاں اٹھا کر لے میں بھی جو خود پہنچا ہے تھے بعد میں یہ سلسلہ بھی ختم کر دیا خود بھی کر رقم لائیں اور وہ تھی جو خود پہنچا ہے تھے بعد میں یہ سلسلہ بھی ختم کر دیا خود بھی کر رقم لائیں اور وہ وارالاقیاء کی شرائط کے مطابق ہوتو تھول کر لی جاتی ہے ورشنہیں۔)

ز کوة دینے کا طریقہ:

کہتے ہیں کہ ذکو ہینے والا ملائیں، ذکو ہ کے دیں؟ فکر ہوتی تو مل جاتے، کھر بی بین اور فکر اس لئے نہیں کہ اہمیت نہیں۔ ذکو ہ کا مستحق کون ہے؟ وہ بات تو الگ بات رہی ذکو ہ کا مستحق حال کرتا تو الگ بات ہے۔ مستحق کو تلاش کرتا تو الگ بات ہے۔ مستحق کو تلاش کرتا تو الگ بات ہمیں مستحق نہیں مل رہے آپ بتا ویں تو وہ آپ کو ہزاروں مستحق بتا دیں گے۔ بہر حال ہمیں مستحق نہیں مل رہے آپ بتا ویں تو وہ آپ کو ہزاروں مستحق بتا دیں گے۔ بہر حال بتیجہ بید کہ ماتھنے والوں کو دینا جائز نہیں۔ ایک تدبیر اور بتا دوں، پہلے سے پچھ لوگوں کے بارے میں بیا میں موکہ بیدیں مالیوں ہیں، انہیں آپ پہلے سے بتا دیں کہ آپ وقت پر ہمیں یاد دلائیں اولاً تو وہ یاد کیوں دلائیں کام تو آپ کا ہے ان کے یاد دلانے سے پہلے بی آپ انہیں وے دیں اور اگر کسی نے آکر سؤال کر بھی لیا تو اسے مسئلہ سمجھائیں کی ہوئیوں دیا تو جائز نہیں، اس لئے بم آپ کوئیوں دیں گے، ہاں کی وقت میں خور

کریں گے اگر بھی پچھ توجہ ہوگی اور ہماری بچھ میں بات آگئی کہ آپ کو دینا چاہئے، اللہ نے آپ کی طرف دل کو متوجہ کردی تو شاید بھی آپ کو بھی دے دیں، چند دن گزرنے کے بعد جب وہ بالکل ، یوس اور ناامیہ ہوج نے تو پھر اے دے دیں، دوسرے ساں پھر مانگے تو کہیں کہ آپ نے پچھلے سال ما بگا تھ میں نے آپ کو مسئلہ بتا دیا تھ اس کے باوجود اب پھر سوال کر دیا اب تو ہر گر نہیں ووں گا جب بالکل مایوں ہوجائے پھر دے دیں، مائٹنے کی نوبت ہی نہ آنے دیں، اس سے پہلے ہی دے دیں یہ پچھ مساکیون نظر میں ہوں تو اس ہے کہد دیا کریں کہ اگر ہم بھول جائیں تو تمہیں اجازت ہے آکر یا دول دیا کرو بہتے سے کہد دیا پھر سی نے دولا دیا تو وہ جائز ہے وہ اس مائٹنے میں داخل نہیں دیا کہ دینے والے نے پہلے سے خود ہی کہد دیا۔

صدقة الفطراور قرباني كانصاب:

دوسرے درج میں جونصاب بتایا ہے ان لوگوں کا جولوگ زکو ہ نہیں لے سکتے وہی نصاب صدقة الفطر کے وجوب کا ہے اور وہی نصاب قربانی کے واجب ہونے کا ہے۔ پانچ چیزوں کا مجموعہ ساڑھے باون تولے چاندی کی قیمت کے برابر ہوجائے تو اس کے لئے تین تھم ہیں:

- 🛈 زکوہ نہیں لے سکے گا۔
- 🕜 ال يرصدقة الفطر واجب موكاً ..
 - اس پر قربانی واجب ہوگ۔

ان تین احکام کاتعلق اس نصاب کے ساتھ ہے۔

زكوة كاحساب لكانے كاطريقة

اب رہی میہ بات کد زکو ہ کس تاریخ میں نکالی جائے یا زکو ہ واجب کب ہوگی؟ واجب تو ہوگئ نصاب پورا ہونے سے، اداء کرنا کب واجب ہوگا اس کا تھم میہ ہے کہ

جس قمری تاریخ میں اللہ تعالیٰ نے آپ کو صاحب نصاب کیا، زیادہ تر لوگ صاحب نصاب بنتے ہیں یا تو شادی کے موقع پر الڑکی کی شادی ہوئی تو والدین ایے زپور دیتے ہیں، شوہر کی طرف ہے بھی زیور ملتا ہے وہ صاحب نصاب بن جاتی ہے بلکداس پر تو حج بھی فرض ہوجا تا ہے، والدین بیٹیوں کو جہیز اتنا دیتے میں کہ حج فرض کر دیتے ہیں چر کرواتے نہیں، یہ بھی عجیب بات ہے، جہنم میں واخل کرنے کی کتنی کوشش کرتے ہیں یا توا تنادیں بی نبیں کہ اس برحج فرض ہوجائے ، دیتے اتنا ہیں کہ حج فرض ہوجائے مگر سرداتے نہیں، وہ خود کیے کرے وہ کہتی ہے جہز کیسے بیچوں یہ تو ابانے دیاہے،امی نے ديا ہے، ان كى يادگار ب پھركوكى يينا بھى جائے والدين ناراض موتے ہيں مت بيو، مت بیچو، ہم نے بیچنے کے لئے تھوڑا ہی دیا ہے، یعنی ضرور جہنم میں جاؤ بمھی بھی بیچنے ک کوشش ندگرنا اولاد کولاز ما دیکیل دیکیل کرجہنم میں چھیکنے کی کوشش کررہے ہیں، اتنا جیز دیتے میں کدمج فورا فرض ہوجاتا ہے۔اللہ تعالیٰ اس قوم کو ہدایت ویں۔صاحب نصاب ہونے کی دوسری وجہ بیہ ہوتی ہے کہ ملازمت مل گئی تو پہلی تنخواہ جب آئے گی اگر وہ اتن ہے کہ چار چیزوں کا مجموعہ ساڑھے باون تولہ جاندی کی قیت کے برابر ہوگیا تو وہ تاریخ ہے صاحب نصاب بننے کی۔ تیسری صورت بید کہ سی کے رشتے دار کا انقال ہوگیا تو وراثت میں اسے پھھ مال ملاجس کی وجہسے پیصاحب نصاب ہوگیا۔ عاندے مینے کی وہ تاریخ جس میں بیصاحب صاب ہوا وہ تاریخ عمر بھر کے لئے معین ہوگی ایک سال گزرنے کے بعد جب وہ قمری تاریخ آئے گی تو اس وقت دیکھیں گے کیا گجھ ہےخواہ وہ روپیا اپنے پاس ہو،خواہ بینک میں ہو،خواہ تبجارت میں ہو،خواہ کسی کو قرض دیا ہو (قرض دیئے ہوئے مال ہر وجوب زکو ۃ میں پچھ تفصیل ہے، قرض کی فتمیں مختلف ہیں جن کے احکام بھی مختلف ہیں جو بوقت ضرورت علاء سے معلوم کئے جا سكتے بيں) خواہ كى كے پاس امانت ہو،خواہ مال تجارت ہو،خواہ سونا ہو،خواہ جاندى ہو،خواہ بٹی کو جہیز میں دینے کی نیت ہے رکھا ہو،لوگوں نے زکو ۃ ہے بیخے کا ایک طریقہ بینکال رکھا ہے کہ بٹی کو جہیز میں دینے کے لئے جوسونا، چاندی نفتری وغیرہ جمع کیا ہےاس کے بارے میں کہتے ہیں اس برز کو ہنہیں، وہ تو ہم نے بیٹی کے لئے رکھا ہے سنے خوب سمجھ کیجئے! اگر وہ سامان والدین نے بیٹی کی ملک کر دیا یعنی بیٹی کو بیا ختیار دے دیا کہ شادی سے پہلے ہی اس کا جو جاہے کرے، خواہ خود استعال کر لے خواہ صدقه كردب، جو جاب كرے، ملك كرنے كابيه مطلب بوتواس صورت ميں تواس ک زاوۃ بٹی کے ذمہ ہے اور اگر ابھی وہ سب چیزیں والدین کی ملک بی تو ان کی ز کو ہ والدین کے ذمہ ہے جہیز کی نیت سے جمع کیا جانے والا سامان زکو ہ ہے مشتنی نہیں ہوتا۔ اس معین تاریخ میں سونے اور جاندی کی جو قیت ہواس کے مطابق حساب لگائیں مے کل مال پر ڈھائی فیصد ز کو ۃ فرض ہوتی ہے۔حساب تو نگائیں معین تاریخ میں لیکن اداء کرنے کے لئے تاریخ کی بابندی نہیں جب جا ہیں اداء کریں لیکن جلدی سے جلدی اداء کرنا ما ہے۔اس معین قمری تاریخ کا اعتبار ہے اس دن حساب كريں محے، وہ تاريخ آنے ہے ايك دن يہلے لا كھوں رويے آپ كول محتے تو اس ير ز کو ق فرض ہوگئی،لوگ مجھ سے ہو چھتے رہتے ہیں نااس لئے مجھے معلوم ہے، کہتے ہیں ات دن يملي بم ن مكان يها اوراح دن يملي فلال چيز يمي اورات دن يملي ورافت ميں پيما ملاوه ايك ايك كاسال الك كرارنا جاتے ہيں۔اس كاسال جب ہوگا، اس کا سال جب ہوگا، اس کا سال جب ہوگا، ارے اللہ کے بندو! و کیھئے جواللہ ہے نہیں ڈرتا اس میں عقل تو رہتی ہی نہیں،اگر ہر جہیز کا حساب الگ الگ لگا کیں گے تو پیہا تو روزانہ آتا ہے اس لئے روزانہ آپ پرز کو ۃ فرض ہوگی کچھ پیہا آج آیا، پکھ کل آیا، کچھ برسوں آیا، کیا یورے سال زکوۃ ہی نکالتے رہیں گے، ایک معین قمری تاریخ جس میں صاحب نصاب ہوئے اس سے ایک دن پہلے لاکھوں رویعے آ گئے تو زکو ق فرض ہو کئی لا کھوں کروڑوں جتنے بھی ہیں سب کی زکوۃ فرض ہے، اور اگر ایک دن پہلے لا کھوں رویے فکل مکے ، جس قمری تاریخ پر صاب موقوف ہاس کے آنے سے ایک

دن يميك كروزول رويه نكل مي توان كى زكوة نبيل موكى ايك بهت خوبصورت پمفلٹ شائع ہوا ہے اس میں بڑی عجیب بات کھی اور اپنی طرف سے بہت کمال کر د کھایا اور دکھانا بن چاہئے تھا اس لئے کہ بہت ترقی یافتہ لوگوں نے شائع کیا ہے، لکھا ب كداكر قرى مينيكى تاريخ كا حاب لكانا كالمحمشكل موتو عيسوى مال كمشى مبینوں سے زکوۃ کا حساب کرلیں چونکہ عیسویں سال کے دن زیادہ ہوتے ہیں اور قمری سال کے دن کم ہوتے ہیں تو دنوں کا حساب لگا کر احتے بیمیے کم کر دیں۔ ریہ طريقد بالكل غلط بوالقداعلم ان ترقى يافت لوكول في كمال سے ليارزكوة من دنوں کا حساب میں ہوتا اگر صرف ایک دن پہلے کروڑوں رویے مطرتو ان کی زکوۃ بھی آتی ہی ہوگی جنتی ایک سال گزرنے والے مال کی۔ زکوۃ کا حساب قمری تاریخ ہے کیا جائے گا جس دن اللہ نے آپ کوصاحب نصاب کیا اس تاریخ کو کہیں لکھے لیں یا در تھیں عمر بھر کے لئے وہ تاریخ معین ہوگئ، آ مے چیھیے نہیں کر سکتے ۔ کتنی بردی اللہ کی ناشکری ہے کتنی بوی ناشکری کہ اللہ تعالی نے مسکین سے مالدار کیا صاحب نصاب کیا مريه ناشكرااس تاريخ كويادنيس ركمتا ، الله كاا تنابوا كرم كديميلي زكوة لين كاستحق قعا، الله في السيخ كرم سے بارش جو برسائي تو اب بيز كوة وسيغ كے قابل موكميا، شكر اداء كرتے كرتے اس كى تو زبان خنك بوجائے اور جب بحدے ميں مر ركھے تو قيامت تک انفائے نبیں عربحر مجدے میں پڑارہ۔

۔ نہیں ہوتا ادائے حقّ نعمت کی نہیں ہوتا اگرچہ دل ہے وقف تجدۂ شکرانہ برسوں سے

اییا ناشرا مسلمان که الله نے تو اتنا مال دیا که صاحب نصاب ہوگیا اغنیاء کی فہرست میں داخل ہوگیا افدیاء کی فہرست میں داخل ہوگیا اور یہ کہتا ہے کہ جھے یاد ہی تیس زکوۃ کب فرض ہوئی۔خوب یاد کھیں جاند کی تاریخ کے کوئی اعتبار نہیں اگر ایک تاریخ کا کوئی اعتبار نہیں اگر ایک تاریخ آگے ہیں۔ ایک تاریخ آگے ہیں۔ دن میں بڑھ بھی سکتے ہیں اور کم بھی ہو سکتے ہیں۔

مخصوص مهينوں ميں زكوة دينا:

سے جو وستور ہے کہ لوگ زکو ۃ اداء کرتے ہیں رجب میں یا شعبان میں یا رمض ن میں اس طرح مہینے معین کرنے میں کتنی خرابیاں ہیں لوگوں کو میری سے بات عجیب گ گ نیکن جیسے میں نے بتایا کہ مہینہ بھی تاریخ ہمی وہ تو القد نے جب آپ کو بالدار کیا تو اللہ نے خود ہی معین فرمایا دیا فلاں مہینے کی فلاں تاریخ میں جو کھے بھی آپ کے پاس ہوگا اس پر ذکو ۃ فرض ہوگئ، اس کا حساب کریں جن لوگوں نے اپنی طرف ہے کوئی مہینہ معین کرلیا اس میں کتنی خرابیاں ہیں، شروع میں جو آ یت میں نے پڑھی تی اسے مہیں کرایا اس میں کتنی خرابیاں ہیں، شروع میں جو آ یت میں نے پڑھی تی اسے پر سی مطابق کریں گرموج لیس، کام جب ہے گا جب کہ اللہ کے بتا ہوئے طریقے کے مطابق کریں جارہے او پر گئے موان میں درواز وں سے نہیں جارہے او پر گئے ہوئے گا گئی کر جارہے ہیں، کہیں او پر چڑ سے اور کود نے ق نا نگ ٹوٹے گی، اللہ کے قانون کے مطابق کریں، یہ لوگ خود اللہ بنا چا ہے ہیں کہ جیسے میں جا ہوں گا و لیے کروں گل جب کروں گا ۔ جن لوگوں نے رمضان کو معین کردکھا ہے یار جب یا شعبان کو میں کردکھا ہے یار جب یا شعبان کو میں کردل کا کریں جن واری میں جو اور بی کردل کا کردیں کو کردل کا کردیں کو کو کردل کیں کردل کا کردی کو کردل کی کردل کی کردل کو کردل کا کردیں کردل کو کردل کیں کردل کا کردی کردل کو کردل کو کردل کی کردل کو کردل کو کردل کو کردل کا کردی کردل کو کردل کو کردل کا کردل کو
آ جس تفصیل سے میں نے بتایا اس کے مطابق کمی کا سال پورا ہوا جمادی الثانیہ میں مگر بدحساب کرے گا رجب میں یا شعبان میں یا رمضان میں تو ایک ہی دن میں کروڑوں کا مالک مجھی بن سکتا ہے اور ایک ہی دن میں کروڑوں سے محتاج بھی ہوسکتا

> ۔ تو شاہوں کو گدا کر دے گدا کو بادشاہ کر دے اشارہ تیرا کافی ہے گھٹانے اور بڑھانے میں

کہنے والے نے تو بیشعر کہا دنیا کے لئے، میں بیشعر پڑھتار ہتا ہوں آخرت کے لئے، یا اللہ! تیری وہ شان کہ لمح میں اشارے میں گدا کو بادشاہ کردے یا اللہ!

تیری اس رصت کا صدقہ ، قدرت کا ملہ کا صدقہ ہم دین کے لحاظ سے فقیر ہیں ، گدا ہیں ، محاری ہیں یا اللہ النی عجبت ہے ، وین کی نعتوں ہے ، جنت کی نعتوں ہے ہمیں مالا مال کردے بادشاہ بنا وین یا اللہ النی رحبت ہے ساری امت کو دین کی نعتیں ، دین میں ترقی اتی عطاء فرما کہ بادشاہ بنا دے۔ ایک خرابی تو بید کہ زکوۃ کا حساب کرنا شرعاً میں ترقی اثانیہ میں آپ نے کیا رجب یا شعبان یا رمضان میں تو کروروں کی فرض تھا جمادی الثانیہ میں آپ نے کیا رجب یا شعبان کی بات ہے ، کمتنا بوا قرض تو کے ذمہرہ علی ہے کروروں کی ، کمتنے نقصان کی بات ہے ، کمتنا بوا قرض آپ کے ذمہرہ جائے گا۔

﴿ اگر کسی نے حساب تو لگا لیاضیح تاریخ کے مطابق کداس معین تاریخ میں کیا کچھ کے ایک اگر کسی نے حساب تو لگا ہے کہ اس تو اگا میں اوروں کے مجموعے کا موجودہ قیت کے مطابق حساب تو لگا لیا مگر زیادہ ثواب لینے کے لئے سوچا کہ رمضان میں دیں گے تو اس بارے میں سے سوچے:

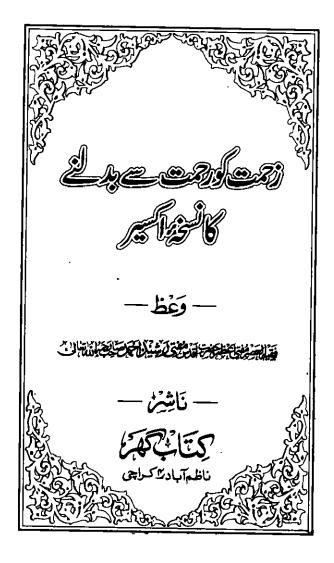
- کیا آپ نے اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ آپ کو ضرور مہلت دےگا،
 اگر پہلے مر کے تو؟ زندگی کا تو ایک لعے کا اعتبار نہیں زکوۃ آپ کے ذمہرہ کی تو کیا
 بے گا۔
- اگرزندہ رو بھی گئے تو فرض اداء کرنے میں بلاوجداتی تا خیر کیوں کی فرض تو جتنی جلدی ہوسکے اداء کرنا چاہئے۔
 جلدی ہوسکے اداء کرنا چاہئے۔
- دنیا کے تجارب سے ثابت ہے کہ کروڑوں اربوں پی ونوں بلکہ منٹول میں مفلس ہوگئے، ہوسکتا ہے کہ ان مہینوں کے آنے سے پہلے سارا مال ختم ہوجائے، آپ مسکین ہوجائیں تو وہ زکو ہ جو آپ پر فرض ہو چکی تھی وہ ساقط نہیں ہوگی چرکہاں سے اداء کریں گے۔
 - 🕜 مساکین کاحق پہنچانے میں دیر کیوں کی ان کاحق تو جلداز جلد پہنچانا چاہئے۔ - کی منہ
- ک کم خصوص دن یا مینے میں عبادت کا زیادہ اواب ای صورت میں ہے جب کہ

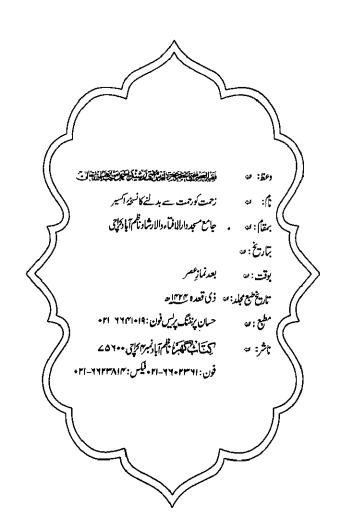
شریعت میں اس کا جموت ہوا پی طرف ہے اس میں ثواب بتانا بہت بخت گناہ ہے۔ جمعہ کے دن اور رات کی بہت فضیلت ہے مگر کسی کو جمعرات کے دن نقل پڑھنے کا خیال ہوالیکن وہ کہتا ہے کہ کل پڑھوں گا تا کہ ثواب زیادہ طے تو اسے زیادہ ثواب نہیں طے گا، رسول الشصلی اللہ علیہ وسلم نے اس سے صراحة روکا ہے، فرمایا:

﴿لا تختصوا ليلة الجمعة بقيام من بين الليالي ولا تختصوا يوم الجمعة بصيام من بين الايام) (مسلم)

جعد کی رات کوزیادہ نظول سے خاص نہ کرو، جعد کے دن کوروز سے خاص نہ کرو۔ جعد کے دن کوروز سے خاص نہ کرو۔ صراحة روک دیابالکل مت کرتا، بدعت ہوگا، ثواب کی بجائے عذاب ہوگا۔ ای طرح مکہ کرمہ یس ایک عبادت کا ثواب لا کھکا ماتا ہے اس کا مطلب بھی بچھ لیس کہ جو عبادت دہاں جا کر کہ کہ ایک کا ثواب ایک لا کھ عبادت دہاں جا کر کہ خیال آیا ہیا ہے کہ وہاں جا کر بیعبادت کروں گا لا کھکا طاب ہے گا اور اگر خیال تو پہلے آھیا لیکن یہ کہتا ہے کہ وہاں جا کر بیعبادت کروں گا لا کھکا شاب ہے گا اور اگر خیال تو پہلے آھیا لیکن یہ ہوگا۔ ثواب جب ماتا ہے کہ پہلے سے خیال نہیں تھایا پہلے سے کوئی چیز واجب نہیں تھی، فرض نہیں تھی، اگر فرض پہلے سے ہے واجب پہلے سے مراحة ممانعت آئی ہے۔ جب اللہ تعالی واجب پہلے سے مراحة ممانعت آئی ہے۔ جب اللہ تعالی فضیلت کا ہے اس میں کروں گا، اس سے مراحة ممانعت آئی ہے۔ جب اللہ تعالی فضیلت کا ہے اس میں کرون گا، اس سے مراحة ممانعت آئی ہے۔ جب اللہ تعالی واب ماصل کرنے کی غرض بنے تو خوب بچھ لیں کہ ثواب نہیں ہوگا عذاب ہوگا۔ دوسروں تک بھی یہ بات پہنچائیں۔ اللہ تعالی تمام احکام کوائی مرضی کے مطابق اداء دوسروں تک بھی یہ بات پہنچائیں۔ اللہ تعالی تمام احکام کوائی مرضی کے مطابق اداء کرنے کی تو نبی مطابق دار کی گام احکام کوائی مرضی کے مطابق اداء کرنے کی تو نبی مطاح فرمائیں اپنی رحمت سے قبول فرمائیں۔

وصل اللهم وبارك وسلم على عبدك ورسولك محمدٍ وعلى اله وصحبه اجمعين. والحمد لله رب العلمين.





وعظ

زحمت کورحمت سے بدلنے کانسختراکسیر (مینسلیہ)

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيأت اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله صلى الله تعالى عليه وعلى اله وصحبه اجمعين.

اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم، بسم الله الرحمن الرحيم.

﴿ قُلُ هَلُ آَرَبَّهُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ * وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمُ اَنْ يُصِيْبَكُمُ اللهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهَ اَوْ بِالْدِيْنَا لَقَرَبَّصُوْ النَّا مَعَكُمُ مُتَرَبَّصُوْنَ ۞ (٥-٥٠)

مسلمان کی ہرحالت رحمت:

اس آیت میں مجاہدین کے لئے بشارت ہے کہ "آپ کفار سے فرمادس کہ ہم

لوگ جب جہاد کے لئے نگلتے ہیں قو ہمارے لئے اللہ تعالیٰ کی دو بھلا ئوں میں سے
ایک بھلائی کا انظار کرتے رہو،اور ہم تمہارے تن میں اس کے منظر رہا کرتے ہیں کہ
اللہ تعالیٰ تم پر کوئی عذاب واقع کرے گا اپنی طرف سے یا ہمارے ہاتھوں سے،سوتم
انظار کرو، ہم تمہارے ساتھ انظار میں ہیں' اللہ تعالیٰ کی دور تمتوں میں سے ایک
رحمت ضرور ملے گی، وہ کیا؟اگر مرکئے تو شہید ہوگئے،سید ھے جنت میں گئے اور زندو
رہے تو عازی کہلائے، زندگی ہے تو اللہ تعالیٰ کی رضا کے مطابق جہاد کا تواب ال رہا
ہے،ساتھ ساتھ مال نظیمت بھی ل رہا ہے،مرکئے تو شہادت نصیب ہوگئی،اللہ تعالیٰ کی
ہم یر وہ رحمت ہے ان کا وہ کرم ہے کہ زندہ رہی تو رحمت مربعائی تو رحمت۔

اور تمہارے بارے میں ہم بیا تظار کررہے ہیں کہ اللہ تعالی حمہیں براہ راست ہی ذلیل فرمائیں گے، یا ہمارے ہاتھوں کی کروائیں گے۔

ال وقت آیت کے پہلے مگڑے کا بیان مقصود ہے، جولوگ جہاد میں نظے ہوئے
ہیں ان کے لئے: احدی الحسنیین یعنی دو بھلا کیوں میں سے ایک کا وعدہ ہے،
اس پر قیاس کرکے یہ سوچا جائے کہ جولوگ کی عذر کی وجہے کفار کے ساتھ جہاد میں
مشخول نہیں ہو سکتے آئیں بھی چاہئے کہ ان پر جو حالت بھی آئے اس کو اللہ تعالیٰ کی
مشخول نہیں ہو سکتے آئیں اور رحمت بتالیٹا اپ اختیار میں ہے، وہاں جسے دو چیزیں
مطرف سے رحمت بتالیں اور رحمت بتالیٹا اپ اختیار میں ہے، وہاں جسے دو چیزیں
تھیس کہ یا تو زندہ رہے یا مرکئے یہاں بھی سمجھ لیں کہ مسلمان کی دو حالتیں ہیں کہ
جب تک زندہ ہے تکلیف میں ہے یا راحت میں۔ ہرضص محاسہ کرے کہ جب تک
جب تک زندہ ہے تکلیف میں ہے یا راحت میں، پھرتکلیفیں بھی مختلف تم کی ہیں مالی
پریشانی، بیاری کی پریشانی، لوگوں کی طرف سے پریشانی کہ کوئی دخمن مسلط ہوگیا دہ
پریشان کررہا ہے، ذہنی پریشانی، نوگوں کی طرف سے پریشانی ہو۔ ایک حالت تو یہ ہو

ادر دوسری راحت کی حالت کہ کوئی پریشانی نہیں بس سکون ہے، دونوں حالتوں کو

الله تعالى كى رحمت بناليس، اور بيالله تعالى في جارك اختيار ميس دي ديا بي كه راحت کو بھی رحمت بنالیں اور تکلیف کو بھی، دونوںصورتوں میں رحمت ہی رحمت، پیہ دونوں حالتیں رحت کیے بنتی ہیں؟ اس طریقہ ہے کہ بندہ ہرحال میں اپنے الک کے ساتھ محبت کا تعلق رکھے، اطاعت کا تعلق رکھے، نافر مانی سے بچتا رہے، جن گناہوں کی عادت ہے خواہ ظاہری گناہ ہول یا باطنی گناہ، ان سے نیچنے کی کوشش کرے، تو یہ واستغفار کرتارہ، بس ہر حالت رحت بن کئی، اگر جسمانی تکلیف میں مبتلاہے، مالی تکلیف میں جا ہے یاکی انسان کی طرف سے پریشانی کا سامنا ہے، مگر بدگذاہوں کو چھوڑے ہوئے ہے، دوسرول سے بھی چھڑوانے کی کوشش کرتا ہے، تو بہ بلیفیس اس کے لئے رصت بن کئیں، وہ کیسے؟ عمناہ معاف ہورہے ہیں، اگر عمناہ نہیں تو ورجات میں ترقی موری ہے، جنت کی نعموں میں ترقی موری ہے، یا بید کم گناہ تو تھے مر تکلیف کی وجہ سے گناہ بھی معاف ہوگئے اور درجات میں بھی ترتی ہورہی ہے، تكليف بھي رحمت بن گئي۔

شكرنعمت كاطريقه:

اور اگر راحت و آسانی بوتو بیسم که به الله تعالی کی تعت ب، شکرنعت اداء کرے،شکرنعت یہ ہے کہاللہ تعالیٰ کے ساتھ اطاعت کاتعلق رکھے صرف زبانی شکر کافی نہیں جب تک کہ اعمال کی اصلاح نہیں کر لیتا، اصلاح بھی کر لے اور ساتھ ساتھ زبانی شکر بھی اداء کرتا رہے پھر تو کیا کہنا، سجان اللہ نورعلی نور ہے، اگر زبانی شکر اداء نهیں کمیا محرعملی شکر اداء کر رہا ہے تو بھی شکر نعت اداء ہوگیا، فرض اداء ہوگیا، ایک شاعر کہتاہے۔

> ۰ افادتکم يدى ولساني و الضمير المحجبا

مجھ پر آپ کے احسانات وانعامات کی جو بارش ہورہی ہےاس کی وجہ ہے آپ میری تین چیزوں کے مالک بن گئے، تینول چیزیں ہر وقت آپ کی خدمت میں لگی ہوئی ہیں، ایک ظاہری اعضاء ہاتھ پاؤں وغیرہ، بیر آپ کی اطاعت میں لگے ہوئے ہیں، دوسری زبان جو ہر دم آپ کی مدح وثناء میں لگی رہتی ہے، تیسری چیز میرا دل ہے، جو آپ کی محبت سے سرشار ہے، آپ کا مملوک ہوگیا۔

یدایک انسان دوسرے انسان کے بارے ہیں کہدرہاہے کہ آپ کے احسانات نے جھے اپنا مملوک بنالیا، حالانکہ ایک انسان جو دوسرے انسان پر احسان کرتا ہے تو اس کی مثال صرف ایک برتن کی ہے ہے، اصل محسن تو اللہ تعالیٰ بی ہیں، انسان صرف اس کا ذریعہ ہے، کسی انسان نے دوسرے پر احسان کیا تو ذرا سوچئے کہ محسن کے دل میں احسان کرنے کی صلاحیت کس نے عطاء فرمائی؟ اور جوہمت بیدوسرے کو دے رہا ہے وہ ہمت اس کوکس نے عطاء فرمائی؟ فاہر ہے کہ بیر تینوں چیزیں اللہ تعالیٰ بی کی طرف سے ہیں، جب ایک بندہ کے احسان کا دوسرے بندہ پر بیا شرعیة تو النہ تعالیٰ بی کی طرف سے ہیں، جب ایک بندہ کے احسان کا دوسرے بندہ پر بیا شرعیة تو النہ تعالیٰ ہی کی طرف سے ہیں، جب ایک بندہ کے احسان کا دوسرے بندہ پر بیا شرعیة تو النہ تعالیٰ ہی کی طرف سے ہیں، جب ایک بندہ کے احسان کا دوسرے بندہ پر بیا شرعیة تو النہ تعالیٰ ہی کی احسان کا کتا اثر ہوتا جا ہے؟

غرضیکہ اُگر اللہ تعالٰی کی نعتیں حاصل ہیں تو ان کو اپنے گئے حنیٰ یعنی رحمت اور اللہ تعالٰی کے ساتھ محبت کا ذریعہ بنائے، ان نعتوں کو آئینئہ جمال یار بنائے، کہ نعتوں میں منعم کا دیدار ہو، اس کا جلو دنظر آئے۔

مصيبت كي تين قشمين:

تکلیف اور مصیبت جو دنیا میں پیش آتی ہے اس کی تین قسمیں ہیں۔ پہلی قسم عذاب ہے طور پر آتی ہے، گناہوں کی سزا ہوتی ہے۔ دوسری قسم ہے کفارہ سیئات اور تیسری قسم باعث ترقی ورجات۔ آنے والی تکلیف کس قسم میں داخل ہے؟ لیکسی اور ہے معلوم کرنے کی ضرورت نہیں، جس پر گزر رہ ہی ہے وہ خود

بی بنا دیتا ہے کہ کونی قتم ہے؟ اگر تکلیف اور مصیبت کے دوران بھی نافر مانی سے باز نہیں آتا، گناہول کی عادت جیسی پہلے تھی تکلیف کے بعد بھی ولیمی ہی ہے تو بیاس کی دلیل ہے کہ یہ تکلیف اس کے لئے عذاب ہے۔

اوراً کر تکلیف کے بعد گنا ہوں ہے باز آجاتا ہے، توبہ واستغفار کر سنے لگتا ہے اوراللہ تعالیٰ کی طرف ماکل ہوجاتا ہے تو یہ تکلیف اس کے لئے رحمت بن جاتی ہے۔ جیسے ایک صحص کو بخار ہوا تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ دسلم نے فرمایا:

﴿ لا بأس طهور ان شاء الله ﴾ (رواه البخاري والساتي في اليوم

والليله

کیا عجیب الفاظ ہیں، 'انشاء اللہ یہ پاک صاف کرتے والا ہے' یہ تکلیف اس کے لئے کفارہ سینات ہے، وو فائدے ہوئے، ایک تو یہ کداب تک کے سارے گناہ معاف ہوگئے، دوسرافائدہ یہ کداس تکلیف کے بعد اس نے آیندہ کے لئے گناہ چھوڑ دیئے۔ یہ کتنا برا فائدہ ہے؟ ویسے کہنے رہو، مجھاتے رہو گناہ ہیں چھوڑتے، اب اللہ تعالیٰ نے ایسا چا بک لگا دیا کہ پہلے گناہ بھی معاف ہوگئے، اور آیندہ کے لئے بھی باز آگیا، یہ تنی بری رحمت ہے؟

تیری قتم کے لوگ وہ ہیں جو گزاہ نہیں کرتے اور بھی غلطی ہوجاتی ہے تو توب واستغفار کر لیتے ہیں، ان لوگوں کی ایک حالت بہت ہی تجیب ہے، وہ یہ کہاں فتم کے لوگ جب کوئی گزاہ کر رہے ہوتے ہیں تو عین گزاہ کی حالت میں بھی ان کے ول لرز رہے ہوتے ہیں، ایک حالت میں گزاہ کو حالت میں گزاہ کرتے ہیں، ایک حالت میں گزاہ ہوجاتا ہے تو اس کے بعد بہت پریشان ہوتے ہیں، ان بی کی پریشانی کے بارے میں فرمایا۔

ب چون برارند از بریثانی خنین عرش کرزد از انین المذمین آ مچنان کرزو که ماور بر ولد وست شال گیرد بالا می کشد

فرمایا جب غلطی ہوگئ اور غلطی کے بعد گر گراتے ہیں، روتے ہیں، توبدواستغفار کرتے ہیں تو ان کی اس کیفیت سے عرش بھی لرز جاتا ہے، کانپ اٹھتا ہے، یہ بندہ ائڈ تعالیٰ ہے اتنا ڈرتا ہے کہ عرش لرز دازانین المیڈنیین ،اور۔

> ب آنچنان لرزد که مادر بر ولد دست شان میرد ببالا می کشد

عرش ایسے کانپ افستا ہے جیسے بچہ کے رونے پر ماں کو جوش آتا ہے عرش کو بھی جوش آتا ہے اور ہاتھ پکڑ کر درجات قرب طے کروا دیتا ہے۔ دست شان کیرد ببالا می کشد ، الند تعالیٰ کی رحمت دست کیرمی فرماتی ہیں۔

نهي عن المنكر حيمورُ ناعذاب الهي كودعوت:

آج صبح ایک خط کا جواب لکھ رہا تھا، اس میں انہوں نے لکھا ہے کہ صدیث میں بیمضمون ہے کہ کسی گناہ کو دیکی کر اگر افتیاض پیدائمیں ہوا اور انقباض بھی ایسا کہ اس کا اثر چیرہ پرنظرآئے تو وہ بھی ان معذب لوگوں میں شامل ہے۔

سأن كى مراد بيعديث ب: "رسول الله صلى الله عليه وسلم في فرمايا بمبلى امتول ميس كي بسق ك بارك ميس جريل عليه السلام كوالله تعالى في حكم فرمايا جاكرات تباه كردو، حضرت جريل عليه السلام في عرض كياكه وبال تو ايك اليه بزرگ بهى جن كو بهى طرفة العين ك ليء بيل السلام في حمل متالغ بين ويكاه آكو جيك كي وريتك بهى عافل نهيس پايا، كياان كو بحى ساتھ بى بلاك كرديا جائے ؟ الله تعالى كى طرف سے جواب ماتا ہے: "لمد يتمعو فى وجهه" يعنى دوسرول ك كاناه و كيدكراس ك چره پربل ماتا بين برالبدارية بي ويدا بى جرم بيال كردول ك كاناه و كيدكراس ك چره پربل فيس پرالبدارية بي ويدا بى جرم بيال كردول ك ساتھ بى بلاك كردو" معلوم بوا

کہ کتنا ہی بڑا عابد وزاہد ہو، شب خیز ہو، متقی ہو گر گناہ و کچھ کراس کے چہرہ پر بل نہیں پڑتا دل میں ایسا انقباض پیدائمیں ہوتا جس کا اثر چہرہ پر بھی ظاہر ہوتو یہ بھی برابر کا مجرم ہے۔۔

چہرہ سے اثر کیسے معلوم ہو؟ چندروز کی بات ہے کسی نے کہا کہ پکھے پڑھنے کے لئے بتادیجئے، میں نے بتاما:

(حُسْبُنَا اللَّهُ وَنِغُمَ الْوَكِيْلُ ١٧٣-٢)

تو کہنے مگے لکھ دیجئے، جیسے انہوں نے کہا لکھ دیجئے، مجھے خت تکلیف ہوئی، یہ تکلیف دو وجہ سے ہوئی، ایک تو بر کہ مسلمان ہوکر اتن عمر گزار دی مگر حسبنا اللہ کے دو لفظ تک ندآئے ، کتنے صدے کا بات ہے۔ دوسری وجد بدکہ مجھے فرصت بی نہیں ، بجائے اس کے کہ دوسروں کے مسائل سنوں اور کوئی دین کی بات کروں حسینا اللہ لکھ 1 کھھ کر دیتا رموں ساری عمر تو ای میں خرچ ہوجائے گی ، کس کس کولکھ کر دوں گا، میں نے ان سے پھینیں کہا، بعد میں ان کا خط آیا کہ میں نے آپ سے کہا تھا کہ مجھے حسبنا الله وبعمر الوكيل لكوريجي، الروت بجهة آب كے چرو يرخت كراني محسوس ہوئی، چرہ د کھ کرمعلوم ہوا کہ آپ تخت ناراض ہیں، یہ بھی لکھا کہ میں نے پہلے سے من رکھا تھا آپ بہت بخت ہیں، تبری بات جو آ کے کھی اس سے بری مسرت موئی، وہ بیک اوبر اوبر سے آپ نے ناراضی کا اظہار فرمایا تھا ورندول میں آپ نے میرے لئے دعاء کی تھی،اس کا اثر بیہ ہوا کہ میں دو جار لفظ بھی قرآن کے نہیں بڑھ یا تا تھااور بہت کوشش کی تھی،اب جو میں نے جا کر پڑھنا شروع کیا تواتنے اتنے یارے یڑھ چکا ہوں،اورسارا قرآن ہی میرے لئے آسان ہوگیا،ایی آپ کی دعاء گی۔ ماشاہ اللہ اسمجھدارمعلوم ہوتے ہیں۔ بحمہ اللہ تعالی میرا بہ عمول ہے کہ کسی برکسی مصلحت سے نارامنی کا اظہار کرتا ہوں تو اس کے لئے خصوصی دعا وبھی کرتا ہوں۔

سختی اور مضبوطی میں فرق:

انبوں نے یہ جولکھا تھا کہ" يہلے سے من ركھا تھا آپ تخت بي" اس كامخصرسا جواب میں نے لکھ دیا کہ میں سخت نہیں اصول کا یابند ہوں، عط میں کیا لمبی چوڑی تقریر لکھتا، آپ لوگوں کو بتا دیتا ہوں تختی اور مضبوطی میں فرق سمجھ لیجئے، کیا آپ نے مجھے بھی کسی ذاتی غرض ہے کسی کو مارتے دیکھا، خت کلامی کرتے دیکھایا سنا؟ نہ میں بھی کسی کو ڈانٹوں، نہ برا بھلا کہوں، ٹیائی وغیرہ تو الگ، ہی پچھ کہتا بھی نہیں، دنیوی لحاظ ہے کوئی مجھے کتنا ہی نقصان پہنچادے کچھ نہیں کہتا، اس کے بہت سے واقعات ہیں کیا بتاؤس، الله تعالى قبول فرمائيي_ (حصرت والا كي نرمي، بخالموں اور عزت و مال كونقصان پہنچانے والوں، بلکہ جان سے مار وینے کی وصلی دینے والوں سے بھی درگز ر بلکہ ان بر ، احسانات کے واقعات کا نمونہ "انوار الرشید" میں دیکھیں، جامع) ہاں مضبوط ضرور ہول،مضبوطی کا کیامطلب؟ کہ کوئی وعوت دے ہمارے ہال چلئے، وہاں تصویریں بھی ہوں گی، تو یہ ہم سے نہیں ہوگا، کوئی کیے کہ ہمیں خلاف ضابطہ ات کو یہال تھم رنے ویں سے بھی نہیں ہوگا، ان طلبہ کو بدایت کر رکھی ہے کہ لوئی رات کو ضبر نے کی یا اور کوئی خلاف قاعدہ بات کرے تو بختی نہ کریں، غصہ نہ دکھائیں، بات تو نرمی ہے کریں گر اصول کے بابندر ہیں، کداگر نہ مانے تو پکڑ کر باہر نکال دی، اور پکڑنے سے بھی نہیں لكات تو تين چارطالب علم اٹھا كر باہرر كھ آئيں، غصه پھر بھی ندكریں، بياصول كى يابندي ے،اسے تن کانام دیا میچ نہیں، کسی کی وجہ ہے ہم جہنم میں جائیں بیہم ہے نہیں ہوگا خواہ کوئی دوست ہو یا محسن منتیح بات تو یہ ہے کہ دنیا میں کوئی ہمارا محسن نہیں سوائے والدين، اساتذه اورمشائخ كه ببرهال دنيا مِن لوئي بھي ہو، خواد كوئي حاكم ہو، خواه دوست،خواہ عزیز وقریب ہو یا کوئی اور، وہ اگر گناہ کی دعوت دے کہ آپ ہماری شادی میں شرکت کیجئے، جس میں کوئی خرافات نہ ہوئیں تو بھی تضویریں تو ہول گی ہی، یہ ہم ے بھی نہیں ہوگا ، ان ہاتوں کو آپ سوچا کریں ، ان شاء اللہ تعالی بختی بالکل نہیں دیکھیں کے ، البتہ مضبوطی ضرور دیکھیں کے ، مضبوطی ہم نہیں چھوڑ کتے ، اللہ کرے اور زیادہ مضبوطی آ جائے۔

یہ بات ال پر چلی کہ انہوں نے لکھا کہ آپ کا چہرہ دکھ کر پتا چل گیا کہ آپ ناراض ہیں، اللہ تعالی فرماتے ہیں: لمر بنمعوفی وجهد گناہوں کو دکھ کراس نے چہرہ بھی الیانہ بنایا کہ لوگ دکھ کر جھ جاتے کہ یہ ہماری نافر مانی سے ناراض ہے، اسے تکلیف ہے، جس کے چہرہ پر بھی بل نہیں آتا، چہرہ سے نیمیں ظاہر کرتا کہ گناہوں کو برا بھتا ہے تو یہ بھی دیساتی بحرم ہے اس کو بھی ان کے ساتھ بی جاہ کردو۔

المضمون كي أيك آيت بحي من ليخ:

﴿ لَعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُواْ مِنْ بَنِيْ اِسُوَآءِ يُلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ﴿ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُواْ يَعْتَدُوْنَ ۞ ﴾ (م-4)

اس آیت کے شان نزول کے بارے میں رسول الله صلی الله علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ شروع میں تو علماء بنی اسرائیل لوگوں کو گناہوں سے روکتے تھے، بیلنے کرتے اور الله سے ڈراتے مگر جب وہ نہ مانتے تو انہی کے ساتھ اٹھنا بیٹھنا، کھانا پینا شروع کر دیتے، لین ان علماء کی اس حرکت کی وجہ سے ان پر احدت کی گئی، کہ لوگ جب گناہ نہیں چھوڑتے تو تم ان سے بیزار کیوں نہیں ہوتے ؟ ان سے تعلقات کیوں رکھتے ہو؟

خطیس سائل نے نافر مانوں کی بہتی پر عذاب کے بارے میں حدیث لکھ کراس پر بیاشکال لکھا ہے کہ ہم تو لوگوں کو ہرتنم کے گناہوں میں جتنا و کھیتے ہیں مگر پھر بھی ان سے بیزار نہیں ہوتے۔ان کے ساتھ ہنتے ہولتے رہتے ہیں، اگر ان سے بالکل الگ تھلگ رہتے ہیں تو بیٹودکو پارسا اور دوسروں کو تقیر بھینے کے مترادف ہے جو سب سے

برا مناه ب، آخر جمیں کیا کرنا جاہے؟

على مسائل حل كرف كانسخه:

الله تعالی کی طرف سے بیتونی ہوجاتی ہے کہ فقہی مسئلہ یا اصلاحی خط و کیھتے ہی دعاء ہوجاتی ہے کہ یا اللہ! مسئلہ کے جواب میں غلطی ہے حفاظت فرما، سیحے جواب کی توقیق عطاء فرما، ول سے دعاء ہو جاتی ہے، اس کے بعد حسبنا اللہ وقع الوکس م عنے ک تونیق ہوجاتی ہے، بیدهاء بھی رہتی ہے کہ یا اللہ! جس منصب برتو نے فائز فرمایا ہے، اس منصب کے لحاظ سے مدد فرما، دل میں ایسے نتنج القاء فرما جن ہے سائل کو فائدہ ہو، جب ان کا بداشکال پڑھا تو فورا خیال آیا کداشکال تو زبردست ہے اس کا جواب کیا ہوگا؟ فوراْ دعاء ہوگئ تو اللہ تعالیٰ نے جواب دل میں ڈال دیا، یا اللہ! تیرا کتنا برا كرم بكدا تنا بزاعلم عطاه فرمايا محض اكابركي دعائي بين جن كى بركت سے سيعلوم عطاء ہوتے ہیں، بوی مسرت ہوئی، جواب الله تعالی نے ول میں یہ ڈالا كہ حتى الامكان حسب موقع نرى ياكرى سے نمى عن المكر كا سلسلہ جارى ركھيں اوراس كے ساتھ رنے بھی استعال کرتے رہیں کہ جیسے ہی گنہگار برنظر بڑے تو اس کے لئے فورا دعاء کی جائے، اگرنظر بڑتے ہی فورا توجہ ہوگئی کہ بیاس گناہ میں مبتلا ہے تو فوراً دعاء کی حائے ورنہ جوبیں مھنے میں ایک وقت معین کر کے اس میں تمام گنبگاروں کے لئے دعا مریا کریں،اللہ تعالیٰ نے جیسے بینسخہ دل میں ڈال دیا اس کےفوائد بھی ڈال دیئے، ان کوتو میں نے مختصر سانسخ لکھ دیا، اب اس کے فائدے سنے:

- آپ نے مسلمان بھائی کا حق اداء کردیا، کسی کو تکلیف میں جتلا دیکھیں تو آپ پر حق ہے کہ اس کے بیٹر دھ کر جس کے بیٹر دھ کر کے بیٹر کے بی
- ک آپ میں عجب پیدائیں موگا کہیں اپنے بارے میں سی محصے لیس کہ ہم اوالیے متی

ہیں اور بیر گناہگار ہیں، دعاء کے ساتھ عجب کا علاج ہوگیا اس لئے کہ عطاء مولیٰ کی طرف توجہ ہوگئی۔

🕝 ول میں گنام گاروں سے نفرت اور ان کی تحقیر پیدانہیں ہوگی۔

دعاء کے ساتھ گناہوں کا استحضار اور ان کی برائی کا استحضار ہو جائے گا، جب دوسروں کو بچانے کے گا، جب دوسروں کو بچانے کے دعاء کریں گے تو لاز مانس کا استحضار ہوگا کہ بیکام گناہ کے بیں، اورلوگ ان میں مبتلا ہیں۔

اس جامع نسخہ سے بیسب نوائد حاصل ہوگئے، دل بیدار ہوگیا، برائی کا استحضار ہوگیا، درنہ ہوتے ہوتے دل مشخ ہوجاتا ہے، اور گناہ کی برائی کا خیال تک نہیں آتا، مسلمان سے نفرے بھی نہ ہوئی اس کاحق بھی اداء ہوگیا۔

جب اليى باتيل ذبن مين آتى بين تو الله تعالى كاشكر اداء كرتا مول اس مين طالبين كى بركت بهى موتى ہے، اگروه طالب خط مين سوال ندكرتے تو يہ سخ ذبن مين ندآتا، ادراب اگر پچھلوگ الل طلب ند ہوتے تو يملم عطاء ند ہوتا، الله تعالى اپنى عطاء كاسباب بيدا فرما ديتے بين -

غصه بهت خطرناك گناه:

تمام گناہ ندامت کے ساتھ جمع ہوسکتے ہیں، گناہ بھی کررہا ہے اور عین گناہ کی حالت میں ندامت بھی طاری ہے، جس نے گناہ کی لذت کو کر کرا کردیا، جن لوگوں کو خوف آخرت ہے وہ اگر نفس وشیطان کے بہکانے سے نفسانی نقاضوں ہے بھی گناہوں میں جتلا ہو بھی جا کی تو ان کو گناہ کی لذت نہیں آتی، گناہ بھی کررہا ہے ساتھ ساتھ ڈربھی رہا ہے، دل پر خوف طاری ہے، جس نے لذت کو کر کرا کردیا، جیسے کسی کو پھائی پر لٹکا دیا جائے اور اس کو کچھ کھانے کو دیا جائے اور کہا جائے کہ زبردتی کھانا پر ایکا دورنہ تیری آئیسیں نکال لیس کے، تو وہ بظاہر کھارہا ہے لذت اٹھارہا ہے، گمر

اندازہ سیجے کہ اس کے دل پر کیا گزررہی ہوگی؟ جس کے دل میں فکر آخرت غالب ہے، اگر وہ گناہ کررہا ہے تو بین گناہ کی حالت میں بھی لذت کی بجائے اسے تکلیف محسوس ہوتی ہوتی ہوتی ہے، اس کے ساتھ ہے کہ ان کے ساتھ خدمت ہوتی ہوتی ہے، مگر غصد اتنا ہرا گناہ ہے کہ ندامت اس کے ساتھ جمع ہوتی نہیں سکتی، غصہ بھی کررہا ہواور دل میں ندامت بھی ہویہ دو چزیں ایک وقت میں جمع نہیں ہوسکتیں، اس لئے کہ ذرای ندامت آگئی تو غصہ ہی از جائے گا۔ انسان چوری کرتا ہے، بدکاری کرتا ہے، بدکاری کرتا ہے، بوش ندامت بھی ہو، یہ دونوں چزیں بین جمع ہوئی ہیں، گرغصہ کناہ میں جنال ہے، مگر دل میں ندامت بھی ہو، یہ دونوں چزیں ہیں، عصہ بہت خطرناک گناہ اور دل میں ندامت جمع نہیں ہو سکتے، دونوں متضاد چزیں ہیں، عصہ بہت خطرناک گناہ اور دل میں ندامت جمع نہیں ہو سکتے، دونوں متضاد چزیں ہیں، عصہ بہت خطرناک گناہ اور دل میں ندامت جمع نہیں ہو سکتے، دونوں متضاد چزیں ہیں، عصہ بہت خطرناک گناہ ہے، القد تعالیٰ حفاظت فرمائیں۔

زحمت كورحمت بنانے كى عقلى مثال:

چھوڑ دے، ان کو راضی کرلے، بس مالک کی طرف مائل ہوجائے، گناہوں سے باز آ جائے، ان کی رضاطلی میں سرگردال ہوجائے تو رحمت ہی رحمت ہے اور اگر ان کی نافرمانی سے بازئبیں آتا تو ہر تکلیف زحمت اور عذاب ہے۔

شكر كي حقيقت:

ای طرح دنیا میں جتنی نعتیں میسر ہیں ان کے بارے میں بھی اللہ تعالیٰ نے انسان کو اختیار دیدیا ہے، چاہتی ان کو اسپنج تن میں رحمت بنا لے، اور چاہتی و زحمت وعذاب، اگر نعتوں پر شکر اواء کر رہا ہے تو رحمت ہے ورنہ عذاب شکر سے بیہ مقصد نہیں کہ صرف زبانی "شکر ہے" کہتا رہے بلکہ نعم کی نافر مانی چھوڑ دے، اس کو راضی کرنے کی کوشش کرتا رہے اس کی ناراضی سے بچتا رہے، یہ ہے شکر کی حقیقت۔

آپ نے دیکھا ہوگا کہ والدائی اولاد پر جتنے احسانات کرتا ہے اولاد جواب میں صرف زبان سے شکریہ شکر بہتیں کہتی، اورا گروئی غیر احسان کرنے واس کے جواب میں شکریہ کہد دیتی ہے، دونوں میں فرق کیا ہے؟ والد جواحسان کرتا ہے تو اولادا گر واقعۃ اولاد ہے تو بیجھتی ہے کہ زبانی کیا شکریہ شکریہ کہوں، میرا تو پورا وجود بی شکریہ ہے، اپنے والدین کے دریمنت، زیراحسان ہے، زبان سے شکریہ تو وہ کہے جے کچھ کرتا نہوسرف زبانی شکریہ کہ کر راضی کرتا چاہے، جب والدین کے ساتھ یہ تعلق ہے کہ صرف زبانی شکریہ اواء نہیں کرتا بلکہ بھتا ہے کہ جھے مل سے شکریہ اواء کرتا ہے تو اللہ تو اللہ تو تاللہ جو من حقیق ہے، مالک حقیق ہے، ان کی نعتوں کا شکر صرف زبانی کیسے اواء ہوسکتا ہے۔ کا کوشش کی جائے۔

عذاب بصورت اسياب:

بندہ آگر نعمتوں کا شکر اواء کرتا ہے لینی ان کو مالک کی نافر مانی چھوڑ دینے کا ذریعہ بناتا ہے، ان کی وجہ سے فکر آخرت پیدا کرتا ہے تو یڈھتیں رحمت بن جاتی ہیں، اور اگر نعتیں ہوتے ہوئے تافر مانی نہیں چھوڑتا بلکہ جیسے جیسے اسباب زیادہ حاصل ہوتے گئے نعتیں زیادہ ملتی گئیں، مال و دولت اور منصب کی فراوانی ہوتی گئی و یہے و یہے اس کی طغیانی، سرکتی اور گناہوں میں اضافہ ہوتا گیا، تو یفعتیں رحمت نہیں بلکہ عذاب ہیں، اس کو استدراج کہتے ہیں، استدراج کے معنی یہ ہیں کہ اللہ تعالیٰ ڈھیل دیتے ہیں، جو کرنا ہے کرلو، آخر میں اکٹھی کسر تکال کی جائے گی۔ مثال کے طور پر کسی کوموت کی سزاسنا دی گئی اور اسے کہدویا گیا جو وصیت چاہو کردو، جو چاہو کھالو، جس کے مغنے کی خواہش ہوکہو یا جو کچھ بھی چاہواس کی تمیل کی جائے گی، بظاہراس کوراضی کے جارہا ہے اس کی آؤ بھگت ہور ہی ہے، گراس کی موت کا فیصلہ ہو چکا ہے، جولوگ ہے، افر مانی خوب کھاؤ بی بیتو ان کی مثال و بی ہے کہ کی کوسزائے موت بیش کی سزا مقدر ہو پکل ہے، اگر دنیا میں ان کوفعتیں مل رہی ہیں تو ان کی مثال و بی ہے کہ کی کوسزائے موت ہیا گرمانی مثال و بی ہے کہ کی کوسزائے موت ہیا کہ جو بیش کرو۔

زحمت اوررحت کی پیجان:

آخر میں ایک بات اس متعلق سیمجھ لیں کد دنیا میں اگر کسی کو تکلیف پہنچی ہے تو دہ سوج کرخود فیصلہ کرسکا ہے کہ بیاس کے حق میں کیا ہے؟ کفارہ سینات ہے یا باعث ترقی درجات یا ضائر است عذاب؟ ہیکس قتم میں دافل ہے؟ اپنے اعمال پر نگاہ ذال ہے، اگر بیملی صریح طور پر واضح ہورہی ہے تو فیصلہ بالکل ظاہر ہے بیملی کو چھوڑ دے، فوراً تو بہ واستعفار میں لگ جائے، اگر گناہوں کو پہلے ہی سے چھوڑ ہے ہوئے ہو، تو بہ واستعفار کی تو نیق پہلے ہی سے اگر گناہوں کو پہلے ہی سے چھوڑ ہے ہوئے تو بہ واستعفار کی تو نیق پہلے ہی سے اس رہی ہے، تو بہ واستعفار کی تو نیق پہلے ہی ہے کراحتیا طاس میں ہے کہ نظراس احمال پر رکھے کہ خدانخواست یو نہیں؟ اس لئے تو بہ واستعفار کرتا رہے۔ اعمال سے ظاہر بھی خدانخواست یہ زحمت تو نہیں؟ اس لئے تو بہ واستعفار کرتا رہے۔ اعمال سے ظاہر بھی ہوجائے کہ دوہ اچھے ہیں، بدا عمال سے فلام بھی

بھی بندہ کا کام بیے اور اس کی بہتری اس میں ہے کہ دوسر ے احتمال کو ذہن میں اوتا رہے کہ کہیں ایسا تو شہیں کہ کوئی گناہ ہوگیا ہوجس کا احساس ندہو، توجہ نہ ہواور بیای پر گرفت ہو، بیرخیال ذہن میں رہے اور تو بہ واستغفار کرتا رہے، اگر پہلے ہے گناہوں ے یاک ہے تو اب اور زیادہ باک ہوجائے گا، زیادہ ترقی درجات ہوجائے گی، بېرمال خود كو بحرم بى تىمچھے۔

ای طرح دنیوی نعتیں ہیں صحت کی نعت، مال کی نعت ،سکون کی نعت،منصب کی نعمت، اولاد کی نعمت، غرضیکه تمام نعتول سے متعلق انسان کوسوچنا جائے کہ بید دونول قسمول میں سے کی قتم میں وافل ہیں؟ بدرحت ہیں یا زحمت؟ کہیں استدراج فونمیں؟ سوینے کے بعد، محاسبہ کرنے کے بعد اگریہ فیصلہ ہوکہ المحوللة! شکر نعت عاصل ہے، بدا مالیوں سے محفوظ ہے، جب بھی غلطی ہوجاتی ہے توبدواستغفار کر این ہے، تو ہیں تعتیب اس کے حق میں رحت ہیں، تکر اس کے باوجود ول میں یہ کھٹکا ضرور رے كەخدانخواستدىكىيى استدراج تونىيىن؟ اس كے توبداور دعاءكرتا رہے كديا الله! ان نعتوں كاشكر عطاء فرماعمل كرنے كى توفيق عطاء فرماء أميس اپنى رضا كا ذريعيه بنا۔

حضرت اقدس رحمه الله تعالى كاليكسبق آموز قصه:

مل نے جب یہال دارالافاء کا کام شروع کیا تو ایک باراستاذ محترم معرب منتی محرشی صاحب رحمدالله تعالی سے اپنی ایک حالت بیان کی کدیس نے یہال تن تنہا بالکل بے سروسا مانی میں کام شروع کیا اوریہ فیصلہ کیا کہ کسی حال میں بھی کسی ہے بھی کسی قتم کے بھی تعاون کا ہرگز نہیں کہوں گاءان حالات میں کسی کی عقل میں بھی ہیہ بات نبيس آرى تى كديكام چل سك كا، د كيف سنة والاستديري خام خيالي اوركم منی بلکہ مج بنی قرار دیتے تھے، مگر اللہ تعالیٰ نے اس کام کواتی ترتی عطار فرمائی کہ مقل حیران ہے، بیرحالت و کھو کر پریشانی ہوتی ہے کہ کہیں استدراج نہ ہو۔ حفرت مفتی صاحب رحمہ اللہ تعالی نے فرمایا کہ استدراج کا خطرہ دلیل قبول ہے،جس دل کو میخطرہ رہے کہ میرامیکام قبول ہے یا تبیں؟ کہیں استدراج تو نہیں؟ میہ نعمتیں بجائے رحمت کے زحمت تو نہیں؟ تو میخطرہ قبول ہونے کی دلیل ہے۔

الله تعالى حفزت استاذ رحمه الله تعالى كى اس بشارت كا مصداق بنادي، دهميرى فرمائيس، اپني رحت سے قبول فرمائيس، استدراج سے محفوظ رکيس، ولا حول ولا قوۃ الا ماللہ ...

ال نویسکون کی طرف کی کے متوجہ کرنے سے یا منجانب اللہ توجہ ہوجائے سے کسی حد تک زیادہ پریشانی کا علاج تو ہوجاتا ہے کر کمل سکون نہیں ہا، مرتے دم تک یہ کی عید رہتی ہے، جس کی عبادت قبول ہوتی ہے اس کو آخر دم تک خطرہ لگا رہتا ہے، اللہ تعالیٰ اپنے بندے کو اس کے آخر دم تک اسی پریشانی میں جتالا دیکھنا چاہجے ہیں۔ جس کے لئے استدراج ہوتا ہے اس کے دل میں ایسا خطرہ آیا ہی نہیں کرتا، مست بی رہتا ہے کہ ہم بوی عبادت کررہے ہیں، برے مالدار ہیں، خواہ دینی فحمت ہویا دندی فعت اور جو مقبول ہوتا ہے ہویا دندی فعت اور جو مقبول ہوتا ہے اسے دونوں تم می فی فیوں میں پرخطرہ لگا رہتا ہے کہ کیس استدراج نہ ہوہ فرمایا:

﴿وَالَّذِيْنَ يُؤْتُونَ مَا اتَوَا وَقَلُوٰلِهُمْ وَجِلَهُ أَنْهُمْ اللَّهِ رَبِّهِـ رَجِعُونَ ۞﴾ (١٠-٢٠)

الله تعالى كے بندے جو كركم كرتے جي اس مالت من كرتے ہيں كہ ان كدل ورت رہت ہيں كہ ان ك دل ورت رہتے ہيں كہ ان ك دل ورت رہتے ہيں كہ الله تعالى عنها نے وہ كوك جي جو كا عنها نے وہ كوك جي جو كا عنها نے وہ كرتے ہيں اور كناہ كرتے ہوئے ورت ورت ہيں؟ رسول الله صلى الله عليه وسلم نے ارشاد فرمايا تبين بلك بي الله تعالى ك وہ بندے ہيں جو عبادت كرتے ہوئے بھى ورتے ہيں، الله تعالى كى عبادت بھى كررہ بين اور ساتھ وربعى رہے ہيں كہ بي الله تعالى كے بال تجول بھى ہے يائيس؟ خطرہ لكا ہوا ہيں اور ساتھ وربعى رہے ہيں كہ بي الله تعالى كے بال تجول بھى ہے يائيس؟ خطرہ لكا ہوا

-4

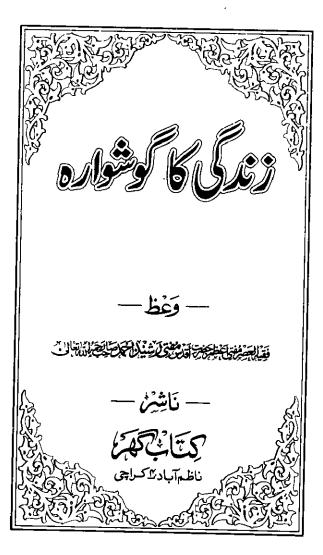
صاصل بیہ کدانسان پر جو حالت بھی آئے خواہ تکلیف آئے یا راحت بیخطرہ رہے کہ است کے است کے اور حت بیخطرہ رہے کہ درتا رہے ہی سے شکر نعمت میں اضافہ ہوتا ہے، دل میں انکساری دعاجزی پیدا ہوتی ہے، بہر حال انسان خود کو مجرم ہی سمجھے، ای میں فائدہ ہے، بندہ تو آخر بندہ ہی ہے، اللہ تعالیٰ سب کو بدوں بی صفات عطاء فر مائیں، اسپنے بندے بنالیں۔

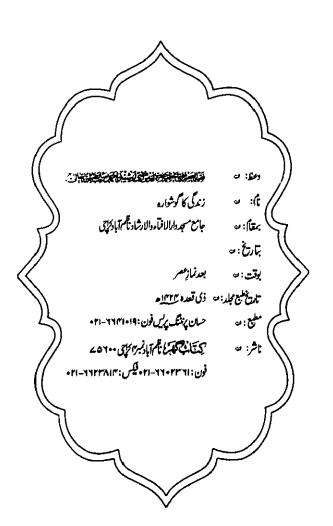
وصل اللهم وبارك وسلم على عبدك ورسولك محمد

وعلى أله وصحبه اجمعين. والحمد لله رب العلمين.









وعظ

زندگی کا گوشواره

(محرم ٢٠٠٥ه)

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيأت اعمالنا من يهده الله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله صلى الله تعالى عليه وعلى الله وصحبه اجمعين.

اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم، بسمر الله الوحمن الرحيم.

﴿ يَا يَهُمَا الَّذِيْنَ الْمَنُوا الَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُونَفُسْ مَّا فَدَّمَتُ لِغَدِ

﴿ وَاتَّفُوا اللَّهَ * إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِنَمَا تَعْمَلُونَ ﴿ ﴾ (١٨-١٨)

تَوْجَمَدَ: "اے ایمان والوا الله سے وُرتے رہو، اور بر مخض کو دیکنا

چاہئے کہ اس نے کل (قیامت) کے لئے کیا بھیجا ہے؟ اور اللہ سے وُرتے رہو، ہے اور اللہ سے وُرتے رہو، ہے اللہ اللہ تمہارے سب اعمال سے باخر ہے۔"

ىقصدزندگى:

نیاسال ۱۹۰۸ ہجری شروع ہو چکا ہے اپنی عمر کے قیمتی محات کے بارے میں کچھ غور وفکر کریں ،انسن کوارٹی زندگ کے بارے میں سوچن چاہئے کہ بید کدھر جار ہی ہے؟ بدقدم جنت كى طرف اتحدرے بيں يا جنم كى طرف؟ جن كول ميں كچھ فكر بوتى ہے کہانند تعالی نے انسان کو کس مقصد کے لئے بھیجا ہے؟ وہ اپنے مقصد زندگی کونہیں بھولتے ،سوچتے ہیں کہ ما مک کی رضائس میں ہے؟ کیا کرنا جائے؟ اور آخرت جو سیح معنول میں وطن ہے وہ مگزر ہی ہے یاسنور رہی ہے؟ بیڈکر ہرانیان کوہونی ج ہئے اپنی زندگی کا کچھتو حساب و کتاب کیا جائے کہ گذرے ہوئے سال میں کیا کمایا کیا گنوایا؟ ایک سال کی مدت بہت طویل ہوتی ہے،سارے تغیرات اورموسم سب کچھالک سال میں گذرجاتا ہے، کوئی چیز باتی نہیں رہتی ،سال میں چانداورستاروں کےعلاوہ آفتاب بھی اپن گردش یوری کرلیتا ہے، آفاب کی گردش کئی سم ی ہے، اس کی تفصیل بیان کرنے کی اس وقت فرصت نہیں، مبرحال ایک سال میں برقتم کی گروش مکمل ہوجاتی ب، مختلف متون سے مختلف قتم کی ہواؤل کا دور برقتم کی نباتات کی پیدائش، تمام کا ئنات میں مزاجوں کے تغیرات اور ہر جان دار مخلوق کے انقلابات کا دور ایک سال میں یورا ہوجا تا ہے،ای لئے جب بچہ پیدا ہوتا ہے تو ایک سال کے بعداس کی سالگرہ مناتے ہیں، پھر دوسرے سال پھر سال گرہ، ای طرح برسال سالگرہ مناتے رہتے ہیں، سائگرہ من نا ہے تو بہت بری بات مگر اس سے پھے سبق تو حاصل کی کریں، کہ سالگرہ منافے والوں کا نظریہ کیا ہے؟ وہ کیوں مناتے ہیں؟ اس لئے کہ سال کی مدت بہت طویل مدت ہے، بچہ ایک سال گذرنے کے بعد ابھی تک موجود ہے مرانہیں، اس یرخوشی مناؤ، حالانکہ جس نے نعمتیں عطاء فرمائیں اس کوخوش کرنے کی کوشش کرنی ھ سے ، گر کرتے ہیں اٹا کام کہ اس کو تاراض کرتے ہیں، بس جہال محرم کامبینہ شروع : وا نوسجھ لیں کہ نیا سال ثروریا ہوئیا، مع جیس غور وڈکر کریں کہ گذشتہ محرم ہے لے کر اس محرم تک بوراایک سال گذر کیر، مگر آخرے کے فاظ ہے گذشتہ محرم میں جہاں تھے اب بھی وہیں میں یا ایک ' مے قدم آ ئے بھی بوھے ہیں؟ اگر سارا سال مذر گیا گر حالت میں ذرہ رہ جمل منتہ اے بیس آیا تو کتنے بڑے خسارہ کی مات ہے، کوئی شخص کمانے نے لئے میرون ملک کیا،جتنی یوٹی نے کیا تھاسال گذرے کے بعدو ہیں کا و ہیں رہا کچھ بھی نہیں کمایا تو تنی مجموری اور بدنتیسی کی بات ہے، سوچیں کہ گذشتہ سال میں کتنے ہوگ زندہ تھے اور اب کننے ہوک ال ونیا سے رفصت ہوگئے، ای طرح سب کوایک دن اس دنیات جانات، ایک ایک لحد بهت قیمتی ہے، اس سال جب محرم کا چاند نگلاه اس وقت تو اس کی طرف زیاده و جنیمی ہو کی لیکن جب کسی تحریر پر ۱۴۰۵ جرى لكيتا مور توببت شدت تاساس بوتائي كدكل تك و مكهتار بام ١٣٠ اجرى اورآج ہوئنی ۱۳۰۵ ہجری، یه دیکی ترول وہل جاتا ہے،جسم پرسکته طاری ہوجاتا ہے،اور تھوڑی دیر کے لیے قلم ہاتھ ہے جیموٹ جاتا ہے، تین حیار روز تک یکی حالت رہی کہ سال گذر عمی اور دماری حالت کا کمیا پچھ ہو یا نبیل بنا؟ پھرالحمد مقدا بیسوچ میمیں تک محدود نیس خیال ہوا کہ دومہ اجری سے بیلے ۵-۱۳ جری میں کیا جوا؟ اور ۱۳۰۵ جری میں کیا ہوا؟ ایک سال کیا یہاں قرصدیاں گذر سکی ، زماند کس تیز رفتاری ہے گذرتا جا جار باہے، مرغضت کی آنکھیں ہیدار نہیں جوشن، سوچیں اپنے ابا، دادا، پردادا کو کدان کی پیدائش کے وفت ان کے والدین اور رشتہ دار خوشیاں منارہے تھے اور سالوں پر ا كريل لكات من عرض مراري كريل أو شاكنير، كوني ري نيس، اورسب اس ونيا ي جلے گئے،آپ بھی ہزاروں سائٹر جی مزیس کوئی رہے کی نہیں،سب ٹوٹ جائیں گی، اس طرح شادیوں کا بتیجہ آخر میں کیا ہے؟ اگر آخرت کونہیں بنایا تو یہ دنیا کی سب شادیاں منتگی پڑیں اور برباد ہوکئیں ، کبان تنیں شادیاں بیباں ک؟ جب اوار د کی شادی ہوتو سوچنا جاہے کہ کس روز ہاری بھی شادی ہوئی تھی، میں تو اپنی شادی تک ہی نہیں حضرت آدم علیه السلام کی شادی تک سوچتا ہوں کے کسی روزان کی بھی شادی ہوئی تھی: ""گذر گئی گذران کیا جھونپڑی کیا میدان"

کچھے باتی نہیں رہا، اگر کچھے باتی رہے گا تو وہ اعمال صالحہ جوآ خرت کی شادی میں کام آئیں ہے۔

ان سب باتوں کو سوچا کریں ، سوچنا تو روزانہ چاہے مگر کم ہے کم ہرسال کی ابتداء بیں تو بیسبق حاصل کرلیں کہ ایک سال گذر کیا لیکن اب بھی وہیں کھڑے ہیں جہال گذشتہ سال تنے یا پچھ آ کے بھی بڑھے؟ آ کے بڑھنے کا بید مطلب ہے کہ سال بھر بیس اگر انیک گناہ بھی چھوٹ گیا جب بھی پچھ تو آ کے بڑھے، اور اگر بید حالت ہے کہ گذشتہ بحرم کی ابتداء بیں جنے گناہ تنے آج بھی اتنے ہی ہیں، ایک گناہ بھی نہیں چھوٹا تو بڑے خسارہ کی زندگی گذری، پچھ فکر کرنی چاہئے کہ آخر ایک روز مرنا ہے، کب تک زندہ رہنا ہے۔

تجارت آخرت كا كوشواره:

د نیوی تجارتوں میں جہاں سال ختم ہونے کو آتا ہے نفع و خسارہ کا حساب لگا یا جاتا ہے، گوشوارے تیار کئے جاتے جیں، تاجر لوگ نفع اور خسارہ کا حساب کسے لگاتے ہیں؟ وہ اس طریقہ سے کہ سال کے اندراگر ایک کروڑ کے نفع کی امید تھی اور نفع ہوا ہے لا کہ کہ اندہ تو یوں کہتے ہیں کہ ۲۵ لا کھ کا نقصان ہوا، بیناشکرا بندہ بینیں کہتا کہ ۵۵ لا کھ کا فائدہ ہوا، نفع کو بھی خسارہ بی بتاتا ہے، حضرت مفتی محمد شخصے صاحب رحمہ اللہ تعالی نے فر مایا کہ ان کے بارانہوں نے پوچھا کہ اگر کہ سرسال ہزاروں کا نقصان ہوتار ہتا ہے تو اب تک تو آپ کا کباڑ ابھی ہوجاتا، آپ کی ساری تجارت بی جوجاتا، آپ کی ساری تجارت بی ختم ہوجاتی، کین بیتو روز پروزترتی پر ہے، یہ کیسا نقصان ہے؟ انہوں نے کہا کہ آپ کا سال میں تحمید لگاتے ہیں کہ

آیندہ سال میں اتنا نفع ہوتا جاہئے، اس تخمینہ سے جو کم ملا اسے بیدلوگ خسارہ کہتے ہیں، ناشکرا انسان دنیوی نفع کو بھی نقصان شار کرتا ہے اور آخرت کے نقصان کو تو شار ہی میں نہیں لاتا، کمھی اس کا گوشوارہ ہی تیار نہیں کرتا۔

دعاء کر لیجئے کہ اللہ تعالیٰ آخرت کے صاب و کتاب کے گوشوارے بنانے کی تو نیق عطاء فرمادی، گوشوارہ پرایک بات یاد آئی "گوش" کے معنی ہیں" کان" بدرین کی باتیں جو آپ لوگوں کے گوشوارے بن رہے ہیں یا اللہ اللہ کانوں میں پڑری ہیں وہ آپ لوگوں کے گوشوارے بن رہے ہیں یا اللہ اکانوں میں پڑنے والی آئی ہاتیں ولوں میں اتاردے۔

دومبارك وعائين:

ید دونوں دعائیں یاد کرلیں، اللہ تعالیٰ سے ماٹھا کریں، ان کا دائی معمول بنائیں۔ مہم کی وعاء:

(اللهم افتح مسامع قلبي لذكوك)

تَرْجَمَدُ: "ياالله! مرردل ككان النيذ ذكر كے لئے كمول وس"

جب تیرا ذکر ہو، خواہ میں ذکر کروں یا کوئی دوسرا کرے تو میرے دل کے کان کھل جائیں اور ذکر کانوں ہے گذر کر دل میں اتر جائے۔

یہ دعاء یاد کرلیں، اگر عربی الفاظ یاد نہ رہیں تو مفہوم ہی یاد رکھیں، اس دعاء کا مطلب میہ ہے کہ یا اللہ! تیرے اذکار سر کے کانوں سے ہوتے ہوئے دل کے کانوں میں اتر جائیں۔

دوسري دعاه:

﴿اللهـم افتح اقفال قلبي بذكوك﴾

تَتَوَجِّحَكَنَدُ'' يَاللهُ! اللهِ ذَكر كَي حالِي سے ميرے دل كے تالے كول دے'' جب انسان ذكر اللہ سے عافل ہوتا ہے تو دل پر تالے برخ جاتے ہیں، يا اللہ! اپنے ذکر کی توفیق عطاء فرما اور دل پر جوغفلت کے تالے پڑے ہیں انہیں ذکر ک برکت سے کھول دے۔

ترياق منكرات:

مرضی کواین بارے میں روزانہ وچنا چاہئے کداس نے اپی آخرت کا کوشوارہ کتا بنایا؟ یہ مرضم کی تافر مانعوں سے بیخے کے لئے تریاق ہے، اللہ تعالی کا ارشاد ہے.

﴿ لِنَا يَنْهَا الَّذِيْنَ الْمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلُنَنْظُورُ نَفُسٌ مَّا قَدَّمَتُ لِيَعْدِ وَاتَّقُوا اللَّهَ * إِنَّ اللَّهَ حَبِيْرٌ نِهَا تَعْمَلُونَ ﴿ ﴾ ﴿ ١٥-١٨) لِغَدِ وَاتَّقُوا اللَّهَ * إِنَّ اللَّهَ حَبِيْرٌ نِهَا تَعْمَلُونَ ﴿ ﴾ ﴾ (١٥-١٨) اس آیت میں تقویٰ کے حکم کے ساتھائی کو ماصل کرنے کا نسخہی ارشاد فرمادیا کہ آخرت کے بارے میں موجا کریں۔

یا اللہ! تو ابنی رحمت کے صدقہ میں سب کو ابنی آخرت کے گوشوارہ کے بارے میں سوچنے کی توفق عطاء فرما۔ کچھ تو سوچنا جا ہے کہ بیزندگ آخرت کے اعتبار سے کیسی گذرر بی ہے؟ اس لئے کہرسول الله صلی الله علیہ وسلم سے جیسے جیسے ذیا نہ دور ہوتا چلا جار ہا ہے برکمت اٹھتی چلی جار ہی ہے، پچھلے محرم سے اس محرم تک ایک سال گذر گیا تو نام رسول الله صلی الله علیہ وسلم کے زمانہ سے ایک سال اور دور ہوگئے۔

طلب رحمت كاطريقه:

اس لئے بید وعاء کر لینی چاہئے کہ یا اللہ! تیری رحمت کم وروں کی طرف زیادہ متوجہ ہوتی ہے، رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے دوری کی وجہ سے ہم تیری رحمت کے زیادہ مستحق ہیں، تو ہماری مدوفر ما، سب کو اللہ تعالیٰ کی طرف متوجہ ، وجانا چاہئے، جھے ایک بار نماز ہیں خیال آیا کہ یا اللہ! ہیں سب سے زیادہ عاجز و ناقص ہوں، اس لئے رحمت کا سب سے زیادہ تو میں ہی مستحق ہوں، اس کواس مثال سے بمجھیں کہ ماں کے سامنے تین چارہ نے ہم ایک ان ہیں سے نجاست سے تعراہ وائے، ماجز ہے، کمزود

ہاور دوسرے بہتر حالت میں ہیں، تو مال کی شفقت ای کی طرف متوجہ ہوگی جو کم زور اور گندہ ہے، جب انسان کا بیاحال ہاتھ یا اللہ! تیری رحمت کو مجھ پر کیسے جوش نہ آئے گا؟ یا اللہ! اس دوری کا صدقہ اس عاجزی، کمزوری اورضعف کا صدقہ تیری رحمت کے جم زیادہ مستحق ہیں، تو رحم فرما، دشگیری فرما، نفس، شیطان، برے معاشرہ اور ماحول کے مقابلے میں ہماری مدفرما، یا اللہ! تیرے حبیب صلی اللہ علیہ وکلم سے دور بیس مگر جھے سے دور نہیں، تو ہمارے ضعف اور عاجزی کے مطابق ہمارے ساتھ رحم کا معالم فرما۔

ایک اور عجیب دعا:

ایک اور دعاء یادآگئ، بد جارے حالات کے مین مطابق ہے:

﴿اللهدر عاملنا بها انت اهله ولا تعاملنا بها نعن اهله﴾ تَرْتِهَمَدُ: "ا الله! بهار به ساته وه معامله فرما جوتیری شان کے لائق ب، به رب ساته وه معامله نفر ماجس کے ہم مشتق جس ب

ہماری ٹالائقی سے درگذر فرما اور ہم پررحم وکرم فرما۔ اپنی عاجزی کو اللہ تعالیٰ کے سرمنے پیش کر کے ان کی رحمت طلب کرنی جاہے ، اور دینی کام جتنا مشکل نظر آتا ہو آتی ہی ہمت بلند کرنی جاہئے۔

سالگره پاسال گرا:

لوگ کہتے ہیں کہ بچدایک سال کا ہوگیااس کی سالگرہ ہوگی، سال گرہ نہیں''سال گرا'' کہنا جائے، اس لئے کہ اگر بچدا پنی عمر ۲۰ سال کے کر آیا ہے تو اس میں سے ایک سال گرگیا، عمر ۵۹ رہ گئی، لوگ خوشیاں مناتے ہیں، ہمارا بیٹا ایک سال کا ہوگیا، دو سال کا ہوگیا، دو سال کا ہوگیا، دو سال کا ہوگیا، دو سے ملک الموت دیکھ رہا ہے کہ اس کی روح قبض کرنے میں ۲۰ کی بجائے ۵۸ سال رہ گئے۔ آپ ایٹ گھرسے لا ہورکی طرف چلے، ایک میل طے ہوا،

دومیل طے ہوئے تو آپ کا سفر بڑھ رہا ہے یا کم ہورہا ہے؟ القد تعالیٰ نے ہم سب کو مسافر خانہ یعنی دنیا میں سفر پر بھیج دیا ہے، اور سفر کے دن مقرر کردیئے ہیں، کسی کے مینے اور لمع ہیں، کسی کے مینے اور کمع ہیں، کسی کے میان ہیں، کسی کے مناز ہیں، کسی کے کہ عمر بڑھ دہی ہے، مراوگ کہتے ہیں کہ بنچ کی عمر بڑھ دہی ہے، در حقیقت وہ اپنی قبری طرف جارہا ہے۔

ے قدم سوئے مرقد نظر سوئے دنیا کہاں جارہا ہے کدھر دیکھتا ہے؟

عاقبة انديثي:

جب انسان جارہا ہو ایک طرف اور و کیمے دوسری طرف تو لاز ما خطرہ میں پڑ جائے گا، ہمی کھڈے میں گرے گا، اس خان ہو جائے گا، ہمی کھڈے میں گرے گا، جائے ہیں عاقبت کی طرف اور نظر ہے دنیا کی طرف، عمر کی مت سال بسال بلکد دم بدم گذرتی جارہی ہے، سوچنا جائے کہ ایک سال کی مت میں کیا کیا؟ اپنی عاقبت کو بنایا انگاڑا؟ موت کو یاوکر کے عبرت حاصل سے ہے۔

کل ہوں اس طرح سے ترغیب دیتی تھی مجھے خوب ملک روس اور کیا سرز بین طوس ہے گر میسر ہوتو کیا عشرت سے سیجئے زندگ اس طرف آ واز طبل اودھر صدائے کوس ہے صبح سے تا شام چاتا ہو سے گل گوں کا دور شب ہوئی تو ماہرویوں سے کنار و بوس ہے سنتے ہی عبرت یہ بولی آک تماشا میں کجھے سنتے ہی عبرت یہ بولی آک تماشا میں کجھے

چل وکھاؤں تو جو قید آز کا محبوں ہے گئی کیبارگ مور غریباں کی طرف جس جگہ جان تمنا ہر طرح مایوں ہے مرقدیں وو تین دکھلا کر گئی کہنے جھے یہ سکندر ہے یہ وارا ہے یہ کیکاؤس ہے پوچھ تو ان سے کہ جاہ وحشمت دنیا ہے آج کیمیمی ان کے پاس غیراز حسرت وافسوں ہے

بروز قيامت سوال موكا:

اس زندگی کے بارے میں بروز قیامت وال ہونے والا ہے: ﴿ اَوَكُمْ نُعَيِّرُكُمْ مَّا يَنَدَّكُو فِيلْهِ مَنْ تَذَكَّدَ وَجَاءَ كُمُ النَّدِيْرُ ﴿ ﴾

(٥٧-٢٥) تَنْزَعَهَ مَدَ: "كيا بم نے تهميں اتن عمر ند دي تقى كداس ميں تفيحت حاصل كرنے والا تھيجت حاصل كرليتا (اور مزيد بيركه) تمہارے پاس ڈرانے والا بھى آ ما تھا۔"

وں ں ، یا گا۔ بیڈرانے والاکون تھا؟ اوراس لبی عمر سے کیا مراد ہے؟ اس کی مختلف تغییریں کی سنگی ہیں۔

"نذري" کې پانچ تفسيرين:

بها تفسیر: منگل

نذیر (ڈرانے والا) رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہیں اور عمر وہ مراد ہے جس میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے دعوائے رسالت کاعلم ہوجائے۔

دوسری تفسیر:

ڈرانے والا قرآن ہے اور عمر یہ کہ قرآن کا کلام اللہ ہونے کا دعویٰ معلوم ہوجائے۔

تيسرى تفسير:

عمرے مراد ہے ۲۰ سال کی عمر اور ڈرانے والا کیا؟ بال سفید ہوج نا، آئ کے مسل نور نے کیا کیا گاؤر ہی نہ آئے اور سر
مسل نور نے کیا کیا کہ ڈاڑھی تو ویے بی منڈوا دوتا کہ سفیدی نظر بی نہ آئے اور سر
کے بالول پر خضاب لگالو، ارے سفیدی چھپنے کے لئے ڈاڑھی منڈانے کی کیا
ضرورت ہے؟ جیسے سر پر خضاب لگاتے ہیں ڈاڑھی پر بھی رنگ کرلیں مگر سریا ڈاڑھی
باکل سیاہ نہ کریں بالکل سیاہ کرنا حرام ہے، ڈرانے والا آچکا، بالوں ہیں سفیدی آگی۔

بالول كى سفيدى باعث رحمت ہےنه كه زحمت:

بالوں کی سفیدی باعث رحمت ہے، سفیدی سے ڈرنے والوین لوارسول التوسلی الله سیروسم فره تے چین:

"القد تعالى سفيد بالول والمصلمان سے حياء كرتے ہيں۔"

ے رحمت حق بہانہ کی جویر رحمت حق بہا نمی جوید

ان کی رحمت کو بہانہ جاہئے، کم ہے کم اللہ والوں کی نقل ہی بنالیس، ہوسکتا ہے۔ اللہ تعالی اس نقل کواصل بنادیں۔

> ۔ ترے محبوب کی بارب شاہت لے کے آیا ہوں حقیقت اس کو تو کردے میں صورت لے کے آیا ہول نہ جانے کس چیز پر رحمت متوجہ ہوجائے ہے

نہ کوری سے مطلب نہ کالی سے مطلب پیا جس کو جاہے سہاگن وہی ہے

جس کی عمر ۲۰ سال ہوگئ اس سے یہ پوچھا جائے گا کہ کیا تیرے پاس ڈرانے والانبیس آیا تھا؟ یعنی ترے بال سفیدنیس ہو گئے تھے؟ بیجسنڈی ہے موت کی کہ بس موت آیا بی جاہتی ہے۔

جوهمی تفسیر:

"نذر" سے اولاً وکی اولاد مراد ہے۔

اولاد کی اولا دموت کی جھنڈی ہے:

سفید بال آئیں یا نہ آئیں، اولاد کی اولاد ہوجائے تو یہ اشارہ ہے کہ اب پلیٹ فارم خال کریں اس پلیٹ فارم پر کب تک بیٹھیں رہیں گے؟ اب مسافروں کی دوسری کھیپ آئی ہے، لڈ! اب جاؤ، اولاد کی اولاد، پوتے، نواسے، یہ ''نفریز' ہیں، موت کا پیغام ہیں، خوش ہوجانا چاہئے کہ وطن جینے کا سامان بن رہا ہے، اور اس مسافر خانہ سے جانے کے اسباب پیدا ہور ہے ہیں، سجان اللہ! کیا کہنا ہے، یا اللہ! سب کوشوق وطن عطاء فرما، کی شاعر نے خوب کہا ہے۔

یہ تو بوڑھوں کی کیفیت ہے، ذرا نو جوان سوچیس کدان سے کم عمر والے کتنے پینچ

محے قبروں میں، اور ایسے بچول کی کی نہیں جو مرتے پہلے میں اور پیدا بعد میں ہوتے ہیں، مال کے پیٹ بی میں مرکئے اور پیدا بعد میں ہوتے ہیں۔ آپ کو ہزاروں ایسے ملیں مے کہ دادا پوتے یا پڑ پوتے کو قبر میں اتار رہا ہے، اس لئے نو جوانوں کو بڑھا پ کی موت پر نظر نہیں رکھنی چاہئے، وہ بیر سوچیں کہ ان کے ہم عمر اور کم عمر والے کتے قبروں میں جارہے ہیں۔

بإنجوين تفسير:

عمرے مراد ہے بالغ ہونے کی عمر، اور ڈرانے والے سے عقل مراد ہے۔

حقیقی بالغ کون ہے؟

درحقیقت بالغ تو وہ ہوتا ہے جس کو اپنے مالک کو پیچانے کی عقل آ جائے، بلوغ تو عقل ہے ہوئے ہوئے ملوغ تو عقل ہے ہوئے ہوئے ہوئے اسلام خاند اور وطن کا فرق معلوم کرلیا وہ بالغ ہے، جس کی عقل نے سافر خاند اور وطن کا فرق معلوم کرلیا وہ بالغ ہے، جس کی عقل نے جال اور سنتہل کی نوعیت کو جان لیا کہ جس زمانہ میں گذررہے ہیں وہ حال ہے، سنتہل آ کے ہے، آ کے کی زندگی یعنی آ خرت کا ذخیرہ کیا ہے؟ اسے جس کی عقل نے پیچان لیا وہ ہے بالغ، لڑکی بالغ ہوجاتی ہے اا، ۱۱ میں مال میں ، اور لڑکا ساا، ۱۲ اسال میں ، اب دنیا کا بلوغ تو تیز بیروں کی طرح جلدی جلدی ہور ہا ہے، اسل بلوغ ہے آ خرت کا بلوغ ، یا اللہ! تو سب کو آخرت کے بالغ بالد تعالی ہے وہ فرماتے ہیں: بنادے، آخرت کے بالغ بیادہ ہوگائی ہے وہ فرماتے ہیں:

﴿ رِجَالٌ لا لاً تُلْهِيهِمُ تِجَارَةً وَلَا يَنْعُ عَنْ ذِكْرِ اللهِ ﴾

(TY-YE)

تَتَوَجِّمَنَدُ''رجال (بالغ مرد) وہ ہیں کددنیا کی بڑی سے بڑی تجارت اور منافع ان کو مالک سے غافل ٹیس کرتے۔'' یہ ہیں آخرت کے بالغ۔ الله تعالیٰ سب کے قلوب میں اس کی فکر پیدا فرمائیں اور سب کو یہ وقت آنے سے پہلے سب ممناہوں سے توبہ کرنے کی توفیق عطاء فرمائیں، اور پوری زندگی اپنی مرضی کےمطابق بنالیں۔

خلاصة كلام:

آج کے بیان کا خلاصہ یہ ہے کہ اپنے اندر فکر آخرت پیدا کریں روز حساب آنے سے پہلے پہلے اللہ تعالیٰ کی رحمت سے وطن کی تیاری کی توفیق طلب کریں اور ایمان اورا عمال صالحہ کے ذریعہ اللہ تعالیٰ کوراضی کرنے کی کوشش کریں۔

ایک بهت برای غلطی کاازاله:

یہاں ایک بات اچھی طرح سمجھ لیس کہ اعمال صالحہ کے معنی کیا ہیں؟ اس سلسلہ
میں عام لوگوں میں بہت بڑی غلط نہی پائی جاتی ہے، اس لئے مجھے ہر بار تنبیہ کرنی
پڑتی ہے، اعمال صالحہ سے بیرمراز نہیں ہے کہ نفل عبادت زیادہ کریں، بلکہ مطلب یہ کہ
اللہ تعالیٰ کی نافر مانی مجھوڑ دیں، ظاہر بات ہے کہ آپ اس مالک کی تمام نافر مانیوں
سے تو بہ کرکے ہی اے راضی کر سکتے ہیں، وہ مالک تسبیحات اور نفل عبادات سے راضی

ہوجائے گی۔

مبس بوتا نظل نماز نظل روزه نظل صدقات وخیرات یا اوراد وظا کف سے راضی تبیس ہوتا، وہ ما لک راضی ہوتا ہے تو صرف نافر مانیوں کو چھوڑنے کے بعد ،حقوق الله وحقوق العباد اداء كرنے اور فرائض كى بجا آورى كے ساتھ ساتھ كنا ہوں كو بھى بكسر چھوڑ ديں، أكركونى نوافل اور تسبيحات يرهداومت كرتا بيلين فرائض اداءكرنے ميس غفلت برتنا ہے، یا برسال مج کرتا ہے، مساکین اور بتامی کی اعانت وخبر کیری، مساجد و مدارس کی نقیراورز تی پر بےانتہا دولت خرچ کرتا ہے لیکن ساتھ ہی ساتھ رشوت بھی لیتا ہے، کم تولتا یا ملاوٹ کرتا ہے، ماکسی اور طریقہ سے بندوں کے حقوق غصب کرتا ہے، اور یقین کئے بیٹھا ہےاس نے ایمان کے ساتھ عمل صالح کی شرط پوری کردی تو وہ دھوکہ اور فریب نفس میں جتلا ہے، ایسے ہی اوگوں کے بارے میں ارشاد باری تعالیٰ ہے: ﴿ الَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيْوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ

أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ١٠٤ (١٠٤-١٠١)

تَنْزَجَهَنَ؟'' یه وه لوگ میں جن کی دنیا میں کی کرائی محنت سب گئی گذری ہوئی اوروہ بوجہ جہل کے اس خیال میں ہیں کدوہ احیما کام کررہے ہیں۔'' صوفید نے تخلی بالفصائل سے بہلے تحلی عن الرذائل بربہت زور دیا ہے، گناہوں کو ترک کرنا اور فرائض کواداء کرنا اعمال صالحه کی بنیاد ہے، جواس برکار بند ہوگیا اے اللہ تعالیٰ کا ایباتعلق نصیب ہوگا کہ نوافل اور اذکار کی توفیق اے ازخود ہوجائے گی، ذکر محبوب کے بغیروہ رہ ہی نہیں سکتا، محبت اللہ یہ اس کے دل میں جاگزین ہوجائے گی، گناہوں سے تائب ہونے کے بعد بقول حضرت مجذوب رحمہ الله تعالیٰ بیہ حالت

ے ہر تمنا ول سے رفصت ہوگئ اب تو آھا اب تو خلوت ہوگئ نفس اور شیطان نے بیہ دھوکہ دے رکھا ہے کہنفل عبادت کرتے چلیے جاؤ گناہ چھوڑنے کی ضرورت نہیں مشاخ اور واعظین بھی یبی بتاتے ہیں کدفلال تنج اور اتے نوافل پڑھ لیجے بس اعمال صالحہ بیدا ہو محے حرام اور سیئات سے نیچنے کی حاجت نہیں، سب کھے کئے حاک

ظ رند کے رند رہے ہاتھ سے جنت نہ گئ

ای جہالت کی بنیاد پر برجم خود نیک اور صالح لوگ غلاقتم کی رسوم اور طرح طرح کے گناہوں میں جتلا ہیں، بدعات تک کے ارتکاب سے نہیں چوکتے، افسوس سے کہ بتانے والے ہی ندرہے، للہ! اپنی جانوں پر رحم کھائے، اس دن سے ڈریئے جس کے بارے میں ارشادے:

﴿ يَقُولُ بِلَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ١٤-٨٩) (٢٤-٨٩)

تَتَوْهِ کَمَنَدُ''انسان ک**ے گا** کاش میں اُس (اخروی) زندگی کے لئے کوئی عمل (نیک) آگے جیج دیتا۔''

اس چندروزہ زندگی کے ہرلحہ وغنیمت بجھ کروطن آخرت کی فکر کیجئے۔

۔ رنگا لے ری چزی گندھا لے ری می

نہ جانے بلا لے پیا کس گھڑی

تو کیا کیا کرے گھڑی کی گھڑی تو رہ جائے گی ری کھڑی کی کھڑی

یا الله! ہمارے قلوب کی کیفیت بدل دے، ہمیں عزم و ہمت عطاء فرما، ہماری سیئات سے درگذر فرما، اپنی اور اینے حبیب صلی الله علیہ وسلم کی محبت واطاعت عطاء

> . فرما_ولا حول ولا قوة الابك_

وصل اللَّهم وبارك وسلم على عبدك ورسولك محمدٍ وعلى اله وصحبه اجمعين. والحمد للَّه رب العلمين.

